A good book.

एक अच्छी पुस्तक

6487. Price Rs 1-0-0

श्री स्कन्दपुराण

के

सेतुमाहात्म्यखण्ड

का

भाषाअनुवाद

شری اسکند پران

RANBIR LIBRARY JAMMOO No 6487 2991

जिस में

सेतुबन्ध का माहात्म्य वहां के सब तीर्थों का वैभव महालय श्राद्ध का विस्तार
पूर्वक माहात्म्य, नरकों का वर्णन, रामेश्वर के माहात्म्य का विस्तार से
वर्णन औ अनेक अति मनोहर कथाओं का वर्णन है जिनके पठन और श्रवण से
चित्त को अद्भुत आनन्द मिलता है और पुण्य की भी प्राप्ति होती है

जिसको

गुणग्राहक · पण्डित सुखदायक · भरतखण्ड के परम हितैषी · आर्य्यजनों की उन्नति के लिये महो
रात्र बद्ध कक्ष · अति दक्ष · अवध समाचार पत्र सम्पादक दूसर वंशावतंस · श्रीयुत मुन्शी नवलकिशोर
साहब के निदेश से काश्मीरेन्द्र श्री महाराज गुलाबसिंह जी के मुख्य दैवज्ञ · ज्योतिषी श्री ब्रजलाल
पण्डित जी के पुत्र · अलवर प्रान्तवर्त्ति हमजापुर ग्राम निवासी · चौरासियाख्य ब्राह्मण कुलो-
त्पन्न · वर्तमान काल में जयपुर देशाधीश श्री मन्महाराजाधिराज श्री १०८ माधवसिंह जी के आश्रित

श्री पण्डित दुर्गाप्रसाद ने

संस्कृत से आर्य्य भाषा में किया

पहिली वार

लखनऊ
मुन्शी नवलकिशोर के छापेखाने में छापा गया
जुलाई सन् १८८२ ईस्वी

SPS
294.5 D 25 S
6487

विज्ञप्ति

इस महीने अर्थात् जुलाई सन् १८८२ ई० पर्य्यन्त जो पुस्तकें बेचने के लिये तय्यार हैं वह इस फ़ेहरिस्त में लिखी हैं और उन का मोल भी बहुत किफ़ायत से घटा कर लिखा है परन्तु व्यापारियों के लिये और भी सस्ती होंगी जिन को व्यापार की इच्छा हो वह छापेखाने के मुहतमिम अथवा मालिक के नाम ख़त भेजकर क़ीमत का निर्णय करलें॥

नामकिताब	नामकिताब	नामकिताब	नामकिताब
भाषा (इतिहास)	५- उद्योग पर्व्व	३- आरण्यकाण्ड	भ्रमजालनाटक
महा भारत	६- भीष्मपर्व्व	४- किष्किन्धाकाण्ड	वेदान्त
१- पहिले हिस्सा में	७- द्रोण पर्व्व	५- सुन्दर काण्ड	योगबाशिष्ठ
आदिपर्व्व सभा पर्व्व बन	८- कर्ण पर्व्व	६- लंका काण्ड	सुन्दर बिलास
पर्व्व	९- शल्य पर्व्व व ग-	७- उत्तर काण्ड	आनंद अमृतवर्षिणी
२- दूसरे हिस्सा में	दा पर्व्व सौप्तिक पर्व्व	रामायण शब्दार्थको-	सांख्यतत्वकौमुदी
बिराट पर्व्व उद्योग पर्व्व	मय ऐशिक व विशोक	रामायण का इतिहास	काव्य
भीष्म पर्व्व द्रोण पर्व्व	व स्त्री पर्व्व	रामायण मानसदीपिका	सूरसागर
३- तीसरे हिस्सा में	१०- शान्ति पर्व्व राज	रामायण कवितावली	कृष्णसागर
कर्ण पर्व्व शल्य पर्व्व ग-	धर्म्म मोक्षधर्म्म व दान	रामायण गीतावली स०	विश्राम सागर
दा पर्व्व सौप्तिक पर्व्व ऐ-	धर्म्म	भुवनेश भूषण	प्रेमसागर
शिक पर्व्व विशोक पर्व्व	११- अश्वमेध आश्र-	विनयपत्रिका वा० मो०	ब्रजबिलास बड़ा व छोटा
स्त्री पर्व्व शान्ति पर्व्व में	म वासिक मुशल पर्व्व	विनयपत्रिका वा० शि०	कृष्णप्रिया
राज धर्म्म आपद धर्म्म	महा प्रस्थान स्वर्गारोहन	विष्णुपुराण भाषा	विजयमुक्तावली
मोक्ष धर्म्म	१२- हरिवंश पर्व्व	लिंग पुराण	विजय दोहावली
४- चौथे हिस्सा में	रामायण राम बिलास	ब्रह्मोत्तरखण्ड	अनेकार्थ
शान्ति पर्व्व दान धर्म्म	रामायण तुलसीकृत	शुक्रनीति	छन्दोर्णवपिङ्गल
अश्वमेध आश्रमवा-	रामायण सटीक मय	रसवृष्टि व रसचंद्रोदय	रसराज
सिक पर्व्व व मौशल प-	मानसदीपिका कोष	सुदामाचरित्र	सतसई मूल
र्व्व व महा प्रस्थान स्व-	इत्यादि	कृष्णगीतावली	सतसई सटीक
र्गारोहन पर्व्व हरिवंश पर्व्व	तथा जिल्द बंधी	श्रीअनुराग रस	सभा बिलास
महा भारत पर्व्व अलेह-	तथा मोटे अक्षरों की म-	सौदागर लीला	तुलसी शब्दार्थप्रकाश
दा भी हैं	य तसवीर व क्षेपक	रासलीला	भजनावली
१- आदि पर्व्व	रामायण तुलसीकृत	नाटक	प्रेमरत्न
२- सभा पर्व्व	सातों काण्ड	प्रबोधचन्द्रोदय	युगुल बिलास
३- बन पर्व्व	१- बालकाण्ड	रामाभिषेक	चित्रचन्द्रिका
४- बिराट पर्व्व	२- अयोध्याकाण्ड	आनन्द रघुनन्दन	बारहमासा बलदेव प्र०

SRI RANBIR LIBRARY
No 6487
JAMMOO

भूमिका

विदित हो कि इस असार संसार में धर्म, अर्थ, काम, औ मोक्ष ये चार पदार्थ सार हैं इसीलिये सब मनुष्य अपनी २ रुचि के अनुसार इन की प्राप्ति के लिये यत्न करते हैं इनमें धर्म प्रधान है धर्म के सेवन से ये चारों प्राप्त होते हैं औ धर्म की प्राप्ति अपने २ वर्ण औ आश्रमों के लिये कथित वैदिक कर्म के अनुष्ठान से सदा होती रही इसीलिये पूर्व कालमें तीनों वर्णों के मनुष्य वेद पढ़ने में अति परिश्रम करते थे औ वेद पढ़ तदुक्त कर्म का अनुष्ठान कर अपना २ अभीष्ट फल पाते थे· परन्तु कलियुग के मनुष्य ऐसे अल्पायुष औ मन्द बुद्धि होंगे कि जो जन्म भर में अति परिश्रम करने से भी सम्पूर्ण वेद न पढ़ सकेंगे· यह विचार परम कारुणिक कृष्ण द्वैपायन मुनि ने वेद के चार भाग किये· इसी से उनका नाम वेद व्यास हुआ· औ वेद का आशय लेकर अठारह पुराण औ श्री महाभारत नाम इतिहास रचा जिन के पठन औ श्रवण से थोड़े से परिश्रम करने से ही कलियुग के आलस्य युक्त आर्य्यजनों को धर्म का ज्ञान भली भाँति हो जाता था· औ अपने २ धर्म का सेवन कर उत्तम फल पाते थे· परन्तु पुराण आदि का तात्पर्य्य समझने के लिये संस्कृत का ज्ञान चाहिये औ वर्तमान् काल में आर्य्य लोकों से प्रायः संस्कृत विद्या का अभ्यास छुट गया· इसी कारण पुराण आदि का परिशीलन नहीं कर सके औ वर्णाश्रम धर्म को नहीं जानते· जब धर्म का ज्ञान ही नहीं तो आचरण क्योंकर हो सक्ता है· औ धर्माचरण बिना आयुष् बुद्धि, बल, ऐश्वर्य्य तेज, विद्या, धन, पौरुष सन्तान कीर्ति आदि से हीन होते जाते हैं यह दुर्दशा अपने बन्धु आर्य्यजनों की देख औ सब पुरुषार्थ प्राप्ति का मूल ज्ञान पूर्वक धर्माचरण औ धर्म ज्ञान का मूल पुराण आदि का परिशीलन समझ औ आर्य्यजनों को प्रायः संस्कृत भाषा में अनभिज्ञ देख विजाति विज्ञ भारत वर्ष के परम हितैषी आर्य्यजनों के कल्याण में अहोरात्र तत्पर दूसर वंशावतंस अवध समाचार पत्र सम्पादक श्री मुन्शी नवलकिशोर साहब ने यह इच्छा की कि यदि सब पुराण संस्कृत से आर्य्य भाषा में अनुवाद हो कर मुद्रित हो जायँ तो सब आर्य्यजन उनका तात्पर्य सुगमता से जान सकें औ यथार्थ धर्म स्वरूप जान दुराचरण से बच सत्कर्म में प्रवृत्त रहें तो सब प्रकार के क्लेशों से छुट ईश्वर के अनुग्रह से अपरिमित आनन्द पावें· यह मन में निश्चय कर श्रीयुत मुन्शी साहब ने इस सत्कार्य्य में सत्कार पूर्वक हम को प्रवृत्त किया· हमने भी उन की इच्छानुसार लिङ्ग पुराण औ भविष्य पुराण का आर्य्य भाषा में अनुवाद किया

विज्ञप्ति

इस महीने अर्थात् जुलाई सन् १९०२ ई॰ पर्य्यन्त जो पुस्तकें बेचने के लिये तय्यार हैं वह इस फ़ेहरिस्त में लिखी हैं और उन का मोल भी बहुत किफ़ायत से घटा कर लिखा है परन्तु व्यापारियों के लिये और भी सस्ती होंगी जिन को व्यापार की इच्छा हो वह छापेखाने के मुहतमिम अथवा मालिक के नाम खत भेजकर कीमत का निर्णय करलें॥

नामकिताब	नामकिताब	नामकिताब	नामकिताब
भाषा (इतिहास)	५- उद्योग पर्व्व	३- आरण्य काण्ड	भ्रमजाल नाटक
महा भारत	६- भीष्म पर्व्व	४- किष्किन्धा काण्ड	वेदान्त
१- पहिले हिस्सा में	७- द्रोण पर्व्व	५- सुन्दर काण्ड	योगबाशिष्ठ
आदिपर्व्व सभा पर्व्व बन	८- कर्ण पर्व्व	६- लंका काण्ड	सुन्दर बिलास
पर्व्व	९- शल्य पर्व्व व ग-	७- उत्तर काण्ड	आनंदामृत वर्षिणी
२- दूसरे हिस्सा में	दा पर्व्व सौप्तिक पर्व्व	रामायण शब्दार्थ को-	सांख्यतत्त्व कौमुदी
विराट पर्व्व उद्योग पर्व्व	मय ऐशिक व विशोक	रामायण कादुतिहास	काव्य
भीष्म पर्व्व द्रोण पर्व्व	व स्त्री पर्व्व	रामायण मानसदीपिका	सूरसागर
३- तीसरे हिस्सा में	१०- शान्ति पर्व्व राज	रामायण कवितावली	कृष्णसागर
कर्ण पर्व्व शल्य पर्व्व ग-	धर्म्म मोक्षधर्म्म व दान	रामायण गीतावली स-	विश्राम सागर
दा पर्व्व सौप्तिक पर्व्व ऐ-	धर्म्म	भुवनेश भूषण	प्रेमसागर
शिक पर्व्व विशोक पर्व्व	११- अश्वमेध आश्र-	विनयपत्रिका बा॰ मो॰	ब्रजबिलास बड़ा व छोटा
स्त्री पर्व्व शान्ति पर्व्व में	मवासिक मुशल पर्व्व	विनयपत्रिका बा॰ शि॰	कृष्णप्रिया
राजधर्म्म आपद धर्म्म	महाप्रस्थान स्वर्गारोहन	विष्णुपुराण भाषा	विजयमुक्तावली
मोक्ष धर्म्म	१२- हरिवंश पर्व्व	लिंगपुराण	विजयदोहावली
४- चौथे हिस्सा में	रामायण राम विलास	ब्रह्मोत्तरखण्ड	अनेकार्थ
शान्ति पर्व्व दान धर्म्म	रामायण तुलसीकृत	शुक्रनीति	छन्दोर्णव पिङ्गल
अश्वमेध आश्रमवा-	रामायण सटीक मय	रसदृष्टि व रसचंद्रोदय	रसराज
सिक पर्व्व व मौशल प-	मानसदीपिका कोष	सुदामाचरित्र	सतसई मूल
र्व्व व वारा प्रस्थान स्व-	इत्यादि	कृष्णगीतावली	सतसई सटीक
र्गारोहन पर्व्व हरिवंश पर्व्व	तथा जिल्द बंधी	श्रीअनुरागरस	सभा बिलास
महाभारत पर्व्व अलेह-	तथा मोटे अक्षरों की म-	सौदागर लीला	तुलसी शब्दार्थ प्रकाश
दा भी हैं	य तसवीर व क्षेपक	रासलीला	भजनावली
१- आदि पर्व्व	रामायण तुलसीकृत	नाटक	प्रेमरत्न
२- सभा पर्व्व	सातों काण्ड	प्रबोधचन्द्रोदय	युगुल बिलास
३- बन पर्व्व	१- बाल काण्ड	रामाभिषेक	चित्रचन्द्रिका
४- बिराट पर्व्व	२- अयोध्या काण्ड	आनन्दरघुनन्दन	बारहमासा बलदेव प्र॰

SRI RANBIR LIBRARY
No 6487
JAMMOO

भूमिका

विदित हो कि इस असार संसार में धर्म, अर्थ, काम, औ मोक्ष ये चार पदार्थ सार हैं इसीलिये सब मनुष्य अपनी २ रुचि के अनुसार इनकी प्राप्ति के लिये यत्न करते हैं इनमें धर्म प्रधान है धर्म के सेवन से ये चारों प्राप्त होते हैं औ धर्म की प्राप्ति अपने २ वर्ण औ आश्रमों के लिये कथित वैदिक कर्म के अनुष्ठान से सदा होती रही इसीलिये पूर्व काल में तीनों वर्णों के मनुष्य वेद पढ़ने में अति परिश्रम करते थे औ वेद पढ़ तदुक्त कर्म का अनुष्ठान कर अपना २ अभीष्ट फल पाते थे· परन्तु कलियुग के मनुष्य ऐसे अल्पायुष औ मन्द बुद्धि होंगे कि जो जन्म भर में अति परिश्रम करने से भी सम्पूर्ण वेद न पढ़ सकेंगे· यह विचार परम कारुणिक कृष्ण द्वैपायन मुनि ने वेद के चार भाग किये· इसी से उनका नाम वेद व्यास हुआ· औ वेद का आशय लेकर अठारह पुराण औ श्री महा भारत नाम इतिहास रचा जिन के पठन औ श्रवण से थोड़े से परिश्रम करने से ही कलियुग के २ आलस्य युक्त आर्य्यजनों को धर्म का ज्ञान भली भाँति हो जाता था· औ अपने २ धर्म का सेवन कर उत्तम फल पाते थे· परन्तु पुराण आदि का तात्पर्य्य समझने के २ लिये संस्कृत का ज्ञान चाहिये औ वर्त्तमान् काल में आर्य्य लोकों से प्रायः संस्कृत विद्या का अभ्यास छुट गया· इसी कारण पुराण आदि का परिशीलन नहीं कर सके औ वर्णाश्रम धर्म को नहीं जानते· जब धर्म का ज्ञान ही नहीं तो आचरण क्योंकर हो सक्ता है· औ धर्माचरण बिना आयुष् बुद्धि, बल, ऐश्वर्य्य तेज, विद्या, धन, पौरुष सन्तान कीर्ति आदि से हीन होते जाते हैं यह दुर्दशा अपने बन्धु आर्य्यजनों की देख औ सब पुरुषार्थ प्राप्ति का मूल ज्ञान पूर्वक धर्माचरण औ धर्म ज्ञान का मूल पुराण आदि का परिशीलन समझ औ आर्य्यजनों को प्रायः संस्कृत भाषा में अनभिज्ञ देख विजाति विज्ञ भारत वर्ष के परम हितैषी आर्य्यजनों के कल्याण में अहोरात्र तत्पर दूसर वंशावतंस अवध समाचार पत्र सम्पादक श्री मुन्शी नवलकिशोर साहब ने यह इच्छा की कि यदि सब पुराण संस्कृत से आर्य्य भाषा में अनुवाद हो कर मुद्रित हो जायँ तो सब आर्य्यजन उनका तात्पर्य सुगमता से जान सकें औ यथार्थ धर्म स्वरूप जान दुराचरण से बच सत्कर्म में प्रवृत्त रहें तो सब प्रकार के क्लेशों से छुट ईश्वर के अनुग्रह से अपरिमित आनन्द पावें· यह मन में निश्चय कर श्रीयुत मुन्शी साहब ने इस सत्कार्य्य में सत्कार पूर्वक हम को प्रवृत्त किया· हमने भी उन की इच्छानुसार लिङ्ग पुराण औ भविष्य पुराण का आर्य्य भाषा में अनुवाद किया

ऊो मुन्शी साहब ने अति स्वच्छता से मुद्रित कराया है· अब स्कन्दपुराण के अनुवाद का प्रारम्भ किया·परन्तु यह पुराण सब पुराणों में बड़ा है जिस की श्लोक संख्या ८११०० है औ एक स्थान में मिलता भी नहीं इसलिये जो २ खण्ड इस का मिलता जाय उसी का अनुवाद हो कर छपता जाय· यह विचार प्रथम हम ने इस पुराण के ब्रह्मोत्तर खण्ड का अनुवाद किया वह छप भी गया है अब यह सेतु खण्ड,अनुवाद हो कर छपा है· आगे भी पुरुषोत्तम खण्ड,रेवा खण्ड,काशी खण्ड,केदारखण्ड,अवन्ति खण्ड आदि जो २ खण्ड प्राप्त होते जायंगे उन का अनुवाद हो कर छपता जायगा औ ईश्वर के अनुग्रह से कुछ काल में यह बड़ा पुराण सम्पूर्ण अनुवादित हो जायगा· इस ग्रन्थ का अनुवाद हम ने अति सावधानता से किया है औ हमारे परम मित्र पण्डित वर श्री सरयूप्रसाद जी ने इस के शोधन का परिश्रम स्वीकार किया है· अब हम आशा रखते हैं कि सरल हृदय औ क्षमा शील सज्जन इस पुराण के पाठक आर्य्यजन दोषों पर दृष्टि न दे कर गुणग्रहण ही करेंगे औ ईश्वर के अनुग्रह से कल्याण भागी होंगे·शुभम्

इति

स्कन्दपुराण के सेतुखण्ड का सूचीपत्र

इति सेतु खण्डस्य सूचीपत्रम् ॥

श्रीगणेशायनमः ॥

स्कन्दपुराण

के

सेतुबन्धखण्ड का भाषाऽनुवाद ॥

पहिला अध्याय ॥

दो० विबुध मुकुट मणिदीपिका नीराजित दिन रैन ।
बिघन हरैं हेरम्बके चरण कमल सुख दैन ॥ १ ॥
भजौं नित्य गौरी गिरिश सकल सिद्धि के हेतु ।
भक्त मनोरथ कल्पतरु भवसागर के सेतु ॥ २ ॥

कथा ॥

शुक्लाम्बरधरंविष्णुं शशिवर्णंचतुर्भुजम् ।
प्रसन्नवदनंध्यायेत् सर्वविघ्नोपशान्तये ॥ १ ॥

नैमिषारण्यमें बड़े महात्मा मुमुक्षु ब्रह्मज्ञान में तत्पर अष्टाङ्ग योग में निपुण निर्मम धर्म्मज्ञ असूया आदि दोषों से रहित जितेन्द्रिय जितक्रोध सब भूतों पर दया करनेहारे शौनक आदि छब्बीस सहस्र मुनि अपने शिष्य प्रशिष्यों सहित भक्तिसे विष्णु भगवान् का पूजन करते हूवे उग्रतप करते थे एक समय मुक्ति के देनेहारे परमपुण्य उस क्षेत्रमें सब मुनियों का समाज एकत्र हुआ औरपरस्पर अनेकप्रकारकी कथा करनेलगे औरभुक्ति मुक्ति की प्राप्ति के लिये सुगम उपाय शोचनेलगे इसी अवसरमें बड़े विद्वान् व्यासजी के शिष्य सब पौराणिकों में उत्तम औरबड़े

तपस्वी श्रीसूतजी वहाँ आये उनको देख सबमुनि उठे औरबड़े आदर से सूतजी को आसनपर बैठाय पाद्य अर्घ्य आदि से उनका पूजनकर कुशलप्रश्न पूछा कुछ कालके अनन्तर सूतजी स्वस्थ भये तब शौनक आदि मुनीश्वरों ने पूछा कि हे सूतजी आपने सब पुराण श्रीवेदव्यासजी के मुखसे श्रवणकिये हैं इसकारण आप सब पुराणोंका तात्पर्य भलीभांति जानते हैं अब आप यह वर्णन करें कि भूमण्डल में कौन पुण्यतीर्थ है कौन पुण्यक्षेत्र है जीव संसारसागर से क्योंकर मुक्त होतेहैं शिव औरविष्णुमें दृढ़ भक्ति क्योंकर होसक्तीहै औ तीनप्रकार के कर्म्मका फल क्यों-कर सिद्धहोता है यह सब आप कृपाकर कथन कीजिये क्योंकि यह सब विषय व्यासजी ने आपको उपदेश किया होगा प्रिय शिष्यको गुरु रहस्यबात भी कहदेतेहैं यह मुनियोंका वचनसुन अपने गुरु श्रीवेदव्यासजी को प्रणामकर सूतजी कहनेलगे कि हे मुनीश्वरो आपने जगत् के हितके लिये यह बहुत उत्तम बात पूछी आजतक यह रहस्य हमने किसी से नहीं कहा अब आप एकाग्रचित्तहो भक्तिपूर्व्वक श्रवणकीजिये हम वर्णन करते हैं॥

रामचन्द्रके बांधेहुये सेतुके समीप सब क्षेत्र और तीर्थों में उत्तम रामेश्वर नाम क्षेत्रहै जिसके दर्शन मात्रसे शिव औरविष्णुमें भक्ति पुण्यकी वृद्धि तीनप्रकार के कर्म्मकी सिद्धि औरसंसार से मुक्ति होतीहै जो मनुष्य भक्तिसे सेतुका दर्शनकरै वह अपने माता पिताके दो कोटि कुलसहित एककल्प पर्य्यंत शिवलोकमें निवास कर अंतमें मुक्ति पाताहै भूमिके पांशु अर्थात् धूलिके कण गिन सकतेहैं आकाश के तारे भी गिनसकते हैं परन्तु सेतु दर्शन के पुण्यको शेषनाग भी नहीं गिनसकते सब देवताओंका रूप सेतुहै उसके दर्शन का संपूर्ण पुण्य कौन वर्णन करसकता है सेतुदर्शन करने से संपूर्ण यज्ञकरने का सब तीर्थों में स्नान करने का और

सबप्रकार के तपकरने का फल प्राप्त होताहै जो और मनुष्योंको
सेतु दर्शन करने के लिये उपदेश करै वह भी अनंतपुण्य पाताहै
सेतुके समीप स्नानकरनेहारा मनुष्य अपने सातकोटि कुलोंसहित
विष्णुलोकमें जाय वहाँही मुक्तहोताहै सेतु रामेश्वरलिंग औगंध-
मादन पर्ब्बत को चिन्तन करनेहारा मनुष्य सब पापोंसे छुटता
है माता पिता आदि लक्षकोटि कुलों सहित तीनकल्प शिवलोकमें
निवासकर वहाँही मुक्तहोताहै सेतु स्नान करनेहारा मनुष्य मृषा-
वस्था वसाकूप वैतरणी नदी श्वभक्ष मूत्रपान तप्तशूल तप्तशिला
पुरीषहृद शोणितकूप शाल्मल्यारोहण रक्तभोजन कृमिभोजन
स्वमांस भोजन वह्निज्वालाप्रवेशन शिलावृष्टि अग्निवृष्टि काल-
सूत्र क्षारोदक उष्णतोय आदि घोरनरकों को नहीं देखता महा-
पातकी पुरुष भी सेतु स्नानकरै तो माता पिताके सौकोटि कुल
सहित तीनकल्प विष्णुलोक में निवासकर वहाँही मुक्ति पावै
अधः शिर क्षारसेवन पाषाणयंत्रपीडन गर्तप्रपतन पुरीषलेप
क्रकचदारण पुरीषभोजन रेतःपान संधिदाह अङ्गारशय्या भ्रमण
मुसलमर्द्दन आदि नरकों को सेतुदर्शन करनेहारा मनुष्य नहीं
देखताहै जो पुरुष मनमें यह चिंतन करता रहै कि मैं सेतुबंध के
दर्शन के लिये जाऊंगा अथवा सेतुबंध यात्राके अर्थ सौ पैरभी
चलै वह सबपापोंसे मुक्तहो स्वर्गको जाताहै काष्ठयंत्र पीडन शस्त्र-
भेदन पतनोत्पतन गदादंडनिपीडन गजदंतहनन भुजगदंशन धू-
मपान पाशबंध शूलनिपीडन क्षारोदकसेचन क्षारांबुपान तप्तलोह
सूचिभक्षण स्नयुदाह स्नायुच्छेदन अस्थिभेदन श्लेष्मादन पित्त
पानमहातिक्तनिषेवणउष्णतैलपान क्षारोदकपानकषायोदकपान
तप्तपाषाणभोजन तप्तवालुकाभोजन दशनमर्दन तप्तलोहशयन
तप्तांबुनिषेचन आदि महानरकों को सेतुदर्शन करनेहारा नहीं
देखता औ जिन नरकोंमें पापियों के नेत्रोंमें सूचीडालते हैं शिश्न

औ वृषणोंमें लोहका भार लटकातेहैं पापियोंको वृक्षसे गिराते हैं तीखे शस्त्रोंकी शय्यापर सुलातेहैं औ वीर्य पिलातेहैं इत्यादि दारुणनरकों को सेतुमें स्नानकरनेहारा नहीं देखता सेतुके समीप बालूरेत में लोटनेसे जितने पांशुके कण देहमें लगें उतनी ब्रह्महत्याओं का नाश होजाता है जिसके शरीर में सेतुका पवन लगे उसके दशहजार सुरापान पातक उसीक्षण निवृत्त होजाते हैं जिसके केश सेतुके समीप जलमें गिरें उसके दशहजार गुरु-दारगमन नामक महापातक नाशको प्राप्त होतेहैं जिस पुरुष के अस्थियों को उसके पुत्र पौत्र सेतुबंधमें डालें उसके दशहजार स्वर्णस्तेयपातक दूरहोतेहैं औ स्नान के समय सेतुबंध का स्मरण करने से संसर्गज महापातक कटतेहैं मार्गभेदी अर्थात् रस्ता तोड़नेवाला केवल अपनेलिये रसोई बनानेवाला यति ब्राह्मणदूषक बहुत भोजन करनेवाला औ वेदबेचनेवाला येपांच ब्रह्मघातकहैं जो पुरुष ब्राह्मण को धन आदि कोई पदार्थ देना अंगीकार करके फिर न देवै जो धर्मोपदेश करनेहारे गुरुसे द्वेष करै औ जो ब्राह्मणों का तिरस्कारकरै वेभी ब्रह्मघाती होतेहैं जो पानी पीनेके लिये आतेहुये गोसमूह को निवारणकरै वह भी ब्रह्महा है ये सब पापी सेतुदर्शन करनेसे निष्पापहोजातेहैं उपासना त्यागनेहारा देवताके अन्नको भोजन करनेहारा वेश्या पतित समूह आदिका अन्नभक्षण करनेवाला औरसुरापानकरने-हारी स्त्रीसे संग करनेहारा येसब सुरापान करनेहारे के समान हैं ये सब सेतुस्नान करने से निष्पाप होजाते हैं कंद मूल फल कस्तूरी पट्टवस्त्र दूध चंदन कपूर सुपारी शहत घी ताँबा कांस्य औ रुद्राक्षकी चोरी करनेहारे सुवर्णस्तेयी गिनेजाते हैं येभी सेतु-दर्शनसे निष्पाप होतेहैं औरभी किसी द्रव्यकी चोरी करनेहार दुष्ट पुरुष सेतु के दर्शन करतेही सब पापों से छुटजाते हैं

बहिन पुत्रकीस्त्री भाईकीस्त्री मित्रकीस्त्री रजस्वला परस्त्री मद्यपान करनेहारीस्त्री हीनवर्णकी स्त्री औ विधवास्त्री से संगकरनेहारे पुरुष गुरुदारगामी कहाते हैं ये सब सेतु स्नानसे निष्पाप होजाते हैं जोइनके संसर्गीहैं वेभी सेतुदर्शन करनेसे पापरहित होतेहैं जो पुरुष यज्ञ बिनाकिये स्वर्ग में मेनका घृताची आदि अप्सराओं के साथ बिहार करनाचाहैं वे सेतुमें स्नानकरें सूर्यऔ अग्निको बिना सेवन किये औ देवताओं के आराधन बिना जो पुरुष अपना कल्याण चाहै वह भक्तिसे सेतु स्नानकरै तिलभूमि सुवर्ण औ अन्नदान किये बिना जो स्वर्गचाहैं वे सेतु स्नानकरैं उपवास ब्रत आदि करके शरीरको संतापदिये बिना स्वर्ग की इच्छाहोय तो सेतु स्नानकरो सेतु स्नानकरने से मनकी शुद्धि होतीहै औ मोक्ष प्राप्तहोता है जप होम दान यज्ञ तप आदिसे सेतु स्नानको पुराणमें उत्तम कहाहै जो पुरुष निष्कामहो सेतु स्नानकरै उसके सब पाप निवृत्त होतेहैं औ पुनर्जन्मभी नहींहोता औ जो पुरुष संपत्तिके लिये सेतुस्नानकरै वह बड़ी संपत्तिपाता है शुद्धिके लिये स्नानकरै तो शुद्धिपावै मुक्तिकेलियेकरै तो मुक्ति पावै औ अप्सराओं के साथ रतिके लिये सेतस्नानकरै तो स्वर्ग में जाय अप्सराओंके साथ उत्तमभोगभोगै सेतुस्नानसे पापका क्षय धर्म की वृद्धि औ सब मनोरथों की सिद्धि होतीहै सब ब्रत यज्ञ योग औ तीर्थोंसे सेतुस्नान बढ़करहै ब्रह्मलोक वैकुंठकैलास अथवा इंद्रादिलोकों में जिनकी बिहारकरने की इच्छाहो वे सेतु स्नान करैं आयुष् आरोग्य संपत्ति अतिरूप सांगवेदोंका ज्ञान सब शास्त्रोंकाबोध सब मंत्रोंमें अभिज्ञता इत्यादि जिस कामनाके उद्देश से सेतुस्नानकरै वह कामना अवश्यही सिद्धहोय जो पुरुष दारिद्र्य औ नरकसे डरतेहैं वे सेतुस्नानकरैं श्रद्धासे अथवा बिनाश्रद्धा सेतुस्नान करनेहारा मनुष्य दुःखभागी नहींहोता सेतु

करनेवाला

स्नानसे सबके पापसमूह नष्टहोतेहैं औ शुक्लपक्षके चंद्रकी भांति पुण्य बढ़ताहै जैसे समुद्रमें रत्नोंकी वृद्धिहोती है इसीभांति सेतु स्नान करने से धर्मकी वृद्धि होती है कामधेनु कल्पवृक्ष अथवा चिंतामणि जिसप्रकार मनुष्योंके सब मनोरथ सिद्धकरते हैं इसी भांति सेतुस्नानभी सबकामना सिद्धकरनेहाराहै जो पुरुष दारिद्र्य से सेतुयात्रा करने को समर्थ न होंय वे और मनुष्योंसे धनमांग-कर सेतु यात्राकरैं जो पुरुष सेतुयात्रा करने वालेको धनदेवैं वे भी सेतु स्नानके समान फल पातेहैं सेतु यात्राके लिये ब्राह्मणसे धन लेवै ब्राह्मण न देवै तो क्षत्रिय से क्षत्रिय भी न देवै तो वैश्य से धन माँगै परंतु शूद्रसे कभी धन न लेवै सेतुयात्रा करनेहारे पुरुषको जो पुरुष धन धान्य वस्त्र भोजन आदिदेवैं वे अश्वमेध आदियज्ञों का फल पातेहैं औ तुला पुरुष आदि महादान करने का औरचारों वेदोंके पारायण काभी फलपातेहैं सेतुस्नान से ब्रह्महत्या आदि पातक दूरहोतेहैं औ सब मनोरथ सिद्ध होतेहैं सेतुयात्रा के लिये जो याचनाकर धनलेवै औ यात्राकरै उसको प्रतिग्रह लेनेका दोषनहीं होता औरसेतुस्नानका भी संपूर्ण फल होताहै जो पुरुष किसीसे कहै कि तू सेतु यात्राकर मैं तुझेधन दूंगा औ पीछेसे धन न देवै वह ब्रह्मघातक होताहै औ जो यात्रा के लिये याचना करके धनलेवे और यात्रा न करै वहभी ब्रह्मघातक है जो धनवान् होकर लोभ से यात्रा के लिये धन मांगता फिरै वह चोरहै जिस किसी उपाय से सेतुयात्राकरै जो यात्रा करने का अपने को अवसर न होय तो दक्षिणा देकर ब्राह्मण से सेतुयात्रा करावै धन मांगकर यज्ञ करनेमें जिसभांति दोष नहीं इसी प्रकार सेतुयात्रा में भी याचन करने का दोष नहीं औरोंसे द्रव्य याचना करके भी मनुष्यों को सेतुस्नान में प्रवृत्त करै सत्ययुग में ज्ञानसे त्रेता में यज्ञ करने से द्वापर में

दान देनेसे मोक्ष मिलता है औ सेतुस्नान से चारोंयुगों में मोक्ष प्राप्ति होती है॥

दूसरा अध्याय॥

शौनक आदि ऋषि पूछतेहैं कि हे सूतजी रामचन्द्रजीने अगाधसमुद्र में क्योंकर सेतु बांधा औ सेतु में गंधमादन पर्व्वत के बीच कितने तीर्थ हैं यह आप वर्णनकरैं यह ऋषियों का वचन सुन सूतजी कहनेलगे कि हे मुनीश्वरो रामचन्द्रजी ने जिसभांति समुद्र में सेतुबांधा वह हम वर्णन करतेहैं आप प्रीति पूर्वक श्रवणकरैं पिताकी आज्ञासे दण्डकारण्य में पंचवटी के बीच कुटी बनाय सीता और लक्ष्मण सहित रामचन्द्रजी ने निवासकिया वहांही मारीच के छलसे रावण ने सीता को हरा रामचन्द्रभी बनमें सीताको ढूंढ़ते २ शोक मोहसे व्याकुल पंपासरके तीर पर पहुंचे वहां एक बानर को देखा उस बानर ने भी रामचन्द्र से पूछा कि आप कौनहैं तब रामचन्द्र ने अपना सब वृत्तांत कहा औ बानर कोभी पूछा तब वह बानर कहनेलगा कि हे राम बानरों के राजा सुग्रीवका मैं मंत्रीहूं औ हनूमान मेरानाम है औ आपके पासमुझे भेजाहै वह आपसे मैत्री चाहतेहैं इसलिये आपको वहां चलना चहिये यह हनूमान का वचनसुन रामचन्द्र सुग्रीवके पासगये औ उस्के साथ अग्निसाक्षी से मैत्रीकर बालि को मारने की प्रतिज्ञा की औ सुग्रीवने सीताका ढूंढ़ना अंगीकार करा इसभांतिदोनोंप्रतिज्ञाकर बड़ेस्नेहसे ऋष्यमूकपर्व्वतमें रहने लगे सुग्रीवके निश्चय के लिये दुन्दुभि नाम राक्षसके शरीर को पैर केअंगूठेसे रामचन्द्रने कई योजन फेंकदिया औ एक बाणसे साततालके वृक्ष बेधे तब सुग्रीव ने प्रसन्न हो कहा कि हे राम आपको मित्रकर अब मुझे इंद्र आदि देवताओं सेभी भयनहींहै मैं

रावण को मार अवश्य सीताको लाऊंगा फिर राम लक्ष्मण को साथले सुग्रीव किष्किन्धा में गया औ गर्जने लगा बाली भी उसके गर्जने को पहिचान क्रोध कर अन्तःपुर से निकला औ अपने छोटेभाई सुग्रीवसे युद्धकरनेलगा बालीने एकमूका सुग्रीव के ऐसा मारा कि वह विह्वल हो भगा और रामचन्द्रके समीप पहुंचा तब रामचन्द्रने एकमाला सुग्रीवको पहिनायदी औरफिर युद्ध करनेकेलिये भेजा सुग्रीव भी जाय बाली के साथ बाहु युद्ध करनेलगा इसी अवसर में रामचन्द्रने एक बाण ऐसामारा कि बाली गिरपड़ा औमरगया किष्किन्धा का राज्य सुग्रीवने पाया वर्षाऋतु व्यतीत होनेके अनंतर बहुतसी बानरों की सेना साथले सुग्रीव रामचन्द्र के पास आया औसीता के ढूंढ़ने को बानरों को भेजा उनमें हनूमान् लंकामें पहुंचे औ सीताजीको देखा औ उनका दिया चूड़ामणि लाकर रामचन्द्र को दिया उसको देख रामचन्द्रको हर्ष औ शोक एकही कालमें हुए फिर लक्ष्मण सुग्रीव हनूमान् जाम्बवान् आदिको संगले रामचन्द्रजीने अभिजित् मुहूर्त में लंकाकी ओर प्रस्थान किया औ कई देशोंको लंघनकर महेंद्र पर्व्वत में पहुंचे वहाँ चक्रतीर्थ पर निवास किया वहांही रावण का भाई विभीषण अपने चार मंत्रियों समेत रामचन्द्रजी से आमिला रामचन्द्रजी ने विभीषण का बड़ा आदरकिया परंतु सुग्रीव के मनमें संदेह हुवा कि यह रावण का दूत न होय तब रामचन्द्रजी ने सुग्रीवका सन्देह दूरकिया औ अनेक युक्तियों से विभीषण को निष्कपट जान अपने समीप रक्खा और सम्पूर्ण राक्षसोंका राजा बनाय सुग्रीव के समान उसकोभी अपना मंत्री बनाया रामचन्द्र जी ने सब बानरों से यह पूछा कि समुद्र लंघन करने का क्या उपाय कियाजाय बानरों की सेनाभी बहुत बड़ी औ समुद्र भी दुस्तरहै जिसमें बड़े तरंग उठ रहे हैं मत्स्य शंख

शुक्ति नक्र आदि जीवों से भरा है कहीं बड़वाग्नि करके भयं-
कर है किसीओर बड़े २ तरंग उठते हैं कहीं प्रलय के मेघ
गर्जरहे हैं औरसौ योजन इस्का विस्तार है सबसेना सहित
हम क्योंकर इस्के पारहोंगे यह बड़ाभारी विघ्नबीचमें है सीता
क्योंकर प्राप्तहोंगी कौनउपाय कियाजाय जिससे समुद्रके पार
होंय बड़ाकष्ट हमारे ऊपर पड़ा राज्य से भ्रष्टभये बनमें आये
पिता मरगये औ भार्य्या हरीगई ये सबदारुण दुःख तो थेही
सबसे अधिक दुःख यह पड़ा कि समुद्रलंघन किसभांति होय
इस समुद्रके गर्जने को धिक्कार है कि जो हमारा दुःख नहीं
देखता औरअगस्त्यजीने कहाथा कि हे राम तुमरावण को मार-
कर पापनिवृत्त होनेके लिये गंधमादन पर्ब्बत में जाना यहमुनिका
वचन क्योंकर मिथ्या होसकता है इतनी कथा सुनाय सूतजी
बोले कि हेमुनीश्वरो रामचन्द्रजीका यह वचन सुन सुग्रीवआदि
बानर हाथजोड़ बोले कि महाराज नौका औरप्लवों करके सब
सेना पारहोजायगी आप क्यों चिन्ता करतेहैं तब बिभीषण ने
कहा कि समुद्र का लंघन नौकाआदिसे नहीं होसकता इसका
यह उपाय है कि रामचन्द्रजी समुद्रके शरण में प्राप्तहोंय क्यों-
कि रामचन्द्र के पूर्व पुरुषों ने समुद्र को खोदाहै इसलिये समु-
द्रभी सगर बंशका अवश्यही सहाय करैगा यह बिभीषण का
वचन सुन सब बानरोंको आश्वासन करतेहुये रामचन्द्र बोलेकि
सौ योजन समुद्र का बिस्तार है इससे नौका आदि करके सब
सेना नहींपार होसकती औरइतनी नौकाभी कहांहैं कि जिनमें
सब सेना बैठजाय औरब्यापारियों को क्लेशदेना और उनकी
नौका छीनना हमको अंगीकार नहीं औरनौका आदिपर चढ़कर
समुद्र में प्रवेशकरतेही कदाचित् शत्रु प्रहारकरैं तो न इधर के न
उधर के इससे विभीषण का कथनही हमको उत्तम देखपड़ता

है पहिले हम समुद्रकी उपासना करते हैं जो हमको उपासना करनेसे भी मार्ग्ग न देगा तो आग्नेयास्त्र से समुद्र को दग्धकरदेंगे यह बिचार कर पवित्रहो आचमनकर लक्ष्मण सहित रामचद्रजी कुशाके बिछौनेपर समुद्र तटके ऊपर सोयगये इसप्रकार निराहार तीनदिन तीनरात्रि उसी कुशाके बिछौने पर सोतेरहे औ समुद्रका उपासन करतेरहे परंतु समुद्रने रामचंद्रजीको दर्शन न दिया तब कोपकर लक्ष्मण से रामचंद्रजी ने कहा कि आज हम शंख शुक्ति मकर मत्स्य आदि जीवों समेत समुद्रको अपने बाणों से शुष्क करेंगे क्षमाकरके युक्त हमको समुद्र असमर्थ जानता है इसलिये ऐसे में क्षमाकरना अनुचित है हे लक्ष्मण हमारा धनुषलाओ कि हम समुद्र को सुखादेवें औ हमारी सेना पैरोंसेही पार उतरजाय बड़े २ दैत्यमहामकर औ ऊंचे २ तरंगों करके युक्त इस निर्मर्यादसमुद्र की आज हम मर्यादा तोड़ते हैं इतना कह रामचंद्रजी ने क्रोधकर धनुषपर बाण चढ़ाया उस समय उनका स्वरूप ऐसा दुर्धर्ष था जैसा त्रिपुर बधके समय शिवजीका होय फिर कोपसे धनुष को खैंच तीनोंलोकों को कंपित करते हुये समुद्रपर बाण छोड़नेलगे उन बाणोंके लगतेही भयभीतहो समुद्र पाताल से निकल रामचंद्रजी के शरण में आया औ ब्राह्मण रूपधार हाथजोड़ रामचंद्रजीकी स्तुतिकरने लगा (समुद्रउवाच। नमामितेराघवपादपंकजं सीतापतेसौख्यदपादसेविनाम्। नमामितेगौतमंदारमोक्षदं श्रीपादरेणुंसुरवृन्दसेव्यम् १ सुन्दप्रियादेहविदारिणेनमो नमोस्तुतेकौशिकयागरक्षिणे। नमोमहादेवशरासभेदिने नमोनमोराक्षससंघनाशिने २ रामरामनमस्यामि भक्तानामिष्टदायिनम्। अवतीर्णोरघुकुले देवकार्यचिकीर्षया ३ नारायणमनाद्यन्तं मोक्षदंशिवमच्युतम्। रामराममहाबाहोरक्षमांशरणागतम् ४) इसभांति स्तुतिकर

समुद्र बोला कि हे रामचंद्र हे दयाके सागर तुम कोपको निवृत्त करो औ मेरी रक्षाकरो मैं आपके शरणमें प्राप्तहूँ भूमि वायु तेज आकाश आदिका विधाताने जो स्वभाव रचाहै वे उसीमें स्थिरहैं इसीभांति मेरा स्वभाव अगाधता (अर्थात् जिसके तलको कोई स्पर्श न करसके) है लोभसे कामसे भयसे औ रागसे मैं अपने स्वभावको कभी नहीं त्याग सक्ता परंतु आपकी सेना उतरने के लिये अवश्य सहायता करूंगा यह समुद्रका वचन सुन रामचंद्र जीने कहा कि हे समुद्र तुम शुष्क होजाओ जिससे हम सेना सहित लंकामें पहुंचे तब समुद्रने फिर प्रार्थनाकरी कि महा-राज जो उपाय मैं कहूं वह आप कीजिये जो मैं आपकी आज्ञा से शुष्क होजाऊं तो जो आवैगा वही मुझे धनुषका बल दिखावैगा औ सूखने की आज्ञा देगा इसलिये आपकी सेना पारहोने का मैं उपाय कहता हूं आपकी सेना में विश्वकर्मा का पुत्र बड़ा शिल्पी अर्थात् कारीगर नल नामक एक बानर है वह जो तृण काष्ठ पाषाण आदि जलमें फेंकेगा उसको मैं धारण करूंगा वही सेतु बन जायगा उसी सेतुसे सेना सहित तुम लंका को जाओ इतना कह समुद्र अन्तर्द्धान हुआ औ रामचन्द्रजी ने नलसे कहाकि तू समुद्र में सेतु बांधने को समर्थ है इसलिये सेतुबांध तब नल कहनेलगा कि हे रामचन्द्रजी आपकी आज्ञा से समुद्रमें मैं सेतु बांधसकता हूं मेरे पिता विश्वकर्म्मा ने मुझे वर दियाहै औ मेरी माता को भी वर दियाहै कि मेरे तुल्य शिल्पी तेरा पुत्र होगा मैं विश्वकर्म्माका औरस पुत्रहूं औ विश्वकर्म्मा के समानहूं इसलिये अबहीं सेतु बांधताहूं यह नलका वचन सुन रामचन्द्रजी ने बानरों को आज्ञा दी औ बानर भी क्षणभरमें हजारों पर्ब्बतों के शृङ्ग वृक्ष बेल तृण आदि लेआये औ नलने समुद्रके ऊपर रामचन्द्र की आज्ञा से दशयोजन चौड़ा औ सौ

योजन लम्बा सेतुबांधा उस रामचन्द्रजीके बँधवायेहुये सेतुका जो मनुष्य दर्शनकरें वे सब पातकों से छुटजाते हैं सेतु दर्शन से जैसे शिवजी प्रसन्न होतेहैं ऐसे ब्रत दान तप होम आदि करके प्रसन्न नहीं होते सूर्य्यके तेजके समान जैसे कोई तेज नहीं इसी भांति सेतु स्नानके तुल्य स्नान नहीं जहां रामचन्द्रजी ने सेतु बांधा औरजहां कुशशय्यापर सोये वहीपीछे लोकमें प्रसिद्धबड़ा तीर्थ हुआ सूतजी कहतेहैं कि हे मुनीश्वरो यह हमने सेतुबंधन की कथा कही सेतुबंध के समीप इतने तीर्थहैं कि जिन सबकी गणना शेषजी भी अपनी हजार जिह्वा से नहीं कर सकते परंतु जो तीर्थ वहां मुख्य हैं उनका हम माहात्म्य कहते हैं वहां चौबीस तीर्थ प्रधान हैं चक्रतीर्थ बेतालबरद पापबिनाशन सीतासर मंगलतीर्थ अमृतवापिका ब्रह्मकुंड हनुमत्कुंड अगस्त्य तीर्थ रामतीर्थ लक्ष्मणतीर्थ जटातीर्थ लक्ष्मीतीर्थ अग्नितीर्थ शक्र तीर्थ शिवतीर्थ शंखतीर्थ यमुनातीर्थ गंगातीर्थ गयातीर्थ कोटि-तीर्थ साध्यामृततीर्थ मानसतीर्थ औ धनुष्कोटितीर्थ ये चौबीस तीर्थ सेतुके समीप प्रधान हैं औ महापातक हरनेहारे हैं जिस प्रकार रामचंद्रजीने सेतुबांधा औ जो २ वहां प्रधानतीर्थहैं वह सब हमने वर्णनकिया जिसके श्रवण से मनुष्य मुक्तिपाते हैं जो भक्ति पूर्वक इस अध्यायको पढ़ै अथवा श्रवण करै वह जयपाता है और जन्म मरण के क्लेशसे छुटता है ॥

तीसरा अध्याय॥

शौनकआदि ऋषि पूछते हैं कि हेसूतजी आपने चौबीसतीर्थ सेतुके समीप कहे उनमें प्रथम तीर्थ का नाम चक्रतीर्थ क्योंकर हुआ यह आप वर्णनकरें यह मुनियों का वचनसुन सूतजीबोले कि हे मुनीश्वरो चौबीस तीर्थोंमें जो प्रथमतीर्थ है उसके स्मरण

करने से गर्भ में वास नहीं होता औ उस तीर्थ में स्नान आदि करनेसे लाखों जन्मोंमें कियेपाप दूरहोते हैं उस तीर्थसे अधिक अथवा उसके समान जगत् में कोई तीर्थ नहीहै गंगा सरस्वती नर्मदा पंपा गोदावरी यमुना कावेरी मणिकर्णिका आदि बड़े २ तीर्थ औ उत्तम २ नदी इस तीर्थके कोटिभाग के भी तुल्य नहीं हैं उसतीर्थ का पहिला नाम धर्मतीर्थ है उसकी जिसभांति चक्र तीर्थ संज्ञाभई वह वर्णन करते हैं सेतुमूल के समीप जहां दर्भ शयनहै वहांही चक्रतीर्थ है पूर्वकालमें विष्णुभक्त गालवमुनिने दक्षिण समुद्र के किनारे हालास्य फुल्लग्राम क्षीरसर धर्मपुष्क-रिणी आदि तीर्थों में बहुत काल तप किया निरन्तर वेद पढ़ता दयायुक्त सत्यवादी जितेंद्रिय सब भूतोंको अपने तुल्य समझता विषयों से निस्पृह सब जीवों के हित में तत्पर गालवमुनि तप करनेलगा बहुतकाल तक निराहार रहा बहुतकाल वृक्षका एक सूखा पत्ता खाकर रहा कुछ काल जलाहार रहा औ बहुत काल तकवायु भक्षण कर तप किया पांच हजार वर्ष इस भांति घोर तप करके फिर पांच हजार वर्ष निराहार दृष्टि औ श्वास रोंक कर तपकिया वर्षाऋतुमें वर्षामें रहना हेमंतमें जलकेबीच शयन करना और ग्रीष्म में पंचाग्नि तपना इसभांति हृदय में विष्णु-भगवान् का ध्यान औ अष्टाक्षर मंत्रका जप करते बड़ा उग्रतप किया तप करते २ गालव मुनिको लाखोंवर्ष बीते तब उसके तपसे प्रसन्न हो शंख चक्र गदा पद्म धारे कोटि सूर्य के समान प्रकाशित गरुड़परचढे छत्र चामर हार केयूर कटक मुकुटकुंडल आदिसे भूषित विष्वक्सेन सुनंद आदि सेवकों करके युक्त वेणु वीणा मृदंग आदि बाजे बजाते औ गातेहुये नारद आदि मुनियों करके सेवित पीतांबर पहिने लक्ष्मी करके शोभित मेघकेसमान नीलवर्ण दोनों ओर सनक आदि महा योगियों करके सेवित

एक हाथसे कमलको हिलाते मंदहाससे तीनोंलोकों को मोहित करते अपनी कांतिसे दशों दिशाओं को प्रकाशित करते कंठ में कौस्तुभ मणिकरके भूषित सुवर्ण की छड़ी हाथ में धारे हजारों कंचुकियों करके युक्त भक्तवत्सल विष्णुभगवान् गालवमुनि के संमुख प्रकटहुये गालवमुनिभी भगवान्के दर्शनपाय आनंद में मग्नहो परमभक्तिसे स्तुतिकरनेलगा (गालवउवाच। नमोदेवाधिदेवायशंखचक्रगदाभृते। नमोनित्यायशुद्धाय सच्चिदानंदरूपिणे१ नमोभक्तातिहंत्रेते हव्यकव्यस्वरूपिणे। नमस्त्रिमूर्तयेतुभ्यं सृष्टिस्थित्यंतकारिणे २ नमःपरेशायनमोविभूम्ने नमोस्तुलक्ष्मीपतये विधात्रे। नमोस्तुसूर्येन्दुविलोचनाय नमोविरंच्याद्यभिवंदिताय३ योनामजात्यादिविकल्पहीनः समस्तदोषैरपिवर्जितोयः। समस्तसंसारभयापहारिणे तस्मैनमोदैत्यविनाशनाय ४ वेदांतवेद्यायपरमेश्वराय वैकुंठवासायविधातृपित्रे। नमोनमःसर्वजनार्तिहारिणे नारायणायामितविक्रमाय ५ नमस्तुभ्यंभगवतेवासुदेवायशार्ङ्गिणे। भूयोभूयोनमस्तुभ्यंशेषपर्यंकशायिने ६। इति) इसभांतिस्तुति कर गालवमुनि भगवान् का ध्यान करनेलगे भगवान् भी स्तुति सुनकर परम प्रसन्नहो प्रीतिसे मुनिको आलिंगनकर कहनेलगे कि हेगालव तेरे तपसे औ स्तोत्रसे हम बहुत प्रसन्नहुये अब जो तेरी इच्छाहोय सो बरमांग यह भगवान् का वचनसुन गालव मुनि प्रार्थना करनेलगा कि हेनारायण हेजगन्नाथ हेगोविंद मैं आपके दर्शनसे कृतार्थ हुआ औ सब जगत्में श्रेष्ठहुआ अधर्मी पुरुष आपको नहीं देख सकते औ ब्रह्मा शिव इंद्र आदि देवता भी आपका तत्वनहीं जानते योगी औ कर्मनिष्ठ आपका दर्शन नहीं पासकते तीनों वेदभी आपका भलीभांति प्रतिपादन नहीं करसक्ते औ मैंने साक्षात् आपका दर्शनपाया इससे अधिक और क्या बर होगा मैं अपने को आपके दर्शनसेही कृतार्थ मानताहूं

जिनके नाम स्मरण से महापातकी भी मुक्ति पातेहैं उनका मैं साक्षात् दर्शन करता हूँ अब यही बर चाहताहूं कि आपके चरणारविंद में दृढ़भक्तिहोय यह गालव का वचनसुन भगवान् ने कहा कि हेगालव हमारे में तेरी निष्काम दृढ़भक्ति होगी और सब कर्मका फल मेरे अर्पण करताहुआ औरमेरे ध्यानमें आशक्त इस देहके अंतमें मुझमें लीनहोगा अब तू इसी आश्रममें निवासकर यह धर्मपुष्करिणी सब पाप हरनेहारी है इसके तीर पर तप करने से अवश्यही सिद्धि होगी पूर्वकाल में दक्षिण समुद्र के तटपर महादेवजीकी प्रसन्नता के लिये यहां बहुत कालतक धर्मने तप कियाहै औरयह तीर्थ स्नानके लिये रचा इसीसे इस का नाम धर्मपुष्करिणी हुआ जिस प्रकार हमारी प्रसन्नता के लिये तैंने तपकिया इसी भांति शिवजीके प्रसाद के अर्थ धर्मने बहुत तपकिया तब प्रसन्नहो शिवजीने धर्मको दर्शनदिया धर्म भी दर्शनपाय परम संतुष्टहो भक्तिसे शिवजीकी स्तुति करने लगा (धर्मउवाच । प्रणमामिजगन्नाथ मीशानंप्रणवात्मकम् । समस्तदेवतारूप मादिमध्यांतवर्जितम् १ ऊर्ध्वरेतसंविरूपाक्षं विश्वरूपंनमाम्यहम् । समस्तजगदाधार मनंतमजमव्ययम् २ यमामनंतियोगींद्रास्तं वंदेपुष्टिवर्द्धनम् । नमोलोकाधिनाथायवंचतेपरिवंचते ३ नमोस्तुनीलकंठाय पशूनांपतयेनमः । नमःकल्मष नाशाय नमोमीढुष्टमायच ४ नमोरुद्रायदेवाय कद्रुद्रायप्रचेतसे । नमःपिनाकहस्ताय शूलहस्तायतेनमः ५ नमश्चैतन्यरूपाय पुष्टीनांपतयेनमः । नमःपंचास्यदेवाय क्षेत्राणांपतयेनमः ६)इसप्रकार धर्मके मुखसे स्तुति सुनकर महादेवजी प्रसन्न हो कहनेलगे कि हे धर्म हम तेरे इस तप औरस्तोत्रसे बहुत प्रसन्न हुये अब जो बर तू चाहै वह मांग तब धर्मने प्रार्थनाकरी कि हेनाथ मैं सदा आप का बाहन होकररहूं यही बर चाहताहूं औरइसीबरसे मैं कृतार्थ

होजाऊंगा यह धर्मकी प्रार्थनासुन श्रीमहादेवजी ने कहा कि हे धर्म तू हमारा बाहन हो और हमारे धारण करनेकी तुझमें शक्ति होय तेरी सेवा करनेवाले पुरुषोंकी हमारेमें दृढ़भक्ति होजायगी यह महादेवजीकी आज्ञापातेही धर्मने वृषका रूपधार महादेव जीको अपने ऊपर चढ़ालिया महादेवजीभी उसपर चढ़ प्रसन्न हो कहनेलगे कि हेधर्म दक्षिण समुद्र के तीरपर जो तीर्थ तैंने बनाया वह धर्मपुष्करिणी नामसे लोकमें प्रसिद्ध होगा इसके तटपर किये हुये जप होम दान वेदपाठ आदि धर्म कृत्य अनंत फल को देनेहारे होंगे इतना वर इस तीर्थको दे उसी वृषरूप धर्मके ऊपरचढ़ेहुये महादेवजी कैलासकोगये इतनी कथासुनाय विष्णुभगवान् ने कहा कि हे गालव तूभी इसी धर्मपुष्करिणी के तटपर जबतक शरीर रहै तबतक निवासकर पीछे हमारेलोक में प्राप्त होगा जो यहां कुछ तुझे भय होगा तो हमारी आज्ञासे सुदर्शनचक्र तेरे भयको निवृत्त करैगा इतनाकह विष्णुभगवान् अंतर्धान भये सूतजी कहतेहैं कि हे मुनीश्वरो विष्णुभगवान् के अंतर्धान होनेके अनंतर गालवमुनिभी धर्मपुष्करिणी के तटपर तीनकाल शालग्राम शिलामें विष्णुभगवान्‌का पूजन करता औ विरक्तहो विष्णुभगवान् का ध्यानकरता एकदिन माघ शुक्ल एकादशी का उपवासकर जागरण किया औ विष्णु भगवान्‌का पूजन किया द्वादशी को प्रभातही स्नानकर धर्म्मपुष्करिणी के तीरपर संध्यावन्दन आदि कर्म्मकर भांति २ के पुष्प औ तुलसी दल लाकर विष्णुभगवान् का भक्तिसे गालवमुनिने पूजनकिया औ स्तुति करनेलगा (गालवउवाच । सहस्रशिरसंविष्णुंमत्स्य रूपधरंहरिम् । नमस्यामिहृषीकेशंकूर्म्मवाराहरूपिणम् १ नार सिंहंवामनाख्यंजामदग्न्यंचराघवम् । बलभद्रंचकृष्णंचकल्कि विष्णुंनमाम्यहम् २ वासुदेवमनाधारंप्रणतार्तिविनाशनम् ।

आधारंसर्वभूतानां प्रणमामिजनार्दनम् ३ सर्वज्ञंसर्वकर्तारंसच्चिदानन्दविग्रहम्। अप्रतर्क्यमनिर्देश्यं प्रणतोस्मिजनार्दनम् ४) इस भाँति भगवान् की स्तुति कर गालवमुनि धर्मपुष्करिणी के तीरपर विष्णुभगवान् का ध्यान करनेलगा इसी अवसर में एक राक्षस भूखसे व्याकुल वहाँ आ निकला औ गालवमुनि को देख बहुत प्रसन्न हुआ औरदौड़कर मुनि को जा पकड़ा गालवमुनि भी अपनी यहदशा देख पुकारने लगा कि हे नारायण हे करुणासिंधो हे शरणागतपालक हे दामोदर हे लक्ष्मीकांत हे गरुडध्वज जिस भाँति आपने प्रह्लादकी रक्षा करी औरग्राहसे गज को छुटाया इसीभाँति इसदुष्ट राक्षस से मेरे प्राण बचाइये इस प्रकार गालवमुनि को भयभीत जान विष्णुभगवान् ने उसकी रक्षा के लिये सुदर्शनचक्र को आज्ञादी आज्ञा पातेही अनेक सूर्यों के समान प्रकाशवान् सुदर्शनचक्र घोर शब्द करता हुवा धर्मपुष्करिणी के तटपर आया उसको देखतेही वह राक्षस भगा परंतु सुदर्शन ने उसका शिर काटदिया गालवमुनि राक्षस को भूमिपर गिरेदेख अति प्रसन्न हो सुदर्शन चक्रकी स्तुति करनेलगा (गालवउवाच। विष्णुचक्रनमस्तेस्तुविश्वरक्षणदीक्षित।नारायणकराम्भोजभूषणायनमोस्तुते १ युद्धेष्वसुरसंहारकुशलायमहारव।सुदर्शननमस्तुभ्यंभक्तानामार्तिनाशिने २ रक्षमांभयसंविग्नंसर्वस्मादपिकल्मषात् ३) इतनी स्तुति कर गालव मुनिने कहा कि हेविष्णुचक्र हेप्रभो आप जगत् केकल्याण के अर्थ इस धर्मतीर्थ में विराजमान होंय यह गालवमुनि का वचन सुन बड़ी प्रीतिसे सुदर्शनचक्र बोला कि हेगालव यह धर्मतीर्थ बहुत पुण्यप्रदहै इसलिये लोकों के हित के अर्थ में इसमें निवास करूंगा तेरीपीडा देख विष्णुभगवान् ने मुझको भेजा मैंनेभी शीघ्र आकर तेरी रक्षाकरी औरइस दुष्ट राक्षस को मारा तू विष्णुभ-

गवान् का परमभक्त है अब इस धर्मपुष्करिणी में लोक रक्षा के अर्थ मैंसन्निधान करताहूं मेरे सान्निध्यसे तुझको औरऔरभी जीवों को यहां भूत राक्षस आदिकी बाधा न होगी यह धर्मपुष्करिणी पूर्वकाल में धर्मने देवीपत्तन पर्यंत बनाईहै इस सब स्थान में मैं निवास करूंगा औरमेरे सान्निध्य से इसका नाम चक्रतीर्थ होगा जो पुरुष भक्तिसे इस चक्रतीर्थमें स्नान करेंगे उनके वंशके सब मनुष्य निष्पाप हो विष्णुलोकको जांयगे जो पुरुष यहां पितरों के उद्देश से पिंडदान करेंगे वे अपने पितरों सहित स्वर्ग में प्राप्तहोंगे इतना कह गालव के औरसब मुनियों के देखते देखते सुदर्शन चक्रने धर्मपुष्करिणी में प्रवेशकिया इतना कह सूतजी बोले कि हेमुनीश्वरो धर्मतीर्थ का जिस निमित्त चक्रतीर्थ नाम हुआ वह हमने आपको श्रवणकराया चक्रतीर्थ के तुल्य दूसरा तीर्थ न हुआ न होगा इसतीर्थ में स्नान करनेहारे अवश्य मुक्ति पावेंगे जो पुरुष इस अध्याय को भक्तिसे पढ़ेंगे अथवा श्रवण करेंगे वे चक्रतीर्थ स्नान का फल पावेंगे औरइसलोक में सुख भोगकर सद्गति पावेंगे धर्मतीर्थ को समाधि करतेहुवे गालव मुनि को औरराक्षसों को नाशकरनेहारे सुदर्शन चक्रको जो पुरुष स्मरण करेंगे वे सब पापों से छुटेंगे ॥

चौथा अध्याय ॥

शौनक आदि ऋषि पूछते हैं कि हेसूतजी वह राक्षस कौन था जिसने परमविष्णुभक्त गालवमुनि को पीडादी यह आप कृपाकर वर्णन कीजिये यह मुनियों का प्रश्नसुन सूतजी कहने लगे कि हेमुनीश्वरो अब हम उसका वर्णन करते हैं जिस भाँति मुनियों के शापसे वह राक्षसहुआ पूर्वकाल में कैलास के शिखर पर हालास्यनाम शिवमंदिर में वशिष्ट अत्रि आदि चौबीस

हजार मुनि ब्रह्मवादी परमशिवभक्त सब अंगों में भस्मधारे रुद्राक्षमाला पहिने त्रिपुंड्रदिये पंचाक्षर का जप करतेहुवे मुक्ति के लिये हालास्य नामक शिवजी की उपासना करतेथे औ मधुरा पुरवासी भी उपासना कररहे थे इसी अवसर में विश्वावसु नाम गंधर्व का पुत्र बड़ाकामी अपनी सौस्त्रियों सहित नग्न होकर हालास्य के समीप तीर्थ जलमें विहार करनेलगा औ वशिष्ट मुनिभी सब मुनियों सहित मध्याह्न कृत्य करने को शिवमंदिर से उठ उसीतीर्थ पर आये उन मुनीश्वरों को देखभय औ लज्जा से सब स्त्रियोंने वस्त्रधारण करलिये परंतु निर्लज्ज उस दुर्दम नाम गंधर्व ने वस्त्र न धारे तब क्रोधकर वशिष्टजी बोले कि हे निर्लज्ज तैंने हमको देखकर भी वस्त्र न धारे इसलिये तू राक्षस होजा इतना कह वशिष्टजीने उन स्त्रियोंसे कहा कि हे नारियो तुमने हमको देख लज्जासे वस्त्रधारे इसलिये तुमको शाप नहींदेते अब तुम स्वर्गको जाओ यह वशिष्टजी का वचन सुन सब स्त्री हाथजोड़ नम्रहो प्रार्थना करनेलगीं कि हे ब्रह्मपुत्र हे सर्वधर्मज्ञ वशिष्टजी आप कृपाकरें औ इसकोप को शांतकरें स्त्रियों का पति ही भूषण है चाहे सौपुत्र भी होंय परंतु पतिहीन नारी बिधवा ही कहाती हैं औ विधवा होना स्त्रीको मरण के तुल्यहै इसलिये आप हमारे पतिका यह अपराध क्षमाकरें औ इसपर कृपाकरें तत्वदर्शी मुनि अपराध क्षमा किया करतेहैं इसलिये आपभी इस अपने दास पर क्षमाकरें यह स्त्रियों का वचन सुन प्रसन्नहो वशिष्ट जी बोले कि हे स्त्रियो हमारा वचन मिथ्या तो नहीं होसकता परंतु जो हमकहैं उसको श्रद्धासे सुनो यह शाप सोलहवर्ष पर्यंत रहे सोलहवर्ष के अनंतर राक्षस हुआ यह तुम्हारा पति चक्रतीर्थ पर अपनी इच्छासे जायगा वहाँ विष्णुभक्त गालव मुनिको भक्षण करने के लिये ग्रहण करैगा तब विष्णुभगवान् की आज्ञा

से सुदर्शनचक्र इसका शिर काटैगा तब यह अपना पहिला दिव्य रूप धार स्वर्गमें जाय आनन्दसे तुम्हारे साथ विहार करैगा इसमें कुछ संशय नहीं है सूतजी कहते हैं कि हे मुनीश्वरो इतना कह वशिष्ठजी तो मुनियों सहित हालास्यके स्थान को गये औ वे स्त्री अपने पति दुर्दम को आलिंगन कर दुःख से रोदन करनेलगीं औ वह दुर्दम भी उनके देखते २ ही महाभयंकर राक्षस होगया कि बड़ी २ जिसकी दाढ़ लाल रंगके केश दाढ़ी औ नेत्र अति कृष्ण जिसका वर्ण यह उसका रूप देख वे नारी भयभीत हो स्वर्गको गईं औ वह राक्षसरूप दुर्दम भी जीवों को भक्षण करता देश २ औरबन २ में बिचरने लगा इस प्रकार सोलह वर्ष बीते तब चक्रतीर्थ पर पहुंचा औ गालव मुनि को भक्षणकरने दौड़ा गालव मुनि ने विष्णु भगवान् की स्तुतिकरी तब भगवान् की आज्ञापाय सुदर्शनचक्र ने राक्षस का शिर काटा औ गालवमुनिके प्राण बचाये वह दुर्दम भी शिर कटतेही राक्षस देह छोड़ दिव्यदेह होगया औ उत्तम विमानमें बैठ हाथजोड़ प्रणाम कर भक्तिसे सुदर्शनचक्र की स्तुति करने लगा (दुर्दमउवाच। सुदर्शननमस्तेस्तुविष्णुहस्तैकभूषण। नमस्तेऽसुरसंहर्त्रे सहस्रादित्यवर्चसे। कृपालेशेनभवत स्त्यक्ताहंराक्षसीतनुम्। स्वरूपमभजंविष्णोश्चक्रायुधनमोस्तुते २ त्वन्मनस्को भविष्यामियावज्जीवंयथाह्यहम्। तथाकृपांकुरुष्वत्वंमयिचक्रनमोस्तुते ३) इतनी स्तुतिकर दुर्दमने प्रार्थनाकरी कि हे चक्रराज अबआप मुझे स्वर्गजानेकी आज्ञा दीजिये बिरह करके पीडित मेरी भार्या मेरास्मरण कर रहीहोंगी यहदुर्दमकी बिनती सुन सुदर्शनचक्रने उसको प्रसन्नहो स्वर्गमें जानेकी आज्ञादी दुर्दम आज्ञा पातेही गालवमुनिको प्रणामकर औ उनकीभी आज्ञा ले स्वर्गको गया दुर्दमके स्वर्ग जानेके अनंतर गालवमुनिने फिर

सुदर्शनचक्रसे प्रार्थनाकरी कि हेचक्रराज आपको हम बारंबार प्रणामकर प्रार्थना करतेहैं कि देवीपत्तन पर्यंत इस धर्मतीर्थ में आप सन्निधान करें औ यहाँ स्नान करनेहारे पुरुषोंको सब पाप दूरकर मोक्षदेवें औ यहतीर्थ लोकमें चक्रतीर्थ नामसे प्रसिद्ध होय औ यहाँके निवासी मुनियोंको भूत प्रेत पिशाच राक्षस आदिकोंका कभी भय न होय यह गालवकी प्रार्थना अंगीकार कर सुदर्शनचक्र उसी तीर्थमें अंतर्धान होगया सूतजी कहतेहैं कि हे मुनीश्वरो चक्रतीर्थका माहात्म्य औ राक्षसकी उत्पत्ति हमने वर्णन करी इसके श्रवणकरने से मनुष्योंके सब पाप दूरहोजाते हैं शौनक आदि ऋषि पूछतेहैं कि हेसूतजी दर्भशयन से देवी पत्तन पर्यंत आपने चक्रतीर्थ वर्णनकिया वह बीच २ में क्योंकर विच्छिन्न होगया यह हमारा संदेह आप निवृत्तकरें यह मुनीश्वरों का प्रश्नसुन सूतजी कहनेलगे कि हे ऋषीश्वरो पूर्वकालमें सब पर्वत उड़तेथे औ उड़ते २ जिस नगर ग्राम आदिके ऊपर गिरते वही चूर्ण होजाता औ हजारों मनुष्य पशुपक्षीआदि मरते ब्राह्मण आदि वर्ण इस उपद्रवसे नष्ट होगये औ पृथिवी पर यज्ञहोने बंद होगये इससे देवताओं कोभी बड़ाक्लेश हुआ तब इंद्रने क्रोधकर अपने बज्रसे पर्वतोंके पक्षकाटना आरंभकिया उस समय भयभीत हुवे पर्वत समुद्रमेंगिरे औ समुद्रकी भ्रांतिसे कोई २ चक्रतीर्थमें भी प्रविष्ट होगये इसीसे चक्रतीर्थ बीच २ में विच्छिन्न होगया किनारों पर पर्वत नगिरे इसलिये दर्भशयन औ देवीपत्तन के समीप तो चक्रतीर्थ ठीकरहा औ बीचमें पर्वतोंके गिरनेसे विभक्त अर्थात् बांटागया सूतजी कहतेहैं कि हे मुनीश्वरो जिस भांति चक्रतीर्थ बीचमें स्थल होगया औ इंद्रके पक्ष काटने पर जिसप्रकार पर्वत समुद्रमें प्रविष्टहुवे यह सब हमने वर्णन किया अब आप क्या श्रवणकिया चाहते हैं ॥

पांचवां अध्याय ॥

सूतजी कहतेहैं कि हे मुनीश्वरो हम फिरभी चक्रतीर्थका प्रभाव वर्णन करते हैं बिधूम नामक वसु औ अलंबुषा नाम अप्सरा ब्रह्माजीके शापसे मनुष्य होगये औ चक्रतीर्थ में स्नानकर शाप से मुक्तहुवे इतनासुन मुनियोंने पूछा कि हे सूतजी उन दोनोंको ब्रह्माजीने किस अपराधपर शापदिया औ शाप होने के अनंतर कहाँ जन्मलिया किसके पुत्रहुवे औ उनका शापांत क्योंकर हुआ यह आप विस्तारसे वर्णनकरें आप व्यासजीके शिष्यहैं औ महा बुद्धिमान् हैं इसलिये कोई वृत्तांत आपसे छिपा नहींहै यह मुनियोंका वचन सुन सूतजी कहनेलगे कि हे मुनीश्वरो पूर्वकालमें ब्रह्माजी अपनी सभामें बिराजमानथे सावित्री औ सरस्वती उनके दोनों ओर बैठींथी सनक सनन्दन सनातन सनत्कुमार नारद आदि मुनीश्वर सबदेवताओं समेत इंद्र सूर्य आदि ग्रह सिद्ध साध्य मरुत् किन्नर वसु आदि सब सेवामें स्थितथे औ उर्वशी आदि अप्सरा नृत्य करती थीं इसभांति सत्यलोक के बीच ब्रह्माजी की सभा जमरही थी सब नृत्य देखते थे मृदंग बीणा बंशी आदि के मधुरशब्द सुननेवालों को आनन्द देतेथे औ गंगा जलके कणिका लिये शीतल मन्द सुगन्ध पवन चलता था एक अप्सरा जब नृत्यसे श्रांत होजाती तब दूसरी नाचने लगती इसी भांति नाचते नाचते अति रूपवती अलंवुषानाम अप्सरा सब सभाको मोहित करतीहुई नाचनेलगी उस अवसर में वायुसे उसका अधोवस्त्र दूरहोगया औ गुप्त अंग दीखनेलगा तब ब्रह्मादि देवताओं ने लज्जासे आंख मूंदली परंतु बिधूमनाम वसु काम के वशहो उसके गुप्त अंग को देखेगया औ प्रसन्नता से उसके नेत्र प्रफुल्ल होगये औ शरीर में रोमांचभी हुआ यह

6487. 13

उसका दुर्विनीतपना देख ब्रह्माजीने शापदिया कि हे बिधूम तैंने हमारी सभामें इस अप्सरा पर कुदृष्टिकी इसलिये तू मनुष्य-लोकमें जन्मलेकर मनुष्यहो औ यह देवांगना तेरी भार्य्याहोगी यह ब्रह्माजीके मुख से शाप सुनकर बिधूम बहुत ब्याकुल हुआ औ ब्रह्माजी के चरणों परगिर प्रार्थना करनेलगा कि महाराज मैं आपके इस दारुणशाप के योग्यनहीं हूं आप कृपाकर मेरा अपराध क्षमाकरैं औ इस घोरशाप से मुझे बचावैं इस प्रकार विधूमके अतिदीन वचनसुन ब्रह्माजीको दयाआई औ कहनेलगे कि हे विधूम हमारा वचन मिथ्यातो नहीं होसकता परंतु पृथिवी पर जन्म ले चक्रवर्त्ती राजाहोगा औ यह तेरीरानी होगी बहुत काल निष्कंटक राज्यकर इसमें पुत्र उत्पन्नकर उसको राज्यदे दक्षिण समुद्र के तीरपर पुल्लग्राम के समीप चक्रतीर्थ के बीच इस अपनी भार्य्या सहित स्नानकरैगा तब मनुष्य देहको त्याग दोनों अपने लोकमें प्राप्तहोगे चक्रतीर्थ में स्नान किये बिना यह दारुणशाप निवृत्त न होगा यह ब्रह्माजी का वचन सुन उदास होकर विधूम अपने स्थानमें आया औ चिन्तन करनेलगा कि मर्त्यलोक में किसके घर जन्मलूं औ कौनमेरे मातापिता होंय यह बिचार करते करते निश्चय किया कि कौशांबी नगरीमें बड़ा वीर औ धर्मनिष्ठ राजा शतानीकहै औ उसकी रानी विष्णुमती बड़ी पतिब्रता है इसलिये उनसेही जन्मलेना चहिये यह मन में ठान पुष्पदंत माल्यवान् बलोत्कट नाम अपने तीन सेवकों को बुलाकर कहा कि हेमेरेप्यारे सेवको ब्रह्माजीके शापसे शता-नीक की रानी विष्णुमती में मैं जन्मलेताहूं तुम सबको बिदित रहै यह अपने स्वामीका वचन सुन अति ब्याकुलहो अश्रुपात करतेहुवे सेवक बोले कि हे स्वामिन् हम तीनों आपका बियोग नहीं सहसक्ते इसलिये हमकोभी आप मनुष्यलोकमें अपने संग

लेचलें शतानीक राजाके मंत्री युगन्धर के सेनापति बिप्रतीप के औ शतानीक के नर्मसुहृत् बसंतक नाम ब्राह्मणके हमतीनों पुत्र होकर आपकी सेवा में रहेंगे यह भृत्यों का वचन सुन बिधूम कहनेलगा कि हे मेरे प्रिय सेवको मैं तुम्हारा स्नेह भलीभांति जानता हूं परंतु मनुष्यलोक अति निन्द्य है मुझे तो ब्रह्माजी के दारुण शापसे जन्मलेनापड़ा अब तुमभी इसकष्टमें मतपड़ो औ थोड़े दिन मेराबियोग सहो मनुष्यलोक में जन्म लेनेकी कभी इच्छा मतकरो यह बिधूम का वचनसुन वे फिरबोले कि हेप्रभो क्या आपके बियोग से भी मनुष्यलोक में जन्मलेने से अधिक दुःखहै हम आपका बियोग क्षणमात्रभी नहीं सहसकते इसलिये आप को हमारा त्याग न करना चहिये आप के साथ मनुष्य लोकमें भी रहने से कुछ दुःखनहीं औ आपके बिना यह स्वर्ग भी दुःखोंकी खानि देखपड़ताहै इस भांति सेवकों का दृढ़निश्चय देख बिधूम ने उनका वचन अंगीकार किया औ तीनोंको संगले कौशांबीनगरी को चला इस अवसर में चन्द्रवंश भूषण अर्जुन के प्रपौत्र जन्मेजय का पुत्र बड़ाप्रतापी बुद्धिमान् प्रजापालनमें तत्पर शतानीक नाम कौशांबी का राजाथा उसका मुख्य मंत्री युगन्धर नामथा सेनापति बिप्रतीक औ नर्मसुहृत् वल्लभ नाम ब्राह्मण था औ विष्णुमती नाम राणी सब राणियोंमें मुख्य औ राजाकी अतिप्रिया जिसप्रकार विष्णुभगवान्के लक्ष्मीथी परंतु राजाके पुत्र न था इसलिये वह दुःखी रहता एकदिन राजा ने अपने मंत्री युगंधर को बुलाकर कहा कि मेरेपुत्र क्योंकर उत्पन्न होय इसका बिचार करना चहिये तब युगन्धर मन्त्रीने विचार कर प्रार्थनाकरी कि महाराज शांडिल्यनाममुनि बड़े महात्मा सत्यवादी तपस्वी औ दयालुहैं आपउनके शरणमेंजाय विनयसे पुत्रकी याचनाकरें तो वे अवश्यही आपको पुत्रदेंगे यह मंत्रीका

वचन सुन राजा बहुत प्रसन्न हुआ औ मंत्रीको संग ले शांडिल्य मुनिके आश्रममें गया औ वहां जाय अति तेजस्वी शांडिल्यमुनि के चरणोंमें प्रणामकिया शांडिल्यमुनिनेभी राजाका बड़ा सत्कार किया औ पाद्य अर्घ्य आदि देकर कहा कि हे राजन् आप किस प्रयोजनके लिये हमारे आश्रमें आये हमसे कहो कि हम शीघ्रही तुम्हारा मनोरथ सिद्धकरैं यह ऋषिका वचन सुन युगंधर कहने लगा कि हे मुनीश्वर यह महाराज पुत्र न होने से दुःखी हैं औ अब आपके शरण में आयेहैं इसलिये आप इनका यह दुःख दूरकरैं यह मंत्रीका वचनसुन शांडिल्यमुनिने प्रतिज्ञाकी कि हम अवश्य पुत्रदेंगे औ राजा के साथ कौशांबी में आय राजासे पुत्रेष्टि कराई उस इष्टिके प्रभावसे राजाकेपुत्र हुआ जिसभांति महाराज दशरथ के घर श्रीरामचन्द्र जन्मेथे उस पुत्रका नाम राजाने सहस्रानीक रक्खा इसभांति विधूम वसु राजाशतानीक का पुत्र हुआ माल्यवान् युगंधर का पुत्र हुआ जिसका नाम उस के पिताने यौगंधरायण रक्खा पुष्पदंत विप्रतीक का पुत्र रुम-रावान् नाम हुआ औ वलोत्कट वसंतक का पुत्र वल्लभ नाम हुआ जो राजा सहस्रानीक का नर्ममित्र हुआ राजकुमार के स-हित ये तीनों दिन २ वृद्धि को प्राप्त होनेलगे औ पांच २ वर्षके हुवे तब अलंबुषा नाम अप्सरा भी अयोध्या के राजा कृतवर्मा की पुत्रीही जन्मी जिसका नाम पिताने मृगावती रक्खा इस-भांति विधूम आदि सब मर्त्यलोक में जन्मे इसी अवसर में बड़े पराक्रमी अहिदंष्ट्र नाम दैत्यने अपने मित्र स्थूल शिराको साथ लेबड़ी सेनासे स्वर्ग को जाघेरा औ देवताओं को पीड़ा देनेलगा औ देवता दैत्यों के युद्धका आरंभ हुआ तब इन्द्रने अपनी सहा-यता के लिये राजाशतानीक को बुलाया राजाशतानीक भी पुत्रको राज्य देकर इन्द्रके रथमें बैठ स्वर्गमें आया औ इन्द्र की

आज्ञा से दैत्यों को मारनेलगा और बड़ी वीरतासे अहिदंष्ट्र को मारा परंतु आपभी उसी युद्ध में कामआया तब इन्द्रने राजाका शरीर रथमें रख उसकी राजधानी को भेजा इन्द्र का सारथि मातलिभी, राजा के शरीर को रथमें रख मर्त्यलोक में आया और राजा सहस्रानीक से सब वृत्तांत कहा सहस्रानीक ने भी पिता की मृत्यु सुन बड़ा विलाप किया औरसब प्रेतकृत्य किया और शतानीक की रानी विष्णुवती अपने पतिके साथ सतीभई और युगंधर विप्रतीक औरवल्लभ भी थोड़े दिनके अनंतर परलोक को सिधारे और राजा सहस्रानीक यौगंधरायण आदि मंत्रियों सहित धर्मराज्य करनेलगा कुछ कालके अनंतर स्वर्ग में कुछ उत्सव था वहां इंद्रने राजा सहस्रानीक को भी निमंत्रणदे बुलाया उत्सव के अंत में इन्द्रने कहा कि हेराजन् तुम विधूम नाम वसुहो ब्रह्माजी की सभा में अलंबुषा नाम अप्सरा को वायु करके नग्नहुई देख तुम कामातुर हुवे इसलिये ब्रह्माजीने तुमको शाप दिया कि मर्त्यलोक में जन्मो उसी शापसे तुम मनुष्य हुवे और वह अप्सरा अयोध्या के राजा कृतवर्माकी कन्याहुई वही तुम्हारी रानी होगी बहुत काल राज्यकर पुत्रको राज्यपर बैठाय अपनी रानी मृगावती समेत जब दक्षिण समुद्रके तटपर फुल्लग्रामके समीप चक्रतीर्थ पर आय स्नान करोगे तब शापसे मुक्तहोगे यह सत्यलोक में ब्रह्माजीने कहाहै यह इंद्रका वचन सुन वहांसे बिदाहो इसी बातको बिचारताहुआ राजा सहस्रानीक अपनी राजधानी को चला मार्गमें तिलोत्तमा नाम अप्सरा प्रीति करके राजासे बोली परंतु राजा का चित्त और बातमें लगरहा था इसलिये तिलोत्तमा को कुछ उत्तर न दिया तब अनादर से लज्जित हो तिलोत्तमा ने शापदिया कि हेराजा मैं तुझे प्रीतिसे बोलतीहूं औरतू उत्तर नहींदेता सौभाग्यवती औररूपवती स्त्री

इतना अनादर नहीं सहती हैं मृगावती का ध्यान करता हुआ मुझसे संभाषण नहींकरता इसलिये चौदहवर्ष मृगावती से तेरा वियोग होगा यह तिलोत्तमा का शापसुन राजाने कहा कि जो मृगावती प्राप्तहोगी तो बियोगभी सहलेंगे इतना कह अपनी राजधानी में आया औ मृगावती से बिवाह किया बिलासरूप वृक्षकी मंजरी औ बिभ्रमरूप समुद्रकी लहरी उस मृगावती को पाय राजा बड़े आनंदको प्राप्तहुआ कुछ कालके अनंतर रानी मृगावती के गर्भरहा औ अंगपीतवर्ण होगये स्तनों के अग्र कृष्ण होनेलगे मृगावती दोहदकी ब्यथामें जो २ मनोरथ राजासे कहती सब सिद्धहोता एकदिन रानीने कहा कि महाराज आज मेरी इच्छा रुधिरकी भरी वापीमें स्नान करनेकीहै यह रानी का बचनसुन राजाने कुसुंभ के रंगसे बावड़ी भरवाई औ रानी उसमें स्नानकरनेलगी रानी के सबअंग लाल होगये इसी अवसर में गरुड़ के वंशका एकपक्षी पर्वत के तुल्य आकाश में उड़ा जाता था उसने रानी को देखा औ मांस पिंडकी भांतिसे चोंच में उठाय ले उड़ा औ जब देखा कि यहजीती है तब उदयाचल पर्वतकी कंदरा में रानी को छोड़ आप चलागया थोड़े कालमें रानीकी जब मूर्छा खुली तो अपने को उसघोर बनमें अकेला देख भयसे काँपती हुई औ कमल से नेत्रों से आंसू टपकाती हुई बिलाप करनेलगी कि हेनाथ हेप्रिय तेरे बियोग करके पीड़ित मैं कहां जाऊं क्या करूं औ क्यों कर तुम्हारे दर्शनहोंय इसभांति अनेकप्रकार के बिलापकर मरने के लिये कभी तो सिंह के सम्मुख जाती कभी मस्त हाथी के आगे गिरती परंतु उनने भी उसको न मारा तब फिर बिलाप करनेलगी कि आपत्काल में मनुष्यों को मरणभी दुर्लभ है उसका अति करुण बिलाप सुन मृगों ने चरना छोड़दिया औ पक्षी उड़ने से बंद हुवे इस अव-

सर में जमदग्नि ऋषिका शिष्य उस बनमें आया था उसने रानी को देखा औरबहुतसा आश्वासन दे उसको अपने साथ आश्रम को लेगया वहांजाय अपने गुरु जमदग्नि मुनिसे रानी का सब वृत्तांतकहा जमदग्नि मुनिनेभी रानीका बहुत आश्वासनकिया औरकहाकि हेपुत्रि अपने पिता कृतवर्माके तुल्य मुझे समझ औरप्रसन्नतासे यहांरह परमेश्वर तेरा सबदुःख दूरकरेगा यह मुनिका बचन सुन रानी मृगावती उसी आश्रममें रहनेलगी कुछ कालके अनन्तर रानीके बड़ा तेजस्वी पुत्र जन्मा औमुनियोंकी पत्नियोंने बडी प्रीतिसे सूतिकाके सबनेग जैसे घरमें होने चहिये किये आकाशवाणी हुई किउदयाचलमें जन्म लेनेसे इस बालकका नाम उदयन होगा जमदग्नि मुनिने उस बालकके सब संस्कार किये औरसब विद्यापढ़ाई औवह बालक तरुण अवस्था को प्राप्त हुआ एकदिन उदयन मृगया खेलने बनमे गयाथा वहांदेखा किएक व्याध सर्पको पकड़े लाताहै उसको देख राजकुमारको दयाआई औव्याधिसे कहा कि रेतू इससर्पको क्योंक्लेश देताहै छोड़दे तू इसका क्या करेगा यह उदयन का बचन सुन व्याधबोला कि हेमहाराज मेरी जीविका इसीसेहै नगर औग्रामों में इसको दिखलानेसे मुझे धन औरअन्न मिलेगा इसलिये मैंइस को छोड़नहींसक्ता इतनाकह व्याधने उस सर्पको पिटारीमे बांध लिया तब उदयनने अपने हाथसे सुवर्ण का कंकण उतारा जो उसकी माताने बाल अवस्थामें पहिनायाथा औजिसमें सहस्रानीक का नामभी खुदाथा औउस व्याधकोदे सर्पको बंधनसे छुटाया सर्पभी छुटतेही मनुष्यरूप धार हाथ जोड़ उदयनको प्रणामकर बड़ीप्रीतिसे अपने साथ नागलोकमें लेगया उदयनभी धृतराष्ट्र नागके पुत्र उस किन्नर नाम नागके साथ पाताल में जायपहुंचा वहां धृतराष्ट्रनागने अतिसुंदरी ललितानाम अपनी

कन्या उदयनको बिवाहदी उदयनभी अपनी प्रियाके साथ ना-
गलोकमें सुख भोगनेलगा कुछकालमें ललिताको गर्भरहा औ
पुत्र उत्पन्नहुआ पुत्र होतेही ललिताने उदयनसे कहा कि हेप्रि-
य मैंपूर्ब जन्ममें सुवर्णानाम विद्याधरीथी औ शापसे नागकन्या
हुई अब वह मेराशाप निवृत्त हुआ इसलिये आपइस अपने पुत्र
को लीजिये औ मुझे मेरे लोक को जाने की आज्ञादीजिये इतना
कह वहपुत्र पुष्पमाला जोकभी न कुम्हलाय औ घोषवती नाम
एक अति उत्तम बीणा उदयन को दी औ सबके देखते देखतेही
आकाश को उड़कर चलीगई उदयन भी माला वीणा औ अपने
पुत्रकोले अपने श्वशुरसे बिदाहो बहुत दिनके वियोगसे दुःखि-
नी अपनी माताके समीपको चला औ जमदग्नि मुनिके आश्रम
में पहुंच अपनी माताको प्रसन्नकिया औ सबवृत्तांत उससे कहा
मृगावतीभी अपने पुत्र औ पौत्रको देख बहुत प्रसन्नहुई इतनेमें वह
ब्याधभी उस सुवर्ण कंकणको बेंचनेके लिये कौशांबीमें पहुंचा
औएक वैश्यको दिखाया वैश्य उस जड़ाऊ कड़ेको देख औ उस-
पर राजाका नाम खुदाहुआ देख उस ब्याधको साथले राजाके
समीप गया औ सब वृत्तांत निवेदन किया राजानेभी ब्याधसे
सब वृतांत पूंछा औबहुतसा धनदे कंकण उससे लेलिया औ
कंकणको अपनी छातीसे लगा अनेकप्रकारके विलाप करनेलगा
औ बहुतकाल विलापकर अपने मंत्रियोंको संगले ब्याधके कहेके
अनुसार अपनी मृगावतीकी प्राप्तिके लिये उदयाचलको चला
कुछ मार्ग चलकर विश्राम किया राजाको मृगावतीके विरहसे
निद्रानहीं आतीथी इसलिये बसंतकने भांति भांतिकी मनोहर
कथासुनाय राजाके चित्तको प्रसन्नकिया औकथा सुनते सुनते वह
रात्रिबिताई प्रभात होतेही वहांसे चले कुछकालके अनन्तर राजा
सहस्रानीक अपनी सेना समेत उदयाचलके बीच जमदग्नि मु-

निके आश्रममें पहुंचे औमुनिके चरणोंपर भक्तिसे प्रणामकिया मुनि ने भी राजाको यथायोग्य आशीर्वाद दिया औपाद्य अर्घ्य आचमन आसन आदिदे यहकहा कि हेराजन् तुम्हारी मृगावती रानीमें यह बड़ा प्रतापी पुत्र उत्पन्न हुआहै जो सब दिशाओंको जीतेगा इसका नाम हमने उदयन रक्खाहै यह उदयनका पुत्र औ आपका पौत्रहै औ यह परम पतिव्रता तुह्मारी रानी मृगावतीहै अबइन तीनोंको ग्रहण कीजिये इतना कह मुनिने राजा को तीनों अर्पण किये राजाभी रानी पुत्र औ पौत्रको पाय अति हर्षितहो मुनिसे विदाहुआ औकुछ दिनोंमें कौशांबीमें आपहुंचा वहां आय राजाने इन्द्र का वचन स्मरण कर मनुष्य जन्म की निन्दाकर संपूर्ण राज्य व्यवहार उदयन को सौंपा उदयन भी भलीभांति प्रजापालन करनेलगा औराजा सहस्रानीक रानीमृगावती यौगंधरायण वसंतक रुमरावान आदि अपने मन्त्रियों को साथले शाप मुक्तिके लिये दक्षिण समुद्र के तटपर चक्रतीर्थ में स्नान करनेचले औ थोड़ेहीकालमें चक्रतीर्थपर पहुंचे औ तीर्थ में सबने स्नानकिया स्नानकरतेही दिव्यदेहधार दिव्यवस्त्र भूषण आदिसे भूषित उत्तम विमानोपर चढ़ चक्रतीर्थकी प्रशंसाकरते हुये सबके देखते२ स्वर्गकोगये उसदिनसे सबमनुष्योंने चक्रतीर्थका प्रभाव जाना औ सब भक्तिसे स्नान करनेलगे उस चक्रतीर्थ में जोभक्तिसे स्नानकरै वह अवश्यही स्वर्गको जाय इतनी कथासुनाय सूतजी बोले किहे मुनीश्वरो यह विधूम का चरित हमने वर्णन किया इस अध्यायको जो भक्तिसे पढ़ै अथवा सुनै उसके सब मनोरथ सिद्ध होते हैं॥

छठा अध्याय॥

शौनक आदि ऋषि पूछतेहैं कि हेव्यास शिष्य सूतजी आपने

पहिले वर्णन कियाहै कि देवीपत्तन पर्यन्त चक्रतीर्थ है अबआप यहवर्णन करें कि देवीपत्तन कहांहै औउस स्थान का नाम देवी-पत्तन क्योंकर हुआ औरसेतुमूलमें तथा चक्रतीर्थमें स्नान करने-वाले मनुष्यों का क्या पुराय होताहै ये सब आप वर्णन करें यह मुनियोंका प्रश्न सुन सूतजी कहनेलगे कि हे मुनीश्वरो आप सावधान होकर श्रवणकरें जो आपने पूछा उस सबका हम वर्णन करतेहैं जिसके सुननेसे सब पातक निवृत्त होजांय जहाँ नैमिषारराय स्थापन कर पहिले रामचंद्र जीने सेतुबाँधनेका आरंभ कियाहै वहाँही देवीपुरहै जहाँतक चक्रतीर्थकी सीमाहै औजिस कारण उसस्थानकी देवीपुर संज्ञाहुई वहभी हम वर्णन करतेहैं पूर्वकालमें देवता औ दैत्यों का युद्धहुआ उसमें देवताओं ने सब दैत्य मारदिये तब दैत्योंकी माता दिति अपनी कन्यासे दुःखीहो बोली कि हे पुत्रि बनमें जाकर तपकर औऐसा पुत्र उत्पन्नकर कि जो इंद्रआदि देवताओंको जीतै यह माताकी अज्ञापाय महिषी का रूपधार दितिकी कन्या तप करने के लिये बनको गई औ बनमें जाय पंचाग्निके मध्यमें बैठ ऐसा घोरतप किया कि तीनों-लोक काँप उठे औइंद्रआदि देवता भयभीत होगये तब ब्रह्माजी सुपार्श्वमुनिका रूपधार उसके समीप आये औ कहा कि हेमहिषि तेरे तपसे हम बहुत प्रसन्नहुवे बड़ा प्रतापी औ इंद्रआदि देवताओं के जीतनेवाला तेरे पुत्र होगा जिसका मुख महिषका औ शरीर मनुष्यका होगा वह महिष नाम तेरा पुत्र स्वर्गको पीड़ा देगा इतना बर दे औ उसको तपसे निवारण कर सुपार्श्व मुनिरूप धारी ब्रह्माजी अपने लोकको गये औ कुछकालके अनंतर उसके पुत्रभी उत्पन्न हुआ औ प्रतिदिन बढ़ने लगा जबवह तरुणहुआ तब विप्रचित्तिका पुत्र विद्युन्माली नाम दैत्य बहुतसे दैत्योंको संगले महिषासुरके समीप आया औ कहनेलगा कि हे महिष

पहिले स्वर्गमें हमाराही राज्यथा पीछे विष्णु के सहायसे देव-
ताओं ने हमारा राज्य छीनलिया अब तू अपना पराक्रम प्रकट
कर औ इंद्रको मार स्वर्ग का राज्य फिरले ब्रह्माजीके बरसे कोई
तुझे न जीत सकैगा यह विद्युन्मालीका वचन सुन सब दैत्योंको
संगले महिषासुर अमरावती नगरी पर चढ़ा औ जाय देवताओं
से युद्धकरने लगा सौवर्षतक घोरयुद्धहुआ अंतमें इंद्रआदि देवता
हारे औ युद्धसे भगकर ब्रह्माजीकी शरणमें पहुँचे ब्रह्माजी उनसब
देवताओंको साथले वहाँगये जहाँ शिवजी औ विष्णुजीथे वहाँ
जाय नमस्कार कर ब्रह्माजी ने शिवजी औ विष्णुजी की स्तुति
करी औ महिषासुरका सब वृत्तांत कहा कि इंद्र अग्नि यम कुवेर
वरुणआदि सब देवताओं केअधिकार महिषने छीनलिये औसब
देवता स्वर्गसे निकाल दिये अब मनुष्योंकी भाँति देवता भूमि
पर घूमतेहैं यह वृत्तांत आपको विदित करनेके लिये हमआये
हैं इसमें जो उचित होय वहकीजिये यह ब्रह्माजीका वचन सुन
शिवजीने औ विष्णुजीने बड़ा क्रोधकिया औ उनके मुखक्रोधसे
प्रज्वलित अतिभयंकर होगये तब विष्णुजी शिवजी औ ब्रह्माजी
के मुखसे तेजनिकला औ इंद्रआदि देवताओंके शरीरसेभी तेज
निकला वह सब तेज एकत्र हुआ औ जलतेहुवे पर्वतकी भाँति अ
पनी ज्वालाओं से दिशाओंको व्याप्त करने लगा औसब देवताओं
के देखते २ क्षणमात्र में वह तेज एक अति सुंदरी स्त्री होगय
शिवजीके तेजसे उसका मुख विष्णुतेजसे भुजा ब्रह्मतेजसे चरण
इंद्रके तेजसे मध्यभाग यमके तेजसे केश चंद्रके तेजसे कुच वरुण
के तेजसे जंघा औ उरू पृथिवी के तेजसे नितंब सूर्यके तेजसे
पैरोंकी अंगुली वसुओंके तेजसे हाथोंकी अंगुली कुवेरके तेजसे
नासिका प्रजापतियों के तेज से दंतपंक्ति अग्नि के तेजसे नेत्र
संध्याओंके तेजसे भ्रू वायुके तेजसे कर्ण इस भांति सब देवताओं

के तेजसे उस भगवती दुर्गा के सब अंग बनगये सब के तेजसे उत्पन्न भगवतीके रूपको देख महिषासुरने सतायेहुवे सब देवता बहुत प्रसन्न हुवे औ शिव विष्णुआदि देवताओंने अपने२ आयुधोंसे उत्पन्नकर शूलचक्र आदि आयुधदिये औ भांति २ के भूषण वस्त्र माला चंदन आदि सब देवताओं ने दिये भगवतीभी उत्तम बस्त्र भूषण माला आदिसे भूषित हो सब शस्त्रधार अट्टहास और भयंकर शब्द करनेलगी जिस शब्दसे तीनों लोक काँप उठे सिंह केऊपर चढ़ीहुई भगवतीकी सबदेवता मुनि गंधर्व आदि स्तुतिकरनेलगे भगवतीके गर्जनेको सुनकर महिषासुरने बड़ा क्रोधकिया औ अपनी सेनासाथले उस शब्दके अनुसार वहाँ पहुंचा जहाँ सब देवताओं करके सेवित जगदंबा विराजमानथी महिषासुरने देखा कि अनंतभुजाओंकरके युक्त एकपरम सुंदरी स्त्री सबशस्त्रधारेसिंह परचढ़ीहुई खड़ीहै जिसके तेजसेसब जगत् व्याप्त होरहाहै यह रूप भगवती का देख सबदैत्यों समेत महिषासुर युद्ध करनेलगा अस्त्र शस्त्र चक्र गदा खड्ग बाण मुसल आदिकी वृष्टि होनेलगी हाथी घोड़े रथ आदि करके युक्त महिषासुर युद्ध करनेलगा महिषासुर की सेनामें कई करोड़ प्रधान दैत्यथे औ उनमें एक एक के साथ इतनी सेनाथी कि जिसकी गिनती नहीं होसकती वे सब दैत्य एकबारही भगवती पर शस्त्रों की बर्षा करने लगे परंतु भगवती अपने बाणों करके उनके शस्त्रों को अनायास से काटदेतीथी औ भगवती के आश्रय से सब देवताभी निर्भय हो दैत्यों के साथ युद्ध करते थे भगवतीकी शक्ति पाकर देवताओं ने महिषासुर की सब सेनाका संहार करदिया तब महिषासुर क्रोधकर देवताओं को बाण मारनेलगा इन्द्रको दश हजारबाण यमराज को पांचहजार बरुण को आठहजार औ कुवेरको छः हजार बाण मारकर सूर्य्य चन्द्र अग्नि वसु वायुआदि देवताओं के शरीरोंमें

भी महिषासुरने बाणमारे तब देवता भयभीतहो युद्धसे भगे और त्राहि त्राहि कहते भगवतीके शरणमें आये तब भगवतीने अपने गण भूत बेताल आदिको आज्ञादी कि तुम महिषासुर की सेना को मारो जो बचीहै औ मैं महिषासुर के साथ युद्ध करतीहूं यह भगवती की आज्ञा पातेही गणोंने महिषासुर की सेनाका संहार किया तब महानाद सुचक्षु महाहनु महाचंड महाभक्ष महोदर महोत्कट पंचास्य पादचूड़ बहुनेत्र प्रवाहुक एकाक्ष एकपाद बहु-पाद अपाद आदि अपने बड़े २ वीर मंत्रियों समेत महिषासुर भगवती के साथ बड़े कोप से युद्ध करनेलगा तब सिंह परचढ़ी हुई भगवती भी धनुषका भयंकर शब्दकर बाणोंकी बर्षा करने लगी दशलाख हाथी एक करोड़ घोड़े दशकरोड़ रथ औ एकअर्ब पयादों करकेयुक्त महाहनुनाम दैत्यको क्षणमात्रमें भगवतीने मार गिराया और भी महिषासुर के सबमंत्री इतनी २ ही सेनाकरके युक्तथे परंतु एक पहर में भगवती ने सबका संहार किया यह देख सबदेवताओं को बड़ा आश्चर्य्य हुआ ॥

सातवां अध्याय ॥

सूतजी कहते हैं कि हे मुनीश्वरो इस भांति भगवतीने किये हुये सेनासंहारको देख बड़े क्रोधसे चंडकोप नाम अपने मंत्रीको महिषासुर कहनेलगा कि हे चंडकोप इस दुष्टस्त्री से तू युद्धकर यह अपने प्रभुकी आज्ञापाय चंडकोप भगवती को बाण मारने लगा परंतु उसके बाणोंको भगवती लीलासेही काटदेतीथी औ अपने बाणोंसे चंडकोपके घोड़े ध्वज धनुष रथ औ सारथि छेदन करदिये तब चंडकोप खड्ग औ चर्म अर्थात् ढाललेकर भगवती से युद्ध करनेलगा पहिले एक खड्ग का प्रहार सिंहपर किया पीछे भगवती की बाईंभुजा पर खड्ग चलाया परंतु भगवतीकी

भुजापर लगतेही उसखड्गके हजारों टुकड़े होगये तब त्रिशूल उठाय भगवती ने चंडकोप की छातीमें मारा जिससे वह गिरा औ मरगया फिर हाथीपर चढ़ाहुआ चित्रभानु नामदैत्य युद्ध करनेआया औ घंटाओं करके भूषित अति भयंकर बर्छी उसने भगवती पर चलाई परंतु उस बर्छी को अपने हुंकार शब्द से निवारण कर एक त्रिशूलका प्रहार भगवतीने चित्रभानु के हृदय में ऐसाकिया कि वह हाथीसे गिरा औ मृतहुआ उसके मरनेपर और भी कई प्रधान दैत्य युद्धकरनेआये उनमें करालको भगवतीने अपनी मुष्टिकेप्रहारसे गिराया मदोन्मत्तको गदासे मारा वाष्कलको पट्टिशसे संहार किया औ अंधकको चक्रकर के यमलोकको भेजा इसभाँति औरभी महिषासुरके मंत्री त्रिशूल से मारे तब महिषासुर महिषका रूपधार भगवती के गणोंको त्रास देनेलगा कई गणोंको अपने मुखसे कईयों को सींग और खुरोंसे मारा औरकितनेही गण अपने श्वासके पवन से उड़ा दिये इस प्रकार गणोंका संहार कर भगवती के वाहन सिंहको मारने चला उसको आते देख सिंहनेभी कोपकर नखोंसे उसको विदारणकिया औ भगवती ने भी महिष के मारनेका विचार किया औ उसको पाशसेबाँधा परंतु वह पाससे निकल गया औ सिंहका रूपधार गर्जने लगा जबतक भगवती उसका शिरकाटा चाहें इतनेही में वह खड्ग हाथमें लिये पुरुष होगया भगवती उस पुरुषको अपने तीक्ष्णबाणों करके विदारण करने लगी तब वह बड़े बड़े दाँतोंकरके शोभित पर्वतके समान ऊंचा एक मस्त हाथी बनगया औ अपनी सूंड़से सिंहको खैंचनेलगा सिंहने उस की सूंड़को अपने तीखेनखोंसे भेदन किया तब फिरवह महिष रूप हुआ औ युद्ध करनेलगा तब भगवती ने मधुपान किया जिससे लालनेत्र होगये औ अट्टहास किया औ महिषासुरभी

अपने सींगोंसे बड़े २ पहाड़ उठाय भगवती पर फेंकने लगा उन पर्वतों को अपने बाणों से काट भगवती ने महिषासुर से कहा कि रे मूढ़ मैं मधुपान करूं तब तक तू गर्जले पानकर के तुझे मैं यमलोक को भेजती हूं औ तेरे मारेजाने पर सब देवता अपना अपना अधिकार पावेंगे इतना कह जगदंबा ने मधु पानकर एक मूंका महिषासुर के ऐसा मारा कि वह व्याकुल होकर भगा भगवती उसके पीछे लगीं परन्तु महिषासुर दक्षिण समुद्र के तटपर जाय दशयोजन लम्बी चौड़ी धर्म्मपुष्करिणी के जल में जगदम्बा के भयसे गुप्त होगया औ भगवती ने उसको वहां न देखा तब आकाश वाणी हुई कि हे महादेवि तुम्हारे भयसे वह दुष्ट दैत्य धर्म्मपुष्करिणीके जलमें छिपगया है इसको किसी उपाय से मारो यह आकाशबाणी सुन जगदम्बा ने अपने बाहन को आज्ञा दी कि हे मृगेंद्र तू इसधर्म्मपुष्करिणी के सम्पूर्ण जल को पान कर जा यह आज्ञा पातेही सिंह सब जलको पीगया औ भयभीत हुआ महिषासुर उससे निकला तब भगवती ने अपना चरण महिष के मस्तकपर रख त्रिशूल से उसके कण्ठको भेदन किया औ खड्ग से उसका शिर काट दिया इसभांति उस दैत्यको दुर्ग्गाने मारा सब देवता ऋषि गंधर्व्व सिद्ध आदि भगवती की स्तुति करनेलगे फिर भगवतीने देवताओं को अपने २ अधिकार दिये औ दक्षिणसमुद्र के तटपर अपने नाम से नगर बसाया वहीदेवीपुर हुआ जगदम्बा की आज्ञासे धर्म्मपुष्करिणी को देवताओं ने अमृत से भरदिया औ भगवती ने पुरको यह बर दिया कि इस नगर में रोगका भय न होगा औ यहां के पशु हृष्ट पुष्ट रहेंगे औ धर्म्मपुष्करिणी को भी बरदिया कि इसमेंजो पुरुष स्नान करेंगे उनके सब मनोरथ सिद्ध होंगे इतनी कथा सुनाय सूतजी बोले कि हे मुनीश्वरो देवीने बसाया इसलिये उस नगर

का नाम देवीपत्तन हुआ गणेशजीका पूजनकर औ तिलक स्वामी को प्रणामकर शिवजी की आज्ञा पाय देवीपत्तन के समीप नौ शिला रामचन्द्रजीने सेतुकी अपने हाथसे स्थापनकरीं फिर रामचन्द्रजी तो सिंहासनपर बैठे देखते रहे औ वानरों ने सेतु बाँधा पर्व्वत वृक्ष पत्थर काष्ठ तृण आदि तो सब बानर लाये औ नलने सेतु बाँधा देवीपत्तन से लंकातक सौयोजन लंबा औ दशयोजन चौड़ा सेतु पांच दिनमें पूराहुआ देवीपुरके निकट नौपाषाणोंके समीप सब पाप निवृत्त होने के लिये स्नानकरै पीछेचक्रतीर्थमें स्नानकर सेतु के अधिपति भगवान् का दर्शन करै देवीपत्तन से सेतुका आरम्भ हुआ इसलिये देवीपुर सेतुमूल कहाया सेतुका पश्चिम अग्र दर्भशय्या औ पूर्व अग्र देवीपत्तन है ये दोनों स्थान सेतु मूलहैं जिनके दर्शन से सब पाप निवृत्त होते हैं सेतु मूलमें स्नानकर चक्रतीर्थ में स्नानकरै पीछे संकल्पकर सेतुबंधन को जाय देवीपुर दर्भशय्या औ चक्रतीर्थ में स्नानकरने से सब पातक दूर होतेहैं औ पुण्यकी वृद्धि होती है चक्रतीर्थ के स्मरण से भी सब पाप निवृत्त होतेहैं जन्म मरण से मनुष्य छुटताहै औ मुक्ति भी अनायास से मिलतीहै चक्रतीर्थ के तुल्य तीर्थ न हुआ न होगा भूलोक में जितने गङ्गादि तीर्थ हैं वे चक्रतीर्थकी सोलहवीं कला कीभी तुल्यता नहीं करसकते पहिले नव पाषाणके समीप समुद्र मेंस्नानकर चक्रतीर्थमें जाय तीर्थ श्राद्धकरै औ सब पाप निवृत्त होनेके लिये सेतुनाथ भगवान्का सेवनकरै इसीभांति दर्भशय्या में भी पिण्डदान आदि करै नलके बनाये सिंहासन को जिसपर रामचन्द्र बैठेथे जो मनुष्य प्रणामकरैं उनको नरक का भयनहीं होता रामचन्द्रजी का ध्यान करताहुआ सेतुका दर्शनकरै औ ये मंत्र पढ़ै (रघुवीरपदन्यासपवित्रीकृतपांसवे। दशकंठशिरच्छेद हेतवेसेतवेनमः ॥ केतवेरामचंद्रस्यमोक्षमार्गैकसेतवे । सीताया

मानसांभोज भानवेसेतवेनमः) ये मंत्रपढ़ सेतुको साष्टाङ्गप्रणाम कर वेतालवरद नाम तीर्थको जाय इस अध्याय को जो पुरुष भक्तिसे पढ़ै अथवा श्रवणकरै उसको स्वर्ग्ग आदि दुर्ल्लभ नहीं औ मुक्ति भी हाथ परही रक्खी है ॥

आठवां अध्याय ॥

शौनकादि ऋषि कहतेहैं हे सूतजी आपके वचन रूप अमृत पान करते २ हमको तृप्ति नहीं होती इसलिये और भी अति मधुर कथा आप वर्णनकरैं आपने पहिले कहाथा कि चक्रतीर्थके दक्षिण भागमें वेतालवरद नाम तीर्थ है अब आप उस तीर्थका प्रभाव औ वेतालवरद नामका कारण वर्णन कीजिये यह मुनियों का प्रश्न सुन सूतजी कहनेलगे कि हे मुनीश्वरो आपने अति गुप्त बात पूछी इसका हम वर्णन करतेहैं इस कथाके श्रवणकरने से पामर पुरुष भी आनंद को प्राप्तहोते हैं पूर्वकालमें यह कथा कैलास पर्ब्बत के बीच एकांतमें शिवजीने पार्वतीजीको सुनाई है उसी अति अद्भुत कथा को हम वर्णन करते हैं पूर्वकाल में अपने आश्रम के बीच गालवमुनि तप करतेथे औ उनकी कांतिमतीनाम परमसुंदरी कन्या उनकी सेवा करती पूजनके लिये पुष्प हवन के लिये समिधा बनसे लाती औ नित्य वेदीकामार्जन आदि करती एक दिन कांतिमती उत्तम पुष्प लेनेके अर्थ दूर बनमें गई वहां से पुष्पलेकर आश्रम को चली आतीथी उसको सुदर्शन औ सु कर्णनाम दो विद्याधर कुमारोंने देखा जो विमानमें बैठे आकाश मार्ग्ग में चले जातेथे रूप औ यौवन करके युक्त मानो साक्षात् कामदेवकी पत्नी रतिही होय ऐसी गालवमुनि की कन्याको देख कामकरके पीडित सुदर्शन उसके साथ रतिकी इच्छा से विमान से उतर पड़ा औरउस चंद्रमुखी को देख प्रसन्न होताहुआ समी

जाय बड़ी प्रीतिसे पूछनेलगा कि हे भद्रे तू कौनहै औ किसकीपुत्री है तेरायह परम सुंदर रूप मेरेमनको बहुत आह्लाद देताहै और तुझे देख कामदेवभी मुझे सताताहै सुकंठ नाम विद्याधर राजका मैं सुदर्शन नाम पुत्रहूं तूमेरे ऊपर कृपादृष्टिकर मैं तेरा दासहूं तूभी मुझसरीखे पतिको पाय उत्तम२ भोग भोगैगी यह सुदर्शन का वाक्यसुन कांतिमती कहनेलगी हे महाभाग विद्याधर कुमार मैंगालव मुनिकी कन्या कांतिमतीहूं औ मेरा विवाह नहीं हुआहै पिताकी सेवा करतीहूं आजभी पुष्प लेने आईथी एक प्रहर मुझे आये होगया इसलिये पिता मुझपर क्रोधकरैगा अब मैं पुष्पलेकर पिताके समीप जातीहूं कन्या पिताके आधीन होती है स्वतन्त्र नहींहोती जो तुझको मेरीइच्छाहोय तो मेरे पिता से मेरी याचनाकर इतना सुदर्शनसे कहकर कांतिमती अपने आश्रम को चली परन्तु सुदर्शन काम के वश होरहाथा उसने दौड़कर कांतिमतीके केश पकड़लिये केश पकड़तेही कांतिमती पुकारी कि हे पिता शीघ्र मेरी रक्षाकरो यहदुष्ट विद्याधर कुमार बलसे मुझे पकड़ताहै यहशब्द सुनतेही गंधमादन पर्वतकेबासी सब मुनियों समेत गालव मुनिवहां दौड़ेआये औदेखा किएक विद्याधर कुमारने कांतिमतीको पकड़ रक्खाहै औदूसरा उसके पास खड़ाहै यह देखतेहीं महायोगी गालवमुनि क्रोधसे जलउठे औ शापदिया कि रेअधम सुदर्शन तैंनेयह निंद्यकामकिया इसलिये मनुष्य योनिमें जन्मले औइस पापका फलभोग औ थोड़े काल मनुष्यरहकर तू बेताल होजायगा औमांस रुधिर आदि बुरेपदार्थ खाताफिरेगा राक्षस बेताल आदिकही पराई कन्याको हठसे पकड़तेहैं इसलिये तूभी मनुष्य होकर बेताल होजायगा औयह तेरा छोटाभाई सुकर्णभी इस कुकर्मका साक्षीहै इसलिये यहभी मनुष्य होगा परन्तु इसने साक्षात् कुछपाप नहींकिया

केवल तेरा अनुमोदनही कियाहै इसलिये मनुष्यही रहेगा वेताल
नहोगा औविज्ञप्तिकौशिक नाम विद्याधर गुरुको जब देखेगा
तबही शापसे मुक्त होजायगा औ तैनेयह महा पापकर्म किया
इसलिये मनुष्य होगा औउसी जन्ममें वेताल होकर बहुत काल
लोकमें बिचरैगा यहशाप उन विद्याधर कुमारोंको देकर अपनी
कन्याको साथले गालवमुनि सबमुनियों समेत आश्रम को गये
मुनिके जानेके अनन्तर अति व्याकुलहो सुदर्शन औ सुकर्णने
विचारकर यह निश्चयकिया कि यमुना तट निवासी गोविन्द
स्वामी नाम ब्राह्मण बहुत उत्तमहै उनकेही पुत्र होना चहिये
यहमनमें ठान दोनोंने गोविन्द स्वामीकेघर जन्मलिया गोविन्द
स्वामी ने बड़े पुत्रका नाम विजयदत्त औ छोटे का नाम अशोक
दत्तरक्खा वेदोनों कुछकालमें तरुणहुये इसी अवसरमें बारह
वर्ष वृष्टि नहोनेसे अति दुर्भिक्ष पड़ा तब गोविन्द स्वामी अपने
नगरको छोड़ स्त्री पुत्रोंको साथले कालक्षेप करनेके लिये काशी
को चला कुछदिनोंमें प्रयागमें पहुंचा औअक्षयबट का दर्शनकिया
औएक सन्न्यासीको गोविन्द स्वामीने देखा जो कपाल माला
पहिनेथा मानो साक्षात् शिवही होय उसको गोविन्द स्वामी
ने प्रणामकिया सन्न्यासीनेभी आशीर्वाद देकर गोविन्दस्वामी
से कहा कि हेब्राह्मण तेरे इस बड़ेपुत्र विजयदत्तसे तेरा वियोग
होगा इतनाकह सन्न्यासी तो चलेगये औ गोविन्द स्वामी चित्तमें
खिन्नहुआ इतनेमें सूर्य अस्तहुआ तब गोविन्द स्वामीने संध्या
आदि कररात्रि बितानेके लिये एक पुराने शून्य देवालयमें अप
ने स्त्री पुत्रोंसमेतप्रवेशकिया वे सब मार्गके परिश्रमसे थकरहे
इसलिये ब्राह्मणी औ अशोकदत्त तो निद्रावश होकर सोगये औ
विजयदत्तको मार्गकेखेदसे शीत लगकर ज्वर चढ़आया गोविन्द
स्वामीने विजयदत्तको बहुतसे वस्त्रउढ़ाये औ ऊपरसे दबाये

परन्तु उसका शीत न उतरा गोविन्दस्वामीसे विजयदत्तने कहा कि हे पिता मुझे शीतबहुत पीड़ा देरहाहै इसलिये कहींसे अग्नि लावो तब गोविन्दस्वामी अग्नि लेनेगया परन्तु कहीं अग्नि न मिला तब आयकर पुत्रसे कहा कि इस अर्द्धरात्रिके समय सब सोतेहैं सबके द्वार बंदहैं मैंने बहुत यत्न किया परन्तु कहीं अग्नि नहीं मिलता तब विजयदत्त फिर दीन वचनबोला कि हे पिता मुझे बहुत शीत लगताहै औ शीतल पवन चलरहाहै किसी भांति मुझे चैन नहींपड़ता औ आपने मिथ्याही कहदिया कि कहीं अग्नि नहीं मिलता देखो सन्मुख कैसा प्रचंड अग्नि जल रहाहै जिसकी ज्वाला आकाश तक उठतीहैं आप जाकर वहांसे अग्नि लेआवें यह विजयदत्तका बचन सुन गोविन्दस्वामी बोला कि हे पुत्र मैं कभी मिथ्या नहीं बोलता इस समय अग्नि कहीं नहीं मिलता यह सामने श्मशानहै उसके बीच चिता जलरही है वही अग्नि देखपड़ता है इस अग्नि सेवन से आयुष् का क्षय होताहै इसलिये इस अपवित्र औ अमंगल अग्निकोमैं नहीं लाया तुझे इस अग्निका स्पर्शकरना योग्यनहीं यहसुन विजयदत्त फिर व्याकुलहो बोला कि हे पिता चाहे यह चिताका अग्निहो चाहे यज्ञ का आप शीघ्र लाइये नहींतो मेरेप्राण जातेहैं यह पुत्रका वचन सुन स्नेह वश हो गोविन्दस्वामी श्मशान में अग्नि लेनेचला तब विजयदत्तभी उठकर उसके पीछे२ चलदिया वहांजाय चिताग्नि से अपने शरीरकोसेंका औ कुछ शीत बाधा निवृत्त हुई तब विजय-दत्त बोला कि हे पिता चिता के बीच यह गोल २ कमलसा क्या पदार्थ जल रहाहै मुझे बताओ तब गोविंदस्वामी ने कहा कि हे पुत्र मज्जासे भरा यह मनुष्यका कपाल जलरहाहै यहसुन विज-यदत्त ने एक लकड़ी से उसको फोड़ दिया तब उसमें से मज्जा उछट कर विजय दत्तके मुखमें गिरी उसके मुखमें गिरतेही वह

अति भयंकर वेतालहोगया औ घोर शब्द करनेलगा कि जिससे आकाश औ भूमि मानों फटजायँ औ कपालको चितासे निकाल सबमज्जा चाटगया औ अपने पिताकोभी भक्षणकरने दौड़ा तब आकाशवाणी हुई कि अरे तू यह साहस मत कर तब वह अपने पिताको छोड़ आकाश को उड़गया औ वेतालों के समूह में जा मिला वे वेताल उसको देख बोले कि कपाल के फोड़ने से यह वेताल हुआ इसलिये इसका नाम कपालस्फोट है यह उसका नाम रख सब वेताल उसको अपने राजा नरास्थिभूषण के पास लेगये नरास्थि भूषण देखकर बहुत प्रसन्न हुआ औ कपाल-स्फोट को अपना सेनापति बनाया कुछ कालके अनंतर चित्रसेन गंधर्व से राजा नरास्थिभूषण का युद्ध हुआ उसमें नरास्थि भू-षण मारागया तब सब वेतालों ने मिलकर कपालस्फोट को अपना राजा बनाया इसभांति विद्याधरेंद्र का पुत्र मुनि शाप से मनुष्य हुआ मनुष्य से वेताल औ वेतालसे वेतालों का राजा बनगया औ सुखसे राज्य करनेलगा॥

नवां अध्याय॥

सूतजी कहते हैं कि हे मुनीश्वरो प्रभात होतेही अपनी स्त्री औ पुत्र समेत गोविंदस्वामी विलाप करने लगा उसको विलाप करते देख समुद्रदत्त नाम एक वैश्य दयाकर अपने घरको ले-आया औ गोविंदस्वामी को बहुत आश्वासन कर अपने धन की रक्षा का अधिकार उसे दिया गोविंदस्वामी भी अपने पुत्र विजयदत्त के फिर मिलने की आशासे वैश्य के घरमें कालक्षेप करने लगा गोविंदस्वामी का छोटा पुत्र अशोकदत्त शास्त्र में औ शस्त्रविद्या में बड़ा विचक्षण हुआ औ और भी विद्याओं में उसने इतना अभ्यास किया कि उसके तुल्य विद्वान् और कोई

भूमंडल में न निकलै औ सब नगर में प्रसिद्ध होगया इसी अव-
सर में काशी के राजा प्रतापमुकुटके समीप एक बड़ा बलवान्
मल्ल देशांतर से आया उसके साथ काशी के किसी मल्लने
लड़ना अंगीकार न किया तब राजाने गोविंदस्वामी के पुत्र
अशोकदत्त को बुलवाया अशोकदत्त भी राजा की आज्ञा से सभा
में आया तब राजाने कहा कि हे अशोकदत्त तू सब वलवान्
पुरुषों में अधिक बली है इसलिये इस दुर्जय मल्लको जीत
दक्षिण देशके सब मल्लोंका यह स्वामीहै यदि तू इसको जीते-
गा तो जो माँगैगा वही मुझसे पावेगा यह राजा का वचन सुन
प्रसन्न हो अशोकदत्त उस दक्षिणी मल्लके साथ युद्ध करनेलगा
अशोकदत्त ने उसको नीचे गिराकर ऐसा दबाया कि उसकी
पुतली फिरगई औ प्राण मुक्तहुये यह दुष्कर कर्म देख राजा बहुत
प्रसन्न हुआ औ बहुत से धन ग्राम आदि देकर अशोकदत्त को
प्रसन्न किया औ सदा उसको अपने समीप रखनेलगा एकदिन
सायंकाल के समय राजा अशोकदत्त को साथ लेकर एकांत में
विचरने गया वहाँ अकस्मात् एक ओरसे यह शब्द हुआ कि हे
राजा मुझे बिना अपराध नगरके दंडपाल ने मेरे शत्रुकी प्रेरणा
से शूलीपर चढ़ादिया आज चारदिन हुये पूर्बजन्म के पापसे मेरे
प्राण नहीं निकलते औ इस समय मुझे तृषा बहुत पीड़ादेती है
आप जल पिलाओ यह दीन वचन सुन राजाने अशोकदत्त को
आज्ञादी कि तू इस निरपराध मनुष्य को जल पिलाय आ यह
राजा का वचन सुन जलका कलश भर उस श्मशानमें अशोक-
दत्त गया जहाँ से वह शब्द सुनाथा वहाँ जाकर देखा कि एक
परमसुंदरी स्त्री सब भूषणों से भूषित खड़ी है उसको अशोक-
दत्त ने पूछा कि हे भद्रे तू कौन है औ इस भयंकर श्मशान में
रात्रि के समय इस शूलीपर चढ़ाये हुये पुरुष के नीचे क्यों खड़ी

है तब वहस्त्री बोली कि हेमहात्मा इस शूलपर मेरेपतिको राजा ने चढ़ादिया कृपणपुरुष जिस भांति धन नहीं त्यागै इसभाँति यह प्राण नहीं त्यागता मैं इसके साथ सती होनेके लिये यहाँ आईहूं अब यह तृषासे पुकारता है परंतु मैं शूल के ऊपर नहीं पहुंच सकती कि इसके मुखमें जलडालूं शूल बहुत ऊंचाहै यह स्त्री का वचन सुन अशोकदत्त ने कहा कि हे माता तू मेरी पीठ पर चढ़कर इसको ठंढाजल पिलादे इतना कह अशोकदत्त शूल के नीचे झुकगया औ वह नारी भी झटपट उसके ऊपर चढ़गई थोड़े काल में अशोकदत्त के ऊपर रुधिर गिरा तब उसने ऊपर को दृष्टि करी तो देखा कि वह स्त्री उस पुरुषके मांस को खाती है अशोकदत्त ने उस स्त्रीका पैरपकड़ा परंतु वह पैरको छुटाय आकाशको उड़गई औ एक जड़ाऊ नूपुर अर्थात् पाजेब अशोकदत्तके हाथमें रहगया उस नूपुर को लेकर अशोकदत्त राजा के समीप आया औ संपूर्ण वृत्तांत राजा को सुनाय वह नूपुर दिया राजा अशोकदत्त का धैर्य देख बहुत प्रसन्न हुआ औ उस बीर को अपनी मदनलेखा नाम परम सुन्दरी कन्या ब्याहदी अशोकदत्त भी आनंद से रहनेलगा एकदिन राजा उस दिव्य नूपुरको देख बोला कि ऐसा दूसरा नूपुर कहाँ से मिलै यह राजा के वचन सुन अशोकदत्त ने मनमें बिचार किया कि श्मशान में यह नूपुर मिलाथा अब वह स्त्री फिर कहाँ मिलै कि दूसरा नूपुर भी प्राप्त होय इसभांति अनेक प्रकार के विचार कर अशोकदत्त ने निश्चय किया कि श्मशान में जाय महा मांस विक्रय करूं तब सब भूत प्रेत पिशाच आदि मंत्र के बल से आ जायँगे उनमें वह राक्षसीभी अवश्य आवेगी तब बलसे उस का दूसरा नूपुरभी लूंगा हजारों भूत प्रेत भी मेरा कुछ नहीं कर सकते यह मन में ठान महा मांस अर्थात् मनुष्य मांस ले

रात्रि के समय श्मशान में गया औ मंत्र पढ़ यह पुकारने लगा कि मैं महामांस बेचताहूं जिसकी इच्छा होय वह लवै यहशब्द सुनतेही अति हर्षित हो चारोंओर से किलकिलाते हुवे भूत प्रेत पिशाच राक्षस कंकाल वेताल आय इकट्ठे हुवे इतनेमें महामांस की इच्छासे बहुत सी राक्षस कन्याओं करकेयुक्त वह राक्षसी भी वहाँ आय पहुंची औ अशोकदत्तने भी उसको पहिचाना उस राक्षसी ने पूछा कि महामांस का क्या मोल लेगा तब अशोक-दत्तने कहा कि दूसरा नूपुर राक्षसी बोली कि मैं तेरे धीरज पर बहुत प्रसन्न हूं इसलिये दूसरा नूपुर औ अपनी कन्या भी तुझे देती हूं महामांस की मुझे कुछ आकांक्षा नहीं इतना कह उस विद्युत्केशी नाम राक्षसी ने अपनी रूप यौवन करके युक्त विद्युत्प्रभा नाम कन्या अशोकदत्त को बिवाहदी औ वह नूपुर देकर एक सुवर्ण का कमलभी दिया नूपुर सुवर्ण कमल और विद्युत्प्रभाको साथले अपनी सास विद्युत्केशीसे बिदाहो अशोक-दत्त राजा के समीप पहुंचा औ वह नूपुर राजा को दिया राजाभी दूसरा नूपुर पाय बहुत प्रसन्न हुआ औ अशोकदत्त की प्रशंसा करने लगा एकदिन अशोकदत्तने अपनीप्रिया विद्युत्प्रभासे पूछा कि हेप्राणप्यारी यहसुवर्ण कमल तेरीमाताने कहांसे पाया मुझे ऐसे कमलों की और भी इच्छाहै यदि तू बतावै तो मैं ले आऊं तब विद्युत्प्रभा ने कहा कि हे प्रिय कपालस्फोट नाम वेतालों का राजा है उसके सरोवर में ऐसे कमल होते हैं मेरीमाता एक दिन जलक्रीड़ा करने उस सरोवरमें गई थी तब एक पुष्प तोड़ लाई थी यह अपनी प्रिया का वचन सुन अशोकदत्तने कहा कि मुझे उस सरोवर के तटपर पहुंचादे तब विद्युत्प्रभा अशोकदत्त को ले उड़ी औ क्षण भर में वहां पहुंचा दिया औ सरोवर में घुसकर सुवर्ण कमल तोड़ने लगा तब उस सरोवर के रक्षक

अशोकदत्त को मारने दौड़े परंतु उस वीरने उन सबको मार दिया तब कपालस्फोट आप युद्ध करने निकला औ अशोकदत्त से युद्ध करने लगा अशोकदत्त अपने खड्गसे कपालस्फोट के दो टुकड़े करना चाहता था इतने में विद्याधरगुरु विज्ञप्तिकौशिक विमान में बैठे वहां आ निकले वे पुकारे कि हे अशोकदत्त साहस मतकर यह वचन सुन अशोकदत्त ने ऊपर को दृष्टि की तो देखा कि अति प्रभावान् विद्याधरगुरु विमान में बैठे हैं उन को देखतेही अशोकदत्त शाप से मुक्त हुआ औ मनुष्य देह छोड़ दिव्य देह होगया तब विद्याधरगुरु ने अशोक दत्त को अपने पहिले रूपमें प्राप्त हुये देख कहा कि हे सुकर्ण यह तेराभाई गालवमुनिके शापसे वेताल हुआहै इसने गालवमुनिकी कन्याको स्पर्श किया था औ इसपाप का तैंने अनुमोदन किया था इसलिये तुझेभी गालव मुनिने शापदिया तेरा शाप मेरे दर्शन तक था औ इस तेरे भाई के शापका अंत गालवमुनि ने कुछ कल्पन नहीं किया अब तू शापसे मुक्त हुआ इसलिये स्वर्ग को चल औ उत्तमभोग भोग यह गुरु का वचन सुन सुकर्ण ने कहा कि महाराज बड़े भाई को इसी दुर्दशामें छोड़ मुझे स्वर्गमें जाना उचित नहीं आप कोई ऐसा उपाय बतावें कि जिससे यहभी शापसे मुक्तहोय यहसुन विज्ञप्तिकौतुक ने कहा कि यहशाप निवृत्त होना अति कठिन है परंतु एकगुप्त बात हम कहते हैं जो ब्रह्माजी ने सनत्कुमार आदि से कही थी दक्षिण समुद्र के तटपर चक्रतीर्थ के समीप एकतीर्थ है जिसके दर्शन मात्रसेही सब पाप निवृत्त हो जाते हैं उसमें स्नान करने से जो फल होताहै उसका तो कौन वर्णन करसकै उसतीर्थ में जाकर तेरा भाई स्नानकरै तो वेतालपनेसे मुक्तहो दिव्यदेह धार स्वर्ग को जाय सुकर्ण यह वचन सुन अपने भ्राता कपालस्फोट नाम को साथ ले दक्षिण समुद्र

के तटपर उसतीर्थ पर पहुंचा जो प्रज्ञप्ति कौतुक ने बताया था वहाँ जाय सुकर्ण ने अपने भाईसे कहा कि हेभ्राता तू इसतीर्थ में स्नानकर जिससे यह गालवमुनिका शाप निवृत्त होय इतने में पवन चला उससे तीर्थ के जलकण उड़कर कपालस्फोट की देहपर गिरे उन जलकणों के गिरतेही वेताल रूप छोड़ ब्राह्मणपुत्र विजयदत्त होगया फिर उसने तीर्थ में स्नानकिया तब मनुष्यदेह छोड़ दिव्यदेह होगया औ दोनों भाई उत्तम विमानपर चढ़ दिव्य स्त्रियों सहित उस तीर्थकी प्रशंसा करते हुवे अपनेगुरु विज्ञप्ति कौतुक के संग स्वर्ग को गये उसदिनसे उस तीर्थ का नाम वेतालवरद हुआ चक्रतीर्थके दक्षिण भागमें स्थित वेतालवरद नामक तीर्थमें जास्नान करेंगे वे जीवन्मुक्त होंगे इस तीर्थ के तुल्य और तीर्थ न हुआ न होगा इसमें स्नान करनेसे वेतालपनाछुटा यहां संकल्पकर स्नानकरै औ नियमपूर्वक पिंडदानपितरों के निमित्त करैइतना कह सूतजी बोले कि हे मुनीश्वरो यह हमने वेतालवरद तीर्थ के नाम का कारण औ माहात्म्य वर्णन किया जो पुरुष इस अध्याय को पढ़ै अथवा भक्तिसे श्रवण करै वहमुक्त होय॥

दशवां अध्याय॥

सूतजी कहतेहैं कि हेमुनीश्वरो वेतालवरद तीर्थमें स्नानकर धीरे २ गंधमादन पर्वत को जाय समुद्र में जो सेतुरूप करके गंधमादन पर्वत स्थितहै वह ब्रह्मलोक का मार्ग विश्वकर्मा ने बनायाहै लाखों सरोवर नदी समुद्र महापुण्यबन आश्रम पुण्यक्षेत्र अरण्य वेद वसिष्ठ आदि मुनि सिद्ध चारण किन्नर लक्ष्मी औ धरणी सहित विष्णुभगवान् सावित्री औ सरस्वती सहित ब्रह्माजी गणपति कार्तिकेय इंद्रआदि देवता सूर्यआदि ग्रह अष्ट

वसु पितर लोकपाल सब उस पर्वतमें निवासकरते हैं औ दर्शन करनेहारों के महापातक हरतेहैं इसी पर्वतमें शिवपार्बती विहार करतेहैं किन्नर गंधर्ब विद्याधर आदि इसीपर्वतमें अपनी कांताओं के साथ क्रीड़ा करते हैं गंधमादन के दर्शन करतेही उत्तमबुद्धि औ सौख्य प्राप्त होताहै उसके ऊपर निवास करनेवाले सिद्ध चारण गंधर्ब आदि सदा सदाशिवका पूजन करते हैं गंधमादन का पवन शरीरमें लगतेही करोड़ों ब्रह्महत्या आदि महापातक नष्ट होजातेहैं पहिले यह पर्बत समुद्रके मध्यमें होनेसे मनुष्यों को अगम्य था केवल देवता औ ऋषिही इसमें रहतेथे श्रीराम-चंद्रजीकी आज्ञासे नलने सेतुबांधा उसके मध्यमें यह पर्वत आगया तबसे मनुष्य जानेलगे गंधमादन पर्वतके समीपजाय प्रार्थनाकरै औ येमंत्रपढ़ै (क्षमाधरमहापुण्य सर्बदेवनमस्कृत विष्णवादयोपियंदेवास्सेवंतेश्रद्धयासह। तंभवंतमहंमद्भ्यामाक्र-मामिनगोत्तम। क्षमस्वपादघातंमे दययापापचेतसः। त्वन्मूर्द्ध-निकृतावासं शंकरंदर्शयस्वमे) इनमंत्रोंसे प्रार्थनाकर धीरे २ गंध-मादन पर्वतमें जाय समुद्रमेंस्नानकरगंधमादनमें पिंडदान करै सरसोंके तुल्यभी पिंड पितरोंकेनिमित्तदेवै तो एकयुगपर्यंत पितर तृप्तरहते हैं जो शमीवृक्षके पत्रकेतुल्य पिंडदेवै तो उसके पितर नरक से स्वर्गको जायँ औ जो पहिलेही स्वर्गमें होंय तो मुक्ति पावैं गंधमादन के ऊपर लोकमें प्रसिद्ध पापबिनाशन नामतीर्थहै जिसके स्मरण करनेसेही मनुष्य जन्ममरण से छुटै उस तीर्थमें जाय भक्तिसे स्नानकरै तो मुक्तिपावै। इतनी कथासुन शौनक आदि मुनीश्वरों ने पूछा कि हेसूतजी आप पाप विनाशन तीर्थ का माहात्म्य विस्तार से बर्णन करें ब्यासजीके अनुग्रहसे आप सर्बज्ञ हैं यह मुनियों का वचनसुन सूतजी कहने लगे कि हे मुनीश्वरो हिमालय पर्वतमें ब्रह्माजीके आश्रम के बीच जो कथा

हुई उसको हम वर्णन करतेहैं हिमालय पर्वतमें अति मनोहर एक आश्रमहै जो अनेक वृक्ष लता गुल्म मृग पक्षी हाथी आदि से भराहै सिद्ध चारण व्रती ऋषि तपस्वी ब्राह्मण दीक्षित ब्रह्मचारी वेदपाठी वानप्रस्थ सन्न्यासी आदि करके नित्य सेवित हैं वालखिल्य मरीचिप आदि मुनि जिस आश्रममें निवास करतेहैं एक समय बड़ा साहसी दृढ़मतिनाम एकशूद्र उन ब्राह्मणों के समीप आया वहां बड़े २ तेजस्वी औ तपस्वी ब्राह्मणों को देख उसने साष्टांग दंडवत् प्रणामकिया ब्राह्मणों ने उसका सत्कार किया ब्राह्मणों को देख उसकी भी इच्छा तप करनेकी हुई औ कुलपति अर्थात् उन सब ऋषियों में मुख्य ऋषिके समीप आय प्रार्थनाकरी कि महाराज मैं शूद्रहूं औ आपकी सेवामें रहकर तप किया चाहताहूं अबमैं आपके शरणमें प्राप्त हुआ इसलिये आप मुझेभी यज्ञकी दीक्षादीजिये यह दृढ़मति का वचन सुन कुलपतिने कहा कि शूद्रको दीक्षा नहीं होसकती जो तेरी तप करने की इच्छाहोय तो ब्राह्मणों की शुश्रूषाकर शूद्रको कभी उपदेश न करना चहिये शूद्रके उपदेश करने से उपदेष्टा को बड़ा दोष होताहै शूद्रको कभी न पढ़ावै औ शूद्रसे याचना भी न करै शास्त्र व्याकरण काव्य नाटक अलंकार पुराण इतिहास आदि शूद्रको कभी न पढ़ावे जो ब्राह्मण शूद्र को पढ़ावै उसको चंडाल के तुल्य समझ सब ब्राह्मण मिलकर अपने ग्रामसे निकालदेवैं औ अक्षरयुक्त शूद्रकाभी त्यागकरैं इसलिये हेदृढ़मति तू श्रद्धासे ब्राह्मणों की सेवाकर इसीमें तेरा कल्याण है मनु आदिकोंने ब्राह्मणकी सेवा करना शूद्रका मुख्यकर्म कहाहै इसलिये तुझे अपने जाति धर्मको त्याग न करना चहिये यह मुनिका वचन सुन शूद्र चिंतन करनेलगा कि अब मुझेक्या करना चहिये मेरी श्रद्धातो तप करने में पहिले सेहीहै इसलिये

अब वही उपाय करना चहिये जिससे मुझेज्ञान प्राप्तहोय यह मनमें ठान उस आश्रमसे दूरजाकर एक झोंपड़ी बनाय उसमें एक देवमंदिर बनाया औ एक तलाव खोद उसके तटपर पुष्पवाटिका लगाई इसभांति आश्रम बनाय श्रद्धासे तप करनेलगा अभिषेक उपवास बलि हवन देवपूजन आदि नित्य करता फलाहार करता जितेंद्रिय रहता औ पुष्प पत्र फल मूल आदि करके नित्य अतिथियों का पूजन करता इस प्रकार तप करते २ बहुत काल ब्यतीत हुआ एक बड़े तपस्वी गर्गकुल में उत्पन्न सुमति नामकमुनि उसके आश्रममें आये दृढ़मतिनेभी मुनिको स्वागत प्रश्नकर भलीभांति उनका पूजनकिया औ फल मूल आदि उनको भोजन कराय प्रणामकर अनेक प्रकार की कथाकह प्रसन्न किया मुनिभी संतुष्टहो दृढ़मतिको आशीर्वाद देकर अपने आश्रम कोगये परंतु उस दिनसे सुमतिमुनि प्रतिदिन दृढ़मतिके आश्रम में आने लगे दृढ़मति भी उनका बहुत सत्कार औ सेवा करता इस भांति उस शूद्रके साथ सुमति का बहुत स्नेह होगया औ जो शूद्र कहता उसको मुनिभी अंगीकार करते एकदिन दृढ़मति ने सुमतिमुनिको कहा कि आप मुझे हव्य कव्य विधान के सब मंत्र उपदेश करें जिससे मैं देवता औ पितरों को संतुष्ट करूं महालय श्राद्ध अष्टकाश्राद्ध आदिका विधान और भी जोवैदिक कृत्य होय वह सब आप मुझे सिखावें यह दृढ़ मतिका वचन सुन सुमति मुनिनेसब मंत्र औ विधान उसको सिखाये औ आप उससे श्राद्ध करवाया औ शूद्र से बिदाहो प्रसन्नतापूर्बक अपने आश्रम को गये औ दृढ़मति से नित्य मिलते वहभी उनकी सेवा करता सुमति को शूद्रका संसर्ग देख और मुनियों ने त्याग दिया अपना आयुष् भोगकर सुमति मुनि मृत्युवश हुवे तब उनको यमराजके दूतों ने ले जाकर नरक में डालदिया करोडों

कल्प नरकमें पड़े रहे पीछे स्थावर योनि अर्थात् वृक्ष आदि हुवे फिर क्रमसे गर्दभ ग्रामसूकर श्वान काक चंडाल शूद्र वैश्य क्षत्रिय आदि योनियोंमें जन्मलेते ब्राह्मणके घरमें जन्मपाया पिताने उस बालक का आठवें वर्षमें यज्ञोपवीत किया औसब वैदिक आचार सिखाया एक दिन वह बालक बनमें गयाथा वहाँ उसको ब्रह्म-राक्षसका आवेश होगया वहाँसे रोता हसता विलाप करता गाता गिरता भ्रमता औ हाहाशब्द करता घरमें आया औ सब वैदिक कर्मउसने छोड़दिया पिता भी पुत्रकी यह दशा देख अति दुःखी हुआ औ उसको संग लेकर अगस्त्य मुनिके शरण में गया वहाँ जाय अगस्त्यजी को प्रणामकर ब्राह्मण ने प्रार्थना करी कि महाराज मेरे इस पुत्रमें ब्रह्मराक्षस का आवेश होगया है इस-लिये क्षणमात्र भी इस को सुख नहीं औ पितरों का ऋण नि-वृत्त करनेके लिये मेरे कोई दूसरा पुत्र नहीं अब आप कृपाकर कोई उपाय बतावें आपके समान तीनों लोकों में कोई तपस्वी नहीं औ सब ऋषि आपको शिवभक्तों में मुख्य गिनते हैं आपके बिना कोई इसकी रक्षा करनेहारा नहीं इसलिये आप इस अनाथ पर औ मुझपर अनुग्रह करें महात्मा पुरुष दयालु होतेहैं सूतजी कहते हैं कि हे मुनीश्वरो यह ब्राह्मण का वचन सुन अगस्त्यजी ने ध्यान किया औ बहुत कालतक ध्यानकर बोले कि हे ब्राह्मण कई जन्म पहिले यह तेरा पुत्र सुमति नाम ब्राह्मणथा इसने शूद्रको सब वैदिक कर्म उपदेश किये उस पापके फलसे करोड़ों वर्ष नरकवास भोगकर स्थावर आदि अनेक दुष्टयोनियोंमें जन्म लेता अब तुम्हारा पुत्र हुआ अबभी पूर्वजन्म के पापसे यमराज के भेजे हुवे ब्रह्मराक्षस ने इसको आघेरा अब हम इसकी नि-वृत्ति का उपाय कहते हैं सावधान होकर श्रवणकरो दक्षिण समुद्रमें देवताओं करके सेवित सेतुरूपसे स्थित गंधमादननाम

पर्वत है उसके ऊपर पाप विनाशन नाम तीर्थ है उस तीर्थमें स्नान करने से भूत प्रेत पिशाच ब्रह्मराक्षस औ बड़े २ रोग नष्ट होतेहैं हेब्राह्मणतू अपने पुत्रको वहाँ स्नानकराय तीनदिन स्नान कराने से ब्रह्मराक्षस निवृत्त होजायगा इसके बिना और कोई उपाय नहीं है इसलिये तुम बिलंब मतकरो शीघ्रही जाय इस पुत्रको स्नान कराओ यह अगस्त्यजी का वचन सुन उनको प्रणामकर गंधमादनपर्वत को चला वहाँ कुछ दिनों में पहुंच अपने पुत्रको पाप विनाशन तीर्थ में तीनदिन संकल्प पूर्वक स्नान कराया औ ब्राह्मण ने आपभी स्नानकिया स्नान करतेही वह ब्राह्मणपुत्र आरोग्य औ दिव्य रूप करके युक्तहोगया औ बहुत काल संसार सुखभोग अंत में मुक्तिको प्राप्त हुआ ब्राह्मण भी तीर्थ स्नान के फलसे अपने आयुष्के अंतमें मुक्तहुआ औ जिस शूद्र को वैदिक कर्मका सुमति न उपदेश किया था वह भी बहुत काल नरकभोग अनेक बुरे जन्म भोगता गंधमादन पर्वत में गीध हुआ एक दिन वह गीध पापनाशन तीर्थ में जल पीने आया वहाँ उसने जल पिया औ देहपर भी जलके छींटे लगाये उसजलकेस्पर्श होतेही दिव्यदेह पुरुष होगया दिव्यवस्त्र भूषण माला आदि से भूषित हो उत्तम विमान में बैठ सुंदर स्त्रियों करके सेवित छत्र चामर आदिसे शोभित हो स्वर्गको गया हे मुनीश्वरो पाप बिनाशन तीर्थ का ऐसा प्रभाव है स्वर्ग मोक्ष पुण्य आदि सब पदार्थ मिलतेहैं औ पापों का नाश होता है उस तीर्थ में स्नान करने से कोई पदार्थ दुर्लभ नहीं ब्रह्मा विष्णु महेश आदि देवता सदा उसका सेवन करते हैं पापों का नाश करने से उस तीर्थ का नाम पापनाशन पड़ा कल्याण की इच्छावाले पुरुष वहाँ अवश्यही स्नान करें हे मुनीश्वरो यह पाप विनाशन तीर्थका परम गुप्त माहात्म्य संक्षेप से कहा है जिस

तीर्थके स्नान करने से अति दुराचार शूद्र औ ब्राह्मण भी मुक्त हुवे उसकी कहाँ तक महिमा वर्णन करें॥

ग्यारहवां अध्याय॥

सूतजी कहते हैं कि हे मुनीश्वरो पापनाशन तीर्थ में स्नान कर फिर सीता सरोवर में जाना चहिये संसार में गंगा आदि जितने तीर्थ हैं सब सीता सरोवर में निवास करते हैं काशी आदि क्षेत्र भी अपना २ पाप निवृत्त होने के लिये सदा उस तीर्थ का सेवन करते रहते हैं सब जीवोंके पातक हरनेके लिये शिवजीभी वहां निवास करते हैं इसी तीर्थमें स्नान करने से इंद्रको ब्रह्महत्या ने छोड़ा यह सूतजीका वचनसुन मुनियों ने पूछा कि इंद्रने क्योंकर ब्रह्महत्या की औ उस तीर्थ में स्नान किसभांति यह आप वर्णन करें तब सूतजी कहनेलगे कि हे मुनीश्वरो पूर्वकालमें कपालाभरण नाम एक बड़ा पराक्रमी राक्षसहुआ वह ब्रह्माजीके बरसे सब देवताओं करके अवध्य था अर्थात् देवता उसको नहीं मार सकते थे उस राक्षस का मंत्री शवभक्ष नाम था वैजयंतनगर उसकी राजधानी था औ सौ अक्षौहिणी सेना उस राक्षसकी थी अपने नगर में आनंद से कपालाभरण निवास करता था एकदिन कपालाभरणने अपने मंत्री शवभक्षको बुलाकर कहा कि हे प्रधान हमारी इच्छा है कि इन्द्रको जीतकर स्वर्गमें अपनी सेना समेत निवास करें यह अपने प्रभुका वचनसुन मंत्रीनेभी कहा कि बहुत उत्तमबात है तब कपालाभरण दुर्मेधानाम अपने पुत्रको राज्यदेकर बहुतसी सेना लेकर अमरावती नगरीको जीतने चला समुद्रोंको सुखाता पर्वतों को चूर्णकरता घोड़े हाथी रथ पयादों के शब्दसे दिग्गजों कोभी बधिरकरता देवताओंके साथ युद्धकरनेके लिये अमरावती

के समीपजापहुंचा देवताभी सेनाका कलकलसुन नगरके बाहिर निकले औ राक्षसों के साथ युद्धहोनेलगा ऐसा युद्धहुआ किन किसीने पहिले देखाथा न सुनाथा देवता राक्षसों को मारनेलगे औ राक्षस देवताओं को परस्पर द्वन्द्व युद्ध होनेलगा कपालाभरण इंद्रके साथ शवभक्ष यमराज के साथ कैशिक वरुणकेसाथ औ रुधिराक्ष कुवेर के साथ युद्ध करनेलगा मांसप्रिय मद्यसेवी क्रूरदृष्टि औ भयावह ये चार कपालाभरण के छोटेभाई अश्विनी-कुमार वायु औ अग्निके साथ युद्ध करनेलगे यमराजने एकदंड ऐसा मारा कि शवभक्ष के प्राण मुक्तहुये औ उसके साथ तीस अक्षौहिणी सेनाथी वहभी यमराज ने मारदी वरुण ने भाले से कैशिक का शिर काटलिया रुधिराक्ष को कुवेर ने मारगिराया कपालाभरणके चारोंभाई अश्विनीकुमार वायु अग्निने मारे औ इंद्रने कपालाभरणकी सौ अक्षौहिणी सेनाका क्षणमात्रमें संहार किया कपालाभरण अपनी सेनाको नष्ट हुई देख क्रोधकर इंद्रकी ओर दौड़ा औ इंद्रसे कहा कि खड़ारह इतना कह पांच बाण इंद्रके मस्तकमें मारे परंतु उन बाणों को इंद्रने काटदिया तब इंद्रके ऊपर कपालाभरण ने त्रिशूल फेंका उसको इन्द्रने अपने बर्छीसे काटदिया तब क्रोधकर सौहाथ लंबी औ पांचहजारमण भारी अति भयंकर लोहकी गदा उठाकर कपालाभरणने इंद्रकी छातीमें मारी उसके लगतेही इंद्रमूर्छित होगया तब बृहस्पतिने मृतसंजीविनी विद्याजपकर इंद्रको चैतन्यकिया तब इंद्रऐरावत हस्तीपरचढ़ फिर कपालाभरणके सम्मुख आया औ उसके ऊपर बज्रका प्रहारकिया वहभी बज्रकेलगतेही रथसहित चूर्णहोगया उस राक्षसके मरतेही सब जगत्‌में आनन्द हुआ परंतु वहांसेही उत्पन्न होकर एक घोर ब्रह्महत्या इन्द्रके पीछेलगी इतनी कथा सुन मुनीश्वरों ने पूछा कि हेसूतजी वह राक्षस ब्राह्मणतो थाही

नहीं फिर उसके मारने से इंद्रको हत्या क्यों लगी तब सूतजी कहने लगे कि हे मुनीश्वरो अतिगुप्त बात हम वर्णन करते हैं आप सावधानहो श्रवणकरें पूर्वकालमें विंध्याचल पर्वतके बीच त्रिविक्रमनाम एक राक्षस रहता था उसकी परमसुंदरी औ सब उत्तम लक्षणों करके युक्त सुशीलानाम भार्याथी एकदिन सुशीला बनमें विचरतीथी वहांही शुचिनाम एकमुनि तप करते थे उनने सुशीला को देखा देखतेही कामके वशहुवे औ कहनेलगे कि हे सुन्दरि तू किसकी भार्याहै औ इस भयंकर बनमें अकेली क्यों आईहै तू मुझे थकीसी देखपड़तीहै इसलिये आज तू मेरे उटज अर्थात् झोंपड़ीमें सुखसे निवासकर यहमुनिका वचनसुन सुशीलाने कहा कि महाराज मैं त्रिविक्रमनाम राक्षस की भार्याहूं औ पुष्पतोड़ने इस बनमें आईहूं मुझे पति ने यहभी आज्ञादीहै कि शुचि मुनिको प्रसन्नकर उनसे पुत्र उत्पन्नकराय इसलिये आप कृपाकर मुझमें पुत्र उत्पन्न कीजिये यह सुशीला का वचन सुन प्रसन्न हो मुनि बोले कि हे सुशीले तुझेदेख मुझेभी बहुतप्रीति हुई है इसलिये मेरा मनोरथ तू शीघ्रही पूराकर इतनाकह मुनि औ सुशीला विहार करनेलगे तीनदिन मुनि उसके समीप रहे चौथे दिन उससे कहा कि हेप्रिये तेरेगर्भ में पुत्र है वह चिरकाल राज्य करैगा उसका नाम कपालाभरण रखना हजारवर्ष तपकरके ब्रह्माजी से बर पावैगा औ इन्द्र के बिना और किसी देवता का उसको भय न होगा इतना कह मुनि तो काशीको गये औ कुछ काल के अनंतर सुशीला के पुत्रहुआ वहीकपालाभरणथा जो इंद्र ने मारा शुचिमुनि के वीर्यसे कपालाभरण उत्पन्न हुआ इसलिये उसके मरने से इन्द्रको ब्रह्महत्यालगी इन्द्र भी उस हत्याकरके पीड़ित सब लोकों में दौड़ताफिरा परंतु कहीं चैन नहीं मिला तब ब्रह्मलोक में गया औ ब्रह्माजी

से प्रार्थना करी कि महाराज यह ब्रह्महत्या मुझे बहुतदुःख देतीहै इसका आप कोई उपाय बताइये यह इंद्र का बचनसुन ब्रह्माजी कहनेलगे कि हे देवराज गंधमादन पर्वत में सीता कुंड है वहाँ जाय उस तीर्थमें स्नानकर यज्ञकरो तब तुमको यह हत्या छोड़ेगी सीतासरोवर मुक्तिको देनेहाराहै उसमें स्नान करने से सबपातक उपपातक दुःख दारिद्र आदि दूर होते हैं यह ब्रह्माजीका वचनसुन इन्द्र सीतासरोवरपर पहुंचा वहां स्नानकर यज्ञ किया तब ब्रह्महत्या निवृत्त हुई औ सुखीहोकर इन्द्र स्वर्ग का राज्य करनेलगा इतनी कथा सुनाय सूतजी बोले कि हे मुनी-श्वरो ऐसाप्रभाव सीतासरोवर काहै रामचन्द्रजीका संदेह निवृत्त करने के लिये सीताने अग्निमें प्रवेशकिया औ अग्निसे निकल अपने नामका यहतीर्थ बनाया औ आप उसमें स्नानकिया इसीसे उसका नाम सीतासरोवर हुआ उस तीर्थमें जो मनुष्य स्नानकरै उसके सब मनोरथ सिद्धहोते हैं उस तीर्थके जलसे आचमनकर अनेकप्रकार के दान देवै बड़ी दक्षिणावाले यज्ञ करैंतो अवश्यही मुक्ति पावैं हे मुनीश्वरो यह सीतासरोवर का प्रभाव हमने वर्णन किया इसको जो पढ़ै अथवा सुनै वह उत्तम भोग भोगकर अंत में सद्गति पाता है ॥

बारहवां अध्याय॥

सूतजी कहतेहैं कि हे मुनीश्वरो सीताकुंडमें स्नानकर मङ्गल तीर्थको जाना चहिये उस तीर्थमें लक्ष्मी निवास करतीहै इन्द्रादि देवता अलक्ष्मी के नाशके लिये नित्य उस तीर्थमें स्नान करतेहैं हे मुनीश्वरो हम एक इतिहास वर्णन करतेहैं उसको आप प्रीति से श्रवणकरो पूर्वकालमें चन्द्रवंशके बीच मनोजव नामएक राजा हुआ वह राजा सदा वेद पढ़ता यज्ञ करता ब्राह्मण भोजन कराता

वेदके अर्थको चिंतन करता नीति शास्त्रका विचार करता औ सब शत्रुओं को जीत धर्म्मसे प्रजाकी रक्षा करताथा इसप्रकार धर्म्म राज्य करते२राजाके चित्तमें अहंकार उत्पन्न हुआ हेमुनीश्वरो जहां अहंकार होय वहां काम क्रोध लोभ मद हिंसा असूया आदि सब दोष रहते हैं औ इन सबके होने से पुरुष संपत्ति औ संतान सहित नष्टहोजाताहै राजाके चित्तमें अहंकार उत्पन्न होतेही ईर्षा औ लोभ भी उत्पन्नहुवे राजाने विचारकिया कि ये ब्राह्मण कुछकर नहीं देते इनसे भी दंडलेना चहिये यह मनमें निश्चय कर ब्राह्मणों के धन धान्य हरनेलगा शिव विष्णु आदि मंदिरों में जो धन था वह सब लेलिया ब्राह्मणोंकी औ देवालयोंकी भूमि छीन ली इसप्रकार अन्याय करते २ उस राजाके नगरको एक समय रणदेशके राजा गोलभ ने अपनी चतुरंगिणी सेना से आ घेरा उसके साथ परम अहंकारी मनोजव ने छःमहीने पर्यंत युद्ध किया परन्तु अन्तमें हारकर भगा औ राज्यछोड़ अपने पुत्र स्त्रियों को साथ ले बनको गया इसभांति मनोजव को निकाल गोलभ राज्य करनेलगा मनोजव भी भूखा प्यासा बड़े गह्वर बन में जा पहुंचा जहां सिंह व्याघ्र आदि जीव गर्जतेथे हाथी चिंघाड़तेथे महिष बराह आदि दुष्टजीव चारोंओर फिरतेथे उस बनमें मनोजव राजाके बालक पुत्रने कहा कि हे पिता मुझे भोजन दो भूख लगीहै औ यह बात अपनी मातासे भी कही यह पुत्रका वचन सुन राजा रानी बहुत दुःखीहुवे औ राजाने अपनी सुमित्रानाम रानीसे कहा कि हे सुमित्रे भूखसे मेरे प्राणजाते हैं प्यास से कण्ठ सूखताहै औ यह बालक जो भोजन न पावेगा तो मरही जायगा मुझसे मंदभागी को विधाताने क्यों उत्पन्नकिया कौन मुझे इस बिपत्ति से बचावेगा शिव विष्णु सूर्य अग्नि आदि देवताओंका मैंने पूजन नहीं किया देव ब्राह्मणोंकी जीविका औ धन

मैंने हरे इन सब पापोंसेही मैं राज्यसे भ्रष्टहोकर बनमें निकला तिसपर भी क्षुधा तृषासे कुटुंब व्याकुल होरहाहै अब मैं इस बालकको अन्न कहांसे लाकर दूं शिव आदि देवताओंका मैंने पूजन नहीं किया न हवन किया न तीर्थयात्रा की माता पिता का कभी पार्वण अथवा एकोद्दिष्टश्राद्ध नहीं किया कभी बहुत से ब्राह्मणों को भोजन नहीं कराया इन पापों से मुझे यह घोर दुःख प्राप्त हुआ चैत्रमासके चित्रानक्षत्र में चित्रगुप्तकी प्रसन्नता के लिये अनेकप्रकार के पानक केला कटहर आदि मीठे फल छतरी दंड खड़ाऊं जूता ताम्बूल पुष्प चन्दन आदि लेपन कभीब्राह्मणोंको न दिये उस पापसे यह दुःख मुझे पड़ा पीपल बड़ आम्र इमली नींब कैथ आमला नालिकेर आदि कोई वृक्ष भी मार्ग में मैंने नहीं लगवाया जिसकी छाया में कोई पथिक बैठे उसी पाप से यह दुःख मुझे मिला शिवालय आदि में मार्जन नहीं किया न कुआ बावड़ी तलाव आदि खुदवाये न तुलसी अथवा पुष्पबाटिका लगाई न कोई देवालय बनवाया उसी पापका यह फलहै महालय पक्षमें मैंने कभी पितरों के निमित्त पार्वणश्राद्ध अष्टकाश्राद्ध नित्यश्राद्ध नैमित्तिकश्राद्ध न किये इसीसे यहक्लेश भोगताहूं बहुत दक्षिणावाले कभी यज्ञ नहीं किये एकादशी आदि व्रतनहीं किये धनुर्मास में शिव विष्णु आदि देवताओं का प्रभातही पूजन कर नैवेद्य नहीं लगाया उस पापसे आज मैं बनमें भटकता हूं शिव विष्णु आदि नामोंका मैंनेकभी उच्चारण नहीं किया जावाल प्रोक्त मंत्रो करके कभी विभूति नहीं धारणकी रुद्राक्ष कभी नहीं धारे शिवपंचाक्षर मंत्रका जप औ रुद्रध्याय का पाठ मैंने कभी नहीं किया इसी पापसे मेरे ऊपर यह विपत्ति पड़ी पुरुषसूक्त औ अष्टाक्षर मंत्र मैंने नहीं जपा औरभी कोई धर्म कृत्यनहीं किया इसीसे बनमें दुःख भोगता फिरता हूं इस भांति बिलाप

करता हुआ राजा मूर्छितहो भूमि पर गिरपड़ा पतिको गिरे देख
सुमित्रा भी उस को आलिंगनकर विलाप करने लगी कि हे
चंद्रवंश के भूषण महाराज मुझेइस बनमें छोड़ कहांचले मैं अ-
नाथहूं जो आप का मृत्यु होगया होयतो मैंभी आपके साथ
सती होजाऊं विधवा होकर क्षणमात्र भी नहीं जीसकती यह
माता पिताकी दशा देख उनका पुत्र चंद्रकांत भी विलाप करने
लगा इसी अवसर में रुद्राक्षधारे सब अंगों में विभूति लगाये
भस्म का त्रिपुंड़ मस्तकमेंदिये जटाधारे श्वेत यज्ञोपवीत पहिने
मृगछाला ओढ़े पराशरमुनि वहां आय निकले सुमित्राने उनके
चरणों पर प्रणामकिया औ अपने बालक पुत्रसे भी प्रणाम कर-
वाया पराशरमुनि ने आशीर्वाद देकर कहा कि हे भद्रे विलाप
मतकर औ मुझे यह बताय कि तू कौन है यह भूमिपर कौन पड़ा
है औ यह बालक तेरा क्या लगताहै यह पराशर मुनिका वचन
सुन सुमित्रा बोली कि महाराज यह चंद्रवंशका भूषण बड़ा परा-
क्रमी मनोजव नाम राजा है मैं सुमित्रानाम इसकी रानीहूं औ
यह बालक चंद्रकांतनाम हमारा पुत्र है इस राजा को इसके
शत्रु गोलभ ने जीतकर राज्य से निकाल दिया तब राज्य भ्रष्ट
हो हमने इस घोर बनमें प्रवेश किया यहां क्षुधा करके पीड़ित
इस बालक ने भोजन मांगा परंतु भोजन था नहीं यह दुःख
देख राजा मूर्छित होगया यह सुमित्राका दीन वचन सुन शक्ति
मुनिके पुत्र परम दयालु पराशर मुनि बोले कि हे पतिव्रते कुछ
भयमत कर शीघ्रही तुह्मारी यह विपत्ति दूर होजायगी औ
तेरा पति भी जी उठैगा इतना कह पराशर मुनिने राजा को
अपने हाथ से स्पर्शकिया औ शिवजी का ध्यानकर मृत्युंजय
मंत्रपढ़ा तब राजा की मूर्छा खुलगई औ उठकर मुनिको प्रणाम
कर कहनेलगा कि महाराज आपके चरणों की कृपा से मेरी

मूर्छा निवृत्तहुई औ सब पाप भी कटगये पापी पुरुषों को आ
का दर्शन नहीं होसकता मुझे शत्रुओं ने राज्यसे निकाल दि
आप मुझपर कृपादृष्ठि करें जिससे मेरेसब दुःख दूर होंय य
राजा का वचनसुन पराशरमुनि कहनेलगे कि हे राजा फि
राज्य प्राप्ति के लिये एक उपाय हम कहते हैं सावधान हो
सुनो सेतुबंध के बीच गंधमादन पर्वत में मंगल तीर्थ है उ
तीर्थ में सदा रामचन्द्र औ सीता सन्निहित रहते हैं वहां स्ना
करने से अलक्ष्मी का नाश होता है इसलिये हे राजा तू भी
पने पुत्र औ रानी समेत वहां जाय भक्ति से स्नान कर औ ती
श्राद्ध आदि सब कर्मकर उस तीर्थ के प्रभाव से तुझे फिर रा
मिलैगा अलक्ष्मी दूरहोगी औ शत्रुओं को जीतेगा इसलिये
शीघ्रही गंधमादन को चल औ तेरे कल्याण के अर्थ हम
साथ चलैंगे इतना कह पराशरमुनि सकुटुंब राजा को साथ
सेतुबंध को चले औ बन पर्ब्बत आदि उल्लंघन करते कुछ दि
में मंगल तीर्थ के समीप जाय पहुंचे वहांजाय संकल्पकर वि
पूर्बक पराशरमुनिने तीर्थ में स्नान किया औ राजा रानी
उस बाल को भी स्नान कराया राजाने श्राद्ध किया फिर ती
महीने तक नित्य स्नान करते रहे तीन महीने के अनंतर परा
मुनिने राजा को रामचन्द्रजीका एकाक्षर मंत्र उपदेश कि
राजाभी मंत्रपाय मुनिके बताये विधि के अनुसार मंगल ती
के तटपर बैठ अनुष्ठान करनेलगा चालीस दिन में अनुष्ठा
पूराहुआ तब उस तीर्थ से एकबड़ा दृढ़धनुष बाण रखने
दो तूणीर जिन में बाण कभी निबड़ें नहीं सुवर्णकी मूठका ख
ढाल गदा मुसल बड़ा शब्द करनेहारा शंख सुवर्ण का क
घोड़े सारथी औ पताका समेत बहुत उत्तमरथ हार केयूर कं
मुकुट आदि भूषण सुवर्ण कमलों की वैजयंतीमाला औ हज

दिव्यवस्त्र राजा के आगे निकलआये उनको देख राजाने परा-
शरमुनिसे कहा मुनिने तीर्थ का जल लेकर राजा का अभिषेक
किया अभिषेक के अनंतर राजा दिव्य भूषण वस्त्र पहिन कवच
औ मुकुट धार सब शस्त्रों को बांध रथमें बैठा उस समय राजा
का तेज ऐसा था जिस भांति ग्रीष्मऋतुमें मध्याह्न के सूर्यका
हो पराशरमुनि ने राजा को सांग औ सरहस्य ब्रह्मास्त्र का उप-
देश किया औ आशीर्वाद दिया कि तुम्हारा जय होय राजा भी
मुनि की आज्ञा पाय अपनी रानी औ पुत्रको अपने रथमें बैठाय
मुनिको प्रणाम औ प्रदक्षिणाकर विजय के लिये चला अपने
नगर के समीप जाय वह दिव्य शंख बजायाशंखका घोर शब्द
सुनतेही राजा गोलभ सेना समेत युद्ध के लिये निकला तीन
दिन राजा मनोजव औ गोलभ का युद्ध हुवा चौथे दिन मनो-
जवने ब्रह्मास्त्र चलाया जिससे सेना समेत गोलभ राजा भस्म
हुआ औ मनोजव नगरमें जाय सिंहासन पर बैठा औ धर्मराज्य
करने लगा उसदिन से ईर्षा औ अहंकार को त्यागदिया औ
धर्म में तत्परहो प्रजाका पालन करनेलगा हजार वर्ष राज्य
कर अन्तमें विरक्तहो पुत्रको राज्यदे आपतप करनेके लिये गंध-
मादन पर्वत में मंगल तीर्थपर गया वहां जाय हृदयमें श्रीसदा
शिवका ध्यानकरता हुआ तपकरने लगा बहुत काल तपकर
अन्तमें देह त्याग तीर्थके प्रभाव से राजा शिवलोक को गया औ
रानी सुमित्रा भी उसके शरीर के साथ दग्ध हुई औ अपनेपति
के समीप शिवलोक में पहुंची सूतजी कहते हैं कि हे मुनीश्वरो
यह मंगल तीर्थका प्रभावहै मनोजव राजा जिस तीर्थके प्रभाव
से शत्रुओं को जीत अंतमें शिवलोक को गया इसलिये सबको
इस तीर्थमें स्नान करना चहिये हे मुनीश्वरो यहतीर्थ भुक्ति
औ मुक्ति देनेहारा है औ पापोंको दग्ध करनेके लिये अग्नि

है इस लिये आपको भी इसतीर्थ का सेवन करना चहिये ॥

तेरहवां अध्याय ॥

सूतजीकहते हैं कि हेमुनीश्वरो मंगल तीर्थमेंस्नानकर एकांत रामनाथ नामक क्षेत्रको जाय वहां सीता सहित औ हनुमान् आदि बानरों करके सेवित श्रीरामचद्र लोकोंके कल्याणके लिये सदा सन्निहित रहते हैं उसीक्षेत्रमें अमृत वापिका है जिसमें स्नान करनेहारे मनुष्य शिवजी के अनुग्रह से अजर औ अमर होजातेहैं उस वापीमें स्नान करनेवालोंको मोक्ष देनेकेलिये श्री शदाशिव वहां सदा निवासकरते हैं इतना सुन मुनीश्वरोंने पूछा कि हेसूतजीइस वापीकानाम अमृतवापी क्योंकरपड़ा औ इसका क्या प्रभावहै आप वर्णनकरैं हेब्यासशिष्य सूतजी आपका वचन रूप अमृत पान करते करते हमको तृप्ति नहींहोती यह मुनियों का वचन सुन सूतजी कहने लगे कि हे मुनीश्वरो इस अमृतवापीका प्रभाव औ इसके नामका कारण हम वर्णन करते हैं आप श्रवणकीजिये पूर्बकालमें सिद्ध चारण गंधर्ब आदिदेवता-ओं करके सेवित सिंह ब्याघ्र वराह महिष हाथी आदिजीवों कर-के युक्त तमाल ताल हिंताल साल चंपक अशोकआदि वृक्षोंकरके शोभित हंस चक्र वाक कोकिल दात्यूहआदि पक्षिओंके शब्दोंसे मनोहर पद्म कुमुद नीलकमल आदिसे भरे सरोवरों करके रम-णीय हिमालय पर्बतमें अपने आश्रम के बीच सत्यबादी जिते-न्द्रिय अगस्त्य मुनिका भाई तप करताथा वह बनके फल फूलों करके तीनकाल शिव पूजन करता जो अतिथि आता उसको कंद मूलआदि भोजन से तृप्तकरता नित्यसंध्या बंदन गायत्री आदि मंत्रोका जप अग्निहोत्र अदि कर्मकरता प्रभातही स्नानकर वेद पाठ करता मध्याह्नमें अतिथि पूजाकर पुराणबाचता नित्यपंच

महा यज्ञकरता प्रतिवर्ष पितरोंका श्राद्धकरता औ निरंतर शिवजी का ध्यानकरता इसप्रकार उत्तम तप करते करते एक हज़ार वर्ष बीतगये परंतु शिवजीके दर्शन न हुये तब वह अगस्त्यमुनि का भ्राता पंचाग्निके बीच बायेंपैर की कनिष्ठा अंगुली के ऊपर खड़ाहोकर सूर्य्य में दृष्टि लगाय दोनों भुजा ऊपर को उठाय शिवजीका हृदय में ध्यान करता हुआ उग्रतप करनेलगा इसभांति उसका अतिकठिन तपदेख शिवजी प्रसन्नहो प्रत्यक्षहुवे मुनिभी वृषके ऊपरचढ़े श्रीसदाशिवको देख प्रणामकर भक्तिसे स्तुति करनेलगा (मुनिरुवाच । नमस्तेपार्वतीनाथनीलकंठमहेश्वर शिवरुद्रमहादेव नमस्तेशंभवेविभो १ श्रीकंठोमापतेशूलिन्भगनेत्रहराव्यय गंगाधरविरूपाक्ष नमस्तेरुद्रमन्यवे २ अंतकारेकामशत्रो देवदेवजगत्पते स्वामिन्पशुपतेशर्ब नमस्तेशतधन्वने ३ दक्षयज्ञविनाशाय स्तायूनांपतयेनमः निचेरवेनमस्तुभ्यं पुष्टानांपतयेनमः ४ भूयोभूयोनमस्तुभ्यं महादेवकृपालय दुस्तराद्भवसिंधोर्मांतारयस्वत्रिलोचन ५ इति) यह स्तुति सुन प्रसन्न हो श्रीशिवजी बोले कि हे मुने तेरेतपसे हम बहुत प्रसन्न हुवे इसलिये मुक्तिके अर्थ एक बहुत सुगम उपाय हमतुझको उपदेशकरतेहैं गंधमादनपर्ब्बतमें मंगल तीर्थके समीप एकतीर्थहै उसमें स्नान कर तो अवश्यही मुक्ति पावैगा इससे सूधा उपाय मोक्षके लिये और कोई नहींहै उसतीर्थका संपूर्ण प्रभाव हमभी वर्णननहीं करसकते इसबातमें तू कुछ संदेह मतकर औ जाकर उसतीर्थमें स्नान कर तो अवश्यहीमुक्ति पावैगा इतना कह शिवजी अंतर्धानहुवे औ मुनिभी शिवजीकी आज्ञा पाय गन्धमादनपर्बत में एकांत रामनाथनाम क्षेत्रमें पहुंचे औ उसतीर्थको ढूंढ़ा औ उस तीर्थ में स्नान करनेलगे तीनवर्ष पर्यंत नियम पूर्बक मुनिने स्नान किया चौथे वर्ष में समाधि करके प्राणायाम से अपने

कपाल को भेदनकर मुनिने प्राणत्यागे औ तीर्थके प्रभाव से मुक्तिपाई अगस्त्यके भ्राताकी वहां मुक्तिहुई इसीसे उस तीर्थका नाम अमृत वापीहुआ अमृत मोक्ष को कहते हैं इसतीर्थ में जो मनुष्य तीन वर्ष स्नान करें वे निःसंदेह मुक्तिपाते हैं इतनी कथा सुनाय सूतजी बोले कि हे मुनीश्वरो अमृतवापी के नाम का कारण औ प्रभाव हमने वर्णन किया अब आपक्या श्रवणकिया चाहते हैं वहकहें तब शौनक आदि मुनि बोले कि हे सूतजी उस क्षेत्र का नाम एकांत रामनाथ क्यों हुआ यह आप वर्णन करें हमको श्रवणकरने की बहुत इच्छा है तब सूतजी कहने लगे कि हे मुनीश्वरो पूर्वकाल में लक्ष्मण सुग्रीव बिभीषण हनूमान् आदिके साथ श्रीरामचंद्र रावण के बधका औ सीता लानेका बिचार करते थे और सब बानर सेतु बांधने में लगरहे थे परंतु समुद्र के तरंगों का ऐसा घोर शब्द होताथा कि एक को दूसरे का बचन नहीं सुनता था तबरामचंद्रजी ने क्रोध कर भृकुटी चढ़ाई औ समुद्र को गर्जने से रोका औ एकांत में बैठ रावण के बधका बिचार अपने मंत्रियों के साथ किया उसी दिन से उसक्षेत्र कानाम एकांत रामनाथ हुआ औ उसी दिनसे उस क्षेत्रके समीप समुद्र के जलमें शब्द नहीं होता औ तरंग नहीं उठते जो पुरुष एकांत रामनाथ क्षेत्र में आकर अमृतवापी में स्नान करते हैं वे अवश्य मुक्ति पाते हैं अद्वैत ज्ञान करके शून्य समाधि औ वैराग्य से रहित यज्ञ अनुष्ठान आदि से बर्जितभी पुरुष अमृत वापीमें स्नानकरै तो अवश्य मुक्तिही पावै॥

चौदहवां अध्याय॥

सूतजी कहते हैं कि हे मुनीश्वरो अमृतवापी में स्नानकर एकांत राघव के दर्शनकरै पीछे ब्रह्मकुंडमें स्नान करनेके लिये

जाय गंधमादन पर्वत के बीच ब्रह्महत्या आदि सब पाप औ दारिद्र्य के नाश करनेहारा ब्रह्मकुंड तीर्थ है जो मनुष्य ब्रह्मकुंड में स्नानकरैं उनको और तीर्थ यज्ञ तपदान आदिसे कुछ प्रयोजन नहीं है ब्रह्मकुंडमें स्नान करनेवाले मनुष्य वैकुंठ को जाते हैं ब्रह्मकुंड से निकली बिभूतिको जो धारै उसके समीप ब्रह्मा बिष्णु और शिवजी सदा निवास करते हैं उस बिभूति का जो मस्तक में त्रिपुंड्र धारै मुक्ति उसके हाथ परही धरी है जो उस बिभूति से सारे देहमें उद्धूल न करै उसके पुण्य को शिवजी भी नहीं वर्णन करसकते उस बिभूति को जो नहीं धारते वे रौरव नरक में प्रलय पर्यंत पड़े रहते हैं जो उस भस्म से उद्धूलन अथवा त्रिपुंड्र नहीं करते वे कभी सुखी नहीं होते जो उस बिभूतिकी निंदाकरै उसको वर्णसंकर जाननाचाहिये जो ब्रह्मकुंड की बिभूति को और बिभूति के तुल्य कहै अथवा उस बिभूति को छोड़ और बिभूति को जो पुरुष धारै उसकी उत्पत्ति में भी संकर जानिये जो मनुष्य ब्रह्मकुंड का भस्म ब्राह्मण को देवै उस को संपूर्ण भूमिदान का फल होता है इस बातमें कभी संदेह मत करना हम तीनबार शपथ खाकर कहतेहैं औ भुजा उठाकर सत्य कहते हैं कि हे मुनीश्वरो ब्रह्मकुंड के भस्म को अवश्य धारण करो पूर्वकाल में ब्रह्मा जीने शिवजी का शाप निवृत्त करने के लिये गंधमादन पर्वत में बड़ी दक्षिणावाले अनेक यज्ञ किये तब शिवजी के शाप से निवृत्त हुवे उन यज्ञोंका यह भस्म है जो पुरुष इस तीर्थ में स्नानकरैं वे अवश्य शिवलोक में निवास करते हैं इतनी कथा सुन शौनक आदि ऋषियों ने पूछा कि हे सूतजी चौदह भुवन रचनेवाले ब्रह्माजीको शिवजी ने किस अपराध पर शाप दिया औ क्या शाप दिया यह आप कृपा कर वर्णन करैं तब सूत जी कहनेलगे कि हे मुनीश्वरो

एक समय ब्रह्मा जी औ विष्णु जी का परस्परविवाद हुआ ब्रह्माजी कहैं कि हम जगत् के कर्ता हैं इसलिये हमहीं सबसे बड़े हैं औ विष्णुजी कहैं कि हम सबसे बड़े हैं इसी अवसर में उनका अहंकार हरने के लिये बीचमें एक लिंग प्रकट हुआ उस ज्योतिर्मय लिंगको देख ब्रह्माजी औ विष्णु जी चकित हो परस्पर कहने लगे कि यह अनादि अंत करोड़ों सूर्योंके तुल्य प्रकाशमान लिंग देख पड़ता है हम दोनों मेंसे जो इसके आदि अंत का निश्चय करै वही सबसे बड़ा औ लोक कर्त्ता गिना जावे ब्रह्मा जीने कहा कि हे विष्णु जी हम लिंगका अग्रभाग देखने ऊपरको जाते हैं औ आप इसके अंतका निश्चय करने के लिये नीचे को जाओ यह निश्चय कर ब्रह्माजी हंस का रूपधार ऊपरको उड़े औ वराह रूपधार विष्णुजीनीचे को चले कई हजार वर्ष तक विष्णुभगवान् नीचेको गये परन्तु लिंग का अन्त न पाया तब लौट आये औ सब देवताओं से कहा कि हमको इस लिंग का कहीं अन्त न मिला इतने में ब्रह्माजी भी आय पहुँचे औ सब देवताओं के आगे असत्य बोले कि हम इस लिंग का अग्र देख आये हैं यह ब्रह्माजी का वचन सुन हँसकर शिवजीने कहा कि हे ब्रह्माजी तुमने हमारे सम्मुख झूठ बोला इसलिये जगत् में कोई तुम्हारी पूजा न करेगा औ विष्णुजीसे कहा कि हे विष्णुजी आपने कपट नहीं किया सत्य कहदिया इसलिये हमारे तुल्य आपका भी सब जगत्में पूजन होगा ब्रह्माजी शिवजी का वचन सुन बहुत दुःखी हो बोले कि हेनाथ हमसे अपराध बनपड़ा आप क्षमाकरैं जगत्प्रभुको अपनेसेवकों का अपराध क्षमा करना चाहिये तब शिवजीने कहा कि हेब्रह्मा जी हमारा वचन मिथ्या तो नहीं होसकता परंतु तुमगंधमादन पर्वतमें जाय यज्ञकरो जिससे हमारे शापका दोषतुमसे निवृत्त

होजायगा औ श्रौतस्मार्त कर्मोंमें तुम्हारी पूजाभी होगी प्रतिमा
में तुम्हारा पूजन न होगा इतनाकह शिवजी तो अंतर्द्धानहोगये
औ ब्रह्माजी गंधमादन पर्वतको गये वहांजाय इन्द्रादि देवताओं
के सम्मुख शिवजीकी प्रसन्नता के लिये अट्ठासीहजारवर्ष पर्यंत
ब्रह्माजीने निरंतर पौंडरीक आदि यज्ञकिये तब शिवजी प्रत्यक्ष
हुवे औ प्रसन्नहो ब्रह्माजीको वरदिया कि हे ब्रह्माजी तुम्हारा
दोष निवृत्तहुआ अब श्रौतस्मार्त कर्मोंमें तुम्हारापूजन हुआकरैगा
औ तुम्हारा यह यज्ञ करनेका स्थान जगत्में ब्रह्मकुंडके नामसे
प्रसिद्धहोगा जो इस ब्रह्मकुंड में एकबारभी स्नान करैगा उसके
लिये मुक्तिका द्वार खुलजायगा जो इसकुंड के भस्मको धारण
करैगा वह अवश्यही मायारूप कपाट खोलकर मुक्तिके द्वारमें
प्रवेशकरैगा जो इस भस्मको भक्तिसे धारण करैगा वह अपने
माता पिताका पुत्र न होगा ब्रह्मकुंड के स्नानसे करोड़ों ब्रह्म-
हत्या सुरापान सुवर्णकी चोरी गुरुस्त्रीगमन आदि महापातक
क्षणमात्रमें नष्ट होजायँगे औ महापातक करनेहारों के संसर्ग
से जो पातक लगेहोंय वेभी निवृत्तहोंगे इस भस्मके धारणकरने
से भूतप्रेत पिशाच आदि समीप नहीं आवेंगे इतनाकह शिवजी
अंतर्द्धानहुवे उस दिनसे ब्रह्मकुंड का प्रभाव जान मुनि देवता
सिद्ध चारण गंधर्व किन्नर आदि निरंतर वहां निवास करनेलगे
औ ब्रह्माजी भी यज्ञोंको समाप्तकर अपना मनोरथ सफल कर
सत्यलोक को गये उसदिन से और भी देवता ऋषि आदि वहां
यज्ञ करनेलगे । सूतजी कहते हैं कि हे मुनीश्वरो यज्ञ करने की
इच्छाहोय तो ब्रह्मकुण्डपरही करना चहिये सबदेवता ऋषिआदि
करके सेवित सब पाप हरनेहारा मोक्षप्रद औ सब मनोरथ
सिद्ध करनेहारा ब्रह्मकुण्डहै ॥

पंद्रहवां अध्याय ॥

सूतजी कहतेहैं कि हेमुनीश्वरो ब्रह्मकुण्डमें स्नानकर मनुष्य हनुमत्कुण्डको जाय रावणकोमार जब रामचन्द्र लौटे औ गंध-मादन पर्वतपर पहुंचे तब अपने नामसे हनूमानजीने उत्तमतीर्थ बनाया उस तीर्थको साक्षात् रुद्रसेवन करतेहैं उस तीर्थके तुल्य दूसरा तीर्थ न हुआ न होगा जिसमें स्नानकरनेसे शिवलोककी प्राप्ति होतीहै जिस तीर्थके बननेसे सब नरक खालीहोगये उस तीर्थके प्रभावको शिवजीही जानतेहैं धर्मसखनाम राजाने भक्ति पूर्वक उस तीर्थ में स्नानकर दीर्घायु औ प्रतापी सौ पुत्र पाये शौनक आदि ऋषियों ने पूछा कि हेसूतजी धर्मसख राजा ने हनुमत्कुण्ड के प्रभाव से सौपुत्र किस प्रकार पाये आप उसका चरित वर्णनकरैं तब सूतजी कहनेलगे हेमुनीश्वरो संक्षेप से हम धर्मसखका चरित्र वर्णन करतेहैं आप प्रीतिसे श्रवणकरो केकय वंशमें बड़ा प्रतापी शत्रुओं के जीतनेहारा प्रजाके पालन करने में तत्पर धर्मसखनाम एक बड़ा धर्मात्मा राजाहुआ उसकी सौ रानीथीं परंतु पुत्र एकमें भी नहीं उत्पन्न हुआ राजाभी पुत्रके लिये सदा यत्न किया करता अश्वमेध आदि अनेक यज्ञ उसने किये तुला पुरुष आदि महादान दिये औ सदा अभ्यागतों को उत्तम २ भोजनदेता बिधिपूर्वक श्राद्धकरता औ संतान देनेवाले मंत्रोंका जपकरता इसभांति पुत्रकेलिये अनेक प्रकारके धर्मदान आदि करते २ राजा वृद्धहोगया तब वृद्धावस्था में बड़ी रानीके गर्भसे एक पुत्र उत्पन्नहुआ उसकानाम सुचंद्र रक्खा राजा की सब रानी उस बालकको बड़े प्रेमसे पालनेलगीं औ राजा प्रजा राजमाता रानी मंत्री आदि उस बालकको देख परमआनंद को प्राप्तहोते एकदिन वह बालक पालने में झूलता था उस समय

उसको पैरमें बीछूने काटा काटतेही वह राजकुमार चिल्लाया उसके रोनेसे सब रानी रोदन करनेलगीं औ अंतःपुरमें कोला-हल मचगया सभामें बैठेहुये राजाने रोदनका शब्दसुन घबरा-कर कंचुकी को भेजा कंचुकी ने अंतःपुरके द्वारपर जाय नादिरों से पूछा कि भीतर सब स्त्री क्यों रोतीहैं इसका कारण बताओ इसीलिये मुझे महाराज ने यहां भेजाहै यह उसका बचन सुन नादिर भीतर गये औ सब वृत्तांत पूछकर कंचुकी से आ कहा कंचुकी ने सभामें आय राजासे कहा राजाभी पुरोहित औ मंत्री समेत अंतःपुर में गया औ बीछू का मंत्र जाननेवालों से उस बालककी चिकित्सा कराई बालक अच्छाहुआ राजाने वैद्य औ मांत्रिकों को बहुतसा धनदे बिदा किया औ सभामें आकर सब ऋत्विक औ पुरोहितों को बुलाकर यह कहा कि एक पुत्र होना बड़े दुःखका कारण है इससे तौ पुत्र न होनाही अच्छाहै हे ब्राह्मणो मैंने संतान के अर्थ सौ बिवाह किये अब वृद्धा-वस्था में एक पुत्र हुआ अब हम सबके प्राण इसमें रहते हैं जो कदाचित् यह बालक मरजाय तो हमारी सब रानी औ हमभी नाशको प्राप्तहोंय इसलिये हेब्राह्मणो ऐसाकोई उपाय बताओ जिससे मेरे बहुत पुत्रहोंय सौ रानियोंमें एक२ पुत्र हो-जाय ऐसायत्न करो तुमजो उपाय कठिन सुगम छोटा बड़ा शास्त्र को देखकर बताओगे वह सब मैं करूंगा यह राजाका बचनसुन सब ब्राह्मणोंने बिचारकर कहाकि महाराज एक उपायहै जिससे आपकी सब रानियों में पुत्रहोंय। दक्षिण समुद्र के बीच सेतुके मध्यमें सब पाप हरनेहारा देवता ऋषि गंधर्व सिद्ध चारण आदि करके सेवित गन्धमादननाम एक पर्वतहै उस पर्वतमें हनुमत्कुंड नाम एक तीर्थहै जिसमें स्नान करने से सब दुःख दारिद्र्य कट जातेहैं नरकका भय नहींरहता औ स्वर्ग प्राप्तिहोती है उस कुंड

में जो स्त्री स्नानकरै उसके अवश्यही पुत्र उत्पन्न होताहै इस-
लिये आपभी वहांजाय हनुमत्कुंडके तीरपर पुत्रेष्टिकरैं तब आप
के सौ पुत्र अवश्य होंगे। यह ब्राह्मणोंका वचन सुनउन सबको
साथले अपनी सबरानी औ मन्त्रियों समेत राजा धर्मसख गंध-
मादन पर्वतमें गया वहांजाय हनुमत्कुंडके तीरपर डेराकिया
औ नित्य स्नान करनेलगा जब चैत्रमास आया तब यज्ञका आ-
रंभकिया ऋत्विक् औ पुरोहित सबकाम यज्ञका करने लगे जब
यज्ञ समाप्तहुआ तब हवनका शेष पुरोहितने सब रानियों को
खिलाया राजाने हनुमत्कुंड में यज्ञांत स्नानकिया औ ऋत्विजों
को बहुतसे ग्राम औ रत्न दक्षिणामें दिये। इसभाँति यज्ञकरराजा
धर्मसख अपने परिवार समेत राजधानीको आया दश महीनेके
अनन्तर सब रानियोंमें एक २ पुत्र उत्पन्नहुआ राजाने बड़े हर्षसे
स्नानकर जातकर्म किया औ गौ भूमि तिल सुवर्ण आदि ब्राह्म-
णोंको दिये बड़ीरानीमें दो पुत्र होगये एक पहिलेथा दूसरा सब
रानियोंके साथहुआ इसभांति एकसौ एक पुत्र राजा धर्मसखके
वृद्धिको प्राप्त होनेलगे जब वे राज्य भारके योग्यहुवे तब उनको
सब राज्यबाँट अपनी रानियोंको संगले राजा गंधमादन पर्वत
में तप करने गया वहांजाय हनुमत्कुंडके तीरपर तप करनेलगा
बहुतकाल तप औ शिवजीका ध्यान करते२ राजा मृत्युवशहो कैला-
सको गया औ सब रानीउसके साथसतीहुईं सुचंद्रनाम बड़ेपुत्र
ने उन सबके श्राद्धआदि करे इसभांति राजातो सद्गतिकोप्राप्त
हुआ औ सुचन्द्र आदि राजपुत्र धर्म से राज्यकरनेलगे हेमुनीश्वरो
हनुमत्कुंडका प्रभाव औ राजा धर्मसखकाचरित्र हमनेवर्णनकिया
सब मनोरथ सिद्ध होनेके लिये हनुमत्कुंडमें स्नानकरना चहिये
जो पुरुष इस अध्यायको भक्तिसे पढ़ै अथवा सुनै वह इसलोक
में सब सुख भोग परलोकमें देवताओंके साथ विहार करता है॥

सोलहवां अध्याय॥

सूतजी कहतेहैं हेमुनीश्वरो हनुमत्कुंडमें स्नानकर अगस्त्य तीर्थको जानाचहिये यहतीर्थ साक्षात् अगस्त्यजीने बनायाहै पूर्बकाल में सुमेरु पर्वत औ विंध्यपर्वतका परस्पर विवाद हुआ तब विंध्याचल दिन२ बढ़नेलगा इतना बढ़ा कि सब जीवोंका श्वास रुकगया तब ब्याकुलहो सब देवता कैलासमें गये औ शिवजीके आगे सब बात कही महादेवजीनेभी सप्तऋषियों को बुलाया उनमें बशिष्ठआदि ऋषियोंको तो हिमालयकेघर पार्बती जीके संबंध के लिये भेजा औ अगस्त्यजी को आज्ञादी कि तुम जाकर विंध्याचलका निग्रह करो तब अगस्त्यजीने प्रार्थना करी कि महाराज हम आपके विवाह वेषका दर्शन कियाचाहतेहैं तब श्रीमहादेवजीने कहा कि तुम जाकर विंध्या का निग्रह करो हम तुमको वेदारण्य में विवाह केही वेषसे दर्शन देंगे यह आज्ञा पाते ही अगस्त्यजी विन्ध्याचलमें गये औ उस पर्वत को अपने पैरसे दबाया कि वह भूमिके समान होगया फिर अगस्त्यवहांसे चले औदक्षिण दिशा में विचरतेहुवे गंधमादनपर्वतमें पहुंचे वहांअपने नामसे तीर्थ बनाया जिसमें अगस्त्यजी अपनी भार्या लोपामुद्रा सहित आजतकभी निवास करते हैं उस तीर्थ में स्नान करै औउसका जल पीवै तो फिर जन्म न होय जगत्में उस तीर्थके समान कोई तीर्थ नहीं वहतीर्थ भुक्ति औ मुक्तिको देनेहाराहैदीर्घतपामुनिके पुत्र कक्षीवान्ने उस तीर्थके प्रभावसे स्वनयकी परम सुंदरी कन्यासे विवाह किया हे मुनीश्वरो सब पापों के हरने हारी कक्षीवान्की कथा हम कहतेहैं आप प्रीतिसे सुनो । दीर्घतपानाम बड़ा तपस्वी एक मुनिथा उसके कक्षीवान् नाम पुत्रहुआ दीर्घतपा ने अपने पुत्रका यज्ञोपवीत किया यज्ञोपवीतके अनन्तर

कक्षीवान् अपने गुरुकुलमें जाय उत्तंक मुनि से वेद पढ़नेलगा चारोंवेद वेदके अंग छःशास्त्र इतिहास पुराण उपनिषः आदि सब साठवर्षमें पढ़े औ गुरूको दक्षिणा देकर अपने घरको कक्षीवान् चला तब हाथजोड़ गुरुसे प्रार्थना करी कि आप मुझे घर जानेकी आज्ञा दीजिये औ मुझपर कृपादृष्टि रखिये यह कक्षीवान् का बचन सुन उत्तंक मुनि बोले कि हे पुत्र सुखसे घरको जा औ विवाहकर तेरे विवाहके लिये एक उपायमैं कहताहूं वह तू सुन दक्षिण समुद्रके तीरपर अगस्त्यमुनिका बनाया सब मनोरथ सिद्ध करनेहारा एकतीर्थहै वहांजाय नियमसे तीनबर्ष निवासकरचौथा वर्ष लगतेही उसतीर्थसे श्वेतवर्णका औ चारदंतों करकेयुक्त एक बहुतबड़ाहाथी निकलेगा उस हाथीपर तू चढ़कर राजा स्वनयकी पुरीको जाना राजा स्वनयभी तुझे इंद्रकी भांति चतुर्दंतहाथीपर चढ़ेदेख अपनी कन्या के लिये निश्चिंत होजायगा उस राजा की कन्याने यह प्रतिज्ञा कर रक्खीहै कि श्वेतवर्ण के चतुर्दंतहाथी पर चढ़कर जो यहां आवेगा वही मेरा भर्ता होगा यह अपनी कन्याकी प्रतिज्ञा सुन राजाको बड़ीचिंता हुई इसीअवसरमें नारद मुनि वहां आये राजाने उनका पूजन किया औ सिंहासनपर बैठाय यह प्रार्थना करी महाराज मेरीकन्याने यह प्रतिज्ञा करीहै कि श्वेतवर्ण चतुर्दंतहाथीपर जो चढ़कर आवेगा वही मेरा पति होगा यह कन्याकी प्रतिज्ञा सुन मुझे बडी चिंता हुई कि ऐसा हाथी इंद्रबिना दूसरे के पास नहींहै औ इसकन्या ने मूर्खपने से प्रतिज्ञा करली जबतक इसकन्याका विवाह न होगा मुझे चैननहीं यहराजा का वचन सुन नारदजी ने कहा कि हेराजा चिंता मतकर थोड़ेही कालमें कक्षीवान् नाम ब्राह्मण ऐसे हाथीपर चढ़कर आवेगा वही तुम्हारा जामाता होगा इतना कह नारद मुनि देवलोक को गये उसदिन से राजास्वनय दिनरात अपनी कन्या

के लिये वरकी राह देखता है इसलिये हे कक्षीवान् तू अगस्त्य तीर्थको जा वहां तेरा कल्याण होगा यह उत्तंकमुनिकी आज्ञा पाय कक्षीवान् गंधमादन पर्वत को चला कुछदिन में अगस्त्य तीर्थपर पहुंचा एकदिन तीर्थोपवास किया दूसरे दिनसे नियम पूर्वक स्नान करने लगा रात्रि को भी तीर्थ के तटपरही सोता इस प्रकार एकदिन न्यून तीनवर्ष पूरे हुवे उसदिनभी कक्षीवान् सायं संध्याकर उसी तीर्थ के तटपर सोया जबएक प्रहररात्रि शेषरही तब अकस्मात् घोरशब्द हुआ औ बड़ा कोलाहल मचा उसशब्द को सुन कक्षीवान् की निद्रा खुलगई औ देखा कि मधुराका राजा स्वनय अपनी सेना लिये मृगया खेलनेके लिये वहां आयाहै अनेक सिंह व्याघ्र सूकर मृग हाथी आदिजीवों को मारता हुआ राजा स्वनय अगस्त्यतीर्थ के तटपर आ पहुंचा औ वहां डेरा किया इतने में प्रभात हुआ कक्षीवान् ने शौच आदि कर तीर्थ में स्नानकिया औ संध्या वंदनकर मंत्रका जप करने लगा इसी अवसर में कैलास पर्वत के तुल्य ऊंचा औ श्वेतवर्ण चतुर्दंत एकहाथी निकला औ कक्षीवान् के समीप आया कक्षीवान् ने भी देखकर पहिचान लिया कि मेरेगुरु ने यही हाथी बताया था औ स्नानकर तीर्थ को प्रणामकर कक्षीवान् उस हाथीपर चढ़बैठा औ राजास्वनयके डेरेमें पहुंचा राजानेभी हाथी से पहिचाना कि यही कक्षीवान् है राजा उठकर कक्षीवान् के समीप आया औ पूछा कि हेब्राह्मण तू किसका पुत्रहै तेरानाम क्या है औ इस हाथीपर चढ़ कहां जाताहै यहराजा का वचन सुन कक्षीवान् बोला कि मैं दीर्घतपा का पुत्र कक्षीवान् हूं औ इस चतुर्दंत हाथीपर चढ़ स्वनय राजाकी कन्या बिवाहने जाता हूं यह कक्षीवान् का वचन सुन राजा अति मुदितहो कहने लगा कि हे कक्षीवान् मैंही राजा स्वनय हूं जिसकी कन्या से तू

बिवाह किया चाहताहै औ तेरेदर्शनसे मैं कृतार्थ हूं हे बाल ब्रह्म-
चारी तुझे स्वागत हो तू मेरीकन्या को ग्रहणकर औ उसके
सहित गृहस्थ धर्मका सेवनकर यहराजाका वचन सुन कक्षीवान्
बोला कि हेराजन् मेरापिता दीर्घतपा मुनि वेदारण्य में तपकर-
ता है उसके समीप एक ब्राह्मण आप भेज देवें जो यह वृत्तांत
मेरे पितासेकहआवे राजाने अपने पुरोहित सुदर्शनको दीर्घतपाके
समीप जानेकी आज्ञादी सुदर्शन भी आज्ञा पातेही बहुतसे हाथी
घोड़े औ सेना साथले राजाकी भांति चला औ कुछदिन में वेदा-
रण्य के बीच पहुंचा वहां देखा कि पर्णशाला के भीतर समाधि
लगाये दीर्घतपामुनि बैठे हैं उनको प्रणाम किया मुनिने नेत्र
खोले तब राजपुरोहित ने पूछा कि हेमुनीश्वर आप प्रसन्न हैं औ
आपका तप निर्विघ्न होताहै यह कुशलप्रश्न सुन मुनिने कहा
कि हे सुदर्शन सब प्रकार ईश्वर के अनुग्रह से कुशल है तुमतो
प्रसन्नहो आपतो राजा स्वनय के पुरोहित सुदर्शनहो राजा को
छोड़ बहुतसी सेना साथले इस बनमें किस निमित्त आये यह
मुनि का वचन सुन नम्रहो सुदर्शन ने प्रार्थना करी कि आपकी
कृपादृष्टिसे मैं बहुत प्रसन्न हूं औ राजा स्वनयने आपको साष्टांग
दंडवत् प्रणाम पूर्वक यह प्रार्थना करीहै कि आप का पुत्र
कक्षीवान् गंधमादन पर्वतमें अगस्त्य तीर्थपर रहता है वह तप
धर्म कुल औ रूप करके उत्तम है औ वेद शास्त्र भली भांति जान-
ता है उस को मैं अपनी कन्या मनोरमा दिया चाहता हूं मृगया
खेलने के लिये मैं गंधमादन पर्वतमें आया औअब आपके पुत्रकेस-
मीपहूं आपका पुत्रयह कहताहै कि पिताकी आज्ञाबिना मैं बिवाह
नहीं करता इसलिये सुदर्शनको आपके पास भेजताहूं आपकृपा
कर अपने पुत्र को बिवाह करनेकी आज्ञादीजिये इतना कहसुद-
र्शन बोला कि महाराज यह राजा का संदेशहै सो आपसे कह

अब आप जो आज्ञादेवैं सो कीजाय सूतजी कहते हैं कि हे मुनी-श्वरो इतना कह सुदर्शन चुप होगया तब दीर्घतपा मुनि बोले कि हे सुदर्शन राजाकी इच्छा हमको अंगीकार है हमभी गंध-मादन पर्बत को चलेंगे इतना कह वेदारण्य के स्वामी को प्रणाम कर दीर्घतपामुनि भी सुदर्शनके साथ चले औ छः दिनमें अगस्त्य तीर्थ पर आ पहुंचे कक्षीवान् ने अपने पिता के चरणोंपर प्रणाम किया पिताने भी उसको अपनी गोदी में बैठाय स्नेहसे आलिं-गन किया औ उसके मस्तक को सूंघा औ पूछा कि हे पुत्र तैंने सब वेद औ शास्त्र किस भांति पढ़े तब कक्षीवान् ने सब वृत्तांत अपने पिता से कहा ॥

सत्रहवां अध्याय ॥

सूतजी कहते हैं कि हे मुनीश्वरो कक्षीवान् ने अपने पिता से यह वृत्तांत कहा कि मैं सब शास्त्र औ वेद पढ़चुका तब मेरे गुरु उत्तंक ने मुझे यहां भेजा मैंभी यहां आय राजा स्वनय की कन्या से बिवाह करने के अर्थ गुरु की आज्ञानुसार इस अग-स्त्य तीर्थ का सेवन करनेलगा तीनवर्ष के अनंतर राजा स्वनय यहांही आगया औ उसने मुझसे यह कहा कि हे ब्राह्मण मैं अपनी कन्या तुझे देताहूं उसीने आपके बुलाने के लिये अपने पुरोहित सुदर्शन को भेजा इतना कह कक्षीवान् चुपरहा सुदर्शन भी राजा के पासगया औ कहा कि दीर्घतपा मुनि आय पहुंचेहैं राजा भी मुनि का आगमन सुनतेही अपने तंबू के बाहिर निक-ल आया औ अगस्त्यतीर्थ पर जाकर दीर्घतपा मुनि के चरणों पर प्रणामकिया दीर्घतपा मुनि ने भी उठकर राजा को आशी-र्वाद दिया इसी अवसर में एक लाख शिष्य साथलिये उत्तंक-मुनि भी अगस्त्यतीर्थ में स्नान करने के लिये आये उत्तंक को

देख कक्षीवान् उठा औ उनके चरणों पर प्रणाम किया उत्तंक ने अपने शिष्य कक्षीवान् को आशीर्वाद दिया दीर्घतपा औ उत्तंक भी परस्पर मिले औ आसनपर बैठ प्रीतिसे भांति २ की कथा करनेलगे राजा ने भी उत्तंक मुनि को प्रणाम किया औ दीर्घतपा मुनिसे राजास्वनय ने प्रार्थना करी कि महाराज बिवाह का निश्चय कीजिये तब मुनिने कहाकि कलही बहुत उत्तम मुहूर्तहै इसलिये इस उत्तम क्षेत्रमें कलही बिवाह होना चहिये तुम कन्या को औ अपनी रानियोंको यहांही बुलवालो यह मुनि का वचन सुन उसी समय राजा ने नादिरों को सब अंतःपुर लाने की आज्ञादी वे भी आज्ञा पातेही उत्तम घोड़ोंपर चढ़ मथुरा पुरी में पहुंचे औ सब अंतःपुर को लेकर शीघ्रही गन्धमादन पर्बत में आय पहुंचे दूसरेदिन दीर्घतपामुनि ने पुत्र के गोदान आदि संस्कार विधि पूर्बक किये फिर अपने पिता औ गुरु समेत चतुर्दंत हाथी पर कक्षीवान् चढ़ा औ बिवाह के लिये तोरण बंदन माला आदिसे भूषित राजा के द्वारपर गया औ हजारों ब्राह्मण स्वस्ति वाचन पढ़ते हुवे इसके साथ गये कक्षीवान् को राजकन्या ने देखा औ बहुत प्रसन्नहुई कि मेरी प्रतिज्ञा सत्यहुई कक्षीवान् जब राजद्वारपर पहुंचा तब राजा अपने मंत्री औ पुरोहित को साथले सम्मुख आया भूषण वस्त्रोंसे अलंकृत उत्तम २ कन्याओं ने सोने चांदी के पात्रों से कक्षीवान् का नीराजन अर्थात् आरती की फिर सबके सब राजमंदिर के भीतर गये राजा स्वनय ने उत्तंक औ दीर्घतपा का पाद्य अर्घ्य आदिसे पूजन किया सब एक बहुत उत्तम मंडप में बैठे राजकन्या को सब भूषण वस्त्रों से अलंकृतकर वहांलाये राजकन्या ने आकर सब सभाके बीच अपने हाथसे चंपे के पुष्पों की माला कक्षीवान् के गले में पहिनाई फिर उत्तंकमुनि ने वेदीपर अग्नि अस्थापन कर उसके

सब संस्कार करे औ बधूवर से लाजा होम कराया औ दोनोंका पाणिग्रहण कराय सब वैदिक कर्म उत्तंकमुनि ने कराये सब ब्राह्मणों ने बधू औ बरको आशीर्वाददिये राजा स्वनयने दीर्घतपा उत्तंक बरके पक्षके औ अपने पक्षके सब मनुष्यों को भोजन कराया औ तीनलाख ब्राह्मणों को षट्रस भोजन कराय दक्षिणा तांबूल आदिदे प्रसन्न किया इसप्रकार बिवाह होजाने के अनंतर उत्तंकमुनि अपने आश्रम को गये और सब ब्राह्मण अपने २ देशों को गये वह चतुर्दंतहाथी अगस्त्यकुंड में प्रवेश करगया दीर्घतपामुनि ने अपने पुत्र औ स्नुषा समेत अगस्त्य तीर्थ में स्नान किया औ तीर्थ की बहुत प्रशंसा की फिर दीर्घतपामुनि ने अपने आश्रम में जाने के लिये राजासे पूछा राजाने अपनी कन्याको पांचसौ ग्राम एकलाख मोहर एकहजार दासी दशहजार उत्तम २ पोशाक सौ पेटी भूषणोंकी एकहजार रत्नोंकेहार औ बहुत से हाथी घोड़े रथ आदिदे बिदा किया दीर्घतपामुनि राजासे बिदाहो सब सामग्री समेत अपने पुत्र औ स्नुषा को साथले वेदारण्य को चले कुछदिन में वहां पहुंचे औ सुखपूर्वक सब निवास करनेलगे राजा भी अगस्त्य तीर्थ में स्नान कर अपनी सेना साथले अपनी राजधानी को गया इतनी कथा सुनाय सूतजी बोले कि हे मुनीश्वरो अगस्त्य तीर्थ के प्रभाव से कक्षीवान् का ऐसा उत्तम बिवाह हुआ जो और का होना दुर्लभ है हेमुनीश्वरो यह इतिहास वेदसिद्धहै औ धन यश आयुष् कीर्ति सौभाग्य आदि देनेहारा है इसलिये सबको पढ़ना चहिये इस इतिहास को जो पुरुष भक्तिसे पढ़ें अथवा श्रवणकरें उनको कभी दारिद्र्य नहीं होता औ बहुत काल संसार के सुख भोग कर उत्तमगति पाते हैं ॥

अठारहवां अध्याय॥

सूतजी कहते हैं कि हे मुनीश्वरो अगस्त्यकुंड में स्नानकर सब पापोंके निवृत्त होनेकेलिये रामकुंडको जाय रघुनाथ सरोवर के तीरपर अल्पदक्षिणा का यज्ञ भी करै तो वह भी संपूर्ण फल देताहै जप होम वेदपाठ आदि वहांकरै तो बहुत फल होता है एक मुट्ठी अन्न भी वहां ब्राह्मण को दे तो अनंतफल होता है हे मुनीश्वरो रामकुंडका एक इतिहास हम वर्णन करते हैं जिसके श्रवण से महापातक भी निवृत्त होजांय अगस्त्य मुनिके शिष्य रामचन्द्रजी के परमभक्त सुतीक्ष्ण मुनिने उस सरोवर के तीर बहुतकाल तपकिया नित्य उस सरोवर में स्नानकर राम षडक्षर महामंत्र का पांचसहस्र जपकरते औ भिक्षा के अन्न का भोजन करते इसभांति तप करते २ सुतीक्ष्ण मुनिको बहुतकाल बीता एकदिन सीताराम का हृदयमें ध्यानकर भक्तिसे सुतीक्ष्ण मुनि स्तुति करनेलगे (सुतीक्ष्णउवाच । नमस्तेजानकीनाथनमस्ते हनुमत्प्रिय। नमस्तेकौशिकमुनेर्यागरक्षणदीक्षित १ नमस्तेकौशलेयायविश्वामित्रप्रियायच। नमस्तेहरकोदंडभंजकामरसेवित २ मारीचांतकराजेन्द्रताटकाप्राणनाशन। कवंधारेहरेतुभ्यं नमोदशरथात्मज ३ जामदग्न्यजितेतुभ्यंखरविध्वंसिनेनमः नमःसुग्रीवनाथायनमोवालिहरायते ४ विभीषणभयक्लेशहारिणे मलहारिणे। अहल्यादुःखसंहर्त्रेनमस्तेभरताग्रज ५ अंभोधिगर्व संहर्त्रेतस्मिन्सेतुकृतेनमः।तारकब्रह्मणेतुभ्यंलक्ष्मणाग्रजतेनमः रक्षःसंहारिणेतुभ्यंनमोरावणमर्दिने । कोदण्डधारिणेतुभ्यंस रक्षाविधायिने ७) यह स्तुति सुतीक्ष्णमुनि नित्य पढ़ते और रा सरोवर में स्नानकर षडक्षरमंत्र का जपकरते इस प्रकार त करते २ रामचन्द्रजीमें दृढ़भक्ति होगई औ दिव्यज्ञानभी उत्प

हुआ बिना पढ़े सब वेद शास्त्र आगये बिना सुने पदार्थको जान लेना दूसरे शरीर में प्रवेश करना आकाश में गमन करना सब कलाओं को जानना सब लोकों में चलेजाना देवताओं के साथ संभाषण करना अतीन्द्रिय पदार्थों को भी जानना पिपीलिका आदि सब जीवों की भाषा समझना कैलास वैकुण्ठ ब्रह्मलोक आदि में जाना औ चौदह भुवनों में अपनी इच्छा से विचरना इत्यादि अनेक सिद्धि सुतीक्ष्णमुनि को प्राप्ति हुई जो योगियों को भी दुर्लभ हैं हे मुनीश्वरो यह सब रामतीर्थ का प्रभाव है उस तीर्थ में स्नान करने से सब पापों का नाश होताहै औ सब सिद्धि औ भोग मोक्ष मिलते हैं अपमृत्यु औ नरक का भय निवृत्त होताहै रामचन्द्र में दृढ़भक्ति होतीहै इसतीर्थ के तटपर एक शिवलिङ्ग है रामतीर्थ में स्नानकर उस लिंग का दर्शन करै तो मोक्ष भी दुर्लभनहीं औ पदार्थों की तो क्या कथाहै राजायुधिष्ठिर इस तीर्थ में स्नानकर शिवलिंग के दर्शनकर असत्य भाषण के महादोष से तत्क्षण छुटगया शौनक आदि ऋषियों ने पूछा कि हे सूतजी युधिष्ठिर ने धर्मपुत्र होकर क्यों असत्यकहा औ फिर उस दोषसे क्योंकर छुटा यह आप वर्णन करैं तब सूतजी कहनेलगे कि हे मुनीश्वरो जिस कारण युधिष्ठिर ने असत्य कहा औ रामतीर्थके प्रभाव से जिसभांति वह पाप निवृत्तहुआ हम वर्णन करते हैं युधिष्ठिर आदि पांच पुत्र पांडु के औ दुर्योधन आदि सौ पुत्र धृतराष्ट्र के थे इनका राज्य के लिये परस्पर बड़ा बैर बढ़ा तब अठारह अक्षौहिणी सेना ले कुरुक्षेत्र में आय युद्ध करनेलगे दशदिन भीष्मपितामह ने युद्धकिया औ पांच दिन धृष्टद्युम्न का औ द्रोणाचार्य का घोर संग्राम हुआ द्रोणाचार्य ने अनेक प्रकारके अस्त्र औ शस्त्रों से पांडवोंकी सेना को पीड़ा दी धृष्टद्युम्न ने भी अपने बाणों से द्रोण की सेना को

भेदन किया तब द्रोणाचार्य ने ऐसी बाणों की वर्षा की कि पा-
ण्डवों की सेना भयभीतहो चारों ओर भगी तब क्रोधकर द्रोणा-
चार्यसे अर्जुन युद्धकरनेलगा उन दोनों गुरु शिष्योंका युद्धदेखने
के लिये देवता विमानों में बैठ २ आये जिनसे आकाश भरगया
ऐसा युद्ध हुआ कि जिसकी कोई उपमानहीं देसकते द्रोणाचार्य
ने अर्जुन के पराक्रम की बहुत प्रशंसा की औ अपने प्रियशिष्य
अर्जुनको छोड़ पांचालों से द्रोणाचार्य युद्ध करनेलगे द्रोणाचार्य ने
क्षणमात्र में अस्सीहजार चतुरंगिणी सेना पांचालों की मारदी
तब क्रोधकर धृष्टद्युम्न युद्ध करनेलगा परन्तु द्रोणाचार्य के बाणों
के सम्मुख न ठहरसका औ युद्ध छोड़भगा उसको भीमसेन ने
आश्वासनकर अपने रथ में बैठाया औ द्रोणाचार्य से कहा जो
तुम सरीखे दुष्ट ब्राह्मण ब्रह्मकर्म छोड़ अस्त्रविद्या सीख युद्ध न
करते तो इतने क्षत्रियों का क्यों नाशहोता ब्राह्मणों का परम
धर्म अहिंसा है हिंसा करके अपने कुटुम्बका पालन व्याध करते
हैं तू एक पुत्र के लिये इतने राजाओं को युद्ध में मारता है परंतु
वह तेरा पुत्र युद्धमें मारागया तौ भी तुझे लज्जा औ शोकनहीं
होते यह भीमसेन का वचन सुन द्रोणाचार्यने युधिष्ठिर से पूछा
तब युधिष्ठिर ने भी यही कहा कि आपका पुत्र मारागया युधि-
ष्ठिर का वचन सत्यमान द्रोणाचार्य ने शस्त्र त्यागदिये औ योग
की रीति से प्राण त्याग करने के लिये समाधि करनेलगे यह
अवसर पाय धृष्टद्युम्न खड्ग लेकर द्रोणाचार्य का शिर काटने
दौड़ा उसको सब पांडव इसकर्म से रोकतेथे इतने में द्रोणा-
चार्य के मस्तकसे एक ज्योति निकलकर ऊपरको गई यह चम-
त्कार कृपाचार्य श्रीकृष्ण युधिष्ठिर अर्जुन आदि सबने देखा इस-
प्रकार जब द्रोणाचार्य ने प्राण त्यागदिये पीछे मृतशरीर का शिर
धृष्टद्युम्नने काटलिया इसप्रकार द्रोणाचार्यके मरनेपर उनकी सब

सेना भयसे भागी औ धृष्टद्युम्न पांडव आदि बहुत प्रसन्नहुवे तब द्रोणाचार्य के पुत्र अश्वत्थामाने दुर्योधनसे पूछा कि हमारी सेना क्यों भगीजाती है द्रोणाचार्यका मरण दुर्योधन तो अपने मुखसे नहीं कहसका परंतुकृपाचार्यको संकेतकिया तब कृपाचार्य बोले कि हे अश्वत्थामा तुम्हारापिता युद्धमें ब्रह्मास्त्रकरके पांडवोंकी सेना को दग्ध करनेलगा तब श्रीकृष्णचन्द्रने पांडवों से कहाकि द्रोणाचार्यके जीतने का एकही उपायहै जो कोई प्रामाणिक मनुष्य यह कहदेवै कि तुम्हारा पुत्र अश्वत्थामा युद्ध में मारागया तब द्रोणाचार्य शस्त्र त्यागकर युद्ध से निवृत्त होय नहीं तो यह सब सेनाका संहार करदेगा इसलिये यह वचन धर्मपुत्र युधिष्ठिरकहैं यह उपाय द्रोणाचार्यके जीतने का है धर्मसे किसी भांति द्रोण को नहींजीत सकते औ शत्रु को अधर्मसे भी जीतना चहिये यह श्रीकृष्णचन्द्र का वचन सुन पहिले भीमसेन ने कहा कि हे द्रोण तेरा पुत्र मारागया भीम के वचन पर द्रोणाचार्य्य को निश्चय न हुआ तब युधिष्ठिर से पूछा कि हे धर्मपुत्र तू सत्यकह कि अश्वत्थामा मारागया कि जीताहै यह गुरुका वचन सुन युधिष्ठिर का चित्त दोलायमानहुआ कि मैं क्या कहूं इसी अवसरमें भीमसेनने अश्वत्थामा नाम एकहाथीको युधिष्ठिर के सम्मुख माराथा उसीके उद्देशसे युधिष्ठिर ने कहा कि हां अश्वत्थामा को भीमने मारदिया यह युधिष्ठिरका वचन सुन शस्त्र छोड़ तेरा पिता युद्ध से निवृत्त हुआ पीछे युधिष्ठिरने यहभी कहदिया कि अश्वत्थामा एक हाथीथा परंतु तुम्हारे पिताकी यह प्रतिज्ञाथी कि शस्त्रको त्यागकर फिर ग्रहण न करैंगे इसलिये फिर शस्त्र न धारा धृष्टद्युम्न को अपना मृत्युजान प्राण त्यागनेके लिये रथमेंही तुम्हारे पिता समाधि करनेलगे तबमस्तकको भेदनकर ज्योतीरूप उनके प्राण निकलकर ऊपर को चलेगये पीछेसे जाकर धृष्टद्युम्नने

तुम्हारे पिताके केश पकड़ खड्गसे शिरकाटलिया पांडव आदितो उसको इस दुष्कर्म से रोकतेथे परंतु उसने एककी न मानी सूत-जी कहते हैं कि हे मुनीश्वरो कृपाचार्यसे अपने पिताके मृत्युका समाचार सुन अश्वत्थामा रोदन करनेलगा बहुत देर बिलाप कर क्रोधसे जलता हुआ यह वाक्य बोला कि जिसने झूठबोल मेरे पितासे शस्त्र त्यागकराया उस को औ जिसने मेरे पिता का शिरकाटा उसको औ सब पांडवों को शीघ्रही मारूंगा श्रीकृष्ण आदि सब मेरा पराक्रम देखें हे मुनीश्वरो यह अति घोर प्रतिज्ञा उस समय अश्वत्थामा ने की इतनेमें सायंकाल हुआ तब दोनों ओरके राजा युद्धबंदकर अपने २ डेरेको गये इसप्रकार अठारह दिन महाभारतका युद्धहुआ उसमें भीष्म द्रोण कर्ण शल्य दुर्यो-धन आदि बड़े २ बीर मारेगये अन्तमें राजायुधिष्ठिर ने सबका क्रियाकर्मकिया फिर धौम्य आदि मुनियों सहित पांडव हस्तिना पुरमेंआये औ राजाधृतराष्ट्रको प्रणामकिया औ धृतराष्ट्रकी आज्ञा पाय अपने मंदिरोंमें प्रवेशकिया कुछदिनके अनंतर नगरके लोग औ धौम्यआदि मुनीश्वरोंने युधिष्ठिरका राज्याभिषेक करनाचाहा तब आकाशबाणी हुई कि हे धर्मपुत्र युधिष्ठिर तू राज्याभिषेक मतकराय तू राज्यके योग्य नहींहै तैंने छलसे अपने गुरुद्रोणा-चार्यको मारा इसलिये तुझे बड़ा पाप लगाहै जबतक प्रायश्चित्त न करैगा राज्यकेयोग्य न होगा अब तू प्रायश्चित्त कर यह आ-काशबाणी सुन युधिष्ठिर बहुत ब्याकुल हुआ औ कहनेलगा कि देखो मैंने राज्यलोभ से कैसा घोर पाप किया मैं बड़ा दुष्ट क्रूर औ साहसीहूं अब मैं कौन दान यज्ञ प्रायश्चित्त आदि कर्म करूं जिससे यह पातक निवृत्तहोय इसप्रकार राजा युधिष्ठिर चिंता कररहाथा इतनेमें श्री वेदव्यासजी वहां आये राजायुधिष्ठिरने उठकर उनको प्रणामकिया औ आसनपर बैठाय पाद्यअर्घ्य

आदि से उनका पूजन कर अपने दुःख का सब बृत्तान्त उनको सुनाया जो आकाशबाणी ने कहा था व्यासजी धर्मराज का वाक्य सुन बहुत कालतक ध्यानकर कहनेलगे कि हे युधिष्ठिर शोक मतकर इसपाप की शांतिके लिये हम एक उपाय कहते हैं वह करो दक्षिण समुद्र में गंधमादनपर्वत के बीच रामसरोवर नाम एक अति उत्तमतीर्थ है जिसके दर्शनमात्र से सब पातक निवृत्त होजाते हैं जिस भांति सूर्य के आगे अन्धकार रामतीर्थ का दर्शन करतेही ब्रह्महत्या निवृत्त होजातीहै इसलिये हे धर्मपुत्र जाकर उस तीर्थ में स्नान करो तब पाप निवृत्त होगा औ राज्य की योग्यता होगी उस तीर्थ के तटपर गोभूमि तिल सुवर्ण चांदी वस्त्र भोजन आदि का दानकरो तब अवश्य सब पापों से छुटोगे सूतजी कहते हैं कि हे मुनीश्वरो ब्यासजी का यह वचन सुन अपने पुरोहित धौम्यमुनि को औ भीमसेन आदि अपने भाइयोंको साथले राज्य ब्यवहार सहदेवको सौंप राजा-युधिष्ठिर पैदलही रामतीर्थको चला कुछदिनमें वहां जायपहुंचा वहां तीर्थ में विधिपूर्वक स्नान किया औ तीर्थश्राद्धकर व्यास-जीने जो दान बताये थे सब किये इसी प्रकार एक महीने तक निराहार रहकर नित्य तीर्थ में स्नान किया औ धन का लोभ छोड़ राजा युधिष्ठिर ने बड़े २ दान रामतीर्थ के तटपर किये एक मासके अनंतर आकाशबाणी हुई कि हे राजा युधिष्ठिर तेरे सब पाप नष्टहुये छलसे असत्य बोलकर आचार्य के मारने से जो पाप हुआ था वह भी निवृत्त हुआ अब अपने नगर को जाकर राज्याभिषेक कराय औ धर्म से प्रजा का पालन कर इतना कह आकाशबाणी बन्दहुई राजा युधिष्ठिर भी प्रसन्नहो आकाशबाणी को प्रणामकर अपने भाइयों समेत हस्तिनापुर को चला कुछ दिनोंमें हस्तिनापुर पहुंचा वहां सब नगर के लोग औ मुनीश्वरों

ने राजा युधिष्ठिर का अभिषेक किया औ राजा युधिष्ठिर धर्म से राज्य करनेलगा हे मुनीश्वरो इसभांति रामतीर्थ के प्रभाव से राजा युधिष्ठिर निष्पाप औ राज्य के योग्य हुआ हे मुनीश्वरो सब पाप हरनेहारे रामतीर्थका यह थोड़ासा प्रभाव हमने वर्णन किया जो पुरुष इस अध्याय को पढै अथवा सुनै वह निष्पापहो कैलास को जाय औ जन्म मरण के भयसे छुटै ॥

उन्नीसवां अध्याय ॥

सूतजी कहते हैं कि हे मुनीश्वरो तारकब्रह्म श्रीरामचन्द्रजी के तीर्थमें स्नानकर लक्ष्मण तीर्थको जाय लक्ष्मणतीर्थ में स्नान करने से मनुष्य निष्पाप हो मुक्ति पाताहै लक्ष्मणतीर्थ में स्नान करने से दारिद्र्य निवृत्त होताहै औ आयुष्मान् गुणवान् विद्वान् औ धार्मिक पुत्र उत्पन्न होता है जो पुरुष उस तीर्थके तटपर बैठ मंत्रजपै वह बिना पढ़े सब वेद औ शास्त्रका जाननेहारा होजाय उस तीर्थके तटपर लक्ष्मण ने शिवलिङ्ग स्थापन किया है तीर्थमें स्नानकर लिङ्गका दर्शनकरै तो रोग दारिद्य औ संसार के क्लेशों से मनुष्य छुटै श्रीकृष्णचन्द्र के बड़े भ्राता वलदेव जी लक्ष्मण तीर्थसे स्नानकर औ लक्ष्मणेश्वर का सेवनकर ब्रह्महत्या से छुटे यहसुन मुनीश्वरों ने पूछा कि हे सूतजी वलदेवजीने ब्रह्महत्या क्योंकर की औ फिर उससे किस प्रकार छुटे यह आप वर्णन करें तब सूतजी कहनेलगे कि हे मुनीश्वरो पूर्वकाल में कौरव पांडवों का युद्ध होनेलगा उससमय शेषके अवतार वलदेवजीने बिचार किया जो हम कौरवों के पक्षमें रहें तब पाडव कोप करैंगे औ जो पांडवों की ओर रहें तो दुर्योधन बुरा मानेगा इसलिये यहां रहना उचित नहीं यह मन में निश्चयकर तीर्थयात्रा के उद्देश से वलदेवजी चले पहिले प्रभासतीर्थ में जाय विधि से

स्नानकर देवता ऋषि पितरोंका तर्पणकर औ ब्राह्मणों को दानदे पश्चिम की ओर सरस्वती नदी के तीर २ चले मार्ग में पृथूदक विंदुसर मुक्तिदतीर्थ ब्रह्मतीर्थ आदि तीर्थों में स्नान करते गङ्गा यमुना सिंधु शतद्रू आदि नदियों में भी स्नान दान आदि कर्म करते वलदेवजी कुछ काल नैमिषारण्य तीर्थ पर पहुंचे उनको आये देख नैमिषारण्य के सब तपस्वी आसनों से उठे औ बड़े आदर से वलदेवजी को आसन पर बैठाय कन्द मूल आदि से उनका सब ऋषियोंने पूजनकिया परंतु व्यासजीके शिष्य सूतजी ऊंचे आसनपर बैठेथे उनने वलदेवजी को उत्थान न दिया औ उनको प्रणाम भी न किया यह देख वलदेवजी को बड़ा क्रोध उत्पन्न हुआ कि देखो सब मुनियों ने हमारा सत्कार किया और यह सूत आसन से भी न उठा यह मनमें बिचार वलदेवजी बोले कि यह निंद्यजाति सूत मुनियों के बीच ऊंचे सिंहासन पर बैठा यह बहुत अनुचित बातहै औ हमारा इसने अनादर किया न तो आसन से उठा न प्रणाम किया इसने व्यासजीसे पुराण इतिहास धर्मशास्त्र आदि पढ़े हैं उसी से इतना अहंकार इसको है कि हमकोदेख प्रणाम न किया औ आसनभी नहींछोड़ा व्यासजी के शिष्य पैल वैशंपायन आदि ब्राह्मण ऐसा अनुचित कर्म कभी नहीं करते इसलिये इस दुष्टको हम मारेंगे हमारा जन्म दुष्टोंको दंड देनेके लियेहै औ हमारे हाथसे मृत्युपाय यह दुष्ट भी शुद्ध होजायगा इतनाकह वलदेवजीने कुशाके अग्रकरके सूतका शिर काटलिया यह देख मुनियोंने हाहाकार किया औ वलदेवजीसे कहा कि आपने बड़ा अधर्मकिया हमने मिलकर यह ऊंचा आसन इसको दिया है औ अक्षय आयुष् भी इसको दियाथा यह जान कर भी आपने ब्रह्महत्याकी आप जगत्के प्रभुहैं इसलिये आपका कोई नियामक नहीं परंतु आपही विचार कर इस ब्रह्महत्या का

प्रायश्चित्त कीजिये यह मुनियों का वचन सुन वलदेव जी बोले कि हे मुनीश्वरो लोक मर्य्यादा के लिये हम प्रायश्चित्त करेंगे वास्तव में तो हमको पापहैही नहीं अब आप सब हमको प्रायश्चित्त बतावें औ आपने इसको अक्षयआयुष् दियाहै इसलिये हम इसको अपनी योगमाया करके फिर जीता करदेते हैं तब मुनियों ने कहा कि हे वलदेव जी आपका शस्त्र औ हमारा बर दोनोंही सफल रहैं ऐसा काम कीजिये तब वलदेवजीने कहा कि हे मुनीश्वरो वेदमें पुत्रको आत्मा के तुल्य लिखा है इसलिये इस सूत से दीर्घायु औ बुद्धिमान् पुत्र होगा वही आपको पुराण सुनावेगा इतना कह फिर वलदेवजीने कहा कि हे मुनीश्वरो और जो कुछ आप चाहते हैं कहैं हम अभी आप का अभीष्ट सिद्ध करेंगे औ हमने यह पाप अज्ञान से किया इसका आप प्रायश्चित्त बतावैं तब मुनि कहनेलगे कि हे वलदेवजी इल्वल दैत्यका पुत्र वल्वल है वह सदा हमारे यज्ञको दूषित करताहै उस हमारे कंटक दुष्ट दैत्यको आपमारदेवैं यही हमारा बड़ा सत्कारहै वह दैत्यहमारे यज्ञमें अस्थि विष्ठा मूत्र रुधिर मांस मद्य आदि वर्षताहै औ इस भारतवर्षमें जितने तीर्थहैं उनमें आप एकवर्ष स्नानकरैं तब आप शुद्ध होजायँगे सूतजी कहते हैं कि हे मुनीश्वरो मुनीश्वर इतना कहते थे कि बड़ा प्रचंड पवनचला औ यज्ञशाला में विष्ठा मूत्र आदि की वृष्टि होनेलगी औ वल्वलदैत्य त्रिशूल हाथ में लिये यज्ञशाला के समीप वलदेवजी को देखपड़ा वलदेवजी ने देखा कि दग्धहुवे पर्वतके तुल्य वह दैत्य जिसके ताम्र के रंगकी बड़ी दाढ़ी औ बड़ी २ दाढ़ हैं औ पर्वत की कंदरा सा जिसका अति भयंकर मुखहै तब वलदेवजीने अपने हल औमूसलका स्मरण किया स्मरण करतेही दोनों आयुध आगये तब वलदेवजी हलसे उस दैत्यको खैंचा औ मूसलसे उसके मस्तकको चूर्णकिया

तब वल्वल भूमिपर गिरा औ सबमुनि वलदेवजीकी स्तुतिकरने लगे औ वलदेवजीका सब मुनियोंने तीर्थजलसे अभिषेककिया औ कमलों की वैजयंतीमाला सुंदर श्वेतवस्त्र औभूषण वलदेव जीकोदिये वलदेवजीने वे सब धारण किये औ मुनियोंसे बिदा हो तीर्थयात्रा को चले एकवर्ष सब तीर्थोंमें वलदेवजी ने स्नान किया औ अपने नगरको चले तब पीछे एक कृष्णवर्णकी छाया देखी जो घोर शब्द करती चली आतीथी औ यह आकाशबाणी भी सुनी कि हे वलदेवजी एकवर्ष आपने तीर्थयात्राकरी परंतु ब्रह्महत्या नष्ट न हुई यह बाणी सुन औ उस भयंकर छाया को देख वलदेवजी बड़े खिन्नहुवे कि देखो एकवर्ष हमने प्रायश्चित्त किया तौभी ब्रह्महत्या नष्ट न हुई अब क्याकरैं तब नैमिषारण्य में जाय वलदेवजीने सब वृत्तांत मुनियोंको कहा तब मुनिबोले कि हेवलदेव जी जो आप की ब्रह्महत्या नष्ट नहीं भई तो आप दक्षिण समुद्र के बीच गंधमादन पर्बतमें जाय लक्ष्मण तीर्थ में स्नानकर लक्ष्मणेश्वर शिवका पूजनकरैं तब यह हत्या संपूर्ण नाशको प्राप्त होजायगी सूतजीकहते हैं कि हेमुनीश्वरो मुनियों का वचनसुन वलदेवजी लक्ष्मणतीर्थपर पहुंचे वहां तीर्थमें स्नान कर गौ भूमि अन्न सुवर्ण आदि सबबस्तु दानकर ब्राह्मणोंकोदी औ लक्ष्मणेश्वर का पूजन किया तब आकाशबाणी हुई कि हे वलदेव अब तुम्हारी ब्रह्महत्या संपूर्ण नष्टहुई सुखसे अपनीपुरी को जाओ यह बाणीसुन वलदेवजीने उसतीर्थकी बहुत प्रशंसा करी औ धनुष्कोटि आदि सब तीर्थों में स्नान कर रामनाथ का दर्शनकर प्रसन्नतासे द्वारकाको आये हेमुनीश्वरो ब्रह्महत्याआदि पालक हरनेहारे लक्ष्मण सरोवरका हमने यह माहात्म्य वर्णन किया जो पुरुष भक्तिसे इस अध्याय को पढ़ैं अथवा श्रवण करैं वे अवश्य मुक्ति पाते हैं ॥

बीसवां अध्याय ॥

सूतजी कहते हैं कि हे मुनीश्वरो ब्रह्महत्या आदि पापों के निवृत्त करनेहारे लक्ष्मणतीर्थमें स्नानकर चित्तशुद्धिकेलिये जटा तीर्थमेंजाय जन्ममरण रोग आदि करके पीड़ित जीवोंके अज्ञान नाश करने के लिये जटातीर्थसे उत्तम कोई तीर्थनहीं कोई पुरुष ज्ञान प्राप्तिकेलिये वेदांतपढ़तेहैं परंतु उसका अनुभवहोना कठिन है वेदांत रूप समुद्रहै जिसमें पूर्व पक्षग्राह औ उत्तर पक्ष बड़े२ मत्स्य हैं उसमें पड़कर मूढ़ पुरुष मोह को प्राप्त होता है चित्त शुद्धिके लिये वेदांत पढ़तेहैं परंतु चित्तशुद्धि नहींहोती औ लोकों से कलह करते फिरतेहैं हेमुनीश्वरो वेदांत पढ़नेसे भ्रमही बढ़ता है चित्त शुद्धि नहींहोती इसलिये हम वेदांत शास्त्रको उत्तम नहीं समझते जो बिना परिश्रम चित्त शुद्धि चाहो तो जटा तीर्थ का सेवन करो यह हम सबको कहते हैं पूर्वकाल में सबके उपकार के अर्थ यहतीर्थ अज्ञान हरनेहारा साक्षात् सदाशिवने गंधमादन पर्वतमें बनायाहै औ रावणकोमार रामचन्द्रजीने इसतीर्थमें जटा धोईथी इससे उसतीर्थका नामजटातीर्थ पड़ा साठहजारवर्ष गंगा स्नानकरै सिंहके वृहस्पतिमें गोदावरीमें स्नानकरै औ हजार बार सिंहके वृहस्पतिमें गोमतीमें स्नानकरै तब जितना पुण्यहोता है उतना पुण्य जटातीर्थके दर्शनमात्रसे होजाताहै जटातीर्थमें स्नान करनेहारे मनुष्योंका अंतःकरण शुद्ध होजाताहै औ अज्ञाननिवृत्त होताहै अज्ञान नाश होनेसे ज्ञान प्राप्तिहोकर मुक्ति मिलतीहै औ अखंड सच्चिदानंद रूप प्राप्त होताहै इसमें एकप्राचीन इतिहास भीहै पूर्वकालमें सब शास्त्र वेदके जाननेहारे औ महाज्ञानी श्री-वेदव्यासजी से शुकदेवजीने पूछा कि हेपिता आप ऐसा उपाय बतावें जिससे अज्ञान निवृत्त होकर ज्ञान प्राप्त होय औ मोक्ष

मिले मैंने आपसे वेदांत इतिहास पुराण आदि सब पढ़े परंतु अंतःकरण शुद्धि न हुई अब ऐसा उपाय बतावैं जिससे चित्तशुद्ध होय यह अपने पुत्र शुकदेवजीका वचनसुन वेदव्यासजी कहने लगे कि हेपुत्र हम अति गुप्त बात कहते हैं जिससे अविद्याग्रंथि का भेदन होकर ज्ञानकी प्राप्तिहोय दक्षिण समुद्रकेबीच रामसेतु के मध्यमें गंधमादनपर्वत है उसकेबीच पापहरनेहारा जटातीर्थ है जहां श्रीरामचंद्रजी ने जटाधोई थी रामचंद्रजी ने उसतीर्थ को बरदिया कि जो इस तीर्थ में स्नान करैगा उसका अंतःकरण शुद्ध होजायगा दान यज्ञ जप तप उपवास आदि बिना किये जटातीर्थमें स्नानमात्र से अंतःकरण शुद्ध होजाता है उस तीर्थ में स्नान करने से सब विपत्ति दूर होती हैं औ पुण्यलोक की प्राप्ति होती है इसतीर्थ से उत्तम जप तप नियम आदि कोई नहीं धन यश आयुष मंगल पुण्य पवित्रता ज्ञान आदि सब पदार्थ जटा तीर्थ में स्नान करने से मिलते हैं भृगुने अपने पिता वरुण से अन्तःकरण शुद्धिका उपाय पूछा तब वरुण ने भृगु को यही कहाकि गन्धमादन पर्बतके बीच जटातीर्थ में स्नानकरनेसे अंतःकरण शुद्धिहोती है तब भृगुने जाकर जटा तीर्थमें स्नान किया जिससे भृगुकी बुद्धि शुद्ध होगई औ दिव्य अद्वैत ज्ञान उत्पन्न हुआ औ सच्चिदानन्द अखण्ड चैतन्य स्वरूप भृगु होगया शिवजी के अंश दुर्व्वासा मुनिने जटातीर्थ में स्नान कर उत्तम ज्ञान पाया विष्णुके अवतार दत्तात्रेय मुनिनेभी जटातीर्थ में स्नानकर ब्रह्मज्ञान पाया जो अज्ञान का नाशकिया चाहै तो जटातीर्थ में स्नान करै हे पुत्र शुकदेव तूभी अंतःकरणकी शुद्धि के लिये जटातीर्थ में जाकर स्नान कर यह पिताका वचन सुन शुकदेवजी रामसेतु को चले वहांजाय जटातीर्थ में संकल्पपूर्बक शुकदेवजी ने स्नान किया तब उनको अंतःकरण शुद्धहोकर

आत्मज्ञान प्राप्तहुआ जो मनःशुद्धि की इच्छारखताहोय वहजटा-तीर्थमें स्नानकरै कल्पवृक्ष के तुल्य जटातीर्थ के होतेभी अज्ञानी पुरुष और तीर्थोंको ढूंढ़ते फिरते हैं जटातीर्थ में स्नान करने से भुक्ति औ मुक्ति दोनों मिलतीहैं वेदपाठ यज्ञ तप व्रत दान उप-वास आदि करके कष्ट से मनःशुद्धि होतीहै औ जटातीर्थमें स्नान मात्र से होजाती है जटातीर्थ का माहात्म्य हम नहीं वर्णन कर सकते ब्रह्मा विष्णु शिवजी जटातीर्थके माहात्म्य को भलीभांति जानते हैं जटातीर्थके तुल्य कोई तीर्थ न हुआ न होगा जटातीर्थके तीरपर श्राद्ध करने से गयाश्राद्ध के तुल्य फलहोताहै जटातीर्थ में स्नान करनेसे पाप नरक औ दारिद्र्यका भयनहीं होता। सूत जी कहते हैं कि हे मुनीश्वरो यह जटा तीर्थका माहात्म्य हमने थोड़ासा कहा जिसतीर्थके प्रभावसे शुकदेवजीने ज्ञानपाया। जो इस अध्याय को पढ़ै अथवा सुनै वह सब पापोंसे छूट विष्णुलोक को जाताहै॥

इक्कीसवां अध्याय॥

सूतजी कहतेहैं कि हे मुनीश्वरो जटातीर्थमें स्नानकर शुद्धचित्त हो लक्ष्मीतीर्थ को जाय जिस मनोरथ से लक्ष्मीतीर्थ में स्नान करै वही मनोरथ सिद्ध होता है दुख दारिद्र्य हरनेहारा औ धन धान्य सुख संपत्ति देनेहारा लक्ष्मी तीर्थ है श्रीकृष्ण भगवान् के प्रेरणा से धर्मपुत्र युधिष्ठिर ने इंद्रप्रस्थसे आकर लक्ष्मीतीर्थ में स्नान किया तब बड़ा ऐश्वर्य्यपाया शौनक आदि ऋषियों ने पूछा कि हे सूतजी राजा युधिष्ठिरने जिसभांति ऐश्वर्यपाया वह आप वर्णन करैं तब सूतजी बोले कि हे मुनीश्वरो धृतराष्ट्र की आज्ञासे पांडव इन्द्रप्रस्थ में रहतेथे एक समय उनके मिलने को लिये द्वारका से श्रीकृष्णचन्द्र आये पांडव भी श्रीकृष्णचन्द्र को

देख परम हर्षितहुये औ उनको बड़े आदरसे अपने महल में रक्खा एक दिन राजा युधिष्ठिर ने श्रीकृष्णचन्द्र का पूजन कर पूछा कि हे श्रीकृष्णचन्द्र जिस कर्म से बड़ा ऐश्वर्य्य प्राप्त होय वह आप हमको बतावें तब श्रीकृष्णचन्द्र कहनेलगे कि हे महाराज गन्धमादनपर्वत में एक लक्ष्मीतीर्थ है उसमें स्नान करनेसे ऐश्वर्य प्राप्तहोताहै धनधान्य बढ़ताहै शत्रुओंका नाशहोताहै आप भी उस तीर्थमें स्नान करैं उस तीर्थमें स्नान करके देवताओं ने परम ऐश्वर्यपाया औ दैत्योंको मारा उस तीर्थमें स्नान करने से राज्य धन औ धर्म शीघ्रही प्राप्तहोतेहैं तप दान यज्ञ औ ब्राह्मणों के आशीर्वाद से जिस भांति ऐश्वर्यकी वृद्धिहोती है ऐसेही लक्ष्मीतीर्थके स्नानसेभी होतीहै सब विघ्न पाप औ रोग लक्ष्मीतीर्थ में स्नान करने से दूर होते हैं औ परम कल्याण प्राप्त होता है इस तीर्थमें स्नानकरनेसे नल कूबरने सब अप्सराओंमें मुख्यरंभा अप्सरा पाई कुबेर लक्ष्मीतीर्थ में स्नान कर महा पद्म आदि नौ निधियोंका स्वामीहुआ इसलिये हेमहाराज आपभीअपने भाइयों सहित लक्ष्मीतीर्थ में स्नान करैं तो सबशत्रुओं को जीत बड़ी लक्ष्मी पावें गे इसमें कुछ संदेह न कीजिये यह श्रीकृष्णचन्द्र का वचन सुन अपने भाइयों को ले राजा युधिष्ठिर गंधमादन पर्वतको चले वहां लक्ष्मीतीर्थ पर पहुंच सबने स्नानकिया इसी भांति नित्य एक मासतक स्नान करते रहे औ गौ भूमि तिल सुवर्ण आदि दान नित्य ब्राह्मणों को देतेरहे फिर इंद्रप्रस्थ को आये इंद्रप्रस्थ में पहुंच राजा युधिष्ठिरने राजसूय यज्ञ करने की इच्छाकी तब श्रीकृष्णचन्द्रको बुलाने दूतभेजा श्रीकृष्णचन्द्र भी दूतके पहुंचतेही सत्यभामा समेत रथमें बैठ इंद्रप्रस्थ को चले इन्द्रपस्थ में पहुंचे तब पांडवों ने बड़ा उत्सव किया औ युधिष्ठिरने राजसूय यज्ञ करनेका मनोरथ उनसे कहा श्रीकृष्ण

जीने भी स्वीकार किया औ यह कहा कि हे महाराज आपको हम पथ्यबात कहतेहैं जो बहुतसे हाथी घोड़े औ सेनाका अधिपति होय वही राजा इस यज्ञको कर सकता है साधारण राजा इस यज्ञका अधिकारी नहीं पहिले आप सब दिशाओंके राजाओं को जीतैं औ उनसे करलेवैं उसी धनसे आप यहयज्ञ करें इसलिये यज्ञसे पहिले आप दिग्विजय कीजिये यह श्रीकृष्णचन्द्र का वचन सुन राजा युधिष्ठिर बहुत प्रसन्न हुये औ अपने भाइयों को बुलाकर कहा कि हे भ्राताओ मैं राजसूय यज्ञकिया चाहता हूं इसलिये तुम चारो बहुतसी सेना साथलेकर चारो दिशाओं को जीतो जीतकर जो धन तुम लाओगे उसीसे यज्ञ होगा यह राजा युधिष्ठिर की आज्ञापाय भीमसेन अर्जुन नकुल औ सहदेव बहुतसी सेना साथले दिग्विजयको चलेथोड़ेही कालमें सबराजाओंको जीत अपने वशमें स्थापनकर बहुतसा धनले अपने नगर में पहुंचे सौ भार सुवर्ण भीमसेन एक हजार भार सुवर्ण अर्जुन सौभार सुवर्ण नकुल औ विभीषण के दिये सुवर्णके चौदह ताल औ दक्षिण देश के राजाओं को जीत बहुतसा धन सहदेव भी लाया औ कई करोड़ का धन श्रीकृष्ण भगवान् ने युधिष्ठिर को दिया सब भ्राताओं के लाया धन औ श्रीकृष्णचंद्र के दिये असंख्य धन करके युधिष्ठिर ने श्रीकृष्णचंद्र के आश्रय से राजसूय यज्ञ किया उस यज्ञ में युधिष्ठिर ने ब्राह्मणों को यथेष्ट धन अन्न गौ भूमि भूषण वस्त्र आदि दिये जितना याचकों ने मांगा उससे दूना पाया जितना धन युधिष्ठिर ने यज्ञ में बांटा उसकी इयत्ता कोटि वर्ष में भी नहीं कर सकते एक २ अर्थी को दिये धन देख लोक यही जानते थे कि राजाने अपना सर्वस्व इसी को देदिया औ जब राजा का खजाना देखते कि जिसमें सुवर्ण औ रत्नोंके ढेर लगे थे तब यह जानते कि अर्थी को बहुत थोड़ा

दिया इस भांति राजसूय यज्ञ कर राजा युधिष्ठिर अपने भाइयों समेत धर्म राज्य करने लगा सूत जी कहते हैं कि हे मुनीश्वरो लक्ष्मी तीर्थ के प्रभाव से राजा युधिष्ठिर ने यह सम्पत्ति पाई यह तीर्थ स्नान करनेहारों के सब पातक दूर कर धन धान्य औ ऐश्वर्य देता है इस तीर्थ में स्नान करने से ऋण औ दारिद्र्य नहीं रहता नरक औ दुःख भी समीप नहीं आते इस में स्नान करने से स्वर्ग औ मोक्ष भी मिलता है औ स्त्री पुत्रभी उत्तम प्राप्त होते हैं इस तीर्थ के तुल्य कोई तीर्थ हुआ नहीं औ होगा भी नहीं यह लक्ष्मी तीर्थ का माहात्म्य हमने कहा इसके पढ़ने से अथवा सुनने से धन धान्य मिलतेहैं दुःस्वप्न का फल नष्ट होता है औ सब मनोरथ सिद्ध होते हैं॥

बाईसवां अध्याय॥

सूतजी कहतेहैं कि हे मुनीश्वरो सब ऐश्वर्य देने हारे लक्ष्मीतीर्थ में स्नान कर अग्नितीर्थ को जाना चहिये अग्नितीर्थ सब तीर्थों में उत्तम अभीष्ट सिद्धि देनेहारा औ सब पातकों के हरनेहारा है मनुष्य को अपने पाप निवृत्त करने के लिये उसमें स्नान करना चहिये शौनक आदि ऋषि पूछते हैं कि हे सूतजी उस तीर्थका नाम अग्नितीर्थ क्यों हुआ औ वह तीर्थ कहाँहै यह आप वर्णन करें हमारी श्रवण करने की बहुत इच्छा है यह मुनियों का प्रश्न सुन सूतजी बोले कि हे मुनीश्वरो आपने बहुत उत्तम बात पूछी हम वर्णन करते हैं पूर्वकाल में सकुटुंब रावण को मार औ लंका का राज्य विभीषणको दे सीता औ लक्ष्मण सहित सिद्ध चारण गंधर्वआदि करके सेवित मुनियों करके स्तुत श्रीरामचंद्र जी तीर्थ दर्शन की इच्छा से औ जानकी शुद्धि के लिये सेतु मार्ग करके गन्धमादन पर्वत पर पहुंचे वहाँ लक्ष्मी

तीर्थके तटपर स्थित होकर सब देवता ऋषि औ पितरोंके समीप अग्नि का आवाहन किया आवाहन करतेही पीतवर्ण रक्तनेत्र पीत वस्त्र पहिने धनुष हाथ में लिये अपनी सात जिह्वाओं से दशों दिशाओं को चाटता अग्नि समुद्र से निकला औ रामचंद्र जीके समीप आय यह वचन कहने लगा कि हे रामचंद्रजी जानकी के पतिव्रता धर्म के प्रभाव से आपने रावणको मारा इसमें कुछ संदेह नहीं यह जानकी साक्षात् जगत्की माता लक्ष्मी है जब२ आप अवतार लेते हैं तब २ यह भी आपके पीछे अवतार धारती है आप परशुराम हुवे तब यह धरणी हुई अब जानकीहै आगे रुक्मिणी होगी और भी सब अवतारोंमें आपके साथ रहेगी आप साक्षात् विष्णु हैं अब मेरे वचनसे आप इसको ग्रहण करें यह अग्नि का वचन सुन देवता ऋषि विद्याधर गंधर्व मनुष्य नाग आदि सब जानकी औ रामचन्द्रजीकी प्रशंसा करने लगे रामचंद्र जीने भी अग्नि के वचनसे सीताको ग्रहण किया रामचंद्र जी के आवाहन करने से जहाँ अग्नि प्रकट हुआ वहांही अग्नितीर्थ हुआ अग्नितीर्थ में स्नान करै औ उपवास करके ब्राह्मणों को भोजन करावै औ वस्त्र भूषण भूमि आदि उनको दान करके देवै औ उत्तम कन्याको वस्त्र भूषण आदिसे अलंकृत कर दान करै तो अवश्यही विष्णुलोक पावै अग्नितीर्थके तटपर अन्नदान का बहुत फलहै अग्नितीर्थ के तुल्य न हुआ न होगा एक बड़ा पातकी अग्नि तीर्थ में स्नान कर घोर पिशाचपने से छुटा। पूर्वकाल में पशुमाननाम एक वैश्य पाटलिपुत्र नगर में हुआ वह सदा धर्म में तत्पर रहता औ ब्राह्मणों की सेवा करता खेती कराता गौ रखता औ बाजार में सुवर्ण चांदी बेचता उस वैश्य की तीन स्त्री थीं उनमें बड़ी के सुपण्य पण्यवान् औ चारुपण्य ये तीन पुत्र थे बिचली के सुकोश औ बहुकोश ये दो पुत्र

थे औ तीसरी स्त्री के महापण्य महाकोश औ दुष्पण्य ये तीन पुत्र हुवे इस भांति पशुमान् वैश्य की तीन पत्नियों में आठ पुत्र थे वे सब बालअवस्था में अपनी क्रीड़ा से माता पिता को आनंद देतेथे पांच २ बर्षके जब हुवे तो पशुमान् ने सबको खेती ब्यापार गो रक्षा आदि कर्मों में लगाया उनमें सात पुत्र तो अपने पिता की आज्ञा पर चलते इससे सुवर्ण आदिके ब्यापार में बहुत प्रवीण होगये परंतु सबसे छोटा दुष्पण्यकभी पिताकी आज्ञापरन चलाऔ कुमार्गमें प्रवृत्तहुआ जिन बालकोंकेसाथ खेलता उनको भी पीड़ा देता पिता उसका दुष्ट ब्यवहार देखकर भी उसको कुछनहीं कहतायह शोचता किबालक है औ मूर्खहै आपही समझ जायगा क्रम से वेआठोंवैश्य पुत्र तरुणअवस्था में प्राप्त हुवे तब दुष्पण्य यहकाम करने लगाकि नगरमें जिस का बालक मिलता उसीको उठाकर गुपचुप कुवेंमें अथवा तलाव में फेंक आताऔ उस के कुकर्म को कोई नहीं जानता उन बालकों के माता पिता बहुत ढूंढ़ते परंतु बालकों का कहीं पता नहीं लगता जब कोई बालक तलाव आदि में मरा हुआ मिलता तो उस के मा बाप रो पीट कर रहजाते इसभांति दुष्पण्य नित्यही बालकों को मारता कुछ दिनों में नगर शून्य होनेलगा यह बात राजाने सुनी तब कोत-वाल को बुलाकर आज्ञादी कि निश्चय करो बालकों को कौन मारता है कोतवाल ने राजाकी आज्ञापाय बहुत यत्नकिया परंतु कुछ पता न लगा औ बालकभी नित्य मारेही जाते थे कोतवाल ने राजा से प्रार्थना करी कि महाराज मैंने बहुत यत्न किया परंतु उसदुष्ट का ठिकाना नहीं मिलता यहसुन राजा अति व्याकुल हुआ औ नगर के लोग नित्य राजाके द्वारपर आय पुकारते। एक दिन कमल तोड़ने के बहाने से पांच बालकों को साथ लेकर दुष्पण्य एक तलाव परगया वहाँ इधर उधर देखा कि कोई म-

नुष्य नहीं है उन चिल्लाते हुवे बालकों को उठा उठा दुष्पण्य ने तलाव में फेंक दिया औ उनको मरेजान अपने घरको चला आया दैवयोगसे वे बालक डूबे नहीं दो चार गोते खाकर किनारे आ लगे घरका मार्ग नहीं जानते थे इसलिये तलाव के किनारे रोतेहुवे फिरनेलगे इतनेमें उनके मा बापभी ढूंढ़ते ढूंढ़ते औ बालकों के नामोंसे पुकारते वहां आये बालकों ने अपने नाम सुन औ माता पिताकी बोली पहिचान शब्द किया तब उनके माता पिता उनके समीप पहुंचे औ उनको जीते हुवे देख परमहर्षको प्राप्त हुवे औ बालकों से वृत्तांत पूछा कि तुम यहां क्योंकर आये तब उनने दुष्पण्य का सब कुकर्म कहा वे सब बालकों समेत राजा के पास गये औ सब वृत्तांत कहा तब राजाने पशुमान् को बुलाय कर कहा कि हे पशुमान् दुष्पण्य नाम तेरे पुत्र ने हमारा नगर शून्य करदिया देख ये पांच बालक भी उसने तलाव में डुबो दियेथे परंतु ईश्वरकी इच्छा से बचगये तू धर्मात्मा है इसलिये हम तुझ कोही पूछते हैं कि अब क्या करना चहिये यह राजा का वचन सुन पशुमान् बोला कि महाराज जिस दुष्टने नगर के सब बालक मार डाले उसका अवश्यही बध करना चहिये इसमें कुछ विचारकी बात नहीं वहमेरा पुत्रनहीं शत्रुहै शीघ्र आप उस दुरात्मा का बधकरैं यह पशुमान् का वचन सुन नगर के सब मनुष्यों ने पशुमान् की बहुत प्रशंसा करी औ सबने मिलकर राजासे यह प्रार्थना करी कि महाराज आप उसदुष्ट का बध न करैं नगर से उसको निकाल देवैं यह नगरबासियों का बचन सुन दुष्पण्य को बुलाय राजाने कहा कि हेदुष्ट शीघ्र तू हमारे नगर से निकल जा जो अब तू यहां रहेगा तो तेरा बध किया जायगा यह कहकर राजाने उसको नगर से निकाल दिया वहभी वहां से निकल बनमें गया जहां बहुतसे मुनि आश्रमों में

रहते थे वहांभी दुष्पण्यने एक मुनि बालक को जलमें डुबोदिया तब और बालकों ने जो वहां खेलते थे उस बालक के पिता से जाकहा वह उग्रश्रवा नाम मुनिसुनतेही दौड़ा आया औ देखा कि बालक जलके ऊपर मराहुआ तरता है यह देख औ योगबल से सब दुष्पण्य का कर्म जान उसको शाप दिया कि रे दुष्ट तैंने मेरे पुत्र को जलमें डुबोकर मारा इसलिये तू भी जलमें डूबकर मरैगा औ मरकर पिशाच होगा यह शाप सुन उदासहो दुष्पण्य दूसरे बनको गया जहां बहुत से सिंह व्याघ्र आदि दुष्टजीव रहते थे उसके बनमें प्रवेश करतेही प्रचंड पवन चला वृक्ष टूट टूट कर गिरने लगे औ अति घोरवृष्टि होनेलगी तब दुष्पण्य अति दुःखी हुआ औ इधर उधर देखने लगा तब उसने देखा कि एकहाथी मरा औ सूखा हुआ पड़ाहै वह प्राण बचाने के लिये हाथीके मुखमें घुसकर उसके पेटमें जा बैठा औ वृष्टि बहुत हुई औ एकजल का प्रवाह उधर बहकर आया उसमें वह मराहाथीभी बहचला औ जलसे भरगया क्षणमात्रमें दुष्पण्य समेत समुद्र में जापहुंचा परंतु दुष्पण्य के प्राण इतने में जाते रहे औ वह पिशाच होगया औ क्षुधा तृषा करके पीड़ित हुआ एक बनमें रहनेलगा इसप्रकार दुःख भोगते करोड़ों बर्ष उसको बीतगये देश २ औ बन २ में भटकता फिरता परंतु कहीं सुखनहीं मिलता एकदिन दंडकारण्य में अगस्त्यमुनिके आश्रम के समीप पहुंचा औ पुकारनेलगा कि हेतपस्विओ आप दयालु हैं मेरे ऊपरभी दयाकरें मैं अति दुःखीहूं पाटलिपुत्र निवासी पशुमान्नाम वैश्यका पुत्र दुष्पण्यनाम मैं पूर्बजन्म में था मैंने बहुतसे बालक मारदिये तब राजाने मुझे अपने देशसे निकाल दिया मैंभी एक बनमें आया वहां आय मैंने उग्रश्रवा मुनिका पुत्र जलमें डुबोया मुनिने मुझे शाप दिया कि तेरा भी जलमें

मृत्युहोगा औ बहुतकाल तक तू पिशाच बनकर दुःख भोगेगा मुनिके शापसे पिशाच हुवे मुझे कई करोड़वर्ष होगये शून्य बनों में दुःख भोगता फिरताहूं क्षुधा औ तृषासे मेरे प्राणजातेहैं आप मेरी रक्षाकरैं औ ऐसा यत्न बतावैं जिससे पिशाचपना छुटजाय यह उसका वचन सबमुनियों ने जाकर अगस्त्यजीसे कहा औ प्रार्थना करी कि महाराज इस दीन पिशाच का आप उद्धार कीजिये आप समर्थहैं यह मुनियोंकी प्रार्थनासुन परमदयालु अगस्त्यमुनिने अपने प्रियशिष्य सुतीक्ष्ण को बुलाकर कहा कि हे सुतीक्ष्ण गंधमादन पर्वतमें अग्नितीर्थहै वहांजाकर संकल्पपूर्वक इसका पिशाचत्व छुटने के लिये तू स्नानकर तब यह इस योनि से छुट दिव्य देह होजायगा उस तीर्थ बिना इसका उद्धार किसी प्रकार नहीं होसकता इस लिये हे सुतीक्ष्ण तू इस दीन पिशाच की रक्षाकर यह गुरुकी आज्ञापाय सुतीक्ष्ण मुनि अग्नि तीर्थपर पहुँचे औ पिशाचके निमित्त संकल्पकर स्नानकिया इस भाँति तीर्थमें तीनदिन स्नानकर रामनाथ के दर्शनकर अग्नि तीर्थका जल लेकर सुतीक्ष्णमुनि अपने आश्रममें आये औ उस पिशाचपर तीर्थ का जल छिड़का तीर्थ के जलका स्पर्श होतेही वह दिव्यदेह होगया औ अगस्त्य सुतीक्ष्ण औ उस आश्रम में रहनेहारे सब मुनियोंको बारंबार प्रणामकर दिव्यविमानमें बैठ उत्तम नारियों करके सेवित स्वर्गको चलगया हेमुनीश्वरो अग्नि तीर्थके प्रभाव से दुष्पण्यसा पापी पिशाचयोनि से छुट स्वर्गको गया यह अग्नितीर्थ का प्रभाव हमने वर्णनकिया जो इस अध्यायको भक्ति से पढ़ै अथवा सुनैवह बहुत दिन संसार सुख भोग सब पापों से छुट सद्गति पावै॥

तेईसवां अध्याय ॥

सूतजी कहतेहैं कि हे मुनीश्वरो सब पाप हरनेहारे अग्नि-तीर्थ में स्नानकरके शुद्धचित्त हो चक्रतीर्थ को जाय जिस मनोरथ से चक्रतीर्थ में स्नानकरै वही मनोरथ सिद्ध होजाताहै पूर्वकालमें अहिर्वुध्न्यनामऋषि गंधमादन पर्वतमें सुदर्शन कीउपासना करते थे उनको आकर राक्षस पीड़ा देनेलगे तब सुदर्शन चक्रने आय सब राक्षसों को संहारकिया औ अहिर्वुध्न्यमुनि की प्रार्थना से उसतीर्थ में निवासकिया जिसके तटपर अहिर्वुध्न्य मुनि तप करते थे उसदिन से उसतीर्थ का नाम चक्रतीर्थ पड़ा उस तीर्थमें स्नानकरने से भूत प्रेत आदि की पीड़ा निवृत्त होजाती है पूर्बकाल में सूर्य भगवान् ने इस तीर्थमें स्नानकिया तब उनके कटेहुवे हाथ पहिले की भाँति होगये औ सुवर्ण के होगये यहसुन ऋषियों ने पूछा कि सूर्य भगवान् के हाथ क्यों कर कटे औ फिर किस भाँति सुवर्णके हाथ पाये यह आप वर्णन करें तब सूतजी कहनेलगे कि हे मुनीश्वरो पूर्बकाल में इन्द्र आदि देवताओं को दैत्योंने बहुत पीड़ा दी तब सबने विचार किया औ इन्द्रको आगेकर ब्रह्माजी के समीप गये वहां जाय ब्रह्माजी की भक्तिसे स्तुतिकर प्रार्थना की कि महाराज हमको दैत्य बहुतपीड़ा देते हैं इसका आप कुछ उपाय बतावें तब ब्रह्माजी बोले कि हे देवताओ डरो मत हम आपको उपाय बताते हैं असुरों के नाशके लिये माहेश्वर यज्ञ का आरंभ करो आप सब औ सब ऋषि मिलकर गंधमादन पर्वत में यह यज्ञ करें और स्थान में यज्ञ करने से असुर विघ्न करैंगे गंधमादन पर्वत में अहिर्वुध्न्यमुनिके तीर्थमें सुदर्शनचक्रने निवास कियाहै इसलिये वहां राक्षसों का भय नहीं है तुम सब गंधमादन में चक्रतीर्थके

समीप यज्ञ करो यह ब्रह्माजी की आज्ञापाय वृहस्पतिको आगे कर सब देवता गंधमादन में पहुँचे वहाँ जाय अहिर्बुध्न्यमुनिको प्रणाम कर उनके आश्रम के समीप यज्ञ वाट बनाया औ यज्ञ कर्म में निपुण मुनियों सहित सब देवता असुरोंके नाशके लिये यज्ञ करनेलगे उस यज्ञ में वृहस्पति होता हुवे इन्द्रका पुत्र जयंत मैत्रावरुण बना आठवां वसु अच्छावाक हुआ पराशरमुनि ग्रावस्तुने अष्टावक्र अध्वर्यु विश्वामित्र प्रतिप्रस्थाता वरुण नेष्टा कुवेर उन्नेता ब्रह्माजी सविता वसिष्ठमुनि ब्राह्मणाच्छंसी शुनःशेप आग्नीध्र अग्निपोता वायु उद्गाता यमराज स्तोता अगस्त्य मुनि प्रतिहर्ता विश्वामित्र का पुत्र सुब्रह्मण्य मधुच्छन्दा व्याසजी के पुत्र शुकदेवजी उपद्रष्टा औ साक्षात् इन्द्र यजमान बने सब ऋत्विजोंने मिलकर इन्द्र को माहेश्वर यज्ञ की दीक्षा दी औ गंधमादन पर्वत में यज्ञ होनेलगा सुदर्शनके प्रभाव से वहाँ असुरोंकाप्रवेश न होसका इससे निर्विघ्न यज्ञ होनेलगा अग्नि हविको भक्षण कर प्रज्वलित हुआ अध्वर्यु ने विधिवत् सब कर्म करके मंत्र पूत पुरोडाश का हवन किया उस पुरोडाश का शेष भाग अध्वर्यु ने सब ऋत्विजों को बाँटदिया औ अति उग्र तेज वाला प्राशित्रनाम पुरोडाश का भाग अध्वर्यु ने सूर्य को दिया सूर्य ने उसको अपने दोनों हाथों में लिया हाथमें लेतेही दोनों हाथ सूर्यके कटकर गिरगये तब सूर्य बहुत व्यग्रहो सबऋत्विजों से बोले कि हे ऋत्विजो आप सबके देखते हमारे हाथ इस पुरोडाश भागने काटदियेइसलिये आप सब हमारे हाथ ठीक करदेवें नहीं तो हम तुम्हारे यज्ञको नष्ट करदेंगे यह सूर्यका वचन सुन सब ऋत्विज व्याकुल हो चिंतन करनेलगे तब महातेजस्वी अष्टावक्र मुनि बोले कि हे ऋत्विजो हमारी अवस्था में सैकड़ों ब्रह्मा बीत गये सब का चरित हम जानते हैं

लोकेश्वर ब्रह्माके समय मे श्यामलापुरके बीच एक हरिहर नाम ब्राह्मण रहता था एक दिन कोई०थाय बाणचला रहाथा दैवयोग से वह ब्राह्मण बाणके आगे आगया इससे बाण लग कर उसके दोनों पैर कटगये तब सब मुनीश्वरोंके कहने से वह ब्राह्मण गंधमादन में मुनि तीर्थपर किसी प्रकार पहुँचा मुनि-तीर्थमें स्नान करतेही उसके दोनों पैर यथार्थ होगयेवह मुनि-तीर्थ यहीहै अब इसका नाम चक्रतीर्थ पड़गया जो आप सब की संमति होय तो सूर्य भी इसतीर्थ में स्नानकरैं यह अष्टावक्र मुनिका वचनसुन सब ऋत्विज बोले कि हे सूर्य आप भी इस तीर्थमें स्नानकरैं जिससे आपके हाथ यथार्थ होजायँ तब ऋत्वि-जोंके कहनेसे सूर्यने उसतीर्थमें स्नानकिया तब उनकेहाथ पहिले सेभी उत्तम सुवर्णके बनगये उनकेहस्त सुवर्णके देख सब ऋत्वि-ज प्रसन्नहुवे इन्द्रादि देवताभी माहेश्वर यज्ञ समाप्त कर सब दैत्योंको मार प्रसन्नहो स्वर्गको गये हेमुनीश्वरो सब मनुष्योंको अपने मनोरथ सिद्ध होनेकेलिये इस तीर्थका सेवन करना चहिये विशेष करके अंधे काणे बहरे लँगड़े लूले कुबड़े गूंगे टूटे आदि अंगहीन मनुष्योंको इसतीर्थका सेवन करना चहिये इस तीर्थके सेवनसे हीन अंग पूरा होजाताहै हेमुनीश्वरो यहचक्रतीर्थका मा-हात्म्य हमने कहा जहां सूर्य भगवानने सुवर्णके हाथ पाये जो इस अध्यायको पढ़ै अथवा सुनै उसके हीन अंगभी संपूर्ण होजांय मोक्षकी इच्छासे इस तीर्थका सेवन करै तोमुक्ति पावै ॥

चौबीसवां अध्याय॥

सूतजी कहते हैं कि हे मुनीश्वरो चक्रतीर्थ में स्नानकर शिव तीर्थको जाय शिवतीर्थमें स्नान करनेसे करोड़ों महापातक औसं-सर्ग दोष नष्ट होजातेहैं यहां स्नानकर कालभैरव ब्रह्महत्या से

छुटे ऋषियोंने पूंछा कि हे सूतजी कालभैरव रुद्रने ब्रह्महत्या क्योंकरी यह आप वर्णनकरैं तब सूतजी कहनेलगे किहेमुनीश्वरो हमयह प्राचीन वृत्तांत वर्णन करतेहैं जिसके सुननेसे सब पातक दूर होजायँ पूर्बकालमें सब देवताओंके संमुख ब्रह्माजी औविष्णु जीका परस्पर बिवाद हुआ ब्रह्माजीने कहा किसब जगत्के कर्ता औनिग्रह अनुग्रह करनेमें समर्थ हमहैं हमारे तुल्य कोई देवता नहीं हमसे अधिकतो कहांसे होसक्ताहै यह ब्रह्माजीका वचन सुन हँसकर विष्णुजी बोले कि हे ब्रह्माजी यह अहंकारका वचन आपको न कहना चहिये जगत्के कर्ता हम हैं हमारी इच्छा बिना इस जगत् का जीवनहीं नहीं होसक्ता हमारे अनुग्रहसे तुमने जगत् रचाहै इसप्रकार ब्रह्मा औ विष्णु विवाद कररहेथे उस अवसरमें चारोंवेद देहधार वहांआये औ यह कहनेलगे कि हेब्रह्माजी हेविष्णुजी आप दोनोंही जगत् के कर्ता नहींहै जगत् कर्तातो ईश्वर है उसकी मायासे यह स्थावर जंगमरूप जगत् उत्पन्न हुआहै वह शिवही जगत्के सृष्टि स्थिति औसंहार कर्ता है यह वेदोंका बचनसुन ब्रह्मा औ विष्णु बोले कि हे वेदो शिवजीतो मूर्त्तिमान्हैं औ पार्बतीकरके युक्तहैं वे किसप्रकार सर्वसंग विवर्जित निर्गुण परमेश्वर होसक्तेहैं यह ब्रह्मा औ विष्णुका वचन सुन सब वेदोंका मुख प्रणव रूपधार बोला कि हे देवताओ शिवजी स्वप्रकाश निरंजन विश्वाधिक विश्वकर्ता सर्वात्मा स्वतंत्र औ निर्गुण हैं औ पार्बतीभी उनसे भिन्न नहींहैं हे ब्रह्माजी शिवजीही तुमको सृष्टि करनेके लिये रजोगुण करके युक्त करते हैं औ हे विष्णुजी रक्षाकरनेकेलिये आपको सत्वगुण करके युक्त करतेहैं औजगत्के संहारके लिये तमोगुण करके कालरुद्रको युक्त करतेहैं इसलिये तुम स्वतंत्र नहींहो स्वतन्त्र शिवहीहैं इसलिये जगत्के कर्ता हर्ता शिवहीहैं औपार्बती शिवकी शक्तिहैं औ

आनन्द रूपहैं इसलिये शिवसे पृथक् नहीं सब देवताओं करके बंदनीय सबके कर्ता शिवहैं शिवका कर्ता कोईनहीं लोकमें कोई शिवसे अधिक नहीं औशिवके तुल्यभी नहीं इसलिये तुमदोनों वृथा अहंकार मतकरो यह प्रणव का बचन सुन करभी ब्रह्मा औविष्णुका अहंकार निवृत्त न हुआ इसी अवसरमें एक बड़ा तेज आकाशमें उत्पन्न हुआ जोकई करोड़ सूर्योंके समानथा उसतेज के देखने के लिये ब्रह्माजीने एकमुख ऊपर की ओर बनाया औ उस पांचवें मुखसे तेजको देखनेलगे उस तेजको देखतेही ब्रह्माजीका पांचवां मुख क्रोधसे जलउठा जैसा प्रलयका अग्नि होय औ वह तेजभी नील लोहित पुरुष बनगया तब ब्रह्माजीने उस पुरुषसे कहा कि हे महादेव मैं तुझको जानताहूं पहिले तू मेरे ललाट से उत्पन्न हुआ इसलिये मेरा पुत्रहै यह ब्रह्माजीका अहंकार युक्त बचन सुन महादेवजीने कालभैरव नाम पुरुषको भेजा वह शिवजीके अंशसे उत्पन्न हुवे कालभैरव शूल टंक गदा आदि धारे जाकर ब्रह्माजीसे युद्ध करनेलगे बहुत दिन युद्ध हुआ कालभैरवने ब्रह्माजीके शुक्लवर्ण पांचवें मुखको देखा किबहुत गर्व करके युक्तहै औ कालभैरवको देख पांचवें मुखने बड़ा क्रोध किया तब कालभैरवने ब्रह्माजीका पांचवां शिर काटिलिया शिर कटतेही ब्रह्माजी गिरपड़े औ मृत होगये तब शिवजीने उनको फिर जीवदान दिया तब ब्रह्माजीने उठकर शिवजीको देखा मस्तक पर चंद्रमा धारे वासुकि आदि नागोंके भूषण पहिने पार्बती सहित वृषपर चढ़े संम्मुख खड़ेहैं उनको देखतेही ब्रह्माजीको ज्ञान प्राप्त हुआ औ हाथजोड़ शिवजीकी प्रार्थना करने लगे किहेभगवन् आप मेरा अपराध क्षमा करैं इतनाकह शिवजी केचरणोंपर प्रणाम किया तब प्रसन्नहो शिवजीने ब्रह्माजीसे कहा भय मतकरो हमने तुम्हारा अपराध क्षमाकिया औ काल

भैरवसे शिवजीने कहा कि तुमने ब्रह्माजीका शिरकाटदिया इस लिये ब्रह्महत्या दूरहोने के अर्थ ब्रह्मा जी का कपाल हाथ में लिये भिक्षामांगते फिरो वास्तवमें तुमको कुछ हत्यानहीं परन्तु लोक मर्यादाके लिये प्रायश्चित करना चहिये इतना कह वह ब्रह्माजी का कपाल शिवजी ने कालरुद्र को धारण करादिया औ ब्रह्महत्या नाम अति भयंकर एक कन्या उत्पन्न कर शिवजी ने कालरुद्र के पीछे लगादी औ यह कहा कि हे कालरुद्र तुम इस ब्रह्महत्या निवृत्त होने के लिये सब तीर्थों में स्नानकरो फिर काशी में जाओ तब तीन भाग ब्रह्महत्या नष्ट होजायगी एकभाग रह जायगा उसके निवृत्त करने का यह उपाय है कि दक्षिण समुद्र में गंधमादन पर्वत के बीच सब जीवों के कल्याण केलिये हमने तीर्थ बनाया है उस तीर्थ में जाकर तुम स्नानकरो तब तुमको ब्रह्महत्या छोड़देगी इतना कह शिवजी कैलास को गये औ शिवजी की आज्ञानुसार कपाल हाथमें लेकर कालरुद्र सब लोकों में विचरने लगे औ ब्रह्महत्या उनके पीछे २ लगी फिरती सब पुण्यतीर्थों में स्नान कर कालरुद्र काशी में पहुंचे तब वह अति दुष्टा ब्रह्महत्या तीनभाग नष्टहोगई औ चौथाई रहगई तब काल रुद्र गन्धमादन पर्वत को चले औ वह चतुर्थांश हत्या भी पीछेलगी गंधमादन में पहुंच शिवतीर्थ में कालरुद्रने स्नान किया स्नान करतेही संपूर्ण हत्या दूर हुई इसी अवसर में शिव जी वहां प्रकट हुवे औ कालरुद्र से कहा कि अब सम्पूर्ण ब्रह्म हत्या तुमसे निवृत्त हुई अब इस कपालको काशीमें किसी स्थान में रख दो इतना कह शिव जी तो अन्तर्धान हुवे औ कालरुद्र काशी में आये वहां एक स्थानमें वह कपाल स्थापन किया वह स्थान कपालतीर्थ नाम से प्रसिद्ध हुआ सूतजी कहते हैं कि हे मुनीश्वरो मुक्तिको देनेहारे औ महापातक नरक क्लेश औ महा-

दुःख को हरनेहारे शिवतीर्थ का माहात्म्य हमने वर्णनकिया जो इसको पढ़े अथवा सुने वह सब दुःखों से छुटै॥

पचीसवां अध्याय॥

सूतजी कहते हैं कि हे मुनीश्वरो शिवतीर्थ में स्नानकर शंख तीर्थ में जानाचहिये शंखतीर्थ में स्नान करनेसे कृतघ्न औ माता पिता का अनादर करनेहारे दुष्ट पुरुष भी शुद्ध होजाते हैं पूर्व कालमें शंखमुनिने विष्णुभगवान् की प्रसन्नता के लिये गंधमादन पर्वतमें तपकिया औ अपने नामसे तीर्थभी बनाया उसीका नाम शंखतीर्थ हुआ वहां स्नान करनेसे कृतघ्नपुरुष भी शुद्धहोते हैं इसमें एक प्राचीन इतिहास हम कहते हैं जिसके सुनने से मनुष्य मुक्तिपावै। पूर्वकाल में बड़े तपस्वीदयालु शीलवान् औ ब्रह्मनिष्ठ वत्सनाभनाम एकमुनि हुवेहैं उनने ऐसा उग्रतपकिया कि एक आसन बैठे सैकड़ों वर्ष बीतगये औ शरीर के ऊपर बल्मीक अर्थात् सर्पकीबांबी बनगई परंतु मुनि आसनसे न हिले उनका तपभंग करने के लिये इन्द्रने सात दिन तक अति घोर वृष्टि की परंतु वत्सनाभमुनि उस मूसल धार वर्षा को सहगये औ आसनसे न उठे तब इंद्रने एक बिजली डाली जिससे मुनि के ऊपर का बल्मीक बिखरगया परंतु तपके प्रभावसे मुनि बच गये फिर दिनराति मुनिके शरीरपर वृष्टि होनेलगी तब धर्मके मनमें दयाआई कि देखो यह मुनि बड़ा महात्मा है जो इस दारुण वर्षा में भी तप नहीं छोड़ता इसलिये इसकी रक्षा करनी चहिये यह मन में बिचार बड़े भारी महिष का रूपधार धर्मराज मुनिके ऊपर जाय खड़े हुवे औ अपनी पीठ पर वर्षा की धार सहनेलगे सात दिन प्रचंड वृष्टि करके इन्द्र चलागया तब महिषरूप धर्म भी मुनि के ऊपरसे हटकर एक ओर जाय खड़े

हुवे मुनिकी समाधि खुली तब चारों ओर देखाकि वर्षासे पर्बतों के शिखर औ हजारों वृक्ष टूटे पड़े हैं मुनियों के आश्रम जल में डूब रहेहैं चारों ओर जलहीजल दिखाई देताहै यहदेख वत्स-नाभमुनि बहुत प्रसन्नहुवे कि ऐसी वृष्टि में भी हमने तप न छोड़ा फिर शोचा कि अवश्य किसी महात्माने इस विपत्ति में हमारी रक्षाकरीहै नहींतो जीव क्योंकर बचता यह बिचार मुनि ने चारों ओर दृष्टि की तो देखा कि सम्मुख एक नीलवर्ण अति ऊंचा महिष खड़ा है उसको देख मुनिने कहा कि देखो कोई २ पशुभी कैसे धर्मात्मा होते हैं इस महिषनेही मुझे इस महावृष्टि से बचाया परमेश्वर इस का दीर्घ आयुष्करै औ यह महात्मा महिष सदा सुखीरहै यह कहकर वत्सनाभ मुनि फिर तपकरने लगे यह मुनिकी तपमें निष्ठादेख धर्म रूप महिष के सब शरीर में आश्चर्य से रोमांच होगया वत्सनाभ मुनि तप में प्रवृत्त हुवे परंतु पहिली भांति परमेश्वरमें चित्त न लगा तब मुनि बिचारने लगे कि पापसे मन चंचल होता है परंतु हमने कोई पाप नहीं किया फिर हमारा मन क्यों चंचल होरहा है शोचते २ मनकी अस्थिरता का कारण मुनि जानगये औ कहने लगे कि मुझ सरीखे कृतघ्नको धिक्कार है ऐसे दुरात्मा कृतघ्न का क्योंकर तप में मन लगै देखो इस महात्मा महिषने मेरे प्राण बचाये इसका पूजन बिना किये मैं तपमें प्रवृत्त हुआ यह कृतघ्नता दोष मुझपर लगा इसीपाप से मेरा चित्त मलिन हुआ कृतघ्न पुरुष नरक को जातेहैं किसीप्रकार कृतघ्नका उद्धार नहींहोसकता माता पिताकी सेवा नकरै गुरुको दक्षिणा न देवैऔ कृतघ्नताकरै उनकेलिये प्राणत्याग बिना और कोई प्रायश्चित्त नहीं इसलिये मैंभी इसपाप के प्रायश्चित्त के अर्थ प्राण त्यागता हूं यहमन में निश्चय कर वत्सनाभ मुनि एक पर्वत के ऊंचे शिखर पर चढ़े औ प्राण त्यागने

के लिये वहां से गिरना चाहा तब धर्म महिष का रूपछोड़ मुनि के समीप गये औ कहा कि हेवत्सनाभ प्राण मतत्याग बहुत वर्षजीता रह तेरे समान कोई धर्मनिष्ठ नहीं मैंधर्म हूं औ तेरीनिष्ठा देख बहुत प्रसन्न हुआ हूं यद्यपि प्राण त्यागने बिना कृतघ्नकी निष्कृति नहीं होती परंतु तू धर्म निष्ठहै इसलिये तुझे एक सुगम उपाय बताता हूं गंधमादन पर्वत में शंख तीर्थहै वहां जाय तू स्नान कर तबशुद्ध होजायगा औ चित्त भी निर्मल होजायगा तब तू दिव्य ज्ञानपाय मुक्तहोगा हेयोगींद्र मैंधर्म हूं औ तुझेसत्य कहताहूं यह धर्म का बचन सुन वत्सनाभ मुनि गंधमादन पर्वत को चले वहां पहुंच शंखतीर्थ में स्नान किया स्नान करतेही मन निर्मल होगया फिर बहुत कालतक वत्सनाभ मुनि जीते रहे अंतमें दिव्यज्ञान पाय मुक्तहुवे सूतजी कहते हैं कि हेमुनीश्वरो यह शंखतीर्थ का वैभव हमने वर्णन किया जिसतीर्थ में स्नान करने से कृतघ्नभी शुद्ध होजाय माता पिता का पोषण न करै गुरुदक्षिणा न देवै औ कृतघ्नताकरै उनकी निष्कृति मरणके बिना नहीं होसकती परंतु इसतीर्थ में स्नान करनेसे ये सब निष्पाप होजाते हैं शंखतीर्थ में स्नानकरने से कृतघ्नता दूर होजाती है और पापोंकी तोकथाही क्या है जो पुरुष इस अध्याय को पढ़ै वह सब पापोंसे छुट शुद्धचित्तहो सत्यलोक को जाताहै वहां बहुत काल ब्रह्माजी के समीप सुखपूर्वक निवासकर मुक्ति पाता है॥

छब्बीसवां अध्याय॥

सूतजी कहते हैं कि हे मुनीश्वरो शंखतीर्थमें स्नान कर गंगा तीर्थ यमुना तीर्थ औ गयातीर्थ को क्रमसे जाय ये तीनतीर्थ तीनों लोकों में प्रसिद्ध हैं औ स्नान करनेहारे मनुष्य को सब प्रकार के पाप रोग अज्ञान आदि हरकर मोक्षदेते हैं इनतीर्थों में स्नान

कर जातश्रुति नाम राजाने रैक्कमुनि से दिव्य ज्ञानपाया यह सूतजी का वचन सुन शौनक आदि मुनियों ने पूछा कि हे सूत जी गंगा यमुना औ गया गंधमादन पर्वत में क्योंकर आईं औ इनतीनों में स्नानकर महाराज जातश्रुतिने रैक्कमुनि से दिव्य ज्ञान किसबिधि पाया यह आप वर्णन करें तब सूतजी कहनेलगे कि हे मुनीश्वरो पूर्वकालमें रैक्कमुनि गंधमादन पर्वतमें तपकरते थे वे मुनिजन्म से पंगुथे इसलिये दूरके तीर्थों में नहीं जासकते थे केवल गंधमादन के तीर्थों में शकट अर्थात् गाड़ीपर चढ़कर जायाकरते औ तपोबल से उनने आयुष् भी बहुत पाया शकट का नाम युग्यभी है रैक्कमुनि शकट पर चढ़े फिरते इसलिये उनके लोक सयुग्य भी कहते ग्रीष्मऋतु में पंचाग्निमें वर्षाऋतु में कंठप्रमाण जल में तप करते करते शरीर शुष्क होगया औ संपूर्ण देह में पामा अर्थात् खुजली होगई परंतु मुनिने तप न छोड़ा खुजली भी खुजाते औ तपभी करते एक समय रैक्कमुनि की इच्छाहुई कि गंगा यमुना औ गया के दर्शन औ इनमें स्नान करना चहिये परंतु हम जन्मके पंगु क्योंकर जायसकें औ हमारा शकट भी इतनी दूरजाने योग्यनहीं फिरविचारा कि हमको बड़ा भारी तपोबल है इसलिये इन तीर्थों को यहांही आवाहन करते हैं यहमन में निश्चयकर पूर्वाभिमुख बैठ तीन आचमन कर मंत्रबलसे तीनों तीर्थों का आवाहन किया क्षणमात्र में भूमि को भेदनकर गया गंगा औ यमुना की तीन धारा पाताल से निकलीं औ तीनों मनुष्य का रूपधार रैक्कमुनि से बोलीं कि हे रैक्कमुनि तुम्हारे मन्त्र से खिची हुईं हमतीनों आगईं अब जो तुमकहो सोकरें यह उनका वचन सुन मुनिने ध्यानछोड़ नेत्रखोले औ तीनों तीर्थों को सम्मुख खड़ेदेख प्रसन्नहुवे औ भक्ति से उन का पूजन कर यह प्रार्थनाकरी कि तुम तीनों इस गंधमादन

पर्बतमें निवासकरो भूमिको भेदनकर तुम तीनों जहां निकलीहो
वे तुम्हारे नामसे बड़े तीर्थहोंय यह मुनिका बचन सुन (तथास्तु)
कहकर तीनों अन्तर्धान हुईं उसदिन से तीनों तीर्थ गन्धमादन
पर्बत में आये औ जहां २ वे निकलीं उनका नाम क्रम से गंगा
तीर्थ यमुना तीर्थ औ गया तीर्थ हुआ ये तीनों तीर्थ रैक्कमुनि के
प्रभाव से गन्धमादन में प्रकट हुवे जो पुरुष इन तीर्थोंमें स्नान
करै वह अवश्यही दिव्यज्ञान पावै रैक्कमुनि भी अपने आवाहन
किये तीर्थों में नित्य स्नान करते औ तप करते इसी अवसर में
बड़ा धर्मात्मा जातश्रुतिनाम राजाथा वह सदा ब्राह्मणों को धन
औ अन्नबड़ी श्रद्धा से देता इसलिये उस राजा को लोकश्रद्धा
देयभी कहते औ अन्न आदि देनेके समय राजा बहुत मधुर वाक्य
याचकों को कहता इसलिये उसको बहुवाक्य भी कहते वहराजा
जातश्रुतका पुत्र औ पुत्रनाम राजाका पौत्रथा नगर ग्राम बन
चतुष्पथ आदि सब स्थानोंमें उसराजाने अन्नकेसदाब्रत लगादिये
सब देशमें यह घोषणा करादी कि जिसको अन्न पान चहिये
वह हमारे सदा ब्रतोंमें आवे इस प्रकार अति दानी राजा के गुण
सर्वत्र प्रसिद्ध होगये तब राजा के ऊपर अनुग्रह करने के लिये
देवर्षि हंसोंका रूपधार पंक्ति बांध ग्रीष्मऋतु में रात्रि के समय
राजा के ऊपर से उड़ २ जाने लगे उनमें से पिछला हंस राजा
को सुनाकर अगले हंससे हँसकर बोला कि हे भल्लाक्ष आगे
नहीं देखता औ उड़ाही चला जाता है राजा जात शुति आगे
महल पर है उसका पूजन बिना किये अन्धे की भांति चलाही
जाता है ब्रह्मलोक पर्यंत जिसका दुराधर्ष तेजव्याप्त होरहा है
जोतू इस राजर्षि को उल्लंघन करके जायगा तो इसका अति
जाज्वल्यमान तेज तुझे दग्ध करदेगा यह सुन अगला हंस क-
हने लगा कि रे मूढ़ इस धूर्त की तू क्यों प्रशंसा करताहै यह तो

पशुके तुल्य है लुहार की धौंकनी की भांति वृथा श्वास लेता है
यह राजा धर्म्म का रहस्य कुछ भी नहीं जानता जिस प्रकार
रैक्कमुनि जानता है ऐसा धर्मतत्व और कोई नहीं जानता रैक्कमुनि
के पुण्य की इयत्ता कौन करसक्ता है आकाश के तारे औ भूमि
के पांसु भी गिन सकते हैं परन्तु रैक्क मुनि के पुण्य की गणना
नहीं हो सकती यज्ञ दान आदि धर्म्म सब नश्वर अर्थात् नाश
होने वाले हैं केवल ब्रह्मज्ञानही स्थिर रहता है वह ब्रह्मज्ञान
रैक्कमुनिने पाया इसलिये वह प्रशंसा योग्यहै औ इस राजाके
धर्मभी कुछ प्रशंसा योग्य नहीं ज्ञानकी तो बातही दूरहै ज्ञान
योगियों को भी दुर्लभ है इसलिये इस तुच्छ राजाकी क्या प्र
शंसा करता है रैक्कमुनिकी प्रशंसाकर रैक्कमुनि जन्मसे पंगुहै इस
लिये उसने अपने आश्रमके समीपगया गंगा औ यमुना का आ
वाहन मंत्रसे किया रैक्कमुनि के धर्म्ममें त्रैलोक्य के धर्म्म सम
जाते हैं औ ब्रह्मवेत्ता रैक्कमुनिका धर्म समूह तीनलोकके भी धर्म
में नहीं समासकता इसप्रकार कहतेहुवे वे हंसरूप ऋषि ब्रह्म
लोक को चलेगये राजाने भी सब प्रशंसा रैक्कमुनिकी सुनी औ
उदास होकर विचारकिया कि देखो हंसने मुझे निकृष्ट कहा औ
रैक्कमुनिकी इतनी प्रशंसाकरी धन्यहै रैक्कमुनि जिसको पक्षी भी
सराहते हैं अब मुझेभी यही उचित है कि राज्यछोड़ रैक्कमुनि
शरण में जाऊं वह दयालुमुनि शरण में प्राप्तहुवे मुझको अवश्य
ही ज्ञानोपदेश करेगा इसप्रकार शोच विचार करते किसीप्रकार
वह रात्रि राजा ने व्यतीत की औ प्रभात हुआ बंदीलोक राजा
स्तुति पढ़नेलगे अनेक प्रकार के बाजे बजनेलगे राजाभी शय्या
से उठा औ सारथि को बुलाकर आज्ञादी कि क्षेत्र बन नदियों
तट औ तीर्थ आदि सब स्थानोंमें जहां २ मुनियोंके आश्रम हैं
वहां २ सब धर्मों के आश्रय ब्रह्मवेत्ता रैक्कमुनि को ढूंढ़ो रैक्कमु

जन्मसे पंगुहैं इसलिये गाड़ीमें चढ़े तीर्थोंमें घूमतेहैं उनका पता लगाय शीघ्र हमारे पास आओ यह राजाकी आज्ञापाय सारथि रैक्कमुनि को ढूंढ़ने निकला पर्वतों की गुफाओं में नदियोंके तटों पर मुनियों के आश्रमों में रैक्कमुनिको ढूंढ़ता २ गंधमादन पर्वत में पहुंचा वहां देखाकि रैक्कमुनि शकटपर बैठेहुवे पामाको खुजाय रहेहैंओ निरंतर ब्रह्मानंदमें मग्नहैं सारथिने भी लक्षणोंसे पहिचानाकि येही रैक्कमुनि होंगे औ उनके समीप जाय प्रणामकर पूछाकि रैक्कमुनि आपहीहैं। मुनिने कहा कि हां भाई मैंही रैक्कहूं सारथि ने मुनिकी बातचीतोंसे यहभी जाना कि कुटंबके पोषण के लिये इनको धनकी इच्छाहै इसप्रकार सारथिने रैक्कमुनिका ठिकाना लगाय सब वृत्तांत आकर राजासे कहा राजाभीसुनकर बहुत प्रसन्न हुआ औ छःसौ उत्तम गौ एकभार सुवर्ण औ एक बहुत उत्तम रथ जिसमें अश्वतरीं अर्थात् खच्चर जोत रक्खी थीं मुनिके लिये अपने संगलेकर चला कुछदिनोंमें गंधमादन में पहुंच रैक्कमुनिके समीप जाय प्रणामकर प्रार्थना की कि महाराज ये छःसौ बहुत उत्तम गौ एकभार सुवर्ण औ दो अश्वतरियों करके युक्त रथ आप ग्रहण करें औ मुझे अद्वैत ब्रह्मज्ञान उपदेश करैं यह राजाका वचनसुन रैक्कमुनि बोले कि हे राजन् इसधन को तूही रख इस थोड़े धन से हमारा निर्बाह नहीं होसकता कई कल्प हमको जीनाहै इतने धनसे हमारे कुटुम्ब का निर्बाह क्योंकर होय यदि इससे सौगुणा धनभीहोय तौभी हमारेलिये थोड़ाहै यह सुन राजा बोला कि महाराज यह धन मैं आपको ब्रह्मज्ञान का मूल्य नहींदेता आप धन लेवैं चाहै मत लेवैं परंतु कृपाकर मुझे निष्कल अद्वैत ज्ञानका उपदेश करैं यह राजाका वचनसुन मुनि कहनेलगे कि हे राजन् जोपुरुष संसारसे विरक्त होय औ जिसके पाप पुण्य आदि प्रारब्ध नाशको प्राप्त होजांय

वह ज्ञानोपदेशका अधिकारी होताहै पुण्यपापआदिसे पुनर्जन्म होता है यद्यपि तू संसारसे विरक्तहुआहै परंतु पुण्यपापका क्षय नहीं हुआ भोग किये बिना उनका क्षय नहीं होता हे राजन् तू हमारे शरण में प्राप्तहुआ है इसलिये हम तुझे पुण्य औ पाप के क्षयका उपाय बताते हैं हमारे आवाहनकिये येतीन तीर्थ हैं इन में स्नान करनेसे प्रारब्ध कर्मका नाशहोताहै इसलिये तूभीगंगा तीर्थ यमुनातीर्थ औ गयातीर्थमें स्नानकर जिससे तू शुद्धचित्तहो-जाय तब हम ज्ञानउपदेश करैंगे यह मुनिकी आज्ञापाय प्रसन्न हो राजा ने तीनों तीर्थों में स्नानकिया स्नान करतेही राजा का चित्त निर्मल होगया औ स्नानकर रैक्वमुनि के समीप आया तब मुनिने राजाको दिव्यज्ञानका उपदेश किया राजाभी दिव्यज्ञान के पातेही ब्रह्मरूप होगया औ माया का आवरण दूर हो सर्वत्र घट कुड्य कुसूल आदि पदार्थोंमें भी ब्रह्मदृष्टि होगई इसप्रकार तीनतीर्थों में स्नानकर राजाने वह दिव्यज्ञानपाया जो मुनियों को भी दुर्लभहै हेमुनीश्वरो यहतीन तीर्थोंका प्रभाव हमने वर्णन किया जो इस अध्यायकोपढ़ै वहमायाको जीत ब्रह्मरूप होताहै॥

सत्ताईसवां अध्याय॥

सूतजी कहते हैं कि हे मुनीश्वरो गंगा आदि तीन तीर्थों में स्नान कर कोटि तीर्थको जाना चहिये कोटि तीर्थ सब पाप को विघ्नऔ दुस्वप्नका नाश का करनेहारा है सब प्रकार की संपत्ति पुण्यऔ शांतिको देताहै कोटितीर्थके स्मरणमात्र से सबपाप कट जातेहैंवह तीर्थ रामचन्द्रजीने अपने धनुषकी कोटि अर्थात् अग्र-भाग करके वहतीर्थ बनायाहै रामचन्द्र रावणको मारकर आये तब ब्रह्महत्या निवृत्त होने के लिये गन्धमादन पर्वत में एक शिवलिंग उनने अस्थापनकिया उस शिवलिंग के स्नानकेलिये

वहां जल न मिला तब रामचन्द्र जी ने गंगा का स्मरण कर धनुष की कोटि करके भूमि को भेदन किया वह धनुष का अग्र पाताल तक पहुंचा उसको रामचन्द्रजी ने भूमि से खेंचा उसके साथही गंगाकी धारा निकली तब उस दिव्यजलसे रामचन्द्रजी ने अपने स्थापन किये लिंगको स्नानकराया रामचन्द्रजीने धनुषकी कोटिसे यहतीर्थ बनाया इसलिये कोटितीर्थ कहाया गन्धमादन के सब तीर्थों में स्नानकर शेषपाप की निवृत्ति के लिये कोटि तीर्थ में स्नान करना चाहिये अनेक जन्म संचित बड़ेबड़े पाप जो और तीर्थोंमें नहीं नष्टहोते वे कोटितीर्थमें स्नानकरतेही निवृत्त होजाते हैं जो पुरुष प्रथम कोटितीर्थमेंही स्नानकरै उसको और तीर्थों में स्नानकरना वृथा है यहसुन शौनकआदि मुनि बोले कि हे सूतजी हमको एक बड़ासंशय उत्पन्न हुआ उसको आप निवृत्त कीजिये कोटितीर्थ में स्नानकरे पीछे और तीर्थ वृथा हैं तो धर्म तीर्थआदि में मनुष्य क्यों भटकते फिरैं सब तीर्थोंको छोड़ पहिले कोटितीर्थमें ही सब स्नान कियाकरैं और तीर्थों में न जांय फिर मनुष्य और तीर्थोंमें क्यों जातेहैं यह सन्देह आप निवृत्त करैं यह मुनियों का प्रश्न सुन सूतजी कहनेलगे कि हे मुनीश्वरो आपने बड़े रहस्य की बात पूछी जो शिवजी ने नारद को कहा वहहम वर्णन करते हैं आप श्रद्धा से श्रवणकरो किसी तीर्थ को जाताहुआ मनुष्य मार्गमें जो तीर्थ देवालय आदिमिलै उनका सेवन न करै तो वह नरकको जाय यहशास्त्रका निश्चय है इसी भांति कोटितीर्थको जानेके समय जो गन्धमादनके और तीर्थोंमें न स्नानकरै वह चंडाल के तुल्यहोय इसलिये हे मुनीश्वरो चक्रतीर्थ आदि सबतीर्थों में स्नानकरना चाहिये निष्पाप होकर कोटि तीर्थमें स्नानकरै कोटितीर्थ में स्नानकर गंधमादन पर्वतमें क्षणमात्रभी न रहै निष्पाप होकर अपने स्थानको जाय

रामचन्द्रजी भी कोटितीर्थ के जलसे स्नानकर औ रामनाथको स्नान कराय ब्रह्महत्यासे मुक्तहो सुग्रीवआदि बानरोंसहित पुष्पक विमान में बैठ तत्काल अयोध्याको चलेगयेथे इस कारण कोटि तीर्थमें स्नानकर निष्पापहो उसी क्षण अपने स्थानको जाना चाहिये यहकोटितीर्थ सबतीर्थोंमें उत्तमहै जो रामचन्द्रजीने रामनाथ लिंगके स्नानकेलिये बनाया जिसमें साक्षात् गंगा निवास करती हैं औ जिसतीर्थ में साक्षात् तारकब्रह्म श्रीरामचन्द्रजी ने स्नानकिया जिस तीर्थ में स्नानकर श्रीकृष्ण भी अपने मातुल कंसकी हत्यासेछुटे उस कोटितीर्थकी महिमा कौन वर्णन करसक्ताहै इतनी कथा सुन ऋषियों ने पूछा कि हे सूतजी श्रीकृष्ण भगवान् ने अपने मातुल कंसको किसकारण मारा औ उसकी हत्यासे क्योंकर छुटे यह आप वर्णनकरें तब सूतजी कहनेलगे कि हे मुनीश्वरो यदुके बंशमें शूरकापुत्र वसुदेव हुआहै वसुदेव ने देवक की पुत्री औ कंसकी बहिन देवकीसे बिवाह किया बिवाहके अनन्तर वसुदेव देवकी रथमें बैठे औ कंस रथको हाँकने लगा उस अवसरमें आकाशवाणीहुई कि हे कंस जिसबहिनको तू रथमें बैठाये लेजाताहै इसकी आठवीं संतान तुझेमारैगी यह आकाशवाणी सुन कंसने खड्ग निकाला औ देवकी को मारदेने की इच्छाकी तब वसुदेव बोले कि हे कंस इसतेरी बहिनमें जो संतान होगी हमसब तुमको देदेंगेउसीका वधकरना इसकोमत मारोइससे तुमको कुछ भयनहीं यह वसुदेवका वचनमान कंसने देवकी को न मारा परंतु वसुदेव औ देवकी को बेड़ी पहिनायबंदीखानेमें रखदिया देवकी में क्रमसे छःपुत्र उत्पन्नहुये वे सब वसुदेव ने कंस के अर्पणकिये औ कंसने भी उनसबका वधकिया सातवां गर्भदेवकीके फिर रहा उसमेंशेषजीका अंशथा तबमहामायाविष्णु भगवान् की प्रेरणा से उसगर्भको देवकी के उदर से निकाल नंद

गोपकी पत्नी रोहिणी के उदर में रखआई औ लोकमें यह प्रसिद्ध हुई कि देवकी का गर्भ गिरगया फिर देवकी के आठवां गर्भरहा उसमें साक्षात् विष्णुभगवान् थे दशमास पूरे होनेपर देवकी के गर्भसे विष्णुभगवान् का अवतार हुआ वह बालक चारों भुजाओं में शंख चक्र गदा खड्ग धारे मुकुट औ बनमाला से भूषित था उस विष्णुरूप बालक को देख अति हर्षित हो वसुदेवजी स्तुति करने लगे (वसुदेवउवाच। विश्वंभवान्विश्वपतिस्त्वमेव विश्वस्ययोनिस्त्वयिविश्वमास्ते।महान्प्रधानश्चविराट्स्वराट्चसम्राडसित्वंभगवन्समस्तम्१एवंजगत्कारणभूतधाम्ने नारायणायामितविक्रमाय श्रीशार्ङ्गचक्रासिगदाधराय नमोनमःकृत्रिममानुषाय २) इसप्रकार स्तुति सुन प्रसन्न हो श्रीकृष्णभगवान् बोले कि हे पिता हम कंसको मारेंगे आप कुछ भय मतकरो नंदगोपकी पत्नी यशोदामें कन्यारूप हमारी माया उत्पन्न हुईहै अब आप हमको यशोदाकी शय्यामें रखआओ औ उस कन्याको यहां लाय देवकीके समीप सुलादो वसुदेवजीने भी इसीभांति सब बातकरी कन्याको लाकर देवकी की शय्या में रखदिया थोड़ी देरमें कन्या रोदन करनेलगी उसका रोना सुन घबराकर कंस वहां आया औ उस कन्या को उठाय एक शिलापर कंसने पटका परंतु वह कन्या उसके हाथसे छुटकर आकाश में गई औ कंससे कहा कि रे मूढ़ पातकी तेरा शत्रु उत्पन्न होगया है उसको ढूंढ़कर मार इतना कह वह महामाया अपने स्थानको गई जो पूजन करने से मनुष्यों के मनोरथ सिद्ध करतीहै कंस भी महामाया का वचन सुन बहुत व्याकुलहुवा औ पूतना आदि वालग्रहोंको आज्ञादी कि बालकोंको मारो वेभी गोकुल में गये परंतु कृष्णभगवान् ने सबको यमलोक पहुंचाया वलदेव औ कृष्ण दोनों भाई दिन २ वृद्धि को प्राप्त होने लगे अनेकप्रकार की वालक्रीड़ा करते वंशी बजाते मोरमुकुट धारते

गोपोंके साथ गौ चराते कंसभी उनके सब व्यवहार सुनकर भय-
भीतथा एकसमय कंसने अक्रूरको भेज वलदेव औ श्रीकृष्णचंद्र
को बुलाया वे भी अक्रूरके साथ मथुरामें पहुंचे वहां मार्गमें देखा
कि एक बड़ाभारी धनुषहै उसकी ज्याको सब चढ़ातेहैं परंतु किसी
से नहीं चढ़ती तब वलदेवजीने उस धनुष को उठाकर ऐसाखैंचा
कि दो टुकड़े होगया तब वे धनुष के रक्षक वलदेव औ श्रीकृष्ण
जीको मारने दौड़े परंतु इन दोनों भाइयों ने उन सबका संहार
किया औ धनुषके दोनोंखण्ड हाथमें ले आगे चले कंसके द्वारपर
कुवलयापीड़ नाम मस्त हाथी खड़ाथा वह इनको मारने आया
परंतु इनने उस हाथीको भी मारगिराया औ उसके दाँत उखाड़
कर दोनों भाइयों ने हाथमें लिये आगे कंसके भेजेहुये बड़े बली
कई मल्ल मिले उन सब को भी मारा औ कंस के समीप पहुंचे
कंस भी एक बड़े ऊंचे सिंहासनपर सभामें बैठाथा श्रीकृष्णचंद्रने
जातेही कंसके पैर पकड़ सिंहासन से नीचे गिराया औ यमलोक
को पहुंचाया कंसके आठ भाई थे उनके वलदेवजीने एक २ मूका
मार प्राणलिये इसप्रकार कंसका संहार कर अपने माता पिता
देवकी औ वसुदेव को वंदीखाने से छुटाया औ सबका आश्वासन
किया औ उग्रसेन को मथुरा का राज्य दिया इसप्रकार देवता
औ ब्राह्मणों के शत्रु अपने मातुल कंसको मारा एकसमय नारद
आदि देवऋषि श्रीकृष्णभगवान्के दर्शनोंको आये उनको सत्कार
से पूजनकर श्रीकृष्णचन्द्रने आसनपर बैठाया औ यह पूछा कि
हेमुनीश्वरो हमने अपने मातुल कंसका वधकिया इसलिये आप
कोई प्रायश्चित्त हमको बताओ जिससे यह हत्या दूरहोय यह
श्रीकृष्णभगवान्का वचनसुन नारदजी कहनेलगे कि आप नित्य
शुद्ध बुद्ध सच्चिदानन्द स्वरूप साक्षात् परमात्माहैं आपको पुण्य
औ पाप नहीं लगसक्ता तौ भी लोक मर्यादा के लिये आपको

प्रायश्चित्त करना चहिये दक्षिण समुद्र में रामसेतु के बीच गन्ध-
मादन पर्वत में रामचन्द्रजी ने रामनाथ नाम शिवलिंग स्थापन
किया औ उसके अभिषेक के लिये अपने धनुष की कोटि करके
तीर्थ रचा उस कोटि तीर्थमें स्नानकर रावण के वध का पातक
रामचन्द्रजीने निवृत्त किया उस तीर्थमें आप भी स्नानकरें तो यह
मातुलहत्या निवृत्त होगी कोटितीर्थमें स्नान करने से ब्रह्महत्या
आदि पातक निवृत्त होते हैं औ आयुष् आरोग्य औ ऐश्वर्य की
प्राप्ति होतीहै यह नारद का वचन सुन उन मुनियों को सत्कार
पूर्वक विसर्जनकर श्रीकृष्णचंद्र कोटितीर्थ को चले वहां पहुंच
संकल्पकर तीर्थमें स्नान किया औ अनेक दान दिये तब मातुल-
हत्या निवृत्त हुई श्रीकृष्णचंद्र भी निष्पापहो रामनाथ का दर्शन
कर मथुरा को आये हे मुनीश्वरो कोटितीर्थ का ऐसा प्रभाव है
कोटितीर्थ के समान तीर्थ भूमंडल में दूसरा नहीं है इस तीर्थमें
स्नान करने से ब्रह्मा विष्णु शिव आदि सब देवता प्रसन्नहोतेहैं
हे मुनीश्वरो इस अध्याय को जो पढ़ै अथवा श्रवणकरै वह ब्रह्म-
हत्या आदि पापों से छुट मुक्ति पाताहै ॥

अट्ठाईसवां अध्याय ॥

सूतजी कहते हैं कि हे मुनीश्वरो कोटितीर्थमें स्नानकर साध्या-
मृत नाम तीर्थ को जाय सब पाप दुःख औ दारिद्र्य का हरने-
हारा औ सब मनोरथ सिद्ध करनेहारा वह तीर्थ गंधमादन में
है तप व्रत ब्रह्मचर्य यज्ञ दान आदि से वह गति नहीं प्राप्त होती
जो साध्यामृत तीर्थ में स्नान करने से मिलती है उस तीर्थका
जल स्पर्श होतेही सब पाप नष्ट होजाते हैं जो पुरुष साध्यामृत
के जलमें अघमर्षण करै वह निष्पाप होकर विष्णुलोक को
जाता है पापी मनुष्यभी साध्यामृत तीर्थ में स्नानकर नरक को

नहीं जाते साध्यामृत तीर्थ में जबतक अस्थि पड़ा रहै तब तक
वह जीव | शिवलोक में निवास करे जिसप्रकार सूर्य अंधकार
को दूर करता है इसी भांति साध्यामृत तीर्थ पापहरण में स-
मर्थ है जिस तीर्थ में स्नान कर राजा पुरूरवा तुंबुरु के शापसे
छुटा औ फिरभी उसका उर्वशी से समागम हुआ यह सुन ऋ-
षियों ने पूछा कि हे सूतजी मनुष्य होकर राजा पुरूरवा ने उ-
र्वशी क्योंकर पाई औ तुंबुरुने किस हेतु राजाको शाप दिया
यह आप विस्तार से वर्णन करें तब सूतजी कहनेलगे कि हे
मुनीश्वरो पूर्बकाल में बड़ा प्रतापी औ धर्मात्मा पुरूरवा नाम
राजा हुआ वह राजा बड़े२ यज्ञ करता औ दान देताथा उसके
राज्य करते २ उर्वशी नाम अप्सरा मित्रावरुण के शापसे म-
र्त्यलोक में आई औ राजा पुरूरवा के नगर के समीप विचर-
ने लगी औ एक उपबन में बैठ बीणा बजाती हुई मीठे स्वर से
गाने लगी इस अवसर में राजाभी घोड़े पर चढ़ उसी उपबन
में विहार करने गया उसने उर्वशी को देखा देखतेही राजा
कामवश हुआ औ उर्वशी से कहा कि हे सुंदरि मेरी भार्या होजा
उर्वशी भी राजा का रूप देख मोहित होरही थी यह बोली कि
जो आप मेरा एक नियम अंगीकार करें तो मैं आपके समीप
रहूं वह नियम यहहै कि आप को कभी नग्न न देखूंगी कभी
मुझे उच्छिष्ट मत देना औ केवल घृतही में भोजन करूंगी औ
ये दो मेष अर्थात् मेढ़े मेरे पुत्र के तुल्य हैं इनकी रक्षा करना
राजा ने ये सब नियम स्वीकार किये औ उर्वशी को साथ लेकर
राजधानी में आया औ उर्वशी के साथ आनंद भोगने लगा उ-
र्वशी का भी राजा में इतना अनुराग बढ़ा कि स्वर्ग को भूलगई
औ इकसठ बर्ष पुरूरवा के समीप बीत गये उर्वशी के बिना
स्वर्गभी शून्य दीखता था इसलिये विश्वावसु गंधर्व ने विचार

किया कि मैं उर्वशी को ले आऊं यह विचार कई गंधर्व साथ ले विश्वावसु मर्त्यलोक में आया औ दोनों मेषों में एक मेष चुरा कर आकाश को उड़ा तब उर्वशी पुकारी कि मेरे पुत्र को कौन हरे ले जाता है अब मैं क्या करूं राजा पुरूरवा उर्वशी का पुकारना सुनकर भी न उठा कि मुझे नग्नको न देखै इतने में दूसरे मेष को भी एक गंधर्व ले उड़ा उसका शब्द सुन उर्वशी बहुत व्याकुल हुई औ कहने लगी कि मैं अनाथा हूं मेरे पुत्रको कोई लियेजाता है अब मैं क्या करूं औ किसके शरण में जाऊं यह उर्वशी का दीन वचन सुन राजाने शोचा कि चारों ओर अंधकार है मुझे नग्नको तो नहीं देख सकती इसलिये मेषों की रक्षा करनी चाहिये यह विचार खड्ग लेकर खड़ा हुआ औ ललकारा कि रे दुष्ट खड़ा रह भागने न पावेगा इसी अवसर में गंधर्वों ने बिजली चमकाकर प्रकाश करदिया तबउर्वशी ने राजा को नग्न देखा देखतेही अपने नियम के अनुसार उर्वशी स्वर्ग को चली गई गंधर्व भी दोनों मेष छोड़कर उर्वशी के साथ गये राजा मेषों को लेकर प्रसन्न होता हुआ अपनी शय्या के समीप आया परंतु उर्वशी को न पाया तब राजा विरह से व्याकुल हो उन्मत्त की भांति पृथिवी पर भ्रमण करने लगा कुछकालमें कुरुक्षेत्र पर पहुंचा वहां देखा कि एक कमलों करके शोभित सरोवरमें चार अप्सराओं समेत उर्वशी जलक्रीड़ा कर रहीहै राजा देखतेही प्रसन्न होगया औ कहनेलगा कि हे प्राणप्यारी मुझे छोड़ कहां चली गई तब उर्वशी बोली कि हे महाराज आपसे मुझमें गर्भ रहा है इसलिये आप एक वर्ष के अनंतर इसी स्थान में आना तब मैं आपके साथ एक रात्रि रहूंगी औ आपका पुत्र आपके अर्पण करूंगी यह सुन प्रसन्नहो राजा अपनी राजधानी को आया उर्वशी ने अपनी सखियों

से कहा कि हे सखियो यह वही उत्तम पुरुष है जिसके समीप मैंने सुखपूर्वक कालक्षेप किया औ अब भी जिसके बिरह से व्याकुल रहती हूं यह उर्वशी का वचन सुन सखियों ने भी कहा कि जो ऐसे पुरुष का समागम हमको होजाय तो कभी स्वर्ग को न जांय उसी के समीप रहैं एक वर्ष बीतने पर राजा भी वहाँ आया औ गंधर्वों सहित उर्वशी भी वहाँ आई उर्वशीने एक बालक राजाको दिया औ एक रात्रि राजाके साथ रही औ फिर गर्भवतीहुई जिससे पांच पुत्र उत्पन्न होंय ऐसा गर्भ धारण किया औ राजासे यह भी कहा कि इन गंधर्वों से बर मांगो ये आपको अवश्य बर देंगे तब राजा ने गंधर्वों से कहा कि संपूर्ण शत्रु मैंने जीतलिये खजाना पूर्णहै अब यही बर चाहता हूं कि उर्वशीके साथरहूं तब गंधर्वोंने प्रसन्नहो एक अग्निस्थाली राजाको दी औ कहा कि हेराजा वेदकी रीतिसे इस अग्निके तीन भागकर यज्ञकरो तब उर्वशी के साथ तुम्हारा निवास होगा यह उनका वचनसुन अग्निस्थाली लेकर राजा अपने नगर को चला मार्गमें राजाने विचारकिया कि मैं बड़ा मूढ़हूं कि उर्वशी तो न मिली औ इस अग्निस्थाली को लियेजाता हूं इसका मैं क्या करूंगा यह मनमें विचार उस स्थाली को उसी बनमें रख अपनी राजधानी में आया वहाँ आय रात्रिके समय शय्यापर सोये फिर विचार किया कि उर्वशी की प्राप्ति का उपाय मुझे गंधर्वों ने बताया औअग्निस्थालीदी उसको मैं बनमें रखआया यह अच्छा नहीं किया फिर बनमें जाकर उसको लेआऊं यह मनमें निश्चयकर प्रभात होतेही राजा बनमें गया परन्तु वहां वह स्थाली न पाई परन्तु जहां स्थाली रक्खीथी उस स्थानमें एक पीपल का पेड़ औउसके बीचमें शमीकावृक्ष लगादेखा तब राजाने विचारकिया कि अग्निस्थालीसे यह वृक्ष उत्पन्न हुआ इससे इस अग्निरूप

वृक्षके काष्ठसे अरणि बनाय अग्नि उत्पन्न कर यज्ञकरना चहिये यह निश्चय कर उस वृक्ष का काष्ठ ले अपने नगर में आया औ अरणी बनवाई अरणी बनानेके समय राजा गायत्री मंत्र पढ़ता रहा औ गायत्री मंत्रके जितने अक्षर हैं उतने अंगुल की अरणी बनवाई उससे अग्नि उत्पन्न कर वेदोक्त विधिसे राजाने हवन किया औ बहुतसे यज्ञ किये उनके प्रभावसे राजा गंधर्व लोकमें प्राप्तहो उर्वशीके साथ विहार करने लगा एकदिन स्वर्ग में कुछ उत्सवथा सब देवताओंकी सभा लगीथी उसमें राजा पुरूरवा भी बैठेथे औ क्रम२ से सब अप्सरा इंद्रके आगे नृत्य करती थीं इतनेमें उर्वशीभी नाचने उठी औ बड़ेगर्वसे नाचनेलगी नाचते२ राजा पुरूरवाकी ओरदेख उर्वशीने मंदहास किया औ राजाभी उर्वशीसे नेत्रमिलाय कुछ हंसा यह दोनोंकी चेष्टादेख नाट्य के आचार्य तुंवुरुने कोपकिया औकहा कि इसदेवसभा में तुमदोनों बिना कारण हँसे इसलिये तुम्हारा परस्पर वियोग होगा यह वज्रके तुल्य तुंवुरुका शाप सुन राजा बहुत दुःखीहुआ औ इंद्रके शरणमें जाय प्रार्थना करनेलगा कि महाराज उर्वशी की प्राप्ति के लिये मैंने अनेक यज्ञकिये तब मुझे प्राप्तहुई अब आप ऐसाअ-नुग्रह करैं जिससे मुझे वियोग दुःख न भोगनापड़े यह राजाका दीन वचन सुन इन्द्रने कहा कि हे राजा भयमतकर शाप निवृत्त का तुझे एक उपाय बताताहूं दक्षिण समुद्र में गंधमादन पर्वत के बीच साध्यामृत नाम एक तीर्थहै जिसको देवता सिद्ध चारण गंधर्व ऋषिआदि सब सेवन करतेहैं वहतीर्थ भुक्ति मुक्ति औ शाप मोक्ष देनेहारा है उसतीर्थ में स्नान करनेहारोंको अमृत अर्थात् मोक्ष साध्य है असाध्यनहीं इसलिये उसतीर्थ का नाम साध्या-मृत हुआ वहां जाकर स्नान करने से उर्वशी का समागम औ निरन्तर हमारे लोकमें बासहोगा यह इन्द्रका वचन सुन राजा

गंधमादन पर्वतको चला वहांजाय साध्यामृत तीर्थमें स्नानकिया स्नान करतेही शाप मुक्त हुआ औ विमानमें बैठ स्वर्गको गया वहांजाय आनंदसे उर्बशीके साथ विहार करनेलगा हेमुनीश्वरो साध्यामृत तीर्थका ऐसा प्रभावहै किजिसमें स्नान करनेसे राजा पुरूरवा को फिर उर्वशी का समागम हुआ इसतीर्थ में स्नान करनेसे सब मनोरथ सिद्धहोते हैं औ स्वर्गकी प्राप्तिहोती है औ निष्कामहो स्नानकरै तो मोक्ष पावै जो इस अध्यायको पढ़ै अथवा सुनै वहभी विष्णुलोकको जाय हे मुनीश्वरो यह साध्यामृत तीर्थका प्रभाव हमने श्रद्धासे विस्तारपूर्वक आपको श्रवणकराया जोपूर्बकालमें ब्रह्माजीने सनत्कुमार आदिकोंको उपदेशकियाथा॥

उनतीसवां अध्याय॥

सूतजी कहतेहैं कि हे मुनीश्वरो साध्यामृत तीर्थमें स्नानकर सब पाप हरनेहारे सर्व तीर्थ में जाय सर्वतीर्थमें स्नान करतेही पातक महापातक सबदूर होजातेहैं पापी पुरुषके देहमें पापतब तकही रहतेहैं जब तक सर्वतीर्थ में स्नान न करै उस तीर्थको जानेके समय सब पाप कोप उठतेहैं कि अब हमारा नाश होगा गर्भवासादि दुःखभी तबतकहीहैं जबतक सर्वतीर्थमें स्नान नकरै यज्ञदान नियम से गायत्री मंत्रका जप चारोंवेद की सौआवृत्ति शिव विष्णु आदि देवताओंकी पूजा औ एकादशीको निराहार व्रत करनेसे जो फल प्राप्तहोय वह सर्वतीर्थमें स्नान करनेसे मिलता है यह सुन मुनियोंने पूछा कि हे सूतजी उस तीर्थका नाम सर्वतीर्थ क्योंहुआ यह आप विस्तारसे वर्णनकरैं तब सूतजी कहने लगे कि हे मुनीश्वरो पूर्वकालमें भृगुबंशमें उत्पन्न सुचरित नाम मुनिहुआहै वह जन्मसेही अंधाथा जन्मभर तपकिया वृद्धावस्था में मुनिकी इच्छा हुई कि सब तीर्थों में स्नान करना चहिये पर-

तु तीर्थोंमें जानेका सामर्थ्य नहीं इसलिये शिवजीका आराधन करना चहिये यह मनमें निश्चय कर गन्धमादन पर्वत में शिवजीके अनुग्रहके अर्थ सुचरित नाम मुनि तप करनेलगा तीनकाल स्नानकरके शिवपूजन करता अतिथियोंका सत्कार करता जावालोपनिषद्की रीतिसे भस्मोद्धूलन औरुद्राक्ष धारण करता ग्रीष्ममें पंचाग्नि तपता बर्षामें शरीरपर वृष्टि सहता शीतकाल में जलशय्या करता इस प्रकार उग्रतप करते २ दशवर्ष बीते तब प्रसन्नहो शिवजी प्रकटहुवे मुनिने देखा कि वृषपर चढ़े वाम अंगमें पार्वतीजीको धारणकिये त्रिशूल हाथमेंलिये कोटि सूर्यके समान जटाओंकरके शोभित सर्वांगमें भस्म धारणकिये भूतगणों करके सेवित शेषनाग आदिनागोंके भूषण पहिने ये साक्षात् शिवजीहैं शिवजीके प्रकट होतेही मुनिको दिव्यदृष्टि प्राप्तहोगई तब शिवजी का दर्शन पाय सुचरित मुनि भक्तिसे नम्रहो स्तुति करनेलगा(सुचरितउवाच। जयदेवमहेशानजयशंकरधूर्जटे। जय ब्रह्मादिपूज्यत्वं त्रिपुरघ्नयमांतक १ जयोमेशमहादेव कामांतक जयामल। जयसंसारपज्यत्वं भूतपालशिवाव्यय २ त्रियंबकनमस्तुभ्यं भक्तरक्षणदीक्षित। व्योमकेशनमस्तुभ्यं जयकारुणय विग्रह ३ नीलकंठनमस्तुभ्यं जयसंसारमोचक। महेश्वरनमस्तुभ्यं परमानन्दविग्रह ४ गंगाधरनमस्तुभ्यं विश्वेश्वरमृडाव्यय। नमस्तुभ्यंभगवते वासुदेवायशम्भवे ५ शर्वायोग्रायभर्गाय कैलासपतयेनमः। रक्षमांकरुणासिन्धो कृपादृष्ट्यवलोकनात्। ममवृत्तमनालोच्य त्राहिमांकृपयाहर ६इति) यह स्तुतिसुन दयाकेसमुद्र श्रीमहादेवजी ने सुचरितमुनिसे कहा कि हेमुने जो बर चाहताहै वहमांग हम तुझपर प्रसन्नहैं तब सुचरितमुनिने प्रार्थनाकरी कि हेनाथ मेरी इच्छा सबतीर्थोंमें स्नानकरनेकीहै परन्तु मैंवृद्धहूं इसलिये तीर्थोंमें जानहींसक्ता अब आप ऐसाअनुग्रहकरैं किसब तीर्थों

में स्नान करनेका फल मुझे प्राप्तहोजाय यहमुनिकी प्रार्थनासुन भक्तवत्सल श्रीमहादेवजी ने सब तीर्थों का आवाहन एक स्थान में किया औ मुनिसे कहा कि हे मुने हमने सब तीर्थोंका आवाहन किया इसलिये यहतीर्थ गंधमादनपर्वतमें सर्वतीर्थ नामसे प्रसिद्ध होता औ हमने मनसे तीर्थों का यहां आकर्षण किया इसलिये मानसतीर्थ भी इसका नाम होगा हे सुचरित महापातकों के दग्ध करनेहारे काम क्रोध लोभ रोग आदि दोषोंके नाशक बिना ब्रह्मज्ञान केही मोक्ष देनेहारे कुम्भीपाक आदि नरकों का भय निवृत्त कर संसार समुद्र के पार उतारने हारे हमारे बनाये इस सर्वतीर्थ में तू स्नान कर यह शिवजी की आज्ञा पाय सुचरित मुनिने सर्वतीर्थ में स्नान किया स्नान करतेही अति सुंदर तरुण औ दिव्य देह होगया औ उस तीर्थ की प्रशंसा करने लगा महादेव जीने कहा कि हे सुचरित इस तीर्थ में नित्य स्नान कर औ हमारा नाम स्मरण कर देशांतरके तीर्थों में जाने की इच्छा दूरकर इस तीर्थ के माहात्म्य से अंत में हमारे लोक में निवास करैगा और भी जो पुरुष इसतीर्थमें स्नान करैंगे वे हमारे लोक में प्राप्त होंगे इतना कह शिवजी अंतर्धानहुवे औ सुचरित मुनि भी बहुत काल उस तीर्थमें स्नान कर अंत में शिवलोकको गया हे मुनीश्वरो यह सर्व तीर्थ का प्रभाव हमने वर्णन किया जो इसको पढ़ै अथवा सुनै वहभी सब पापों से मुक्त होय॥

तीसवां अध्याय॥

सूतजी कहते हैं कि हे मुनीश्वरो सर्व तीर्थ में स्नान कर ब्रह्महत्या आदि पापों के हरण करनेहारा धनुष्कोटि को जाय धनुष्कोटि के स्मरण मात्रसे सब पाप निवृत्त होते हैं जो पुरुष धनुष्कोटि के दर्शन करतेहैं औ उसमें स्नान करते हैं वे अट्ठाईस

प्रकार के महानरकों को नहीं देखते तामिस्र अंधतामिस्र रवरौ
महारौरव कुंभीपाक कालसूत्र असिपत्रबन कृमिभक्ष अन्धकूप
शाल्मली सन्दंश सूर्मी बैतरणी प्राणरोध विशसन लालाभक्ष
अवीचि सारमेयादनबज्र कण्टक क्षारकर्दमपातन रक्षोगणाशन
शूलशंतवितोदन दन्दशूकाशन पर्यावर्तन तिरोधान सूचीमुख
पूयश्रोणितभक्ष विषाग्निपरिपीड़न ये अट्ठाईस महानरक हैं
धनुष्कोटि में स्नान करनेहारा पुरुष इन नरकों में नहीं गिरता
जो किसी के धन औ स्त्री पुत्रों को हरै उनको भयंकर यमदूत
काल पाशों से बांध बहुत काल तक तामिस्र नरक में डालतेहैं
जो स्वामी को मार उसका धन लेकर भोगकरै वह अंधतामिस्र
में गिरता है जो और जीवों से द्रोहकर अपने कुटुंब का पोषण
करै वह रौरव नरक में डाला जाता है जहां बड़े विषधर सर्प
काटते हैं जो केवल अपना पेटभरै कुटुंब का पालन न करै वह
महारौरव में गिरता है औ नित्य अपना मांस खाता है जो नि-
र्दय पुरुष पशु पक्षी आदि को रोककर रक्खे उस पुरुष को
कुंभीपाक नरक में औटते हुवे तेल के बीच यमदूत डालतेहैं जो
पुरुष माता पिता औ ब्राह्मणों से द्वेषकरै वह कालसूत्र नरक में
डालाजाता है कालसूत्र नरक में नीचे अग्निजलता है औ ऊपर
प्रचंड सूर्य तपता है जिसमें पापी पुरुष दग्धहोते रहते हैं जो
वेदमार्ग को छोड़ कुमार्ग में चलते हैं वे असिपत्रबनमें गिरते हैं
जो राजा अथवा राज्याधिकारी अदण्ड्य पुरुष को दंड देवै औ
ब्राह्मण को शारीरदंड देवै वह सूकरमुख नाम नरक में गिरता
है औ यमदूत उसको ईखकी भांति कोल्हूमें पेलते हैं जो ईश्व-
राधीन वृत्तिवाले जीवों को पीड़ा देवै वह अंधेरे कुवे में डाला
जाता है औ वेही जीव उनको वहां पीड़ादेते हैं जो पंक्ति में बैठ
आप उत्तम भोजन करै औ पंक्तिवालों को न देवै औ जो पुरुष

पंच महायज्ञ किये बिना भोजन करें वे कृमिभोजन नाम नरक में डालेजाते हैं वहां उनको कृमिखाते हैं औ वे कृमियों को भक्षण करते हैं जो राजा अथवा राजपुरुष ब्राह्मण का धनहरैं और भी जो पुरुष ब्राह्मण का धन चोरीकरके अथवा बलात्कार से लेवैं वे संदंश नाम नरक में अग्नि कुंडों के बीच पड़ते हैं औ यमदूत उनको लोहे के संनसोंसे पीड़न करतेहैं जो पुरुष पराई स्त्रीसे संगकरै औ जो स्त्री पर पुरुष से संगकरै वे सूर्मि नाम नरक में गिरते हैं वहां उनको लोहकी तपाई हुई मूर्तिका आलिंगन करना पड़ता है जिस मूर्ति के शरीर में बड़े २ तीखे काँटे हैं औ जबतक सूर्यचन्द्र रहैं तबतक उसी मूर्ति का आलिंगन किये खड़े रहते हैं जो पुरुष अनेक प्रकारों करके जीवों को पीड़ा देतेहैं वे बहुत काँटोंवाले शाल्मलि नाम नरक में डाले जाते हैं जो पुरुष पाखण्ड धर्म में चले औ धर्ममार्ग का खण्डन करै वह वैतरणी नाम नरक में गिरता है जो पुरुष सदाचार औ लज्जाछोड़ वृषली स्त्रीका संगकरै औ शौच आचार से हीन होय वह अति वीभत्स नरक में पूयविष्ठा रुधिर मूत्र आदि के कुंडों में गिरता है जो पुरुष दंभसे यज्ञ मेंपशुओं की हिंसा करै औ विधिजाने नहीं वह वैशस नरक में जाता है वहां यमदूत उसको शस्त्रों से छेदन करते हैं अपनी स्त्रीको जो मोह से वीर्यपान करावै वह रेतःकुंड में गिरता है वीर्यपान करता है जो पुरुष ग्राममें आगलगावै किसी को विषदेवै औ मार्ग चलने वाले व्यापारियों को लूटै वह वज्रदंष्ट्र नाम नरक में डालाजाता है इस प्रकार और भी पापी पुरुष अनेक प्रकारके घोर नरकों में डाले जाते हैं परंतु ये सब पाप करनेहारे यदि एकबार भी धनुष्कोटि तीर्थ में स्नान करैं तो इन नरकों को कभी न देखें सद्गतिही पावैं धनुष्कोटि में स्नान करने से अश्वमेध यज्ञ का फल प्राप्त होता

है आत्मज्ञान होता है औ चार प्रकार की मुक्ति मिलती है धनुष्कोटि में स्नान करने से बुद्धि निर्मल होजाती है कभी दुःखनहीं होता औ पाप में चित्त नहीं प्रवृत्तहोता तुला पुरुष औ हजार गोदान करनेसेजोफलप्राप्तहोताहै वह धनुष्कोटिमें एकबार स्नान करसे होताहै धर्म अर्थ काम मोक्ष आदि जो पदार्थ चाहै वहीधनुष्कोटिमें स्नान करतेही प्राप्तहोता है अनेक पातक महापातकों करके युक्त पुरुषभी धनुष्कोटि स्नानसे शुद्धहोजाताहै धनुष्कोटि स्नानसे प्रज्ञा लक्ष्मीयश संपत्ति वैराग्य धर्मज्ञान मनःशुद्धि आदि सब पदार्थ प्राप्त होतेहैं करोड़ों ब्रह्महत्या सुरापान गुरुदार गमन सुवर्णस्तेय आदि पातक धनुष्कोटि में स्नान करने से निवृत्त होतेहैं औरभी जो पातक ब्रह्महत्या आदि महापातकों के तुल्यहैं वे सब नष्ट होते हैं इनबातों में कभी संदेह नहीं करना इस माहात्म्यको जो अर्थवाद समझै वह नरकको जाताहै मनुष्यों का बडा मूर्खपन है कि अद्वैत ज्ञान देनेहारे सब पातक औ दुःख हरनेहारे धनुष्कोटि तीर्थ को छोड़ और तीर्थों में भटकते फिरते हैं धनुष्कोटि में स्नान किये पीछे यमका भय नहीं रहता जो पुरुष धनुष्कोटि को नमस्कारकरैं दर्शन करैं स्तुति औ प्रणाम करैं वेमाता के स्तन नहीं पीते अर्थात् जन्म मरण से रहित होजाते हैं इतनी कथा सुन मुनियों ने पूछा कि हेसूतजी उसतीर्थ का नाम धनुष्कोटि क्योंकर हुआ यह आप वर्णनकरैं तब सूतजी कहनेलगे हेमुनीश्वरो रावण को मार बिभीषण को लंका का राज्य देकर सीता लक्ष्मण सहित रामचन्द्रजी सुग्रीव आदि बानरों समेत गंधमादन पर्वत में पहुंचे औ बिभीषणभी साथ आया वहां पहुंच बिभीषण ने प्रार्थनाकी कि महाराज इसआप के बाँधेहुवे सेतुके मार्गसे और भी प्रतापी राजा आकर मेरी पुरी लंकाको पीडादेंगे इसलिये आप अपने धनुषकी कोटि अर्थात्

अग्र करके इस सेतुको भेदन कर दीजियेयह बिभीषणकी प्रार्थना सुन अपने धनुष के अग्रभाग से सेतुको तोड़दिया वहांही धनुष्कोटि तीर्थ बना धनुष करके रेखा की हुई जो पुरुष देखे वह गर्भवास का दुःख नहीं भोगता धनुष्कोटि करके रामचन्द्रजी ने समुद्र में रेखा की उसके दर्शनसेही मुक्ति होजाती है स्नान का फल तो कौन वर्णन करसके नर्मदाके तटपर तपकरै तो महापातक निवृत्त होंय गंगातीर में मरण से मोक्ष होताहै औ कुरुक्षेत्र में दान देनेसे ब्रह्महत्या आदिपाप नष्ट होतेहैं परंतु धनुष्कोटि में तप मरण औ दान तीनोंही मुक्तिको देनेहारे हैं पातक महापातक आदि का भय तबतक है जबतक धनुष्कोटि का दर्शन न करै धनुष्कोटि का दर्शन करतेही हृदयकी ग्रंथि भिन्न होजाती है सब संशय निवृत्त होजाते हैं औ पापभी नष्ट होतेहैं रामचन्द्रजी ने बिभीषण के कल्याण के लिये जो दक्षिण समुद्र में धनुष्कोटि करके रेखाकी वही स्वर्ग कैलास वैकुंठ ब्रह्मलोक आदि का मार्गहै धनुष्कोटि स्नान मंत्रों के जप अनेक दान औ यज्ञोंसे भी अधिक है धनुष्कोटि में स्नान करनेवाले पुरुष को प्रयाग में स्नान औ काशी मरण से कुछ प्रयोजन नहीं धनुष्कोटि में स्नान न कर तीनदिन उपवास न करै औ ब्राह्मण को सुवर्ण गो आदि दान न देवे वह पुरुष जन्मांतर में दरिद्री होताहै धनुष्कोटि में स्नान करने से जो फलहोता है वह अग्निष्टोम आदियज्ञ करने से भी नहीं प्राप्तहोता है सबतीर्थों से धनुष्कोटि तीर्थ अधिक है भूमंडल में दशहजार कोटि तीर्थ हैं वेसब धनुष्कोटि में निवास करते हैं आठ वसु आदित्य रुद्र मरुत् साध्य गंधर्व सिद्ध विद्याधर आदि सब देवता औ विष्णु लक्ष्मी शिव पार्वती ब्रह्मा औ सरस्वती भी धनुष्कोटि तीर्थ में निवास करते हैं धनुष्कोटि के तटपर तपकर अनेक देवता औ ऋषि उत्तम सिद्धि को प्राप्तहुवे

धनुष्कोटि में स्नानकर देवता औ पितरों का तर्पणकरै वह ब्रह्मलोक को जाताहै जो धनुष्कोटि पर एक ब्राह्मण को भी भोजन करावै वह दोनोंलोकों में सुखपाता है जो तप अथवा अश्वमेध आदि यज्ञ न करसके वह धनुष्कोटि में स्नानकरै धनुष्कोटि में स्नान करनेहारे पुरुष निन्द्ययोनि में जन्म नहीं लेते माघमास मकर के सूर्य में जो पुरुष धनुष्कोटि में स्नानकरैं उसका पुण्य फल हम नहीं वर्णन करसकते माघमास में जो स्नानकरै वह गंगा आदि सर्वतीर्थों के स्नान का फल पाय मोक्ष पाताहै जन्म भर के किये पाप स्नान करतेही विलय होजाते हैं सब देवताओं में रामचन्द्र औ सब तीर्थों में धनुष्कोटि उत्तम है माघमहीने में तीसदिन धनुष्कोटि में स्नानकरै औ जितेन्द्रिय रहकर एक वार भोजन करै वह ब्रह्महत्या आदि पापों से छुट मुक्तिपाता है माघमहीने में स्नान करै औ शिवरात्रि को उपवास रख जागरण करै औ रात्रि को रामनाथ महादेव का भक्तिसे पूजन कर दूसरे दिन प्रभातही उठ धनुष्कोटि में स्नानकर फिर रामनाथ का बिधिपूर्वक पूजनकर यथाशक्ति ब्राह्मणोंको भोजन कराय सुवर्ण गौ भूमि आदि दानकर ब्राह्मणों की आज्ञापाय आपभी भोजन करै इसबिधिसे जो माघस्नानकरै उसके सबपापोंको निवृत्त कर श्रीमहादेवजी भुक्ति औ मुक्ति देतेहैं इसलिये हे मुनीश्वरो मोक्ष की इच्छा होय तो अवश्यही धनुष्कोटि में स्नान करना चहिये अर्धोदय योगमें जो पुरुष धनुष्कोटिमें स्नानकरैं उनके सब पाप नष्ट होते हैं अर्धोदय औ महोदय योग में जो स्नान करें उनको ब्रह्मा विष्णु शिव आदि देवता प्रसन्न होकर भुक्ति औ मुक्तिदेते हैं इन दोनों योगों में जो पुरुष धनुष्कोटि में स्नानकरैं वे सब यज्ञों के फल पाते हैं औ उनके सब पापों का प्रायश्चित्तभी होजाता है चंद्र औ सूर्य्यके ग्रहण में जो पुरुष धनुष्कोटि में स्नान

करै उसके पुण्य फलको शेषजी भी नहीं गिनसकते ग्रहण में स्नान करतेही ब्रह्महत्या आदि पाप निवृत्त होतेहैं औ मुक्तिभी प्राप्त होती है इसकारण ग्रहण अर्द्धोदय औ महोदय में विशेष करके स्नान करना चहिये हे मुनीश्वरो सब व्यवहार छोड़ धनुष्कोटि तीर्थको जावो औ पितरों को पिंडदान करो वहां पिंडदान करनेसे कल्पभर पितरतृप्त रहतेहैं पितरों की तृप्तिके लिये रामचंद्रजीने तीन स्थान बनाये हैं सेतुमूल धनुष्कोटि औ गंधमादन पर्वत इन तीनों स्थानोंका नाम ऋणमोक्ष है यहां पिंड देनेसे मनुष्य पितरों के ऋणसे मुक्तहोते हैं सब उपाय से धनुष्कोटि का सेवन करना चहिये धनुष्कोटि में स्नानकर अश्वत्थामा महाघोर सुप्तमारण दोषसे छुटा हे मुनीश्वरो यह हमने भुक्ति मुक्ति देनेहारा धनुष्कोटि का माहात्म्य वर्णन किया॥

इकतीसवां अध्याय॥

शौनक आदि ऋषि पूछते हैं कि हे सूतजी अश्वत्थामा ने क्योंकर सुप्तमारण किया औ धनुष्कोटिमें स्नानकर किस बिधि उस पाप से छुटा यह आप वर्णन करें आपका वचनामृत पान करते २ हमको तृप्ति नहीं होती यह नैमिषारण्य वासी मुनियों का वचन सुन अपने गुरु श्रीवेदव्यासजी को प्रणामकर सूतजी कहनेलगे कि हे मुनीश्वरो कौरव औ पांडवोंका राज्यके निमित्त बड़ा युद्धहुआ उस युद्धमें दशदिन घोर संग्रामकर भीष्म शरशय्या पर सोये पांचदिन द्रोणाचार्य ने युद्धकिया दोदिन युद्ध करके कर्ण औ एकदिन युद्ध करके शल्य मारेगये अठारहवें दिन भीमसेन ने गदा युद्धसे दुर्योधनके ऊरु तोड़डाले तब धृष्टद्युम्न शिखंडी आदि सब पांडवों के पक्षके राजा विजयपाय प्रसन्नहो शंख बजाते अपने २ डेरेको गये औ श्रीकृष्णचन्द्र तथा सात्य-

कि सहित पांडव दुर्योधन के शून्य डेरोंमें प्रविष्ट हुये वहां दुर्यो
धन के वृद्ध मंत्री कंचुकी अंतःपुरके रक्षक आदि सब उनको प्र-
णाम करनेलगे पांडव भी दुर्योधन का सब धन ग्रहणकर उस
रात्रिको वहांही रहे परंतु श्रीकृष्णभगवान् ने कहा कि मंगलके
लिये आजकी रात डेरों में नहीं रहना चहिये इसलिये वे सब
ओघवतीनाम नदीके तटपर जायरहे कृतवर्मा कृपाचार्य औ अ-
श्वत्थामा ये तीनों जो कौरवों के पक्षमें बचेथे सूर्यास्तसे पहिले
ही दुर्योधन के पासगये देखा कि दोनों ऊरु दुर्योधन के टूटगये
रुधिर से सब अंग भीग रहे हैं औ भूमिपर धूलिमें लोटता है
यह अवस्था राजा दुर्योधन की देख इन तीनोंने बड़ा शोचकिया
राजा इनको देख अश्रुपात करनेलगा यह दशा राजा दुर्योधन
की देख अश्वत्थामा क्रोधसे जलउठा औ दोनों हाथ पीस क्रोध
से अश्रुपात करता हुआ दुर्योधन से बोला कि हे राजन् मेरा
पिता युद्धमें दुष्टोंने छलसे मारदिया उसका मुझे इतना दुःख न
हुआ जितना आज तुम्हारी यह दशा देखकर हुआ है इसलिये
मैं शपथ खाकर कहता हूं कि आज रात्रिको पांडव औ सृंजयों
को श्रीकृष्ण के देखते २ मारूंगा आप मुझे आज्ञा दीजिये यह
गुरुपुत्र का वचन सुन दुर्योधन ने कहा कि बहुत अच्छा जैसी
आपकी इच्छा होय वैसा कीजिये औ कृपाचार्यसे कहाकि आप
अश्वत्थामा का अभिषेक कीजिये कि ये सेनापति बनें कृपाचा-
र्य ने भी जल लाकर उसीक्षण अश्वत्थामा का अभिषेक किया
अश्वत्थामा भी दुर्योधन को आलिंगनकर कृपाचार्य औ कृतवर्मा
को साथले दक्षिण दिशा को चला औ सूर्यास्त होते २ पांडवों
के डेरेके पास तीनों वीर आय पहुंचे वहां पांडवों का बड़ा को-
लाहल सुनकर पूर्वकी ओर तीनों भयसे चले जाते २ बनमें उन
में एक अति मनोहर सरोवर देखा जिसमें कमल आदि अनेक

पुष्प फूलेथे औ हंस कारंडव आदि पक्षी क्रीड़ा कररहेथे उसस-
रोवर में तीनों ने जलपिया औ अपने घोड़ोंको जल पिलाया औ
श्रम निवृत्त करनेकेलिये घोड़ोंसे उतरकर एक बटवृक्षके नीचे
बैठे औ सायंसंध्या भी की इतनेमें सूर्य अस्त हुआ अतिघोर अं-
धकार चारोंओर छागया दिनचारी जीव निद्रावशहुवे औ रात्रि
में विचरनेवाले जीव इधर उधर घूमनेलगे वे तीनों भी बटवृक्ष
के नीचे बैठेथे उनमें कृपाचार्य औ कृतवर्मा तो निद्रावशहो भूमि
परही सोगये औ अश्वत्थामा को मारे क्रोध औ शोकके निद्रा न
आई तब अश्वत्थामा ने देखा कि अति भयंकर एक उलूक अति
घोर शब्द करता हुआ बहुत उलूकों को साथ लिये वहां आया
औ उस बट वृक्षकी शाखाओंमें हजारों काक सोतेथे उनको मा-
र २ गिराने लगा किसी काक के नेत्र फोड़ दिये किसीकी टांग
तोड़दी किसीके पर उखाड़दिये किसीका शिरही नोचलिया इस
प्रकार उस उलूकने काकोंका संहारकिया औ अपने शत्रु काकों
की यह गति देख बहुत प्रसन्नहुआ उलूकका यह व्यवहार देख
अश्वत्थामाने विचारकिया कि मैंभी इसीप्रकार शत्रुसंहार करूं
क्योंकि युद्धकरके तो पांडवों को जीतना कठिन है औ हमने दु-
र्योधन के आगे पांडवों के बधकी प्रतिज्ञा की है इसलिये रात्रि
के समय कपटसेही पांडवोंका संहार करना चहिये क्योंकि निंद्य
कर्म करके भी शत्रुओं को मारना चहिये पांडवों ने भी छलसेही
जय पाया है औ नीतिशास्त्र जाननेवाले विद्वानों ने यह कहा
है कि शत्रु की सेना परिश्रांतहोय सोतीहोय भोजनकरती होय
शस्त्र छोड़े किसी व्यापार में लगीहोय उससमय मारनी चहिये
यह मनमें शोच बिचारकर अश्वत्थामा ने कृपाचार्य औ कृतवर्मा
को जगाया औ उनसे यह कहा कि राजा दुर्योधन धर्मसे युद्ध
करतारहा औ पांडवों ने क्षुद्र कर्मों से उसको मारा भीमसेन ने

दुर्योधन के शिरपर पैर रक्खा यह सबबात आपभी जानते हैं अबमेरा यहनिश्चय है कि इसी रात्रि में सोयेहुवे पांडवों को छलसे मारदेवें यहसुन कृपाचार्य बोले कि हे अश्वत्थामा सोये हुवे शत्रुओं को मारना कुछ धर्म नहीं शस्त्रहीन औ रथहीन शत्रुओं को मारना भी उचित नहीं इसलिये तुम ऐसा साहस मत बिचारो हम तीनों धृतराष्ट्र गांधारी औ परम धर्मात्मा विदुरको सम्मति पूछें वे जैसाकहैंगे वैसाही कियाजायगा यहअपने मामा कृपाचार्य का वचन सुन अश्वत्थामा ने कहा कि मेरे पिता को युद्धमें छलसे मारा है वह दुःख मेरे हृदय को जलाता है औ धृष्टद्युम्न कहता है कि मैं द्रोणहंता हूं यह वचन मैं क्योंकर सुनूं पांडवोंनेही पहिले धर्मकी मर्यादा भंगकरी आप सबके देखते २ त्यक्तशस्त्र मेरे पिता को धृष्टद्युम्न ने मारा औ शिखंडीको आगेकर छलसे वृद्धभीष्म को अर्जुन ने मारा इसभांति औरभी बहुतसे राजा पांडवोंने छलसेमारे इसीभांति हमभी छलसेसोते हुवे पांडवों का संहार करें तो कुछ अनुचित नहीं यह निश्चय कर अश्वत्थामा अपने रथमें चढ़ क्रोधसे जलताहुआ पांडवों के डेरेको चला कृपाचार्य औ कृतवर्माभी उसके पीछे२ चले औ क्षण में वहां आय पहुंचे सब मनुष्य युद्ध से थके हुवे अपने २ डेरोंमें सोतेथे डेरे के द्वारपर पहुंच अश्वत्थामा ने शिवजी का आराधन किया शिवजीने प्रसन्न हो अश्वत्थामा को अति उत्तम एकखड्ग दिया तब अश्वत्थामा प्रसन्न हो कृपाचार्य औ कृतवर्माको पांडवों के शिविर अर्थात् लशकरके द्वारपर खड़ाकर आप भीतर घुसा औ शिविरमें विचरनेलगा पहिले धृष्टद्युम्न के तंबूके समीप पहुंचा औ तंबू के भीतर घुस देखा कि श्वेतवर्ण की शय्याके ऊपर युद्ध से थकाहुआ धृष्टद्युम्न सोता है औ उसकी सेना तंबू के चारों ओर डेराडाले पड़ी है अश्वत्थामाने एक लात मारकर

धृष्टद्युम्न को जगाया धृष्टद्युम्न ने जगकर देखा कि अश्वत्थामा संमुख खड़ाहै औ शय्या से उठनाचाहा परंतु अश्वत्थामाने उस के केश पकड़कर वहांही गिरादिया औ आप उसकी छातीपर चढ़ बैठा धनुष की ज्या से उसका कंठ बांधकर जिस प्रकार पशु को मारें उसीभांति धृष्टद्युम्न को अश्वत्थामाने मार दिया धृष्टद्युम्न निद्रासे व्याकुल था औ अठारह दिन के युद्धसे थका हुआ था इसलिये कुछ पराक्रम न करसका फिर युधामन्यु उत्तमौजा द्रौपदी के पांचोपुत्र सोमक जो युद्ध से बचेथे औ शिखंडी आदि औरभी राजाओंको अश्वत्थामाने खड्गसेमारा अश्वत्थामा के भयसे जो भगकर बाहिर गये उनको कृपाचार्य औ कृतवर्मा ने मारा इस प्रकार क्षणमात्र में उनतीनोंने पांडवों की सेनाका संहार किया औ तीनों उस शिविरसे निकल भयसे इधर उधर भगे अश्वत्थामा नर्मदा तीरपर पहुंचे वहां हजारों वेदवेत्ता ऋषि तप करतेथे उनके समीप अश्वत्थामा गया परंतु उनने योग बलसे इसका सब कर्म जानलिया औ अश्वत्थामा से मुनियोंने यह कहाकि हे द्रोणपुत्र तू ब्राह्मणों में अधम है तैंने ऐसा घोर पाप किया सोतेहुवे मनुष्यों को मारा तेरेदर्शन से हम पतित होते हैं औ तेरे साथ संभाषण करने से ब्रह्महत्या के तुल्य पाप लगता है इसलिये हे पापी शीघ्र तू हमारे आश्रमसे निकलजा यह मुनियों का वचन सुन लज्जित हो अश्वत्थामा वहांसे चला औ काशीआदि तीर्थों में जहां २ गया वहांही ब्राह्मणोंने तिरस्कार किया तब प्रायश्चित्त की इच्छा से बदरिकाश्रममें व्यास जी के पासगया औ व्यासजीको प्रणाम किया तब व्यासजीने कहाकि हे अश्वत्थामा शीघ्रही हमारे आश्रम से निकल तू बड़ा पातकी है तेरेसाथ वार्तालाप करने से हम को भी पापलगता है यह व्यासजी का वचन सुन अति दुःखी हो अश्वत्थामाने कहा

कि महाराज सबने मेरा तिरस्कार किया तब आप के शरण में आया अब आप भी मुझे त्याग देवें तो मैं किसके शरण जाऊं आप दयालुहैं मेरे ऊपर भी कृपाकरें औ इस पाप का मुझे प्रायश्चित्त बतावैं आप सर्वज्ञ हैं यह अश्वत्थामा का दीन वचन सुन क्षणमात्र ध्यानकर व्यासजी ने कहाकि हे अश्वत्थामा इस पाप का प्रायश्चित्त किसी स्मृति में तो लिखा नहीं तौ भी हम एक उपाय तुमको बतातेहैं। दक्षिण समुद्र में रामसेतु के समीप धनुष्कोटि नामतीर्थ सब पातक हरने में समर्थ है उसतीर्थ में जाकर हे अश्वत्थामा तू स्नानकर एक महीने स्नान करने से शुद्ध होजायगा यह व्यासजी की आज्ञापाय अश्वत्थामा धनुष्कोटि तीर्थपर पहुंचा औ संकल्प पूर्बक एक मास नियम से स्नानकिया नित्य तीनकाल रामनाथ का पूजन औ पंचाक्षर मंत्र का जप किया एक महीना पूराहोनेपर उसदिन उपवास रक्खा औ रामनाथ के समीप रात्रि को जागरण किया प्रभात होतेही धनुष्कोटि में स्नानकर रामनाथ का पूजन किया औ भक्ति से अश्रुपात करता हुआ शिवजीके आगे नृत्य करनेलगा तब भक्त वत्सल श्रीमहादेवजी प्रसन्न हो प्रकट हुवे उनकोदेख अश्वत्थामा स्तुति करनेलगा (द्रौणिरुवाच। नमस्तेदेवदेवेशकरुणाकरशंकर। आपदांवुधिमग्नानांपोतायितपदाम्वुज१ महादेव कृपामूर्तेधूर्जटेनीललोहित। उमाकांतविरूपाक्षचंद्रशेखरतेनमः२ मृत्युंजयत्रिनेत्रत्वं पाहिमांकृपयादृशा। पार्वतीपतयेतुभ्यं त्रिपुरघ्नायशंभवे ३ पिनाकपाणयेतुभ्यं त्र्यंवकायनमोनमः। अनंतादि महानाग हारभूषणभूषित ४ शूलपाणेनमस्तुभ्यं गंगाधरमृड़ाव्यय। रक्षमांकृपयादेव पापसंघातपंजरात् ५ इति) यह स्तुति सुनप्रसन्नहो श्रीमहादेवजीने अश्वत्थामासे कहाकि हे द्रोणपुत्र धनुष्कोटि में स्नान करने से सुप्त मारण दोष से तू मुक्त हुआ

अब जो वर चाहै वह मांग यह शिवजीका वचनसुन अश्वत्थामाने प्रार्थना की कि महाराज आपके दर्शनसेही मैं कृतार्थ हुआ आप का दर्शन पापी पुरुषों को कोटि जन्ममें भी दुर्लभ है अब यही वर चाहताहूं कि आपके चरणारविंद में दृढ़भक्ति रहै शिवजीने उसको यही वरदिया औ अंतर्द्धान हुवे औ अश्वत्थामा निष्पाप होगये तब सब ऋषियोंने उनको अपने में मिलाया सूतजी कहतेहैं कि हे मुनीश्वरो धनुष्कोटि का यह वैभव हमने वर्णन किया जिसमें स्नान करतेही अश्वत्थामा शुद्ध हुवे जो पुरुष इस अध्याय को पढ़ै अथवा सुनै वह सब पापों से मुक्त होकर शिवलोक को जाता है॥

बत्तीसवां अध्याय॥

सूतजी कहते हैं कि हे मुनीश्वरो हम आपकी प्रीतिके लिये फिर भी धनुष्कोटि का वैभव वर्णन करते हैं चंद्रवंशमें नंदनाम एक बड़ा प्रतापी चक्रवर्ती राजाहुआ है उसका पुत्र धर्मगुप्त नाम था राजानंद सब राज्यभार पुत्रको सौंप तप करने बनमें गया औ धर्मगुप्त राज्य करनेलगा धर्मगुप्त ने बहुत यज्ञ किये ब्राह्मणों को सुवर्ण गौ भूमि आदि दान दिये उसके राज्यमें सब प्रजा धर्म में तत्पर थी औ चौर आदि की पीड़ा किसी को नहीं थी किसी समय धर्मगुप्त घोड़ेपर चढ़ आखेट के लिये बन को गया वह बन ताल तमाल हिंताल कुरबक आदि वृक्षों से पूर्ण कमल कुमुद कल्हार नीलोत्पल आदिसे भरे तटाकों करके शोभित था औ अनेक ऋषि उस बनमें तप करतेथे वहां राजा धर्मगुप्त मृगया खेलने लगा एक मृग के पीछे लगाहुआ दूर चला गया औ सब सेना पीछे रहगई इतने में रात्रि होगई तब राजा धर्मगुप्त एक सरोवर के तटपर उतरा वहां संध्याकररात्रि

व्यतीत करने के लिये सिंहआदि जीवों के भय से एक वृक्षपर चढ़गया इतने में एक रीछ भगाहुआ आया कि जिसके पीछे एक सिंह लगरहाथा वह रीछ भी सिंहसे भयभीत हुआ इसी वृक्षपर चढ़ा औ राजा को उसने देखा औ कहाकि हे महाभाग मुझसे मतडर हम दोनों यहां रात्रि व्यतीत करदेंगे नीचे बड़ा भयंकर सिंह खड़ाहै अब आधीरात्रि तक तू निद्राकर मैं तेरी रक्षा करूंगा पीछे मैं सोऊंगा तैंने मेरी रक्षा करना यह रीछ का वचन सुन धर्मगुप्त सोगया औ रीछ उसकी रक्षा करनेलगा तब सिंहने कहाकि हे रीछ यह मनुष्य सोगयाहै इसको तू नीचे ढकेल दे तब रीछ ने कहा कि हे मृगराज तू धर्म नहीं जानता विश्वासघाती पुरुषकी कभी सद्गति नहीं होती ब्रह्महत्या आदि पाप तो किसी प्रकार निवृत्त होभी सकते हैं परंतु मित्रद्रोहका पाप कोटिजन्मोंमेंभी नहीं छुटता पृथिवीको जितनाभार विश्वास घातक पुरुष का लगता है उतना मेरु आदि महा पर्वतों का नहीं यह रीछका वचन सुन सिंह चुपहुआ इतने में आधीरात हुई तब रीछ सोया औ राजा उसकी रक्षामें बैठा तब सिंह ने राजासे कहा कि इस रीछ को नीचे डालदे यह सिंहका वचन सुन राजाने उस रीछ को धीरे से ढकेलदिया परंतु वह रीछ भूमिपर न गिरा उसने बृक्षकी एकशाखा पकड़ली औ फिर ऊपर चढ़ा औ राजा से बोला कि हे राजा मैं भृगुकुलमें उत्पन्न ध्यान काष्ठाभिध मुनि हूं मैंने अपनी इच्छा से रीछ का रूप धारा है तैंने बिन अपराध मुझे नीचे डालना चाहा इस लिये उन्मत्त होजा यह शाप राजा को दे सिंह से कहा कि हे सिंह तू कुवेर का मन्त्री नृसिंहनाम यक्षहै एक समय अपनी भार्याको संगले हिमालयपर्वत में गौतमऋषिके आश्रम के समीपजाय बिहार करनेलगा इतनेमें गौतमऋषि समिधा लानेको अपनी पर्णकुटी

से निकले गौतममुनि ने तुझको नग्न देख शापदिया कि रे मूढ़ हमारे आश्रम के समीप तू विवस्त्र हुआ इसलिये सिंह होजा इसभांति तू गौतम मुनिके शापसे सिंह हुआहै कुवेर बड़े महात्मा हैं औ उनके मन्त्री भी धर्मात्माहैं फिर तुम हमको क्यों मारना चाहते हो यह ध्यानकाष्ठ मुनिका वचन सुनतेही सिंहरूप छोड़ वह दिव्य यक्षका रूपधार मुनिको प्रणामकर बोला कि हेमुनि आज मुझे पूर्बजन्म का वृत्तांत स्मरण आया गौतम ने मेरा शापांत यह कियाथा कि जब ऋक्षरूप ध्यानकाष्ठ मुनि से तेरा सम्बाद होगा तब तू सिंहरूप को छोड़ यक्ष होगा वह सम्बाद आजहुआ औ आपके प्रभावको मैंने जाना इतनाकह मुनिको प्रणामकर विमानपरचढ़ यक्ष तो अलकापुरी को गया औ मुनिभी अपनी इच्छानुसार चलदिये धर्मगुप्त भी उन्मत्त हो बनमें विचरने लगा इतनेमें उसकी सेना औ सब मंत्री आयमिले औ राजा की यह अवस्था देख किसी प्रकार राजधानीको लाये औ वहां से नर्मदा नदी के तटपर राजा धर्मगुप्त को लेगये जहां उसका पिता नंद तप करता था नंदको सब वृत्तांत कहा तब राजानंद अपनेपुत्रको जैमिनिमुनिके पासलाया औ प्रार्थना की कि महाराज यहमेरा पुत्र उन्मत्त होगया है आप इसके आरोग्य होने का कोई उपाय बतावैं यह राजानंदका बचन सुन जैमिनिमुनि कुछ काल ध्यानकर बोले कि हे राजन् तेरे पुत्रको ध्यानकाष्ठ मुनिने शापदियाहै उस शापकी निवृत्तिका हम उपाय कहते हैं दक्षिण समुद्र के तटपर रामसेतु में सब पाप औ शाप हरनेवाला धनुष्कोटि नाम तीर्थहै वहां तेरेपुत्रको लेजाकर स्नान कराय तब यह आरोग्य होजायगा यह जैमिनि मुनिका बचनसुन राजानंद अपने पुत्रको धनुष्कोटि तीर्थपर लेआयाऔ स्नान कराया स्नान करतेही उसका उन्माद निवृत्त हुआ राजानंद ने भी धनुष्कोटि

में स्नान किया औ एक दिन उपवास कर रामनाथ का पूजन कर राजानंद तो तपकरने चला गया पीछेसे धर्मगुप्तने ब्राह्मणों को दानदिये औ भक्तिसे रामनाथका पूजनकिया कुछ दिन वहां रहकर अपने मंत्रियों समेत राजधानी को आया औ धर्मसे राज्य करनेलगा सूतजी कहते हैं कि हे मुनीश्वरो जो पुरुष भूत राक्षस ग्रह अपस्मार उन्माद आदिसे पीड़ित होय उनको धनुष्कोटि में अवश्य स्नान करना चहिये जो पुरुष धनुष्कोटि तीर्थ को छोड़ और तीर्थों को ढूंढता फिरै वह गोदुग्धको छोड़ थूहरके दुग्धको ढूंढने वाले मनुष्य के समान मूढ़ होताहै जो मनुष्य तीनकाल अथवा स्नान केही समय नित्य धनुष्कोटि का स्मरण करैं वे ब्रह्मलोक को जातेहैं हे मुनीश्वरो इस धर्म गुप्तकी कथा श्रवण करने से ब्रह्महत्या सुवर्णस्तेय आदि सब पाप नष्ट होते हैं॥

तैंतीसवां अध्याय॥

सूतजी कहते हैं कि हे मुनीश्वरो फिरभी हम धनुष्कोटि का प्रभाव वर्णनकरतेहैं जिसके श्रवणकरतेही सब पातकदूरहोजायँ पूर्बकाल में परावसुनाम वेदवेत्ता ब्राह्मण अज्ञान से अपने पिता को मार धनुष्कोटि तीर्थमें स्नानकर उस घोरहत्या से छुटा यह सुन ऋषियोंने पूछा कि हे सूतजी परावसुने अपने पिताको क्यों मारा औ फिर उस हत्यासे किसविधि छुटा यह आप वर्णनकरैं तब सूतजी कहनेलगे कि हे मुनीश्वरो बड़ा धर्मात्मा दृढद्युम्न नाम चक्रवर्ती राजा पूर्बकाल में हुआहै जिसने अनेक यज्ञ किये औ उसके यज्ञ करानेहारे रैभ्यमुनि थे उनके अर्वावसु औ परा-वसु ये पुत्र थे ये दोनों पुत्र वेद वेदांग श्रौत स्मार्त न्याय मीमांसा सांख्य योगशास्त्र आदि में निपुण थे रैभ्यमुनि ने एक समय इन दोनों को यज्ञ कराने के लिये राजा दृढद्युम्न के पास भेजा

औ रैभ्यमुनि अपनी बड़ी स्नुषा अर्थात् अर्वावसु की स्त्री सहित अपने आश्रम में रहे वे दोनों भाई भी पिताकी आज्ञा से राजा को यज्ञ करानेलगे सबकर्म सांगोपांग उननेकराये कहीं चूकेनहीं उस यज्ञ में राजा के निमंत्रण से वसिष्ठ गौतम अत्रि जावालि कश्यप क्रतुदक्ष पुलस्त्य पुलह नारद मार्कण्डेय शतानंद विश्वामित्र पराशर भृगु कुत्स वाल्मीकि व्यास धौम्य आदि अपने २ हजारों शिष्य प्रशिष्यों को साथ लिये आये औ चारों दिशाओं से बड़े २ राजा भांति २ की भेट लेकर उस यज्ञ में आये औ चारों वर्ण चारों आश्रम के मनुष्य उस यज्ञ में एकत्र हुवे राजा वृहद्युम्न ने सबका सत्कार किया औ अनेक प्रकार के उत्तम २ भोजन वस्त्र रत्न सुवर्ण गौ आदि देकर सबको संतुष्ट किया औ रैभ्यके पुत्रोंने सब यज्ञ कर्म ऐसी चतुरता से कराये कि वसिष्ठ आदि मुनीश्वरों ने भी उनकी बहुत प्रशंसा करी तीसरे सवनके अंतमें परावसु अपने घरको सँम्हालने आया औ अर्वावसु यज्ञ में रहा परावसु रात्रि के समय अपने आश्रम में पहुंचा आगे से मृगचर्म ओढ़े रैभ्यमुनि आते थे परावसु ने जाना कि कोई दुष्ट मृग मुझे मारने आता है इसलिये पहिले मैंही इसको मारडालूं यह विचार परावसु ने अपने पिताको मारदिया अंधकार था औ परावसु निद्रासे पीड़ित था इसलिये उसको यह धोखाहुआ मार कर समीपआया तब देखा कि यहतो मेरा पिताहै तब बहुत विलापकिया औ अपने पिताका सब प्रेतकृत्य किया औ फिर यज्ञ में आय सब वृत्तांत अपने छोटे भाई अर्वावसु से कहा वहभी सुन शोकसे रोदन करनेलगा फिर उसको परावसु ने कहा कि राजाका यज्ञ होरहा है तू इसका भार नहीं उठासकता औ मुझ से ब्रह्महत्या होगई उसका प्रायश्चित्त करना चहिये मैं अकेला भी यज्ञका भार उठा सकता हूं औ तू बालक है तुझ अकेले से

यहांका काम न चलेगा इसलिये मेरी हत्या निवृत्त के लिये तू व्रत धारणकर औ मैं यज्ञ कराऊंगा अर्वावसु ने भी अपने ज्येष्ठ भ्राता की आज्ञा अंगीकार करी औ अपने बड़े भाई परावसु को यज्ञमें छोड़ आप चलागया बारहवर्ष तक ब्रह्महत्या निवृत्त का व्रत औ तीर्थाटन अर्वावसु ने किया बारहवर्ष के अंतमें अर्वावसु फिर यज्ञमें आया उसको देखतेही परावसुने कहा कि हे राजन् यह ब्रह्महत्या किये तुम्हारे यज्ञ में आया है इसको शीघ्रही बाहिर निकलवाइये नहीं तो यज्ञ भ्रष्ट होजायगा यह सुनतेही राजा वृहद्युम्नने अपने सेवकों को आज्ञादी कि बहुतशीघ्र अर्वावसुको यज्ञसेबाहिर निकालो तबअर्वावसुनेकहाकि मैंने ब्रह्महत्या नहींकी ब्रह्महत्या तो मेरो ज्येष्ठभ्राता परावसुने करीहै औ इसके बदले मैंने बारह वर्ष पर्यंत प्रायश्चित्त कियाहै यह अर्वावसुका वचन किसी ने न माना औ उसको निकाल दिया औ सब ब्राह्मणों ने उसको धिक्कार दिया वहभी इस भांति अनादर पाय तपोवन में जाय उग्रतप करनेलगा उसने सूर्य भगवान् की प्रसन्नता के लिये ऐसा तप किया कि थोड़ेही कालमें सूर्यनारायण प्रसन्न हो प्रकट हुवे औ इंद्रआदि सब देवता भी वहाँ आये औ अर्वावसु से कहा कि हे अर्वावसु तू तप ब्रह्मचर्य वेद आचार शास्त्रज्ञान आदि करके श्रेष्ठ है परावसु ने तेरा निराकरण किया तौभी तू उसपर क्रोध नहीं करता परावसु ने पिताको मारा औ तैंने उसके बदले प्रायश्चित्त किया इसलिये हम तुझे स्वीकार करते हैं औ परावसु को त्यागते हैं फिर सूर्य आदि देवताओं ने कहा कि हे अर्वावसु और जो चाहै सो बर मांग तब अर्वावसु बोलाकि महाराज यही बर चाहता हूं कि मेरा पिता फिर जी उठै औ पिता के बधका वृत्तांत सब भूल जावे देवताओं ने यही बर अर्वावसु को दिये औ कहा कि औरभी बर मांग तब अर्वा-

वसु ने कहा कि यह वर मिलै कि मेरा भ्राता परावसु पिता की
हत्या से छुटै यह सुन देवताओं ने कहा कि हे अर्वावसु ब्राह्मण
तिसमें भी पिता उसको मारने से बड़ी हत्या परावसु को लगी
है औ पंच महापातकों में और के द्वारा प्रायश्चित्त करने से पातक
निवृति नहीं होती तिसमें ब्राह्मण पिताको मारने वाला तो
आप भी प्रायश्चित्त करै तौभी शुद्ध नहीं हो सकता इस लिये
परावसु किसी प्रकार शुद्ध नहीं हो सकता यह देवताओं का
बचन सुन फिर अर्वावसु ने प्रार्थना की कि महाराज आप अ-
नुग्रह करके कोई उपाय बतावैं जिस से मेरे भ्राता का उद्धार
होय यह आप मुझपर कृपा करैं तब देवताओं ने बहुत काल
बिचार कर कहा कि हे अर्वावसु एकउपाय हम बताते हैं दक्षिण
समुद्र के तीर रामसेतु में धनुष्कोटि नाम एक बड़ा तीर्थ है
उसमें स्नान करतेही सब पातक महापातक आदि निवृत्त हो
जातेहैं औ दुःस्वप्न ऋणदारिद्य अमंगल आदिका नाशहोकर धन
संतान आदि की वृद्धि होतीहै जो पुरुष निष्काम होकर स्नान
करैं वे मोक्ष पातेहैं जो धनुष्कोटि नामको भी स्मरण करता रहै
वह भी स्वर्ग औ मोक्षका अधिकारी होता है उस तीर्थमें जाकर
तेरा भ्राता स्नान करै तो उसी क्षण ब्रह्महत्या से छुटजाय यह
अति गुप्त बात हमने तुझको बता दी है इतना कह सब देवता
अपने २ धामको गये औ अर्वावसु भी अपने भ्राता को साथ ले
धनुष्कोटि पर पहुंचा वहां दोनों भ्राताओंने संकलपपूर्बक धनुष्को-
टि में स्नानकिया स्नानके अनंतर आकाशबाणी हुई कि हे परा-
वसु अब तू पिताकी हत्यासे छुटगया यहसुन परावसु बहुत प्रसन्न
हुआ औ अर्वावसुको साथले धनुष्कोटि को प्रणामकर औ भक्तिसे
रामनाथ महादेवका पूजनकर निष्पाप हो अपने आश्रमको आया
आश्रम में आकर देखा कि रैभ्यमुनि बैठे हैं उनको दोनों भाइयोंने

प्रणाम किया रैभ्यमुनि भी अपने पुत्रोंको देख बहुत प्रसन्न हुआ औ परावसु को निष्पाप जान सब मुनियोंने भी ग्रहण करलिया हे मुनीश्वरो इस प्रकार धनुष्कोटिके प्रभाव से परावसु पितृहत्या से छुटा और भी महापातक धनुष्कोटि में स्नान करतेही निवृत्त होते हैं जो पुरुष इस अध्यायको पढ़े अथवा श्रवणकरै वह भी सब पातकों से मुक्त होजाता है ॥

चौंतीसवां अध्याय ॥

सूतजी कहतेहैं कि हे मुनीश्वरो फिर भी हम धनुष्कोटि का प्रभाव वर्णन करतेहैं पूर्वकाल में एक बानर औ एक जंबुक दोनों मित्र थे पहिले जन्म में वे दोनों मनुष्य थे तब भी उनका बड़ा स्नेह था औ बानर जंबुक हुवे तब भी दोनों परस्पर स्नेह रखते औ दोनों जातिस्मर थे एकदिन वह जंबुक श्मशान के बीच किसी मृतक के शरीर को खाताथा तब बानर ने कहा कि हे मित्र तैंने पूर्वजन्म में क्या पाप कियाथा कि श्मशान में दुर्गंधयुक्त मनुष्य मांस तू भक्षण कररहा है तब जंबुक कहनेलगा कि हे मित्र मैं पूर्व जन्ममें वेद शास्त्र के जाननेवाला देवशर्मा नाम ब्राह्मण था मैंने ब्राह्मण को धन देना कहकर फिर न दिया उसी पाप से मैं जंबुक हुआ औ उसी पाप से यह मनुष्य मांस खाताहूं जो दुष्ट पुरुष स्वीकार करके फिर ब्राह्मण को नहीं देते वे अवश्य जंबुक योनि में प्राप्त होतेहैं औ उनके दशजन्म के किये पुण्य उसी क्षण नष्ट होजातेहैं औ वह पाप सौ अश्वमेध करने से भी निवृत्त नहीं होता अब मैं नहीं जानता कि इस पाप से कब छुटूंगा ब्राह्मण को देना स्वीकार करके अवश्य देना चहिये नहीं तो जंबुक योनि में अवश्यही जन्म लेना पड़ता है इतना कह जंबुक ने पूछा कि हे मित्र तैंने क्या पाप किया जिससे बानर हुआ औ बिना अपराध

बनचर पक्षियों को मारता फिरता है तब बानर कहनेलगा कि पूर्बजन्ममें मैं भी वेदनाथ नाम ब्राह्मण था औ मेरे पिता का नाम विश्वनाथ औ माताका नाम कमला था पूर्बजन्ममें भी तेरे साथ मेरी मैत्री थी यह तूभी जानता है मैंने शिवजीका इतना आराधन किया कि मैं त्रिकालज्ञ हुआ परंतु एक दिन किसी ब्राह्मण का शाक मैंने हरलिया उसी पापसे मुझे बानर होना पड़ा इसलिये कभी ब्राह्मण की कोई बस्तु नहीं हरनी चहिये विष तो खानेवाले कोही मारता है औ ब्राह्मण का धन समेत कुलके नाश करताहै ब्राह्मण धन को हरनेवाला पुरुष बहुत दिन कुंभीपाक नरक में रहकर बानर होता है ब्राह्मण चाहै बालक दरिद्र कृपण मूर्ख चाहे जैसा हो उसका अनादर न करना चहिये और तो मुझे सब ज्ञानहै परंतु इस पापके निवृत्त होनेका उपाय नहीं जानता तूभी जातिस्मरहै परंतु किसी प्रतिबंधसे भूत औ भविष्य तूनहींजानता अब हे मित्र यह दोनों नहीं जानते कि इन पापयोनियों से कब छुटैंगे इसप्रकार दोनों बार्तालाप कररहेथे इतने में वहां सिंधुद्वीप ऋषि आ निकले जो रुद्राक्ष औ बिभूति से भूषित औ शिवजीका नाम लेते मानो साक्षात् शिवहीथे उनको देख बानर औ जंबुकने भक्तिसे प्रणाम किया औ प्रार्थना करी कि महाराज हमको कोई ऐसा उपाय कृपा करके बतावें जिससे हम दोनों दुष्टयोनियों से छुटैं आप जैसे महात्मा अनाथ कृपण मूर्ख बालक रोगी दुःखी आदि जीवोंकी रक्षा करते हैं यह उनका दीन बचन सुन बहुत काल ध्यानकर सिंधुद्वीप मुनि बोले कि हे शृगाल तैंने एक सेर धान ब्राह्मणको देनेकरके फिर न दिये इससे तू जंबुक हुआ औ हे बानर तैंने ब्राह्मण के घरमें शाक चोरा इसलिये सब पक्षियों को भय देनेहारी बानर योनिमें प्राप्त हुआ अब तुम्हारे उद्धार के लिये हम उपाय बतातेहैं दक्षिण समुद्र में धनुष्कोटि तीर्थहै उस

तीर्थमें जाकर स्नानकरो तब इस पापयोनि से मुक्तहोगे पूर्वकाल में सुमतिनाम ब्राह्मण ने एक किराती स्त्री अर्थात् भीलनी के संग से सुरापान किया तब धनुष्कोटि में स्नानकर शुद्धहुआ यहसुन जंबुक औ वानर ने पूछा कि महाराज सुमति कौन था औ उसने किरात स्त्री के संगसे क्योंकर सुरापान किया यह आप वर्णन करें तब सिन्धुद्वीपमुनि कहनेलगे कि महाराष्ट्र देश में वेद औ शास्त्र का जाननेहारा यज्ञदेवनाम एक ब्राह्मणथा वह सदा अतिथियों का पूजन औ शिवार्चन कियाकरता उसके सुमति नाम एक पुत्रथा वह अपने माता पिता औ पतिव्रता भार्या को छोड़ बिटों के साथलग उत्कलदेश को चलागा उसदेशमें एक युवती किराती रहती थी जो तरुण पुरुषों को अपने रूपसे वश करके उनके धन हरती थी सुमति ब्राह्मणभी उसके घरगया परंतु इसके पास धन न था इस कारण उसस्त्री ने इसका कुछ आदर न किया तब यह उदास हो चलाआया परंतु वह मनमें बसगई थी इसलिये नित्य चोरी करनेलगा कुछ काल में थोड़ा धन एकत्र करके उसके पासगया औ वहधन उसको दिया तब वह प्रसन्न हुई उसदिन से सुमति उसीके घरमें रनेहलगा औ नित्य उसके साथ भोजन करता औ दोनों एकही चषक अर्थात् प्यालेमें मद्य पीते औ रात्रि को एकत्र सोते इसप्रकार सुमति वहांही आसक्त होगया माता पिता औ अपनी पतिव्रता पत्नीको भूलगया एक दिन वह किरातों के साथ लगकर चोरी करने निकला वे सब लाट देशमें पहुंचे रात्रिको चोरीकरने के लिये एक ब्राह्मण के घरमें घुसे वह ब्राह्मण जगउठा तब सुमति ने खड्ग से उसके दो टुकड़े करडाले औ बहुत सा धन वहांसे ले किरातीके घरको चला परंतु अति भयंकर नीलेवस्त्र पहिने लाल जिसके केश गर्जती औ भूमि को कँपाती ब्रह्महत्या उसके पीछे लगी उसके

भयसे सुमति सब देशों में दौड़ता फिरा परन्तु वह हत्या पीछे लगीही रही तब वह अपने ग्राममें पहुंचा औ पिताके पास जाकर पुकारा कि हे पिता मेरी रक्षाकर यह पुत्र का दीन बचन सुन पिताने कहाकि मतडर मैं तेरी रक्षाकरताहूं तब ब्रह्महत्या बोली कि हे ब्राह्मण इसकी रक्षा का यत्न मतकर यह बड़ा पातकी है इसने माता पिता औ पतिब्रता पत्नी का त्यागकिया फिर किराती का संग कर सुरापान किया चोरी की औ ब्राह्मण का बधकिया इसलिये इसको मैं नहीं छोड़ती औ तेरे संपूर्ण कुटुंब को भक्षण करूंगी इस पुत्रको जो तू छोड़देगा तो तेरा कुटुम्ब बच जायगा औ तुझेभी एक पुत्रकेलिये सब कुटुंब का नाश करना उचित नहीं इसलिये तू इसको त्यागदे यह ब्रह्महत्या का वचन सुन यज्ञदेव ब्राह्मण बोला कि पुत्र का स्नेह बहुत बलवान् है इसलिये मैं इसका त्याग नहीं करसकता तब फिर हत्या ने कहा कि इस पतित का मोह मतकर इसके दर्शनसे भी पाप लगता है इतना कह हत्या ने एक थप्पड़ सुमति के मारा कि वह रोनेलगा औ हेमाता हेपिता कहकर चिल्लाने लगा तब उसके माता पिता औ भार्या भी दुःखसे रोदन करनेलगे इसी अवसर में शिवजी के अवतार दुर्वासा मुनि वहां आ निकले तब यज्ञदेव ने उनको प्रणाम किया औ बहुतसी स्तुति करके प्रार्थनाकरी कि महाराज आप साक्षात् शिवजी का अंशहैं आप का दर्शन पापी पुरुषों को कभी नहीं होसकता यह मेरापुत्र बड़ा दुराचारीहै औ ब्रह्महत्या इसके पीछे लगीहै वह इसको मारना चाहती है अब आप कृपा कर ऐसा उपाय बतावें जिससे यह इस हत्यासे छुटे यह एकही मेरापुत्र है इसके मरजाने से मेरा बंश उच्छिन्न होजायगा औ पितरों को पिंड देनेवाला कोई न रहै गा इसलिये आप कृपा करें यह ब्राह्मण का वचन सुन दुर्वासा मुनि ने बहुत काल ध्यान

कर कहा कि हे यज्ञदेव यह तेरापुत्र बड़ा पातकी है इसके पातक निवृत्त करनेहारा कोई प्रायश्चित्त नहीं परन्तु हम एक उपाय बताते हैं सावधान होकर सुनो दक्षिण समुद्र में राम धनुष्कोटि तीर्थ में जो तेरापुत्र स्नानकरै तो तत्क्षणही पातकों से मुक्त होजाय उसतीर्थ में स्नान करने से दुर्विनीत नाम ब्राह्मण गुरुदार ग-मन पातक से मुक्त हुआ वह रामचन्द्रजी का बनाया धनुष्कोटि तीर्थ सब पातक हरने में समर्थ है उसी तीर्थ के स्नान करने से तेरापुत्र शुद्ध होजायगा ॥

पैंतीसवां अध्याय॥

यज्ञदेव ने पूछा कि महाराज दुर्विनीत कौनथा औ उसने गुरुस्त्री गमन क्योंकर किया औ धनुष्कोटि में स्नान कर उस महापातक से क्योंकर छुटा यह आप कृपाकर मुझे कथन करें तब दुर्वासा मुनि कहने लगे कि हे यज्ञदेव पांड्यदेश में बहुत शास्त्र जानने हारा इध्मवाह नाम एक ब्राह्मण था औ उसकी रुचिनाम भार्य्याथी उनके दुर्विनीतनाम एकपुत्र हुआ वह बाल-कही था तब यज्ञदेव मृत होगया दुर्विनीत ने अपने पिता का औध्र्व दैहिक कृत्यकिया कुछदिन तो अपने घरमें रहा पीछे बा-रह वर्षका दुर्भिक्ष पड़ा तब अपनी माता समेत देशांतर को नि-कला औ गोकर्ण में पहुंचा वहां सुभिक्ष था इस कारण वहांही दोनों रहनेलगे कुछ कालमें दुर्विनीत तरुण होगया एकदिन ऐसा कामके वश हुआ कि बलात्कार से अपनी माता को पकड़ उसके साथ मैथुन किया औ वह पुकारती रही परन्तु यह काम करके अंधा होरहा था इसलिये कुछ न सुना औ यह महापातक कर शोचने लगा कि मैंने बड़ा घोरपातक किया अब मेरा उद्धार क्योंकर होगा मैंने अपनी जननी से संगकिया यह शोचकर

रोदन करने लगा बहुत काल दुःखसे रोदन कर अपनी निंदा करता हुआ मुनि समाज में गया औ मुनियों से प्रार्थनाकरी कि महाराज मुझको गुरुदारगमन पातक का प्रायश्चित्त बताइये जोशरीर त्यागने से मेरी शुद्धताहोय तो मैं करूं अथवा और कोई प्रायश्चित्त आप कहैं तो वह करूं यह उसका वचन सुन कई मुनि तो मौन होगये कि इसके साथ वार्त्ता करने से पातक लगताहै औ कोई मुनि उसको कहनेलगे कि रे पातकी तैंने मातृ गमनकिया है इसलिये हमारे संमुख मतखड़ा हो जल्दी चला जा उन सब मुनियों को निवारणकर परम दयालु श्रीवेदव्यास जी बोले कि हे ब्राह्मण पुत्र तू अपनी माता सहित धनुष्कोटि तीर्थ परजा औ जितेंद्रिय जितक्रोध औ निराहार होकर मकर के सूर्यमें एकमास पर्यंत नित्य स्नानकरो तब तुम दोनो निष्पाप होजाओगे ऐसा कोई पाप नहीं जो धनुष्कोटि में स्नानकरने से निवृत्त न होय श्रुतिस्मृति औ पुराणों में धनुष्कोटि की बड़ी प्रशंसा लिखीहै वह तीर्थ महापातक निवृत्त करने में समर्थहै हे ब्राह्मणपुत्र हमारे वाक्यको वेदके तुल्यमान औ शीघ्रही धनुष्कोटि तीर्थपरजा करोड़ों महापातक भी उस तीर्थमें स्नानकरने से निवृत्त होतेहैं यह व्यासजीका बचनसुन उनको प्रणामकर अपनी माताको संगले दुर्विनीत धनुष्कोटि पर पहुँचा वहांजाय निराहार औ जितेंद्रिय रहकर दोनों माता पुत्र स्नान करनेलगे संकल्प पूर्बक एक महीने पर्यंत स्नान किया औ नित्य त्रिकाल रामनाथ का पूजनकिया इसविधि मकर के सूर्यमें स्नानकर महीने के अंतमें पारणकिया औ दोनों फिर व्यासजीके पासआये औ प्रणामकर व्यासजीसे प्रार्थनाकी कि महाराज आपकी आज्ञानुसार माघमास में निराहार रहकर हमने धनुष्कोटि में स्नान किया औ नित्य रामनाथका पूजनकिया अब और जो आज्ञा आप

करें वहकीजाय यह उसका वचनसुन व्यासजीबोले कि हेदुर्वि-
नीत अब तुम दोनों निष्पाप होगये इसमें कुछ संदेह मतकरो
अब तुम्हारे बांधव औ ब्राह्मण तुमको ग्रहण करलेंगे हेदुर्विनीत
हमारे प्रसादसे तू शुद्धहुआ अब जाकर विवाहकर औ गृहस्था-
श्रममें रहकर धर्मका सेवनकर जीवहिंसा मतकर औ भक्तिसे
सज्जनों का सेवनकर संध्यावंदन आदि कर्मोंको कभी मतछोड़
जितेंद्रियहो नित्य शिव औ विष्णुका पूजनकर द्वेषमतकर औ
किसीकी निंदा करने में प्रवृत्त मतहो दूसरे का ऐश्वर्यदेख मनमें
संताप मतकर परस्त्रीको माता के समान समझ पढ़ेहुये वेदोंको
मतभूल अतिथियों का अनादर मतकर पितृ दिनमें श्राद्धकर
किसीका पैशुन्य अर्थात् चुगली स्वप्नमेंभी मतकर इतिहास पुराण
धर्मशास्त्र वेदांत वेद वेदांग आदि नित्य देखतारह शिव औ विष्णु
के नामसदा उच्चारण करतारह जाबालोपनिषदके मंत्रोंसे भस्मो-
द्धूलन औ त्रिपुंड्र कर रुद्राक्ष धारणकर शौच औ आचारमें तत्पर
हो तुलसी औ बिल्वपत्र करके त्रिकाल दोकाल अथवा एकही
काल नित्य नारायण औ सदाशिवका अर्चनकर औ तुलसीदल
करके युक्त औ चरणोदक से प्रोक्षित नैवेद्य सदाभोजनकर अन्न
शुद्धिके लिये बलिवैश्व देवकर ब्रह्मचारी भिक्षु वृद्ध रोगी आदि
जो घरमें आवे उसको भोजन आदिसे संतुष्टकर नित्य माताकी
शुश्रूषाकर पंचाक्षर षडक्षर अथवा अष्टाक्षर मंत्रका नित्य जपकर
इसप्रकार औरभी श्रुतिस्मृति प्रोक्त धर्मोंका सेवनकर इस आच-
रणसे देहांत होनेपर अवश्यही मुक्तिपावैगा यह व्यासजीकी
आज्ञा पाय अपने घरगया औ बहुतकाल गृहस्थ धर्मका सेवन
कर अंतमें मुक्तहुआ औ उसकी मातानेभी धनुष्कोटि के प्रभाव
से सद्गतिपाईइतनी कथासुनाय दुर्वासामुनिने कहा कि हेयज्ञदेव
यह दुर्विनीतकी कथा हमने तुझको सुनाई अब तूभी इस अपने

पुत्रको साथले धनुष्कोटिकोजा सिंधुद्वीपऋषि कहतेहैं कि हेजंबुक हेबानर दुर्बासामुनिकी आज्ञापाय यज्ञदेव अपनेपुत्रकोधनुष्कोटि तीर्थपर लेगया वहां दोनों छःमहीने रहे यज्ञदेव नित्य अपने पुत्र को धनुष्कोटिमें स्नान कराता छःमहीने के अंतमें आकाशवाणी हुई किहेयज्ञदेव तेरेपुत्रकी ब्रह्महत्या निवृत्तहुई औ चोरी सुरापान किरातीसंग आदि सब पापोंसे छुटगया इसमें तू संशय मतकर यह आकाशवाणीसुन यज्ञदेव बहुत प्रसन्नहुआ औ रामनाथका पूजनकर धनुष्कोटिकी प्रशंसा करताहुआ अपने पुत्रको साथले अपने घरआया औ सुख से रहनेलगा इतनाकह सिंधुद्वीपऋषि ने जंबुक औ बानर से कहा कि तुम दोनोभी धनुष्कोटिमें स्नान करो तब निष्पाप होगे और कोई उपाय तुम्हारे निष्पाप होनेका नहींहै सूतजी कहते हैं कि हेमुनीश्वरो सिंधुद्वीपऋषिसे यह उपदेशपाय जंबुक औ बानर किसी प्रकार धनुष्कोटि तीर्थपर पहुँचे वहां जाय दोनोंने स्नानकिया स्नान करतेही दिव्य देह होगये औ विमानमें बैठ उत्तम भूषण वस्त्र आदिसे शोभितहो स्वर्ग को गये हेमुनीश्वरो धनुष्कोटिके प्रभावसे इसप्रकार बानर औ जंबुक सद्गतिको प्राप्तहुवे इसअध्यायको जोपढ़ै अथवासुनै वहधनुष्कोटि तीर्थके स्नान फलको पाय उस गतिको पाताहै जो योगियों को भी दुर्लभ है ॥

छत्तीसवां अध्याय ॥

सूतजी कहते हैं कि हे मुनीश्वरो धनुष्कोटिका माहात्म्य कहां तक बर्णन करें जहां स्नान कर एक बड़ा पातकी दुराचार नाम ब्राह्मण पापसे मुक्त हुआ यहसुन मुनियों ने पूछा कि हे सूतजी दुराचार कौनथा औ उसने क्या पापकिया औ फिर धनुष्कोटि में स्नानकर क्योंकर निष्पापहुआ यह आप बर्णनकरैं तबसूतजी

कहनेलगे कि हे मुनीश्वरो दुराचार नाम एक ब्राह्मण बड़ा क्रूर औपापी गोदावरी नदी के तटपर रहताथा वह सदा महापातकी मनुष्यों का संग रखता इससे वहभी महापातकी होगया और ब्राह्मणपना जातारहा जो ब्राह्मण एकदिन महापातकी का संग करै उसका ब्राह्मणत्व चतुर्थांश जता रहता है दो दिन महापातकी के साथ शयन भोजन सहवास आदि करने से आधा ब्राह्मणत्व रहजाता है तीन दिन के संसर्ग से तीन भाग ब्राह्मणत्व नष्ट होजाता है औ चौथे दिनभी महापातकी का संसर्गकरै तो सम्पूर्ण ब्रह्मणत्व नष्ट होजाता है चारदिनके अनंतर भी उनका संग करतारहै तो वहभी महपातकी होजाता है महापातकी मनुष्योंके संगसे दुराचारका सब ब्राह्मणपना जातारहा औ वह भी महापातकी होगया तब उसको एकभयंकर बेतालने आक्रांत करलिया वहभी बेतालाविष्ट हुआ २ देश २ औ बनबन में भटकने लगा दैवयोग से कुछ काल में धनुष्कोटि तीर्थ में कूद पड़ा तीर्थ का जलस्पर्श होतेही बेताल ने उसको छोड़ दिया दुराचार भी तीर्थ से बाहिर निकल बिचार करनेलगा कि यह कौन देश है समुद्र का तीर देख पड़ता है मैं गौतमी नदी के तटपर रहनेवाला यहाँ क्योंकर आया इतने में वहाँ दत्तात्रेयमुनि देखे दुराचार उनके चरणों पर गिरा औ प्रार्थना करनेलगा कि महाराज मैं गोदावरी तटनिवासी दुराचार नाम ब्राह्मण हूं मैं इस देश में क्योंकर आया औ यह कौन देश है आप कृपाकर मेरा संशय निवृत्तकरैं यह उसका बचन सुन क्षण मात्र बिचारकर परम दयालु दत्तात्रेयमुनि बोले कि हे दुराचार तैंने महापातकी मनुष्यों का संसर्ग किया इससे तेरा ब्राह्मणत्व नष्ट होगया तब तुझे बेताल ने ग्रहण किया वही तुझे यहाँ ले आया औ धनुष्कोटितीर्थ मेंभी तुझै उसी ने डुबोना चाहा परन्तु

तीर्थ का जल स्पर्श होतेही तू निष्पाप होगया इसलिये उस बेताल ने तुझे छोड़ दिया धनुष्कोटि तीर्थ में स्नान करने से सब पातक निवृत्त होजाते हैं इसी से तेरा भी संसर्ग दोष निवृत्त हुआ औ बेताल ने तुझे छोड़ा जिस बेताल ने तुझे ग्रहण किया वह भी पूर्वजन्म में ब्राह्मण था उसने महालय पक्ष में पितरों का श्राद्ध नहीं किया इसलिये पितरोंके शापसे वह बेताल हुआ वहभी धनुष्कोटि का दर्शन करतेही बेतालत्व से छुट विष्णुलोक को गया जो पुरुष आश्विन कृष्णपक्ष में श्राद्ध नहीं करते वे लोभी पितरोंके शापसे बेताल होते हैं औ जो पुरुष उस पक्ष में पितरों के निमित्त ब्राह्मणों को उत्तम २ भोजन देते हैं वे कभी दुर्गति को नहीं प्राप्त होते सामर्थ्य के अनुसार एक दो तीन अथवा बहुत ब्राह्मणों को अवश्यही भोजन कराना चाहिये पितरों का श्राद्ध इसने नहीं किया इस से बेताल हुआ औ तुझे महा पातकी जान इसने ग्रहण किया भाद्र से लेकर वृश्चिकपर्यंत महालय का कालतत्व दर्शी मुनीश्वरों ने कहाहै उसमेंभी आश्विनमास औ आश्विनमास में कृष्ण पक्ष उत्तम है आश्विन कृष्ण प्रति पदाको जो मनुष्य भक्ति से श्राद्ध करै उसके ऊपर अग्नि देवता प्रसन्न होता है औ श्राद्ध करनेहारा पुरुष अग्नि लोक में जाकर अग्नि के समीप सुख पूर्वक निवास करते हैं औ अग्नि के अनुग्रह से प्रतिपदा को श्राद्ध करनेहारा सब ऐश्वर्य पाता है जो प्रतिपदा को महालय श्राद्ध नकरे उसके गृह क्षेत्र औ ऐश्वर्य आदि को अग्निदग्ध करता है प्रतिपदा के दिन एक वेदवेत्ता ब्राह्मणको भी भोजन करावे तो दशकल्प तक पितर तृप्त रहते हैं द्वितीया के दिन जो महालयश्राद्ध करै वह शिव जीके अनुग्रह से बड़ी संपत्ति पाता है औ शिवजी प्रसन्न होकर उसको कैलास में बास देते हैं द्वितीया के दिन जो

श्राद्ध न करै उसके ब्रह्मवर्चस को शिवजी कोप करके नाश करते हैं औ वह पुरुष रौरव काल सूत्र आदि नरकों में निवास करता है द्वितीया को एक ब्राह्मण को भी भोजन करावै तो बीस कल्प पर्यंत उसके पितर तृप्त रहते हैं औ पितरों के अनुग्रह से सन्तान की वृद्धि होती है तृतीया के दिन श्राद्ध करने से कुबेर तृप्त होता है औ महापद्म आदि निधि देता है जो तृतीया को श्राद्ध न करै वह दरिद्री औ दुःखी रहता है औ तृतीया को श्राद्ध करने से तीस हजार कल्प पितर तृप्त रहते हैं चतुर्थी को श्राद्ध करने से गणेश जी प्रसन्न होते हैं औ सब विघ्न निवृत्त करते हैं जो चतुर्थी को श्राद्ध न करै उसके सब कार्यों में गणेशजी विघ्न करते हैं औ वह पुरुष चंड कोलाहल नाम नरक में गिरता है चतुर्थी को श्राद्ध करने से चालीस हजार कल्प पर्यन्त पितर तृप्त रहते हैं औ श्राद्ध करनेहारे को बहुत पुत्र देते हैं पंचमी को श्राद्ध करने से लक्ष्मी प्रसन्नहोती है औ बहुत संपत्ति देती है दिन २ उस पुरुष की कीर्ति बढ़ती है जो पुरुष पंचमी को श्राद्ध न करै उसके घरको लक्ष्मी त्यागदेती है औ अलक्ष्मी का निवास होता है पंचमी को श्राद्ध करने से पचास हजार कल्प पितर तृप्त रहते हैं औ उसके वंश का विच्छेद नहीं होता औ पार्वती भी प्रसन्न होती हैं षष्ठीको श्राद्ध करने से स्वामिकार्तिकेय प्रसन्न होते हैं औ उसके पुत्र पौत्रों को ग्रह औ बालग्रह कभी पीड़ा नहीं देते औ जो श्राद्ध न करै उस के बालकों को जन्म लेतेही पूतना आदि ग्रह हरलेते हैं औ वह पुरुष वह्निज्वाला प्रवेश नामक नरक में गिरता है षष्ठीको श्राद्ध करने से साठ हजार कल्प पितर तृप्त रहते हैं औ पुत्र तथा संपत्ति को देते हैं सप्तमी को श्राद्ध करने से सुवर्ण हस्त श्री सूर्य भगवान् प्रसन्न होकर अपने हाथ से सुवर्ण देते हैं औ आरोग्य भी देतेहैं

जो पुरुष सप्तमी को श्राद्ध न करै वह अनेक रोगों करके पीड़ित रहता है औ तीक्ष्ण धारास्त्र शय्या नाम नरक में गिरता है औ सप्तमी श्राद्ध करने से सत्तर हजार कल्पतक पितर तृप्त रहतेहैं औ अविच्छिन्न सन्तान भी देते हैं अष्टमी को श्राद्ध करने से मृत्युंजय सदा शिव प्रसन्न होते हैं शिवजीके प्रसन्न होनेसे कोई पदार्थ भी दुर्लभ नहीं मुक्ति तो हाथ परही रक्खी है जो अष्टमी को श्राद्ध न करै उसका कोई मनोरथ सिद्धनहीं होता औ वह संसार सागर में डूबाही रहता है कभी मुक्ति नहीं पाता औ वैतरणी नरक में गिरता है अष्टमी को श्राद्ध करनेसे अस्सीहजार कल्प पितर तृप्तरहते हैं औ अविच्छिन्न संतान देते हैं औ सब विघ्न निवृत्त करते हैं नवमी को श्राद्ध करनेसे दुर्गा भगवती प्रसन्न होती है औ क्षय अपस्मार कुष्ठ भूत प्रेत पिशाच आदि को निवृत्त करती है जो पुरुष नवमी को श्राद्ध न करै वह अपस्मार आदि रोग औ ब्रह्मराक्षस अभिचार कृत्या आदि करके पीड़ित होता है उसदिन श्राद्ध करने से नब्बे कल्प तक पितर तृप्तरहतेहैं औ अविच्छिन्न संतान देते हैं दशमी को श्राद्ध करनेसे चंद्रमा प्रसन्न होतेहैं औ उसकी खेती अच्छी लगतीहै औ दशमीको श्राद्ध न करनेसे खेती निष्फल होती है दशमी को श्राद्ध करनेसे सौहजार कल्प पितर तृप्तरहते हैं औ अविच्छिन्न संतान देते हैं एकादशी को श्राद्ध करनेसे सब लोक का संहार करनेहारे रुद्र भगवान् प्रसन्न होतेहैं रुद्रभगवान् के प्रसन्न होनेसे सब शत्रुओं को जीतता है ब्रह्महत्या आदि पातक निवृत्त होते हैं औ अग्निष्टोम आदि यज्ञों का फल प्राप्तहोताहै औ जो पुरुष श्राद्ध न करै वह शत्रुओं करके पीड़ित रहता है औ उसके सब यज्ञ निष्फल होतेहैं एकादशी को श्राद्ध करनेसे दोसौ हजार कल्प पितर तृप्त रहते हैं औ अविच्छिन्न संतान देतेहैं द्वादशी को श्राद्ध करनेसे

विष्णु भगवान् प्रसन्न होते हैं विष्णुभगवान् के प्रसन्न होने से चराचर जगत् संतुष्ट होताहै दिन २ संपत्ति बढ़ती है भगवान् की कौमोदकी गदा उसके सब रोगों का नाश करतीहै सुदर्शन चक्र शत्रुओं का संहार करता है औ पांचजन्य शंख अपनी ध्वनि से भूत प्रेत राक्षस आदि के भयको निवृत्त करता है इसप्रकार सब पीड़ा को विष्णु भगवान् हरते हैं जो द्वादशी को श्राद्ध न करै उसकी संपत्ति नष्ट होजाती है औ अपस्मार आदि रोग भूत प्रेत राक्षस शत्रु आदि पीड़ादेते हैं औ अस्थिभेदन नाम नरक में गिरता है द्वादशी को श्राद्ध करने से छःसौहजार कल्प पितर तृप्तरहते हैं औ अविच्छिन्न संतान देतेहैं त्रयोदशी को श्राद्ध क-रनेसे कामदेव प्रसन्न होताहै उत्तम २ स्त्री वस्त्र भूषण माला आदि प्राप्त होती हैं औ जन्म भर सुखी रहता है जो त्रयोदशी को श्राद्ध न करै वह कोई भोगनहीं पाता औ अंगारशय्या नाम नरक में गिरता है जो त्रयोदशी को महालय श्राद्ध करै उसके पितर हजार कल्प तृप्त रहते हैं औ अविच्छिन्न सन्तान देते हैं चतुर्दशी को श्राद्ध करने से शिवजी प्रसन्न होते हैं औ सब मनोरथ सिद्ध करतेहैं औ ब्रह्महत्या सुरापान सुवर्णस्तेय आदि पातक तत्क्षण निवृत्त होजातेहैं औ अश्वमेध पौंडरीक आदि यज्ञों का फल प्राप्तहोता है जो पुरुष चतुर्दशी को महालय न करै वह करोड़ों वर्ष संसार रूप अन्धकूप में पड़ारहता है कभी उसकी निष्कृति नहीं होती औ महापातक बिना कियेही महा-पातकोंसे लिप्तहोता है औ उसके यज्ञ आदि सब कर्म निष्फल होते हैं जो पुरुष चतुर्दशी को भक्तिसे महालय श्राद्धकरै उसके पितर नरक में होंय तो स्वर्गको जायँ औ करोड़ों कल्प तृप्तरहैं औ अविच्छिन्न संतान देवैं अमावास्या को श्राद्धकरै तो अनंत-काल तक उसके पितर तृप्त रहैं अमृत पान से जैसी तृप्ति देव-

तात्रों को होती है वैसीही तृप्ति अमावास्या को श्राद्ध करने से पितरों को होती है यह तिथि महापुण्यदाहै औ देवता तथा पितरों की प्रिया है औ शिवजी को भी बहुत प्रिया है अमावास्या को श्राद्धकरनेसे शिवजी प्रसन्न होते हैं ब्रह्महत्या आदि पातक निवृत्त होजाते हैं औ सब कर्म सफल होते हैं औ श्राद्ध करने-हारा पुरुष मोक्ष को प्राप्तहोता है जो पुरुष अमावास्या को श्राद्ध न करै उसके पितर ब्रह्मलोक में होंय तो भी नरकको चलेजाते हैं औ वंशभी विच्छिन्न होजाता है यह बड़ा अनर्थ है कि महालय की अमावास्या को श्राद्ध न करै औ ब्राह्मणों को भोजन न करावे आश्विन की अमावास्या को पितर नृत्यकरते हैं कि आज हमारे पुत्र ब्राह्मण भोजन करावेंगे जिससे हम नरक क्लेशसे छुट स्वर्ग को जायँगे आश्विन कृष्णपक्ष में पितरों की तृप्ति के लिये नित्यही ब्राह्मण भोजन करावै उसके मातृकुल औ पितृकुलके पितर कई कल्प पर्यंत अमृत पान करके तृप्त रहते हैं सप्तमीसे लेकर अमावास्या पर्यंत नित्य तीन २ ब्राह्मणों को भोजन करावै द्वादशीसे अमावास्या पर्यंत तो अवश्यही ब्राह्मण भोजन करावै जो ब्राह्मण भोजन न करावै उसका ऐश्वर्य भंग होजाताहै औ वह महा दारिद्यको प्राप्तहोताहै इसलिये धनका लोभछोड़ अनेक प्रकारके भोजन वेदवेत्ता ब्राह्मणोंको करावै औ उनको संतुष्ट करै ब्राह्मणों के तृप्तहोने से ब्रह्मा विष्णु शिव इंद्र आदि देवता औ अग्निष्वाता आदि पितर तृप्तहोते हैं औ तीनों लोक तृप्तहोते हैं पार्वण विधानसे महालय श्राद्ध करनाचहिये औ यथाशक्ति दक्षिणा देनीचहिये दक्षिणामें वित्तशाठ्य न करै दक्षिणासे यज्ञ सफल होताहै विधवा औ अपुत्रा स्त्री भी अपने पतिके उद्देश से महालय श्राद्ध में ब्राह्मण भोजन करावै नहींतो धर्मकी हानि होतीहै औ वह स्त्री नरक को जातीहै आश्विन मासमें जो

पुरुष महालय श्राद्ध नहींकरते उनका वंश उच्छिन्न होजाता है
औ ब्रह्महत्या को वे पुरुष प्राप्त होते हैं औ जो पुरुष भक्ति से
श्राद्धकरते हैं उनका वंशकभी उच्छिन्न नहीं होता औ संपत्ति
भी स्थिर रहती है मह नाम कल्याण का है औ आलय स्थान
को कहते हैं कल्याण का स्थान होने से महालय कहाता है
इससे कल्याण प्राप्तिके लिये महालय श्राद्ध अवश्यही करना
चहिये महालय श्राद्ध न करै तो अमंगल होताहै जो माता पिता
के क्षयाह श्राद्ध न करै तोभी महालय श्राद्ध तो अवश्यहीकरै कभी
न भूलै जो महालय श्राद्धकरनेका सामर्थ्य न होय तो याचना करके
भी महालय श्राद्ध करै परंतु उत्तम ब्राह्मणों से धन धान्य लेवै
पतितोंको कभी याचना न करै ब्राह्मणसे धन न मिलै तोक्षत्रियसे
क्षत्रियसे भी धन न मिलै तो वैश्यसे याचना करै औ वैश्यसे भी
नहीं प्राप्तिहोय तो पितरोंकी तृप्तिकेलिये गोग्रास देवै औ गोग्रा-
स देनेका भी सामर्थ्य न होय तो जंगलमें जाय ऊंचेस्वरसे रोदन
करै औ आंसू डालता हुआ दोनों हाथोंसे अपने पेटको पीटकर
यह कहै कि हेपितरो मैंनिर्लज्ज कृपण दरिद्री औ क्रूर कर्म करने
हारा हूं महालय श्राद्ध करने का मेरा सामर्थ्य नहीं संपूर्ण पृथि-
वी पर याचना करनेसे भी मुझे कुछ न मिला इसलिये तुम्हारा
महालय श्राद्ध मैं नहीं करसक्ता आप सब मुझपर क्षमा करैं ये
वाक्य ऊंचे स्वरसे रोदन करता हुआ निर्जन वनमें कहै उसका
रोदन सुनतेही पितर तृप्त होजाते हैं जिस प्रकार अमृत पानसे
देवता तृप्तहोंय महालय श्राद्ध में ब्राह्मण भोजन कराने से जो
तृप्ति पितरों को होतीहै वही दरिद्री पुरुष के गोग्रास औ अरण्य
रोदनसे भी होतीहै महालय पक्षमें सूतक आदि कोई विघ्न होजाय
तो सूतकांतमें वृश्चिक के सूर्य पर्यंत भी श्राद्धकरै महालय श्राद्ध
में नौ ब्राह्मणों को निमन्त्रण देवै पिता पितामह प्रपितामह

मातामह प्रमातामह वृद्धप्रमातामह इनके उद्देश से एक एक ब्राह्मणों को विश्वेदेवों के उद्देश से दो ब्राह्मणों को औ विष्णुभगवान् के उद्देश से एक ब्राह्मण को निमन्त्रण देवै इस प्रकार नौ ब्राह्मणोंको बरै अथवा पिता आदिके निमित्त एक ब्राह्मण मातामह आदिके उद्देश से एक ब्राह्मण विश्वेदेवों के निमित्त एक औ विष्णुभगवान् के उद्देश से एक ब्राह्मण बरै इस प्रकार चारही ब्राह्मणों को बरै परंतु ब्राह्मण वेदवेत्ता कुलीन औ सदाचार होने चहिये दुःशील ब्राह्मणों को बरनेवाला श्राद्धका घातक होता है जो पुरुष आश्विन कृष्ण पक्षमें श्रद्धा से महालय श्राद्ध करै वह सबतीर्थों के स्नान का फल अग्निष्टोम आदि यज्ञ करने का फल तुला पुरुष आदि महादान करने का फल चांद्रायण आदि व्रत करने का फल सांग चारों वेदों के पारायण का फल गायत्री आदि महामन्त्रों के जप का फल औ इतिहास पुराण आदि के श्रवण का फल पाताहै महालय श्राद्ध के तुल्य कोई पुण्य कर्म नहींहै महालय श्राद्ध करने से विष्णुलोक ब्रह्मलोक औ शिवलोक की प्राप्ति होती है महालय श्राद्ध नित्यहै औ काम्यभीहै इसीसे उसके न करने से प्रत्यवाय होताहै औ करनेसे सब मनोरथ सिद्ध होतेहैं महालय श्राद्ध करने से भूत वेताल अपस्मार ग्रह शाकिनी डाकिनी राक्षस पिशाच वेताल औरभी अनेक भूत तत्क्षण नाश को प्राप्त होतेहैं औ बहुत संपत्ति मिलतीहैं महालय श्राद्ध करने से राजा दशरथने रामचंद्र आदि चार पुत्र पाये औ उत्तम कीर्ति भी पाई ययाति राजानेभी महालय श्राद्धके प्रभावसे यदु आदि उत्तम २ पुत्र औ स्वर्गमें बासपाया दुष्यंत राजाने महालय श्राद्ध कर भरतनामक पुत्रपाया राजानल महालय श्राद्ध के प्रभाव से बड़ी विपत्तिसेछुटे फिर राज्यको प्राप्तहुआ औ अपने शत्रुकलियुग औ पुष्कर का निग्रह किया औ इंद्रसेन नामक उत्तम पुत्र पाया

हरिश्चंद्र राजाभी महालय विधानसे विश्वामित्रके दियेहुये घोर दुःखसे छुटा औ फिरभी अपनी भार्या चंद्रवती औ पुत्र लोहिताश्व पाये औ अठारह द्वीपका प्रभुहुआ दंडकारण्य में महालय श्राद्ध कर रामचंद्रजीने रावणको मारा औ सीतापाई राजायुधिष्ठिरने महालय श्राद्धके प्रभावसे सब शत्रुमारे वसिष्ठ अत्रि भृगु कुत्स गोतम अंगिरा कश्यप भरद्वाज विश्वामित्र अगस्त्य पराशर मार्कण्डेय आदि मुनि महालय श्राद्धकरनेसे अणिमा आदि आठ सिद्धियोंको प्राप्तहो जीवन्मुक्त हुवे इसलिये कल्याण की इच्छावाले पुरुषों को अवश्यही महालय श्राद्ध करना चहिये जो महालय श्राद्ध न करै उसको भूत बेताल आदिसे भय होताहै इतना कह दत्तात्रेयजी बोले कि हे दुराचार कुशस्तलनाम ग्राममें वदनिधि ब्राह्मण था उसने महालय श्राद्ध न किया इसलिये पितरों के शापसे बेताल हुआ वही बेताल तेरे शरीर में आविष्ट हुआ था हेदुराचार महालय श्राद्धकर औ ब्राह्मणोंको षट्रसभोजनकराय तौतू सदासुखी रहेगा औ कभी दारिद्र्य न होगा औ आजसे कभी महापातकी पुरुष का संग मतकरना एकबार करने से तैंने बड़ा दुःखभोगा अब तू हमारी आज्ञासे अपने देशको जा यह दत्तात्रेय मुनिकी आज्ञापाय दुराचार प्रसन्नहो अपने देशकोगया औ अपने घरमें जाय गृहस्थाश्रम के धर्मसेवन करनेलगा फिर उसनेकभी महापातकी का संसर्ग नहीं किया औ रामचंद्र धनुष्कोटिमें स्नान करने के प्रभावसे अंतमें मुक्त हुआ इतनी कथा सुनाय सूतजी बोले कि हेमुनीश्वरो यह दुराचार के मुक्त होनेका वृत्तांत हमने वर्णनकिया धनुष्कोटि सब पातक हरने में समर्थ है जहां स्नान करने से दुराचार मुक्तहुआ धनुष्कोटि के प्रभाव को कौन वर्णन कर सक्ताहै जिन पापोंका प्रायश्चित्त नहींहै औ किसीप्रकार से भी जो महापातक निवृत्त नहीं होसकते वे सब धनुष्कोटि में

स्नान करतेही विलाय जातेहैं शूद्र करके स्थापित शिवलिंग औ विष्णुमूर्तिको जो प्रणाम करै उस पापका कहीं प्रायश्चित्त नहीं लिखा धनुष्कोटिमें स्नानकरने से वहपापभी निवृत्त होजाता है ब्राह्मण का निन्दक विश्वासघाती कृतघ्न भ्रातृस्त्रीगामी शूद्रान्नभोजी वेदनिन्दक कन्याबिक्रयी घोड़े गौ देवमूर्ति धर्म तीर्थफल आदि बेचनेहारे मातृपितृद्रोही सन्न्यासियों से द्रोह करनेहारे शिव विष्णु गुरु ब्राह्मण यति आदि के निंदक, औ सत्कथा में दूषण लगानेहारे मनुष्यों के शुद्धहोने के लिये कोई प्रायश्चित्त नहीं कहा परंतु वेभी धनुष्कोटिमें स्नान करनेसे शुद्ध होजाते हैं हे मुनीश्वरो यह धनुष्कोटिका वैभव हमने वर्णन किया जिसके श्रवण करनेसे मनुष्य मुक्त होजाताहै॥

सैंतीसवां अध्याय॥

सूतजीकहतेहैं, किहेमुनीश्वरोचक्रतीर्थसे लेकर धनुष्कोटिपर्यंत चौबीस तीर्थोंका हमनेमाहात्म्य वर्णनकिया अबआप क्याश्रवण किया चाहतेहैं यह सूतजीका वचन सुन नैमिषारण्यवासी शौनक आदि मुनिबोले कि हेसूतजी आपने पहिले कहाथा कि क्षीरकुंड के समीप चक्रतीर्थ है सो चक्रतीर्थ का माहात्म्य तो श्रवण किया अब आप क्षीरकुंडका माहात्म्य विस्तार से वर्णन करें औ क्षीरकुण्ड के नाम का कारण भी कहें यह मुनियों का प्रश्न सुन सूतजी बोले कि हेमुनीश्वरो जो आपने पूछा उसका हम वर्णन करतेहैं आप श्रद्धासे श्रवणकरैं देवीपत्तन से पश्चिमदिशामें थोड़ी दूरपर पुलग्रामनाम पुण्यक्षेत्रहै जहाँसे रामचंद्रजीने सेतु का आरंभ किया उसी स्थानमें क्षीरकुण्डहै जिसके ध्यान करनेसे दर्शनसे औ स्पर्श से मनुष्य के पातक निवृत्त होते हैं पूर्वकाल में नारायणकी प्रीतिके लिये मुद्गलमुनिने पुलग्राममें यज्ञकिया तब

प्रसन्नहो विष्णुभगवान् प्रकट हुवे कि नीलमेघके समान जिनका वर्ण पीतांबर पहिने शंखचक्र गदा पद्मधारे कौस्तुभ मणि करके शोभित भक्तोंको आनंददेनेहारे औ बामांगमें लक्ष्मीकरके शोभितथे उनको देख भक्तिसे मुद्गल मुनि स्तुति करनेलगा (मुद्गलउवाच) प्रथमंजगतःस्रष्ट्रे पालकायततःपरम्। संहर्त्रेचततःपश्चान्नमोनारायणायते १ नमःशंकररूपायकमठायचिदात्मने। नमोवराह वपुषेनमःपंचास्यरूपिणे २ वामनायनमस्तुभ्यंजमदग्निसुतायते। राघवायनमस्तुभ्यंवलभद्रायतेनमः ३ कृष्णायकल्कयेतुभ्यंनमो विज्ञानरूपिणे। रक्षमांकरुणासिंधोनारायणजगत्पते ४ निर्लजंकृपणंक्रूरंपिशुनंदांभिकंशठं। परदारपरद्रव्यपरक्षेत्रैकलोलुपम्। असूयाविष्टमनसंमांरक्षकृपयाहरे ५) यह मुद्गलमुनिके मुखसे स्तुति सुन प्रसन्नहो भगवान् कहनेलगे कि हेमुद्गल हमतेरी भक्ति स्तुति से प्रसन्न होकर यज्ञभागग्रहण करनेको साक्षात् आयेहैं यह भगवान्का वचनसुन प्रसन्नहो मुद्गलमुनि ने प्रार्थना की कि महाराज आज मेरा जन्म तप वंश औ शरीर सफलहुआ जोआप मेरे यज्ञ में हविग्रहण करनेके लिये साक्षात् आये जिनको योगी पुरुष ध्यानसे देखतेहैं उनका मैं साक्षात् दर्शन कररहाहूं इस प्रकार प्रार्थनाकर मुद्गलमुनिने पाद्य अर्घ्य आचमन आसन चंदन पुष्प आदिसे भगवान्का पूजनकर पुरोडाश आदिहवि उनके अर्पण किया भगवान् नेभी उसहविको अपने हाथसे ग्रहणकर भक्षणकिया भगवान्के हवि भक्षण करनेसे अग्नि सहित सब देवता ब्राह्मण ऋत्विक् यजमान औ संपूर्ण चराचरजगत् तृप्तहोगया भगवान् ने कहा कि हेमुद्गल हम प्रसन्न हैं बरमांग तब मुद्गलने प्रार्थना की कि महाराज आपने मेरेयज्ञ में हविग्रहण किया इसीसे मैं कृतार्थहूं तौभी यहचाहताहूं कि आपके चरणारविंद में निष्कपट औ निश्चल मेरी भक्तिहोनी चाहिये औ यह भी मेरी

इच्छाहै कि सायंकाल औ प्रातःकाल गौके दुग्धसे आपकी प्री-
तिके लिये हवन कियाकरूं वेदमें दोनोंकाल दुग्ध करके हवन
करना लिखाहै औ मुझ सरीखे निर्धन तपस्वी के पास गौ कहाँसे
आवै यह मुद्गलका वचनसुन भक्तवत्सल श्रीविष्णु भगवान् ने
विश्वकर्मा को बुलाकर एकउत्तम सरोवर बनवाया औ स्फटिक
आदि उत्तम पाषाणोंका प्राकार उसके चारों ओर बनवाया औ
कामधेनुको बुलाकर भगवान् ने आज्ञादी कि हेसुरभि यह हमारा
भक्त मुद्गलमुनि नित्य हमारी प्रीतिके लिये हवन कियाचाहताहै
इसलिये दोनोंकाल आयकर इस सरोवर को दुग्धसे भरदे उसी
दुग्धसे यह हवन कियाकरैगा कामधेनु ने भगवान्‌की यह आज्ञा
अंगीकार करी तब भगवान् ने मुद्गलसे कहा कि हेमुद्गल इस
सरोवर से कामधेनु का दुग्ध नित्य लेकर हमारी प्रसन्नता के
लिये सायंकाल औ प्रातःकाल हवन कियाकर जिससे हमारी प्र-
सन्नता होय हमारी प्रसन्नता होने से तुझे संपूर्ण सिद्धि प्राप्त
होगी औ यह क्षीरसर नाम तीर्थ होगा जिसमें स्नान करनेसे
पातक महापातक सब निवृत्त होजांयगे औ हे मुद्गल तूभीदेहके
अंतमें हमारे समीप प्राप्त होगा इतना कह मुद्गलको आलिंगन
कर विष्णुभगवान् अंतर्धान होगये मुद्गलने भी सैकड़ों वर्ष उस
सरोवरसे दुग्ध लेकर हवन किया औ अंतमें मुक्तिपाई इतनी क-
थासुनाय सूतजी बोले कि हे मुनीश्वरो यह क्षीरसरकी उत्पत्ति
हमने कही यह तीर्थ सबलोकमें प्रसिद्धहै कश्यपमुनि की पत्नी
कद्रूने छलसे अपनी सपत्नी विनता को जीता इससे इसको बड़ा
पाप लगा तब कश्यपजी की आज्ञासे कद्रूने क्षीर सरोवर में
स्नान किया तब वह पाप निवृत्त हुआ इस तीर्थ में जो पुरुष
स्नान करैं उनको यज्ञ दान तप तीर्थ सेवन वेदपाठ आदि कर्मों
से कुछ प्रयोजन नहीं क्षीर कुंडका पवन जिसके देहमें लगे वह

ब्रह्मलोक में प्राप्तहोता है औ वहां बहुत काल निवास करके मुक्ति पाताहै क्षीर कुंडमें स्नान करनेहारा पुरुष अग्नि के तुल्य देदीप्यमान हुवे २ यमराज के भी मस्तक पर विराजमान होते हैं औ सब नरक उनके लिये व्यर्थ होजाते हैं औ वैतरणी नदीभी शीतल होजाती है क्षीरकुंड को छोड़ और तीर्थ में जाना गोदुग्ध को छोड़ अर्क दुग्ध के लिये भटकने के तुल्यहै क्षीरकुंड में स्नान करनेहारे पुरुषों को कोई पदार्थ दुर्लभ नहीं मुक्तिभी हाथ परही धरी है यह हम भुजा उठाकर सत्य कहते हैं कभी इस बातमें संदेह मतकरो जो इस अध्याय को भक्तिसे पढ़ै वह क्षीरकुंड के स्नान फलको प्राप्तहोता है ॥

अठतीसवां अध्याय ॥

शौनक आदि ऋषि पूछते हैं कि हे सूतजी कद्रू कौनथी औ उसने अपनी किस सपत्नी को छलसे जीता क्या छल किया औ फिर किस प्रकार क्षीरकुंड में स्नान कर निष्पाप हुई यह आप कृपाकर वर्णन करैं तब सूतजी कहने लगे कि हे मुनीश्वरो प्रजापतिकी कन्या विनता औ कद्रू दोनों कश्यप की भार्याथीं विनता के पुत्र अरुण औ गरुड़ हुये कद्रू के पुत्र वासुकि अनंत आदि हजारों सर्पहुये एकदिन कद्रू औ बिनता ने इन्द्र के घोड़े उच्चैःश्रवा को देखा तब कद्रू ने कहा कि हे विनते इस घोड़े के बाल नीले हैं कि श्वेत तब विनता बोली कि हे कद्रू मुझेतो इसकेबाल श्वेत देखपड़ते हैं कद्रूने कहा कि जो इसके श्वेत बाल होंय तो मैं तेरी दासीबनूं औ नील होंयतो तू मेरी दासी होगी यह पण दोनोंने किया कद्रूने सर्पोंको बुलाकर सब बातकही औ अपने पुत्र बासुकि आदि कों को यह कहा कि तुम उच्चैःश्रवा के श्वेतबालोंको आच्छादन करो जिससे मुझे विनता की दासी न बनना

पड़े यहबात सर्पों ने अंगीकार न करी तब कद्रूने क्रोधकर उनको शापदिया कि जनमेजयके यज्ञमें तुम्हारा नाश होगा यह शाप सुन व्याकुल हो कर्कोटक नाग ने कद्रूसे कहा कि हे माता मैं उच्चैःश्रवा को कृष्णवर्ण करदूंगा तू कुछ भय मत कर यह कह कर्कोटक नाग उच्चैःश्रवाके लिपटगया उसकी देहकांति से उच्चैःश्रवा का रंग नील अंजन के समान होगया तब कद्रू विनताको संगले उच्चैःश्रवा को देखने चली औ चंद्र ऐरावत आदि रत्नों के उत्पत्ति स्थान समुद्र को लंघन कर इन्द्र के बाहन उच्चैःश्रवा के समीप पहुंची वहां देखा कि उच्चैःश्रवा का रंग काला है तब विनता बहुत व्याकुल हुई कद्रूने उसको अपनी दासी बनालिया इतने में विनता का पुत्र गरुड़ भी अंडे को फोड़ पर्वत के समान औ अग्निज्वाला के तुल्य देदीप्यमान निकला गरुड़ का रूपदेख तीनों लोक भयभीत होगये देवता स्तुति करनेलगे तब गरुड़ने अपने उस भयंकर रूपको त्यागदिया औ अपने बड़े भाई अरुण को पीठपर चढ़ाय गरुड़ अपनी माता के समीप पहुंचा कद्रू ने विनतासे कहा कि हे दासि मैं पातालको जाया चाहतीहूं इसलिये तू मुझे उठाले औ तेरापुत्र गरुड़ मेरे पुत्र नागों को उठाके लेचलै विनता ने यह बात गरुड़से कही गरुड़ ने माताकी आज्ञा अंगीकार करी औ सब सर्पोंको पीठपर चढ़ाकर उड़ा कद्रू विनता परचढ़कर चली गरुड़ बहुत ऊंचा उड़ा इसलिये सूर्यके तेज से सर्पदग्ध होनेलगे तब कद्रूने इंद्रकी स्तुतिकी इंद्रने वृष्टि करके सर्पों का ताप शांतकिया गरुड़ भी क्षणमात्र में नागलोक में जापहुंचा वहां सर्पोंने फिर गरुड़ से कहा कि हे दासीपुत्र हम द्वीपांतर देखने जाया चाहते हैं इसलिये शीघ्रही हमको उठाले चलतब गरुड़ने अपनी माता विनतासे पूछा कि हे माता मैं सर्पों को उठाये फिरता हूं औ तू कद्रूका बाहन होरहीहै औ सर्प

मुझे बार २ दासी पुत्र कहते हैं इस में क्या कारण है
यह सब तू मुझे यथार्थ बतादे तब विनता ने कहा कि हे पुत्र
मुझको कद्रूने छलसे जीतकर अपनी दासी बनाया इससे तुझे
दासी पुत्र कहते हैं औ इसी कारण मैं औ तू इनके वाहन बन-
रहे हैं यह सब वृत्तांत विनताके मुखसे सुनकर गरुड़ने पूछा कि
हे माता इस दासपनेसे हम क्योंकर छुटें तब बिनता ने कहा कि
हे पुत्र सर्पोंसे औ कद्रूसे पूछ गरुड़ ने सर्पोंसे पूछा कि मेरीमाता
दासभावसे क्योंकर छुट सक्तीहै सर्पोंने कहा कि हे गरुड़ स्वर्ग
से जो तू हमको अमृत लादेवै तो आजही तेरी माता को छोड़
देवैं यह सुन गरुड़ अपनी माताके समीप आया औ कहने लगा
कि हे माता मैं देवताओं से अमृत लाने जाताहूं कुछ मुझे खाने
को दे विनताने कहा कि हे पुत्र समुद्र में एक समूह म्लेच्छों का
रहता है उनको तू भक्षण कर औ अमृत लेआ उन म्लेच्छों में
एक ब्राह्मण भी एक म्लेच्छ स्त्रीमें अनुरक्त होकर रहता है उस
को मत भक्षण करना उसके भक्षण करनेसे कंठमें दाह होगा हे
पुत्र शीघ्र जाकर अमृत लेआ इंद्र आदि देवता तेरे अंगों की रक्षा
करैं गरुड़ भी माता से बिदाहो समुद्र में पहुंचा औ पर्वत की
कंदरा के समान अपना मुख फैलाय म्लेच्छों को भक्षण करनेलगा
उनके साथ वह ब्राह्मण भी गरुड़ के मुखमें आगया परंतु कंठदाह
होनेसे गरुड़ने जाना औ उस ब्राह्मण से कहा कि हेब्राह्मण है तो
तू पातकी परंतु ब्राह्मण होनेसे अवध्यहै इसलियेमेरे मुखसे निक-
लजा ब्राह्मणने कहा कि मेरी स्त्री भी निकले तोमैं निकलूं उसके
बिना मैं क्षणभर भीनहीं रहसकता गरुड़ने ब्राह्मणको औ उसकी
स्त्रीकोभी अपने मुखसे निकाल दिया ब्राह्मण अपनीस्त्रीसमेत कहीं
को चलागया औ गरुड़ भी सब म्लेच्छों को भक्षणकर अपने पिता
कश्यपजी केसमीप आया कश्यपजीने पूछा कि हे पुत्र कहां जाताहै

गरुड़नेकहा कि महाराज माताका दासीभावनिवृत्त करने के लिये अमृत लेने जाताहूं बहुतसे म्लेच्छ भक्षण करकेभी मुझे तृप्तिनहीं हुई क्षुधा के मारे प्राण जाते हैं इसलिये मुझे कुछ भोजन आप बतावैं उस भोजन के करनेसे मैं अमृत लानेको समर्थ होजाऊंगा यह गरुड़ का वचन सुन कश्यपजी बोले कि हे पुत्र पूर्वकाल में विभावसुनाम एक मुनिथा औ उसका छोटा भाई सुप्रतीकनामथा उन दोनोंने आपुसमें विवादकर परस्पर शापदिया उस शापसे सुप्रतीक तो छःयोजन ऊंचा हाथी होगया औ विभावसु दशयोजन चौड़ा औ तीन योजन ऊंचा कूर्म अर्थात् कछुवा होगया वे दोनों इस सरोवर में पूर्व बैर को स्मरण करते हुये अब भी युद्ध करतेहैं उन दोनोंको तू भक्षण कर ले गरुड़ भी पिताकी आज्ञा पाय वहां गया औ उन दोनों को अपने पंजों में उठाय ले उड़ा औ विलम्ब नाम तीर्थपर गया वहां एक पुराना बट वृक्षथा उसने गरुड़सेकहा कि हेगरुड़ तू मेरी शाखापरबैठकर इनको भक्षणकर ले बटवृक्षका यह वचन सुन गरुड़ उसकी शाखापर बैठा गरुड़के बैठतेही भार से वह शाखा टूटी उसमें साठ हजार वालखिल्य ऋषि तप करने को लटक रहेथे गरुड़ ने देखा कि शाखा भूमि पर गिरैगी तो इनको क्लेश होगा इसलिये गरुड़ अपनी चोंचमें उस शाखाको भी ले उड़ा तब गरुड़ को कश्यपजी ने कहा कि हे पुत्र निर्जन बनमें जाकर इस शाखाको रखदे गरुड़ ने भी पिता की आज्ञा से निर्जन बनमें जाय वह शाखा रक्खी औ हाथी तथा कच्छप को भक्षण किया इस अवसर में स्वर्गके बीच उत्पात होने लगे तब इन्द्रने वृहस्पतिसे पूछा किहेदेवगुरो उत्पात क्योंहोतेहैं तब वृहस्पति कहनेलगे कि हे देवराज पूर्वकाल में कश्यपमुनिने यज्ञ करना चाहा तब अंगुष्ठ प्रमाण वालखिल्य ऋषियों को यज्ञकी सामग्री इकट्ठी करने के लिये भेजा मार्गमें गौके खुरके

गढ़ेमें जल भराथा उसमें वे डूबनेलगे उनको देख तुमने
हास्य किया तब क्रोधकर उनने यज्ञाग्निमें इस कामनासे हवन
किया कि कश्यपके ऐसा पुत्रहोय जो इंद्रको भयदेवै वह कश्यप
का पुत्र गरुड़ हुआहै औ अब अमृत हरने के लिये यहां आताहै
इसीसे ये दारुण उत्पात होतेहैं यह बृहस्पति का वचनसुन इंद्र
ने सब देवताओं को बुलाकर कहा कि गरुड़ अमृत हरने आताहै
तुमसे रक्षा कीजाय तो करो यह इन्द्रका वचनसुन शस्त्र अस्त्र
धारण कर सब देवता अमृत की रक्षा करनेलगे इतने में गरुड़
भी वहां आय पहुंचा उसको देख सब देवता भयसे काँप उठे
देवताओं के साथ गरुड़का युद्ध होनेलगा गरुड़ ने अपनी चोंच
से देवताओं को भेदन किया देवताओं नेभी गरुड़को शस्त्रोंसे
बहुत पीड़ादी तब गरुड़ने अपने पंखोंके पवनसे देवताओं को
उड़ाकर दूर फेंकदिया देवता बड़ा क्रोधकर गरुड़के ऊपर बाण
भिंदिपाल तोमर आदि शस्त्रोंकी बर्षा करनेलगे गरुड़ ने अपने
पंखोंसे इतनी धूलि उड़ाई कि देवताओं के नेत्र फूटनेलगे तब
देवताओं ने वायु करके उस धूलिको शांतकिया औ गरुड़ने भी
वसु रुद्र आदित्य मरुत् आदि देवताओं को अपने तीखे नख
औ चोंचसे घायलकिया तब देवता भगगये गरुड़ अमृतके समीप
चला तो देखा कि अमृत के चारोंओर प्रचंड अग्नि प्रज्वलित हो
रहाहै तब गरुड़ने हजार चोंच करली औ बड़ी २ नदियों को
चोंचोंमें भर २ उस अग्निको बुझाया आगे जाकर देखा तो बड़ा
तेजस्वी औ तीखी धारवाला चक्र अमृत के चारों ओर भ्रमताहै
तब गरुड़ ने छोटा देहकिया औ चक्रके बीचसे निकलकर पार
होगया आगे देखा तो दोसर्प अमृतकी रक्षा करतेहैं जिनकीदृष्टि
सेही सब भस्म होजांय गरुड़ने अपने पंख औ चोंचसे उनसर्पों
को मूर्छित करदिया औ अमृत के घटको लेकर उड़ा तब विष्णु

भगवान् ने कहा कि हेगरुड़ तेरा पराक्रमदेख हम बहुत प्रसन्न हुवे बरमाँग गरुड़ने कहा कि तुम्हारे ऊपर मेरी स्थितिहोय औ अजर अमर होजाऊं औ तुमको जो बर चहिये वह मुझसे भी माँगो तब विष्णुभगवान् ने कहा कि हमारे बाहन तुम होजाओ गरुड़ने भी यह बात अंगीकार करी विष्णुभगवान् ने गरुड़ को बरदिया औ अपने रथकी ध्वजापर स्थापनकिया औ बाहन भी बनाया इन्द्रने देखा कि गरुड़ अमृत को लिये जाताहै तो बड़ा क्रोधकर वज्मारा परंतु गरुड़ ने हँसकर कहा कि हेइन्द्र तेरे बज्प्रहार से मुझे कुछभी ब्यथा न हुई परंतु तेरे आदर के लिये एक पंखमें अपना गिरा देताहूं यह कह गरुड़ ने एक छोटासा पर डालदिया उस सुंदर परको देख देवताओं ने गरुड़का नाम सुपर्ण रक्खा गरुड़ ने कहा कि हे इंद्र तीनोंलोक को मैं उठा सकता हूं औ हजार इन्द्र भी आवें तो मेरा क्या कर सकते हैं यह गरुड़का वचनसुन इन्द्रने कहा कि हेगरुड़ तू अमृतका क्या करैगा हमको देदे जिन सर्पोंको तू अमृत दिया चाहताहै वेअमृत पानकर अजर अमर होजांयगे तो देवताओं को औ सब जगत् को पीड़ादेगें यहसुन गरुड़ने कहा कि हे इंद्र जहां मैं इस अमृत को स्थापन करूं वहां से तुम हर लाना गरुड़ का यह वचन सुन प्रसन्न हो इंद्र ने कहा कि हे गरुड़ तुमसे हम प्रसन्न हैं वर मांग तब गरुड़ ने कहा कि हे इंद्र जिन सर्पोंने मेरी माता को छलसे दासी बनाया वे मेरे भक्ष्य होंय इंद्र ने गरुड़ को यहही वर दिया गरुड़ अमृत ले कर चला इंद्र उस के पीछे पीछे गये गरुड ने माता के समीप पहुंच सर्पों से कहा कि यह अमृत मैं ले आया हूं औ कुशाओं के ऊपर इस अमृत घट को रखता हूं तुमभी स्नान कर पवित्र हो इस अमृत का भोजन करना अब मेरी माता को छोड़दो सर्प भी अमृत घट देख प्रसन्न हो गये औ

गरुड़ की माता विनता को छोड़ दिया औ आप सब स्नान करने गये इस अवसर में इंद्र आकर अमृत को उठा ले गया इतने में सर्पभी स्नान करआये तो देखा कि अमृत नहीं है तब उन कुशाओं को चाटनेलगे जिनपर अमृत घट रक्खा था कुशाओं के चाटने से सर्पों की जिह्वा चीरिगई उसी दिन से सर्प द्विजिह्व कहाये औ अमृत का स्पर्श होने से कुशभी पवित्र मानेगये इस प्रकार अपनी माता को दासी भाव से छुटाय गरुड़ ने कद्रू को शापदिया कि तैंने मेरी माता को छल से दासी बनाया इसलिये तू पतिकी सेवा के योग्य न होगी यह शाप देकर गरुड़ चलागया कद्रू औ बिनता दोनों कश्यपजी के समीप गईं कद्रू को देख कश्यपजी क्रोधकर बोले कि हे कद्रू तैंने छल से विनता को जीता इसलिये हमारी सेवा के योग्य तू नहीं है जो स्त्री पुरुष छल से जीते वह महापातकी होता है औ उस के साथ भाषण करने से भी पातक लगता है इसलिये तेरे साथ संभाषण करने से हमभी पातकी होजांयगे छली मनुष्य जिस पंक्ति में भोजनकरै वह पंक्ति नरक को जाती है छली पुरुष का मुख देख सूर्य जल अथवा अग्नि को देखै तब शुद्ध होता है छली पुरुष के समीप रहने से अवश्य नरक में बास होता है इसलिये हे दुष्टे शीघ्रही हमारे आश्रमसे चली जा इतना कह कश्यपजी ने बिनता को अंगीकार करलिया कद्रू भी पतिका यह रूक्ष वचन सुन रोती हुई उनके चरणों पर गिरी परंतु कश्यपजी ने उस-का अपराध क्षमा नहीं किया तब विनता ने प्रार्थना करी कि महाराज आप इस मेरी बहिन का अपराध क्षमाकरैं इसने भूल से यह अपराध किया इसलिये आपको कृपाकर क्षमाही करनी चहिये साधु पुरुष दयालु होते हैं यह विनता का वचन सुन कश्यप जी बोले कि हे विनते तेरी शपथ खाकर कहते हैं कि

जबतक यह दुष्टा इस पातक का प्रायश्चित्त न करैगी हम ग्रहण न करेंगे तब विनता ने फिर प्रार्थना करी कि महाराज आपही प्रायश्चित्त बतावैं जिससे यह आपकी सेवा के योग्य होय तब क्षणमात्र ध्यानकर कश्यपजी ने कहा कि दक्षिण समुद्र के तीर फुल्लग्राम के समीप क्षीरसरोवर नाम तीर्थ है वहां जाकर यह स्नानकरै तब शुद्ध होगी और चाहै हजार प्रायश्चित्त करै तो भी शुद्ध नहीं होसकती यह पति का वचन सुन अपने पुत्रों को संग लेकर कद्रू क्षीरसरोवर को चली औ कुछ दिनों में वहां पहुंच उपवास रख संकल्प पूर्बक तीन दिन स्नान किया चौथे दिन स्नान करनेलगी तब आकाशवाणी हुई कि हे कद्रू इस तीर्थ के प्रभाव से तू छल दोष से निवृत्त हुई औ गरुड़ का शाप भी जाता रहा अब जाकर पतिकी शुश्रूषा कर पति भी तुझे ग्रहण करैगा यह आकाशवाणी सुन प्रसन्न हो तीर्थ की प्रदक्षिणा कर अपने पुत्रों समेत कद्रू कश्यपजी के समीप आई कश्यपजी ने भी उस को शुद्ध जान अंगीकारकिया इतनी कथा सुनाय सूतजी बोले कि हे मुनीश्वरो यह प्रभाव क्षीरकुंड का हमने वर्णन किया जो इस अध्याय को पढ़ै अथवा सुनै वह क्षीरकुंड के स्नान फल को प्राप्त होता है औ अश्वमेध आदि यज्ञ करने का सहस्र गोदान का औ गंगा आदि तीर्थों में स्नान करने का फल पाय उत्तमगति पाता है॥

उनतालीसवां अध्याय॥

सूतजी कहते हैं कि हे मुनीश्वरो अब हम कपितीर्थ का माहात्म्य वर्णन करते हैं वह तीर्थ लोकों के कल्याण के लिये बानरों ने बनाया है रावण को मार गन्धमादन पर्बत में जब हनुमान आदि बानर आये तब उनने यहतीर्थ बनाय उसमें सब

ने स्नानकिया औ तीर्थ को यह बर दिया कि इस तीर्थ में जो पुरुष स्नानकरैं वे सब पातकों से छुट मुक्तिपावैं औ उनको नरक दारिद्र्य आदि का भय नहीं होवे जो यह बिचार करै कि मैं कपितीर्थ को जाऊंगा औ इस निमित्त सौ कदमभी चलै वह सद्गति पावै यहबर देकर सब बानरों ने रामचन्द्रजी से प्रार्थना करी कि आपभी इस हमारे तीर्थ को उत्तम बर देवैं तब अपने भक्त बानरों की प्रार्थना सफल करने के लिये रामचन्द्रजी ने बर दिये कि इसतीर्थ में स्नान करने से गंगा प्रयाग आदि तीर्थों के स्नान का फल गोसहस्रदान अग्निष्टोम आदि यज्ञ गायत्री आदि मंत्रों के जप चारों वेद के पारायण औ शिव विष्णु आदि देवताओं के पूजन का फल प्राप्तहोगा रामचन्द्रजी के यहबर देने के अनंतर शिव ब्रह्मा इंद्र यम वरुण कुवेर वायु चंद्रमा आदित्य निर्ऋति साध्य बसु विश्वेदेव आदि सब देवता सनक आदि योगी नारद आदि देवर्षि अत्रि भृगु कुत्स गोतम पराशर कण्व अगस्त्य सुतीक्ष्ण विश्वामित्र आदि सब मुनीश्वर उस तीर्थ की प्रशंसा करनेलगे औ सबने भक्तिसे उस कपितीर्थ में स्नानकिया औ सबने यह कहा कि यह कपितीर्थ सब लोकमें प्रसिद्ध होगा इतना कह सूतजी बोले कि हे मुनीश्वरो मोक्ष की इच्छावाले पुरुषों को अवश्यही कपितीर्थ में स्नान करना चहिये इस तीर्थका माहात्म्य हम कहां तक वर्णनकरैं विश्वामित्र मुनि के शाप से शिला हुई रंभा इस तीर्थके प्रभाव से फिर अपने रूपको प्राप्तहुई यह सुन मुनीश्वरों ने पूछा कि हे सूतजी रंभाको विश्वामित्रमुनिने क्यों शापदिया औ शिला होकर कपितीर्थमें क्योंकर पहुंची यह आप वर्णन करैं तब सूतजी कहनेलगे कि हे मुनीश्वरो पूर्वकालमें कुशिकवंश के बीच विश्वामित्र नाम एक राजा हुआ है वह एक समय बहुतसी सेना साथ ले अपने राज्य को देखने निकला

बहुत देशदेखताहुआ वसिष्ठजी के आश्रम में पहुंचा वसिष्ठजीने भीकामधेनु के प्रभाव से राजा का औ उसकी सेना का भलीभांति सत्कार किया भांति २ के भोजन सबको कराये कामधेनुका प्रभाव देख राजा विश्वामित्र ने वसिष्ठजीसे कामधेनु की याचना की परंतु वसिष्ठजीने कामधेनु न दी तब राजाने बलात्कार से कामधेनुको हरना चाहा परंतु कामधेनु के शरीर से इतने म्लेच्छगण उत्पन्न हुवे किउनने विश्वामित्रकी सेनाका संहार किया तब राजा विश्वामित्र वसिष्ठजीसे पराजित हो हिमालय में जाय तप करने लगा औ शिवजीको प्रसन्नकर उनसे सब अस्त्र पाये फिर वसिष्ठजीके आश्रम में आय राजा विश्वामित्र वसिष्ठजी पर अस्त्र छोड़ने लगा परंतु वसिष्ठजीने अपने ब्रह्मदंडकरके सब अस्त्रोंको निष्फल करदिया तब विश्वामित्र बहुत लज्जित हुवे औ ब्राह्मण बनने के लिये तप करने में प्रवृत्त हुवे पूर्व आदि तीन दिशाओं जहां तप करने लगे वहांही बिघ्न हुआ तब उत्तर दिशा में हिमालय पर्वतके बीच कौशिकी नदीके तटपर तप करने लगे निराहार जितेन्द्रिय औ जितश्वास होकर दिव्य हजार वर्ष पर्यंत तपकिया ग्रीष्म ऋतुमें पंचाग्नि तपते शिशिर ऋतु में जलशय्या में सोते औ वर्षाऋतुमें निरावरण स्थानमें रहते इसप्रकार ऊपर को भुजा उठाये एक हजार दिव्य वर्षतक अत्युग्र तप विश्वामित्र ने किया तब देवता बहुत व्याकुल हुये औ सबने रंभा को बुलाकर कहा कि हे रंभे हिमालय पर्वत में जाकर विश्वामित्र को अपने कटाक्षों से मोहितकर जिसप्रकार उसके तपमें विघ्नहोय ऐसा उपायकर यह देवताओं का वचन सुन हाथ जोड़ भय से कांपतीहुई रंभा कहनेलगी कि महाराज विश्वामित्र मुनि महाक्रूर हैं वह मुझे अवश्यही शापदेगा इसलिये आप सब मुझे ऐसे क्रूरकर्म में आज्ञा न देवें मैं आपकी दासीहूं मेरी रक्षाकरैं यह रंभाका वचन सुन

इंद्रने कहा कि हे रंभे भय मतकर तेरे सहाय के लिये वसंत औ कामदेवको साथले में भी आताहूं तू चलकर अपने रूपसे विश्वामित्रको बशकर रंभा इन्द्र की आज्ञापाय विश्वामित्र के आश्रम को गई वहां जाय विश्वामित्र के संमुख खड़ी होकर हावभाव करनेलगी औ बसंत ऋतु चारों ओर छागया कोकिल मीठे मीठे शब्द बोलनेलगे यह सब देख विश्वामित्र के मनमें संशयहुआ फिर योगबलसे जाना कि यह सब कर्म इन्द्रका है औ रंभाको देख विश्वामित्र मुनिने कहा कि हे रंभे तू हमारे तपमें विघ्नकरने आई है इसलिये शिलाहोजा औ बहुत कालतक शिलाभाव को प्राप्तहोकर एक ब्राह्मण करके इस शापसे मुक्तहोगी इतना कहतेही रंभा शिला होगई विश्वामित्र मुनि भी बहुत काल तपकर वसिष्ठजी के वाक्य से ब्राह्मण हुवे औ रंभा को भी शिला हुये बहुत काल व्यतीत हुआ उसी आश्रम में अगस्त्य मुनिका शिष्य श्वेतमुनि मोक्षकी इच्छासे तप करनेलगा उसके तपमें एक अंगारका नाम राक्षसी नित्य विघ्नकरती मूत्र विष्ठा आदि लाकर आश्रम में डालदेती और अनेक प्रकार के उपद्रव करके नित्यही मुनिको त्रासदेती एक दिन श्वेतमुनिने क्रोधकर वह शिला जो रंभा होगई थी उठाई औ वायव्यास्त्र मंत्र पढ़ उस राक्षसी पर चलाई आगे २ राक्षसी औ पीछे २ शिला सब दिशाओंमें घूमी अन्तमें राक्षसी व्याकुल हो दक्षिण समुद्रके तीर कपितीर्थमें घुसी परंतु वह शिला भी उसके ऊपर तीर्थमें गिरी गिरतेही वह राक्षसी चूर्णहोगई औ शिला भी तीर्थका जलस्पर्श होतेही रंभा होगई औ उसके ऊपर देवताओं ने पुष्प वृष्टि करी इतने में आकाश से विमान आया रंभा भी वस्त्र भूषण आदि से अलंकृत हो उर्वशी आदि अपनी सखियों समेत विमान में बैठ कपितीर्थ की प्रशंसा करतीहुई स्वर्गको गई वह राक्षसी भी पूर्वजन्म में घृताची नाम

अप्सरा थी औ अगस्त्य मुनिके शापसे राक्षसी होगई थी वह भी कपितीर्थ में प्राण त्यागनेसे अपने रूपको प्राप्तहो रंभाके साथही विमान में बैठ स्वर्गको गई इसभांति शिला औ राक्षसी अगस्त्य जीके शिष्य श्वेतमुनि के प्रसाद से औ कपितीर्थ के प्रभाव से अपने पूर्वरूपको प्राप्तहुई इसकारण हे मुनीश्वरो सबप्रकारसे कपितीर्थ में स्नान करना चहिये जो पुरुष भक्तिसे इस अध्याय को पढ़ैं अथवा श्रवण करैं वे कपितीर्थ के स्नान फल को प्राप्त होकर सद्गति पाते हैं ॥

चालीसवां अध्याय ॥

सूतजी कहतेहैं कि हेमुनीश्वरो महापुण्यको देनेहारा औ नरक क्लेश का नाश करने हारा गायत्री औ सरस्वती का माहात्म्य हम वर्णन करते हैं जिस के पढ़ने औ सुनने से महापातक की निवृत्ति होय गायत्री औ सरस्वती में जो मनुष्य स्नानकरैं वे कभी गर्भ-वास का दुःख नहीं भोगते औ मुक्त होते हैं गंधमादनपर्बत में ब्रह्मपत्नी गायत्री औ सरस्वती के सन्निधान से दो तीर्थ हैं इतना सुन मुनीश्वरों ने पूछा कि हे सूतजी गंधमादन पर्बत में किस कारण से गायत्री औ सरस्वती का सन्निधान हुआ है यह आप वर्णन करैं तब सूतजी कहनेलगे कि हे मुनीश्वरो पूर्बकाल में ब्रह्माजी ने काम के वशहो अपनी पुत्री सरस्वती को चाहा वहभी अपने पिता का दुःसंकल्प जान लज्जा से हरिणी होगई ब्रह्मा जीभी हरिण का रूप धार उसके पीछे लगे तब सब देवता ब्रह्मा जीकी बहुत निंदा करनेलगे शिवजीभी ब्रह्माजी का यह दुरा-चार देख क्रोध से धनुष बाण ले व्याध का रूपधार उनके पीछे लगे औ एक बाण ऐसामारा कि हरिणरूप ब्रह्माजी भू-मिपर गिरे औ उनके देहसे एक तेजःपुंज निकलकर आकाश

को गया वही मृगशिरा नक्षत्र होगया औ आर्द्रा नक्षत्र के रूपसे शिवजी स्थित हुवे जो अबतक भी मृगशिरा नक्षत्र के पीछे मृग व्याध रूप से आकाश में देखपड़ते हैं इस प्रकार ब्रह्माजी के मृतहोने के अनंतर अतिशोकातुर हो गायत्री औ सरस्वती बिचार करके ब्रह्माजी के पुनर्जीवन के लिये शिवक्षेत्र गन्धमादन पर्वत में जाय तप करनेलगीं उनने स्नान के लिये अपने अपने नाम से एक एक तीर्थ बनाया तीनकाल उनतीर्थों में स्नान कर काम क्रोध आदि त्याग जितेंद्रिय हो शिवजी का ध्यान करती हुई दोनों पंचाक्षर मंत्र का जप करती इसभांति अपने पति ब्रह्माजी के जीवन के लिये बहुत कालतक उग्रतप किया तब श्रीमहादेवजी प्रसन्न हुवे औ गणेश कार्तिकेय नंदी भृङ्गी आदि सहित गायत्री औ सरस्वती के संमुख प्रकट हुवे उनको देख भक्ति से दोनों स्तुति करनेलगीं (गायत्रीसरस्वत्यावूचतुः। नमोदुर्वारसंसारध्वांतध्वंसैकहेतवे। ज्वलज्ज्वालावलीभीमकालकूटबिषादिने १ जगन्मोहनपंचास्त्रदेहनाशैकहेतवे। जगदंतकरक्रूरयमांतकनमोस्तुते २ गंगातरंगसंपृक्तजटामंडलधारिणे। नमस्तेस्तुबिरूपाक्षबालशीतांशुधारिणे ३ पिनाकभीमटंकारत्रासितत्रिपुरौकसे। नमस्तेविविधाकारजगत्स्रष्टृशिरश्छिदे ४ शांतामलकृपादृष्टिसंरक्षितमृकंडुज। नमस्तेगिरिजानाथरक्षावांशरणागते ५ महादेवजगन्नाथत्रिपुरांतक शंकर। वामदेवमहादेवरक्षावांशरणागते ६ इति) यहस्तुति सुन प्रसन्न हो श्रीमहादेवजी ने कहा कि हे गायत्रि हे सरस्वति हम तुम से प्रसन्न हैं जो बर चाहती हो मांगो तब उन दोनों ने यह प्रार्थना करी कि हे नाथ आप हमारे पिता औ हम दोनों आपकी पुत्री हैं अब आप ऐसा अनुग्रहकरें जिससे हमारे पति ब्रह्माजी जी उठैं औ फिर हमारा उनका समागम होजाय यह उनकी प्रार्थना सुन शिवजीने अपने गणों के हाथ ब्रह्माजी का शरीर

वहां मँगवाया औ शिरभी मँगवाया फिर गायत्री औ सरस्वती के संमुखही शिवजी ने ब्रह्माजी का शिर धड़से जोड़कर उनको जिलादिया औ ब्रह्माजी उठ खड़ेहुवे जैसे सोकरउठें औ भक्ति से शिवजी की स्तुति करनेलगे (ब्रह्मोवाच। नमस्तेदेवदेवेश करुणाकरशंकर। पाहिमांकृपयाशंभोनिषिद्धाचरणात्प्रभो। माप्रवृत्तिर्भवेद्भूयोरक्षमांत्वंतथासदा)यह ब्रह्माजी की प्रार्थना सुन शिवजी ने कहा कि हे ब्रह्माजी अब ऐसा प्रमाद कभी मत करना जो पुरुष उत्पथ में चलैं उनको हम दंड देते हैं इसीलिये आपको भी दंडदिया इतनी बात ब्रह्माजी से कह गायत्री औ सरस्वती से कहा कि तुम्हारे तप के प्रभावसे ब्रह्माजी का पुनर्जीवन हुआ अब तुम सब ब्रह्मलोक को जाओ औ तुम्हारे सन्निधान से इन दोनों कुंडों में स्नान करनेवाले पुरुषों की मुक्तिहोगी तुम दोनों के नाम से ये दोनों तीर्थ प्रसिद्ध होंगे ये दोनों तीर्थ सब तीर्थों को भी शुद्ध करनेवाले होंगे इन तीर्थों में स्नान करने से महापातकों का नाश सब मनोरथों की सिद्धि हमारा औ विष्णुजी का प्रसाद भी होगा इन दोनों तीर्थों के तुल्य न कोई तीर्थ हुआ न होगा गायत्री जप से रहित वेदाभ्यास पंचयज्ञ नित्यानुष्ठान आदि से वर्जित पुरुष भी इन कुण्डों में स्नानकरने से उन कर्मों के फल को प्राप्त होंगे और भी पातकी पुरुष इनमें स्नान कर शुद्ध हो जांयगे इतना कह शिवजी तो अंतर्धान हुवे औ गायत्री सरस्वती सहित ब्रह्माजी ब्रह्मलोक को गये इतना कह सूतजी बोले कि हे मुनीश्वरो इसप्रकार गन्धमादन पर्वत में गायत्री औ सरस्वती का सन्निधान हुआ है जो पुरुष इस अध्याय को भक्ति से पढ़ै अथवा सुनै वह दोनों तीर्थों के स्नान फल को प्राप्त हो सद्गति पाता है॥

इकतालीसवां अध्याय॥

सूतजी कहते हैं कि हे मुनीश्वरो गायत्रीतीर्थ औ सरस्वती तीर्थ का प्रभाव हम औरभी वर्णन करते हैं कश्यपनाम ब्राह्मण नरकप्रद बड़ेपापसे इनतीर्थोंमें स्नानकर छुटा मुनियोंने पूछा कि हे सूतजी कश्यप कौनथा उसने क्यापापकिया औ फिर क्योंकर पापमुक्त हुआ यह आप कृपाकरके वर्णनकरैं आपका वचन रूप अमृत पानकरते २हमको तृप्ति नहींहोती यहसुन सूतजी कहने लगे कि हे मुनीश्वरो गायत्री औ सरस्वती के माहात्म्यका एक इतिहास हम वर्णन करतेहैं जिसके सुननेसे सबपातक नाशहोंय अभिमन्युका पुत्र राजापरीक्षित धर्मसे हस्तिनापुर में राज्य करताथा वह साठबर्षकी अवस्थामें एकदिन आखेटके लिये बन में गया वहाँ एकमृगके पीछे लगाहुआ अपनी सेनासे अलग होकर दूरचलागया औ क्षुधा तृषासे भी बहुत व्याकुलथा आगे एकमुनि समाधि लगाये बैठाथा उसको राजाने पूछा कि हेमुने मेरे बाणसेबिँधाहुआ मृग तुमनेदेखा कि नहीं यह राजाका वचनसुन करभी मुनिने कुछ उत्तर न दिया तब धनुषके अग्रभाग से एक मरा सर्प उठाकर राजाने मुनिके गलेमें डालदिया औ आप अपनी राजधानीको चलाआया उस मुनिका पुत्र शृंगी नामथा उसके मित्र कृशाख्य ने शृंगीसे कहा कि तेरा पिता गलेमें मरा सर्प डाले बैठाहै अब तू झूठा अहंकार मत कियाकर यह सुन शृंगीने बड़ा कोप किया औ राजा परीक्षितको शाप दिया कि जिसदुष्ट ने मेरे पिता के गलेमें सर्प डालाहै उसको सात दिनके भीतर तक्षक नाग डसैगा औ वह मरजायगा इस प्रकार मुनि पुत्रने शापदिया यह बात उसके पिता शमीकऋषि ने समाधि खुलनेके अनन्तर सुनी तब अपने पुत्रसे कहाकि तैंने सब प्रजाके रक्षक राजाको क्यों

शापदिया बिना राजाके राज्यमें हमक्योंकर रहसकेंगे क्रोधसे बड़ा पाप होताहै दयासे सुख मिलता है जो उत्पन्नहुये क्रोधको क्षमा से निवृत्त करता है वह दोनों लोकों में सुख पाता है क्षमा वाले पुरुष सदा सुख पाते हैं इतना कह शमीक ऋषि ने अपने शिष्य गौरमुखसे कहा कि तू जाकर राजा परीक्षितसे कह आ कि मेरे पुत्रने तुमको शाप दियाहै यह गुरुकी आज्ञा पाय गौरमुख ने जाकर राजा परीक्षित से कहा कि हे राजा तुम शमीकमुनि के गलेमें मरासर्प डाल आये इसलिये उनके पुत्रने शापदियाहै कि सातदिन के भीतर तक्षकनाग के डसनेसे तुम्हारा मृत्युहोगा यह बात कहने के लिये मेरे गुरुने मुझको भेजाहै इतना कह गौरमुख अपने आश्रम को गया औ राजाभी अति व्याकुल हुवा राजाने गंगाके बीच अति ऊंचे एक स्तंभ के ऊपर एक मंडप अर्थात् बँगला बनवाया औ आप उसमें बैठा अनेक गारुड़ी मांत्रिक चिकित्सक आदि अपने समीप रक्खे औ बहुतसे ब्रह्मवेत्ता ऋषि राजाके समीप बैठे उस अवसर में काश्यप नाम एकब्राह्मण यह बातसुन राजापरीक्षित के पास को चला वह सब मांत्रिकोंमें उत्तमथा औ इस अभिप्राय से आया कि तक्षकके बिषसे राजाकी रक्षाकर बहुतसा धन पाऊंगा इसी अवसरमें तक्षक भी ब्राह्मण का रूपधार हस्तिनापुर को चलाआताथा उसने मार्गमें काश्यप को देखा औ पूछा कि हेब्राह्मण तूकहाँजाताहै तब काश्यप ने कहा कि परीक्षित राजाको आज तक्षग नाग डसैगा उसका बिष निवृत्त करने के लिये मैंजाता हूं तब तक्षकने कहाकि हेब्राह्मण तक्षकमैंहीहूं औ मेरेडसेके ऊपरकिसीका मंत्र तन्त्रनहीं चलसकता जो तुझमें सामर्थ्यहोय तो इस बट वृक्षको डसकर मैं भस्म करता हूं औ तू इसका उज्जीवन कर इतना कह तक्षकने उस वृक्षको डसा डसतेही वह वृक्ष भस्म होगया एक मनुष्य भी उस वृक्षपर

पहिलेसे चढ़ाथा वहभी भस्म होगया उसको तक्षक औ काश्यप दोनोंनहीं जानतेथे काश्यपने कहाकि अब मेरेमंत्रकीशक्तिको सब देखैं इतना कह काश्यप नेबटवृक्षको मंत्रके प्रभावसे फिर जीता करादिया वह मनुष्यभी जो वृक्षके साथ जलगयाथा जीउठा तब तक्षक ने कहाकि हे काश्यप मुनिकुमारका वचन मिथ्या न होय ऐसा करना चहिये राजासे तू जितना धनचाहता है उससेभी द्विगुण धन मुझसेले औअपने घरको लौटजा इतनाकह तक्षक ने बहुतसे उत्तम रत्न काश्यप को दिये काश्यपनेभी ज्ञानदृष्टि से जाना कि राजापरीक्षित का आयुष् समाप्तहोचुका है इसधनको क्यों छोड़तेहो यह विचार तक्षककादिया बहुतसा धनले अपने आश्रमको चला आया तक्षकने अपने सर्पोंको कहा कि तुम मुनि वेश धार कर राजा परीक्षित के पास जाओ औ उत्तम २ फल राजाकोदो यह तक्षककी आज्ञापाय वे सर्प मुनिवेशधार राजा के समीप पहुंचे औअनेक उत्तमफल राजाको दिये उनमें एकफल के बीच तक्षकभी छोटेसे कीटका रूपधार बैठगया था राजाने वे फल मंत्रियोंको बांटदिये औ सबसे बड़ाफल अपने हाथमें रक्खा इतने में सूर्य अस्त होनेलगा राजाने उसफलमें एक रक्तवर्ण का कीट देखकर कहा कि आजसातदिन पूरेहोगये ऋषिका वचन मिथ्या नहोना चाहिये इसलिये यहछोटासा कीट मुझे काटलेवै यह कहकर राजाने वह कीट अपनी ग्रीवा पर रख लिया रखतेही वहकीट तक्षक होगया औ राजाके सबशरीर को लपेटकर ऐसा दंशकिया कि उस महल समेत राजा भस्म होगया आसपासके लोक तक्षकको देखतेही भगगये थे इससे बचगये राजा कीमृत्यु के अनंतर सब और्ध्वदैहिक कृत्य कराय मंत्रियों ने परीक्षित पुत्र जनमेजय को गद्दी पर बैठाया काश्यप भी अपने आश्रम में गया परंतु सब ब्राह्मणों ने उसका तिरस्कार किया कि ऐसे

धर्मात्मा राजा की तैंने रक्षा न करी औ धन लोभ से लौट आया काश्यप भी बड़ा व्याकुल हुआ जिस नगर ग्राम आश्रम आदि में जाय वहांही उसको सब धिक्कारदेवैं तब अति दुःखीहो शाकल्य मुनि के शरण में गया औ प्रार्थना करी कि महाराज सब ब्राह्मण मुनि बंधु मित्र आदि मेरी निंदा करतेहैं इसका मैं कारण नहीं जानता ब्रह्महत्या सुरापान गुरुस्त्रीगमन सुवर्ण की चोरी आदि कोई महापातक मैंने नहीं किया औ महापातकी पुरुषों का कभी मैंने संसर्ग भी नहीं किया और भी कोई उपपातक मैंने नहीं किया फिर भी मेरी निंदा क्यों करते हैं जो आप इस का कारण जानते होंय तो मुझसे कृपाकर कहो काश्यप का यह वचन सुन क्षणमात्र ध्यानकर शाकल्य मुनि बोले कि हे काश्यप परीक्षित राजाकी रक्षा के लिये तू चला औ तक्षक से धन लेकर मार्गसेही चला आया जो चिकित्सा करने को समर्थ हो कर भी विष रोग आदि करके पीड़ित मनुष्य की रक्षा न करै वह ब्रह्मघातक होता है क्रोध से काम से भय से लोभ से मात्सर्य से मोह से जो समर्थ होकर विष शस्त्र रोग आदि करके पीड़ित मनुष्य की रक्षा न करै वह ब्रह्मघातक सुवर्णस्तेयी गुरुदारगामी सुरापान करनेहारा औ संसर्ग दोष दुष्ट भी गिना जाता है कन्या बेचनेवाले रस बेचनेवाले घोड़े हाथी बेचनेवाले कृतघ्न विश्वासघातक आदि सबका प्रायश्चित्त है परंतु जो समर्थ होकर आतुर की रक्षा न करै उसका कुछ प्रायश्चित्त नहीं उस मनुष्य के साथ पंक्ति में भोजन न करै संभाषण न करै औ उस का मुखभी न देखै उसके साथ संभाषण करने से महापातक लग जाता है राजा परीक्षित परमविष्णुभक्त धर्मात्मा महायोगी औ चारोवर्णोंकी रक्षा करनेहारा था तैंने तक्षक का वचन माना औ राजा की रक्षा न करी इसी कारण सबतेरी निंदा औ तिर-

स्कार करते हैं यद्यपि राजा परीक्षित का आयुष् समाप्त हो गया था तोभी जबतक श्वासरहै तबतक उपाय करना चहिये क्योंकि काल की गति विलक्षण है कदाचित् बच जाय यह प्राचीन वैद्यों का निश्चय है तू चिकित्सा करने में समर्थ हो करभी मार्ग से लौट गया औ राजा की रक्षा न की इसलिये राजा को पाप तुझ को लगा यह शाकल्यमुनिका वचन सुन काश्यप ने प्रार्थना की कि महाराज कोई ऐसा उपाय बतावें जिस से यह पातक निवृत्त होय आप दयालु हैं औ मैं आप के शरण में प्राप्त हुआ हूं यह काश्यप की प्रार्थना सुन क्षणमात्र ध्यानकर शाकल्यमुनि बोले कि हे काश्यप इस पातक के निवृत्त होने के लिये हम एक उपाय कहते हैं उसको शीघ्रही कर दक्षिण समुद्र के बीच सेतु के मध्य गंधमादन पर्वत में गायत्री औ सरस्वती नामक दो तीर्थ हैं वहां तू स्नान करतेही शुद्ध होजायगा उन तीर्थों का पवन लगतेही सब पाप निवृत्त हो जाते हैं इस लिये तू भी शीघ्रही जाकर स्नानकर काश्यप यह शाकल्यमुनि की आज्ञा पाय उन को प्रणाम कर गंधमादन पर्वत को चला वहां जाय गायत्री सरस्वती औ दंडपाणि भैरव को प्रणाम कर संकल्प पूर्वक दोनों तीर्थों में स्नान किया स्नान करतेही काश्यप निष्पाप हो गया औ तीर्थ के तीरपर बैठ जपकरनेलगा थोड़े काल के अनंतर सब आभरणों से भूषित गायत्री औ सावित्री प्रकट हुईं उनको देख काश्यप ने भक्ति से प्रणाम किया औ पूछा कि तुम दोनों कौन हो तब वे बोलीं कि हे काश्यप हम दोनों गायत्री औ सरस्वती हैं नित्य तीर्थ रूप करके यहां निवास करती हैं इन दोनों तीर्थोंमें स्नान करनेसे हम तुझपर प्रसन्न हुईहैं जोबरतू चाहै वह माँग इन तीर्थों में जो स्नानकरै उसको हम अभीष्ठ बर देती हैं यह उनका वचन सुन काश्यप स्तुति करने लगा (काश्यप

उवाच) चतुराननगेहिन्योजगद्धात्र्यौनमाम्यहम् । विद्यास्वरूपे गायत्रीसरस्वत्यौशुभेउभे १ सृष्टिस्थित्यंतकारिण्यौजगतांवेदमातरौ। हव्यकव्यस्वरूपेचचंद्रादित्यविलोचने २ सर्वदेवाधिपेवाणीगायत्र्यौसततंभजे। गिरिजाकमलाचापियुवामेवजगद्धिते ३ युष्मद्दर्शनमात्रेणजगत्सृष्ट्यादिकल्पनम्। युष्मन्निमेषसततंजगतांप्रलयोभवेत् ४ उन्मेषसृष्टिरभवद्धोगायत्रिसरस्वति । युवयोर्दर्शनादद्यकृतार्थोभवमाशुवै ५ इति) यह स्तुति कर काश्यप ने प्रार्थना की कि सब मुनि औ उत्तमब्राह्मण मुझे निष्पाप जान अंगीकार कर लेवें औ अब कभी मेरी बुद्धि पाप कृत्य में न लगे सदा धर्म मेंही तत्पर रहै यह बर मुझे आप दोनों कृपा करके दो यह वचन सुन दोनों बोलीं कि हे काश्यप ये सब बात तुझको हमारे अनुग्रह से प्राप्त होंगी इतना कह अपने अपने तीर्थ में दोनों अंतर्धान होगईं औ काश्यप भी कृतार्थ हो अपने देश को आया औ सब ब्राह्मणों ने उसको निष्पाप जान अंगीकार किया सूतजी कहते हैं कि हे मुनीश्वरो इस प्रकार गायत्री औ सरस्वती में स्नान कर काश्यप बड़े पातक से छुट गया जो पुरुष भक्ति से इस अध्याय को पढ़ै अथवा सुनै वह गायत्री औ सरस्वती के स्नान फल को प्राप्त हो सब पापों से छुटता है ॥

बयालीसवां अध्याय॥

सूतजी कहतेहैं कि हेमुनीश्वरो सेतुके बीच औरभी जो तीर्थहैं उनका वैभव हम वर्णनकरतेहैं ऋणमोचननाम एक तीर्थहैजिसमें स्नान करनेसे तीनप्रकारका ऋण निवृत्त होताहै ब्राह्मण क्षत्रिय औ वैश्य इन तीन वर्णोंपर ऋषि देवता औ पितरोंका ऋणहोता है ब्रह्मचर्यका अनुष्ठान नकरै तो ऋषियोंका ऋण रहताहै यज्ञ न करै तो देवताओंका ऋण औ पुत्र उत्पन्न न करनेसे पितरोंका

ऋण रहताहै ब्रह्मचर्य यज्ञ औ पुत्रोत्पादन विनाही ऋणमोचन तीर्थमें स्नान करनेसे मनुष्य ऋषि देवता औ पितरों के ऋणसे छुट जाताहै ऋषि देवता औ पितर ब्रह्मचर्य आदिसे वैसे संतुष्ट नहीं होते जैसे ऋणमोक्षमें स्नान करनेसे होतेहैं औ दरिद्र पुरुष जो धनवानों के ऋणसे ग्रस्तहोय वहभी इसतीर्थ में स्नान करै तो उसका ऋण निवृत्त होजाय औ वह आप धनाढ्य होजाय यहाँ स्नान करनेसे ऋण मुक्तिहोतीहै इसीसे इसकानाम ऋण-मोचनहै ऋणी पुरुषों को अवश्यही इसतीर्थ में स्नान करना चहिये इस तीर्थके समान तीर्थ न हुआ नहोगा यहाँ एकतीर्थ पांडवों का बनायाहै पांचो पांडवोंने भोग औ मोक्षके लिये वहाँ यज्ञकिये इसलिये उसतीर्थका नाम पंचपांड हुआ दशहजार कोटितीर्थ सदा पँचपांडव तीर्थमें निवास करते हैं आदित्य वसु रुद्र साध्य मरु-द्गण आदि सब देवता उसतीर्थ में निवास करते हैं इस तीर्थ में स्नान कर जो पुरुष देवता औ पितरों का तर्पणकरै वह सबपापों से छुट ब्रह्मलोक को जाता है जो पुरुष इसतीर्थ के तटपर एक ब्राह्मण का भी भोजनकरावै वह दोनोंलोकोंमें सुखी रहताहै चारों वर्णोंमेंसे कोई मनुष्य इस तीर्थ में स्नानकरै वह फिर वियोनि में नहीं जन्म लेता पर्वदिनों में जो मनुष्य पांडव तीर्थमें स्नान करैं वे कभी नरकको नहीं देखते जो सायंकाल औ प्रातःकाल इस तीर्थका स्मरण करै वह गंगा आदि सब तीर्थों के स्नान फलको प्राप्तहोताहै गंधमादन पर्वतमें इंद्रआदि देवताओं ने दैत्योंका नाश होनेके लिये एक देवतीर्थ बनाया है उसमें स्नान करने से सब पाप निवृत्त होतेहैं औ अक्षय स्वर्ग वासहोताहै स्त्री अथवा पुरुषने जन्मभर पाप किये होंय वे सबपाप देवतीर्थमें स्नान कर-तेही नष्टहोजाते है सब देवताओं में जैसे विष्णुभगवान् प्रधान हैं इसीप्रकार सबतीर्थों में देवतीर्थ मुख्य है सौबर्ष पर्यन्त ऋषि-

होत्र करनेसे जो पुण्यहोता है वह देवकुंड में एकबार स्नान करनेसे होताहै देव तीर्थपर निवास करना दानदेना जप आदि कर्मकरने औ भक्तिसे देवतीर्थमें स्नानकरना येसब बात बहुतदुर्लभहैं देवतीर्थमें जानेसे अश्वमेध का फल प्राप्तहोताहै वहाँ दोचार दिननिवास करै तो उत्तम सिद्धिको प्राप्तहोताहै औ जन्ममरण से छुटजाताहै तीनदिन स्नान न करने से वाजपेय यज्ञका फल प्राप्त होताहै देवतीर्थके स्मरण करनेसेयेसब पाप निवृत्त होजातेहैं इस तीर्थपर देवता औ पितरोंका अर्चन करने से सब मनोरथ सिद्धहोते हैं औ सबयज्ञों काफल प्राप्तहोताहै इसतीर्थकेतुल्य कोईतीर्थ नहुआ न होगा दोनों लोकोंमें कल्याणकी इच्छावाले पुरुषों को विशेष करके मुमुक्षु पुरुषोंको देवतीर्थमें अवश्यही स्नान करना चहिये यह देवतीर्थ का माहात्म्य हमने संक्षेपसे वर्णन किया विस्तारसे तो कहांतक वर्णन करें अब रामसेतु में सुग्रीवतीर्थ का माहात्म्य कहतेहैं सुग्रीवतीर्थ में स्नान करनेसे अश्वमेधका फल प्राप्तहोकर सूर्यलोक में निवास होताहै औ हजार गोदान का फलहोता है ब्रह्महत्या आदि पाप निवृत्त होतेहैं वेदपारायण का फल होताहै वहाँ स्नानकर देवता पितरोंका तर्पणकरै तो आठ अग्निष्टोम यज्ञ काफल होताहै सुग्रीवतीर्थ में स्नान करनेसे मनुष्य जातिस्मर होताहै इसलिये अवश्यही सुग्रीवतीर्थ में स्नान करना चाहिये यह सुग्रीवतीर्थ का माहात्म्य कहा अब नलतीर्थ का वैभव वर्णन करतेहैं नलतीर्थमें स्नान करनेसे मनुष्य सब पापोंसे निवृत्तहो अग्निष्टोम आदि यज्ञोंका फल पाय स्वर्गमें निवास करताहै तीन दिन उपवास करै औ नलतीर्थ में देवता औ पितरों का तर्पण करै तो अतिरात्र अश्वमेध आदि यज्ञके फलको पाय सूर्यके तुल्य प्रकाशित होताहै अब नीलतीर्थका माहात्म्य कहतेहैं अग्निके पुत्र नीलने वह तीर्थ बनाया है नीलतीर्थ में स्नान करने से

मनुष्य सब पापोंसे मुक्तहो बहुत स्वर्ण यज्ञका सौगुणा फलपाये अग्निलोकको जाताहै गवाक्षतीर्थमें स्नान करै तो कभीनरक का भय न होय अंगदतीर्थ में स्नान करने से मनुष्य देवत्वको प्राप्त होताहै इसप्रकार गज गवय शरभ कुमुद पनस आदि बानरोंके बनाये तीर्थ गंधमादन मेंहैं उनमें स्नान करनेसे मोक्षप्राप्ति होती है विभीषण के बनाये तीर्थमें स्नान करै तो पाप दुःख रोग कुंभीपाक आदि नरकोंका भय दुस्वप्न दारिद्र्य आदि नाशको प्राप्तहोते हैं वहाँ स्नान करनेहारा मनुष्य सब पापोंसे छुट वैकुंठको जाताहै विभीषण के मंत्रियों ने चारतीर्थ बनाये हैं उनमें स्नान करनेसे सब पाप निवृत्त होतेहैं गंधमादन पर्वतमें रामनाथमहादेव का सेवन करनेकेलिये सरयूनदी वहाँ निवास करती है उसमें स्नान करने से सब यज्ञ तपतीर्थ दान आदिका फल प्राप्तहोताहै दशहजार कोटितीर्थ गंधमादन में निवास करतेहैं गंगाआदि नदी सातोंसमुद्र ऋषियों के आश्रम पुण्यबन शिव विष्णु आदि क्षेत्र सब गंधमादन में निवास करतेहैं तेतीसकोटि देवता पितर मुनि यक्ष किन्नर आदि सब रामसेतुमें निवासकरते हैं सूतजी कहते हैं कि हेमुनीश्वरो यह गंधमादन के सबतीर्थों का माहात्म्य हमने वर्णनकियाइस अध्यायको जो पुरुषपढ़ै अथवा सुनै वह सबपापों से छुट मोक्षको प्राप्त होताहै ॥

तेतालीसवां अध्याय ॥

सूतजी कहतेहैं कि हेमुनीश्वरो अब हम रामनाथका माहात्म्य वर्णन करते हैं जिसके सुनने से मनुष्य सब पापोंसे छुटजाय रामचंद्रजीके स्थापनकिये लिंगका जो मनुष्य दर्शनकरै वहमुक्ति पाताहै सत्ययुग में जो पुण्य दशवर्ष में साधन कर सक्तेथे वह त्रेतायुगमें एकवर्ष करके द्वापरमें एकमास करके औ कलियुगमें

एकदिन करके सिद्ध होसकताहै वह पुण्य कोटिगुण एक २ निमेष में रामनाथके दर्शनसे प्राप्त होताहै रामेश्वर लिंगमें सब तीर्थ सब देवता ऋषि पितर मुनि आदि निवास करते हैं नित्य त्रिकाल जो रामेश्वरका स्मरण अथवा कीर्तन करतेहैं वे सब पापों से छूट सच्चिदानंद स्वरूप सांब शिवमें लीन होतेहैं कभी उन मनुष्यों को यमयातना नहीं होती जो रामनाथ लिंगका एकबार भी पूजनकरें वे मनुष्य नहीं साक्षात् रुद्रहैं जो रामेश्वरका पूजन न करें वे कभी संसार के दुःखसे नहीं छुटते जो रामेश्वरका स्मरण करतारहै उसको दान ब्रत तप यज्ञ आदि करने की कुछ अपेक्षा नहीं जो रामेश्वर का स्मरण न करें वे अज्ञानी जड़ मूक वधिर अंध आदि होतेहैं औ उनके धन संतान क्षेत्र आदिकी सदाहानि होतीहै रामेश्वर लिंगके दर्शनकिये पीछे गया प्रयाग काशी आदि तीर्थोंमें जानेका कुछ प्रयोजन नहीं जो पुरुष अति दुर्लभ मनुष्य जन्मपाय रामेश्वर का दर्शन और पूजन करतेहैं उनका जन्म सफलहै रामेश्वर लिंगका पूजन करनेहारे मनुष्यको ब्रह्मा विष्णु इंद्र आदि देवता की कुछ आकांक्षा नहींरहती रामेश्वर को जो मनुष्य प्रणाम प्रदक्षिणा आदिकरें वे कभी दुःख नहीं देखते औ यमलोक कोभी नहीं जाते हजारों ब्रह्महत्या आदि पाप रामेश्वर का दर्शन करतेही विलय को प्राप्त होजातेहैं जो मनुष्य स्वर्ग सुख भोगनाचाहैं वे सदा रामेश्वरका पूजनकरें करोड़ो जन्मों के किये पाप रामेश्वर दर्शन करतेही नाशको प्राप्तहोजातेहैं लोभसे भयसे संसर्गसे जो मनुष्य एकबारभी रामेश्वरका स्मरण अथवा पूजन करतेहैं वे कभी दोनों जन्मोंमें दुःखनहीं पाते रामेश्वर का कीर्तन औ पूजन करनेसे अवश्यही शिवसायुज्य प्राप्त होता है जिसभांति अग्निकाष्ठको दग्ध करदेताहै इसीप्रकार रामेश्वरका दर्शन पापोंको भस्म करताहै रामेश्वरकी भक्ति आठ प्रकारकीहै

रामेश्वर के भक्तों में स्नेह रखना पूजादेखकर प्रसन्नहोना आप पूजन करना रामेश्वरके अर्थ देहकी चेष्टा करना रामेश्वर कथा सुननेमें आदर रामेश्वर स्मरण से शरीरमें रोमांच औ अश्रुपात आदि होना रामेश्वर का स्मरण करते रहना औ रामेश्वर के आश्रय से जीना यह आठ प्रकार की भक्ति म्लेच्छमें भी हो तो वह मुक्ति का भागी होता है देवता में अनन्यभक्ति ब्रह्मज्ञान औ वेदांत शास्त्र श्रवण से जितेन्द्रिय मुनीश्वरों को प्राप्त होती है वह मुक्ति बिना ज्ञान बिना वैराग्य औ बिना कायक्लेश के सब वर्ण औ सब आश्रम के मनुष्यों को रामेश्वर के दर्शनमात्र से मिलसक्ती है कृमि कीट देवता मनुष्य बड़े तपस्वी मुनि रामेश्वर का दर्शन करने से तुल्यही गतिपाते हैं पापी पुरुष पापका भय न करें औ पुण्य करनेहारे पुण्य का गर्व्व न रक्खें रामेश्वर दर्शन किये पीछे सब समान हैं जो भक्ति से रामेश्वर का दर्शनकरै उसकी तुल्यता चारवेद जाननेहारा ब्राह्मण भी नहीं करसकता रामेश्वर का भक्त चंडाल भी मिलै तो वेदवेत्ता ब्राह्मण को छोड़ सब दान उसको देने चहिये जो गति ऊर्ध्वरेता योगीश्वरों की होती है वहही रामेश्वर दर्शन करनेहारों की होती है रामेश्वर में बसनेवाले सब मनुष्य मरण के अनंतर साक्षात् शिव स्वरूप होते हैं रामेश्वर को जो मनुष्य यात्राकरें उनके एक एक पद में अश्वमेध का फल होता है रामेश्वर में जो एक ग्रास भर अन्नभी ब्राह्मण को देवै वह सप्तद्वीपवती भूमि के दान फल को पाता है रामनाथ को जो पुरुष भक्ति से पत्र फल जल अर्पण करै उसकी सदा रामनाथ महादेव रक्षा करते हैं रामनाथ का पूजन भक्ति स्मरण स्तुति आदि सब अति दुर्लभ हैं जो पुरुष भक्ति से रामनाथ की शरण में प्राप्त होते हैं वे दोनोंलोकों में लाभ औ जय पाते हैं जिसका चित्त दिनरात रामनाथ में लगारहै वहधन्य है जो रामेश्वर का

पूजन नहीं करते वे भोग मोक्ष नहीं पाते पूजन करनेहारेही भुक्ति
औ मुक्ति पाते हैं रामेश्वर पूजन से अधिक कोई पुण्य नहीं है
जो पुरुष रामेश्वर के साथ द्वेष करै वह दश हजार ब्रह्महत्या-
ओं से लिप्त होता है औ उस के साथ संभाषण मात्र करने से
नरक में वास होता है सब देव औ यज्ञ रामनाथ केही हैं इस
कारण सबको छोड़ रामनाथ के शरण में जाना चहिये रामनाथ के
शरण में प्राप्त हुवे पुरुष सब पापों से छुट शिवलोक को जाते हैं
सब यज्ञ तप दान तीर्थस्नान आदि करनेसे जो फल मिलता है
उससे कोटिगुण फल रामेश्वर के दर्शन से होताहै दोघड़ी राम-
नाथका स्मरणकरै तो सौपीढ़ी समेत शिवलोकमें प्राप्त होताहै
जो दिनभर रामनाथका दर्शनकरै वह सब संसार सुखभोग अंतमें
रुद्र बनताहै जो प्रभातउठरामनाथका स्मरणकरै उसको साक्षात्
शिव जानना चहिये रामनाथके दर्शन करनेहारे पुरुष के दर्शन
करने से सब पाप निवृत्त होजाते हैं मध्याह्न को रामनाथ का
दर्शनकरै तो हजारों सुरापान पातक नष्ट होतेहैं सायङ्काल को
दर्शन करनेसे गुरुदारगमन पातक निवृत्त होते हैं सायंकाल के
समय उत्तम स्तोत्रों से रामेश्वर की स्तुतिकरै तो हजार सुवर्ण-
स्तेय पातक नाशको प्राप्त होतेहैं धनुष्कोटिमें स्नान औ रामेश्वर
का दर्शन एकबार भी करलेवै तो गङ्गा आदि तीर्थोंकी कुछ अपेक्षा
नहीं रहती है जो वस्तु रामनाथ की सेवा से न प्राप्त होय वह
किसी प्रकार से भी नहीं प्राप्त हो सकती है जो कभी रामनाथ
का दर्शन न करै उसको वर्णसंकर जानना चहिये जो प्रभात
उठ तीनबार रामनाथ शब्द को उच्चारणकरै उसका पूर्बदिन
का किया पाप निवृत्त हो जाताहै रामनाथ के होते भी मनुष्य
क्यों याचना करते फिरते हैं रामनाथ की कृपा होने से सब क्लेश
निवृत्त हो जाते हैं जिस प्रकार सूर्योदय होतेही अंधकार प्राण-

त्याग के समय जो पुरुष रामनाथ का स्मरणकरै वह फिर जन्म नहींलेता औ साक्षात् शिव होजाता है जो पुरुष (हे रामनाथ हे करुणानिधे हे भक्तबत्सल) इत्यादि वाक्य उच्चारण कियाकरै उसको कभी कलियुग की बाधा नहीं होती औ वह माया में भी लिप्त नहीं होता औ काम क्रोध आदि भी उस को पीड़ा नहीं देते जो पुरुष काष्ठसे रामनाथ का मंदिर बनावे वह तीन कोटि कुल सहित स्वर्ग को जाता है ईंटों से बनावे तो बैकुंठ पावै पत्थर से मंदिर बनावे तो ब्रह्मलोक को जावे औ स्फटिक आदि उत्तम शिलाओं से रामनाथ का मंदिर बनावे तो उत्तम विमान में बैठ शिवलोक को जावे ताम्र करके रामनाथ का मंदिर बनावे तो शिवसालोक्य पावै चांदी करके बनावे तो शिव सायुज्यमिलै औ सुवर्ण का मंदिर बनवावै तो शिवसारूप्य पावै धनवान् सुवर्ण का बनवावै औ दरिद्री पुरुष मृत्तिका का मंदिर बनवावै तौभी दोनों को तुल्यही फल मिलता है रामनाथ के स्नान कराने के समय औ तीनकाल आरती के समय जो पुरुष अनेक प्रकार के बाजे बजावें वे सब पापों से छुट रुद्रलोक को प्राप्त होते हैं जो पुरुष रामनाथ के स्नान समय में रुद्राध्याय चमक पुरुष सूक्त त्रिसुपर्ण पंचशांति पावमान आदि का पाठकरै वह कभी नरकनहीं देखता गोदुग्ध दधि घृत पंचगव्य से जो रामनाथ को स्नानकरावै वह नरक नहींदेखता घृत से स्नान करावे तो करोड़ों जन्मके पाप निवृत्त होतेहैं दुग्धसे स्नानकरावै तो इक्कीस कुलसहित शिवलोक को जाय दहीसे स्नानकरावै तो विष्णुलोकमें प्राप्तहोय तिल तैलसे जो रामेश्वर लिङ्गको अभ्यंग करावै वह कुवेर के समीप निवास करता है इक्षुरससे जो भक्ति-पूर्वक एकबार भी रामनाथ को स्नानकरावै वह चंद्रलोक को जाताहै बड़हर औ आम्रके रससे स्नान करावै वह पितृलोक में

निवास करताहै नारिकेल के जलसे स्नान करावै तो ब्रह्महत्या आदि पाप निवृत्त होतेहैं पकेकेलों से रामनाथलिंग को लेपनकरै तो सब पापोंसे छुट वायुलोकको जाय वस्त्रसे छनेहुये जलकरके रामनाथ को स्नानकरावै तो वरुणलोक में निवासकरै चंदनयुक्त जलसे स्नानकरावै तो गंधर्वलोक पावै कमल आदि पुष्पोंकरके सुगंधित औ सुवर्ण युक्त जलसे स्नान करावै तो इंद्रके समीप निवासकरै पाटला उत्पल कल्हार आदि से वासित जल करके स्नानकरावै तो सब पापोंसे छुटे औरभी सुगंध पुष्पों करके वासित जलसे स्नान कराने करके शिवलोक की प्राप्ति होती है इलायची कपूर आदिसे सुगंध जलकरके रामेश्वर को स्नान करावै तो अग्निलोक में जाय सुखपूर्वक निवासकरै रामनाथके अभिषेक के लिये जो मृत्तिका के घटदेवै वह सुखपूर्वक सौ वर्ष आयुष् भोगता है ताम्रके घटदेवै तो स्वर्गको जाय चाँदीके कुंभ देवै तो ब्रह्मलोक पावै सुवर्ण कलश देनेसे शिवलोक मिलै औ रत्नकुंभ अभिषेक के लिये देवे तो शिवजी के समीप निवासकरै जो दूध देनेहारी गौ रामेश्वर के अर्पणकरै वह अश्वमेध यज्ञका फलपाय शिवलोकमें निवास करता है स्नानके समय रामनाथ औ धनुष्कोटि का स्मरणकरै वह सेतुस्नान का फलपाता है जो रामनाथ के मंदिर को कली पुतवाकर श्वेत करदेवै उसके पुण्य फलको हम सौ वर्षमें भी नहीं वर्णन करसकते जो रामनाथ के मंदिर का जीर्णोद्धारकरै वह ब्रह्महत्या आदि पापों से छुटता है औ नया मंदिर बनानेसे भी सौगुणा अधिक पुण्य पाताहै रामनाथके आगे जो दीप जलावै वह अविद्यारूप अंधकार से छुट ब्रह्मसायुज्य को प्राप्तहोता है घृत तेल मूंग चावल गुड़ खांड़ आदि जो रामेश्वरके अर्पणकरै वह इन्द्रकेसमीप निवासकरता है रामनाथके दर्शन स्पर्श स्मरण पूजन आदिसे सब पाप नाश

को प्राप्तहोतेहैं जो पुरुष दर्पण औ घंटा रामनाथ को चढ़ावै वह उत्तम विमान में बैठ शिवलोकको जाताहै भेरी मृदंग पणव बंशी आदि बाजे जो रामनाथ के अर्पणकरै वहभी उत्तम विमान में बैठ शिवलोकको जाय रामनाथके निमित्त थोड़ाभी देवै वह अनंत गुणहोजाताहै जन्मभर जो रामेश्वर क्षेत्रमें रहै वह अवश्यही मुक्तिपाता है आयुष् यौवन संपति पुत्र स्त्री आदि कोई पदार्थ जगत्में स्थिरनहीं राजा धन क्षेत्र आदिको हरलेते हैं इसलिये इन सबका मोह छोड़ रामेश्वर के शरणमें प्राप्तहोय जो पुरुष उत्तमग्राम रामेश्वर के अर्पण करै वह साक्षात् शिवस्वरूपही होजाताहै सब पात्रोंमें उत्तम पात्र रामेश्वर है इसलिये सब पदार्थ रामेश्वरके अर्पण करने चहियें रामनाथके दर्शन पर्यंतही सब पातक रहतेहैं पंखा ध्वजा छत्र चामर चंदन गुग्गुलु ताम्र चांदी सोने आदिके घट औरभी उत्तम २ सामग्री जो पुरुष रामेश्वरके अर्पणकरैं वे जन्मांतर में चक्रवर्ती राजाहोते हैं रामेश्वरके पूजन के लिये जो भक्तिसे पुष्पलाते हैं वे अश्वमेध आदि यज्ञोंका फल पातेहैं रामेश्वरका दर्शन श्रवण पूजन स्मरण आदिकरनेहारे पुरुषों को कोई पदार्थ दुर्लभनहीं जो पुरुष रामनाथ को जाय उसके पातक भयभीत होजाते हैं रामनाथका दर्शन करनेहारे पुरुषों को वेदशास्त्र तीर्थ यज्ञआदिसे कुछ प्रयोजन नहीं चंदन केसर कस्तूरी गूगल राल आदिधूप जो पुरुष रामेश्वर के अर्पण करै वह धनाढ्य औ वेदशास्त्र का जाननेहारा होता है मोतियोंके हार औ उत्तम २ वस्त्र जो रामनाथ के अर्पणकरै वह कभी दुर्गति नहीं भोगता गंगाजलसे जो रामनाथ को स्नान करावै उसका शिवजीभी सत्कार करतेहैं जबतक वृद्धावस्था न प्राप्तहोय इंद्रिय शिथिल न होजांय औ मृत्यु न आय पहुंचे तबतक रामेश्वर के शरण में प्राप्त होजाना चहिये सबपुराण औ धर्मशास्त्रोंमें रामेश्वरकी पूजा के

तुल्य कोई धर्मनहीं लिखा रामेश्वरका सेवन करनेहारे पुरुष बहुत कालतक संसारसुख भोगकर अंतमें मुक्तिपातेहैं सूतजी कहतेहैं कि हेमुनीश्वरो यहरामनाथका थोड़ासावैभव हमने वर्णन किया जो पुरुष इसको भक्तिसे पढ़ै अथवा श्रवणकरै वह धनुष्कोटि स्नान औ रामनाथ के दर्शन करनेका फल पाय सद्गति को प्राप्तहोता है ॥

चवालीसवां अध्याय ॥

शौनक आदि ऋषि पूछतेहैं कि हेसर्व पुराणज्ञ सूतजी आप के मुखकमलसे यह सेतु माहात्म्य औ रामेश्वर का वैभव सुन हम कृतार्थ हुवे अब आप यह वर्णन करैं कि श्रीरामचन्द्र जी ने रामेश्वर का स्थापन किस प्रकार किया औ किस समय किया यह मुनियों का प्रश्न सुन सूतजी कहनेलगे कि हे मुनीश्वरो जिसलिये गंधमादन पर्वत में रामचन्द्रजी ने रामेश्वर का स्थापन किया हम वर्णन करते हैं रामचन्द्रजी की भार्य्या सीता को रावण हरलेगया तब बानरों की सेना सहित रामचन्द्रजी महेंद्र पर्वत पर पहुंचे औ समुद्र को देखा औ सेतुबाँध पूर्णमासी के दिन सायंकाल के समय समुद्र पार बेलापर्वत पर पहुंचे रावण भी लंका में अपने महल के ऊपर बैठाथा सुग्रीवने जाकर रावणका मुकुट उतार लिया रावणभी मुकुट उतरने से लज्जित हो महल के भीतर चलागया रामचंद्रजीने सेनाकाडेरा किया तब रावण के अनुचर पर्वण पूतनाजूंभ खर क्रोधवश हरि प्रारुज चारुज प्रहस्त आदि अदृश्य होकर रामचंद्रजी की सेनामें आये परंतु विभीषण ने उनको प्रकट करदिया इसलिये वे सब बानरोंके हाथसे मारेगये यहबात रावण न सहसका इससे युद्धकरने निकला तब रामचंद्रभी रावण के साथ युद्ध करने निकले औ

युद्ध होनेलगा लक्ष्मण मेघ नादका सुग्रीव बिरूपाक्षका अंगद खर्वटका नल पौंड्रका पनस पुटशका परस्पर युद्ध प्रवृत्त हुआ औरभी बानर औ राक्षसों का द्वंद्व युद्ध होनेलगा बानरोंने बहुत से राक्षस मारे तब रावणके पुत्र इंद्रजित् ने रामचंद्र औ लक्ष्मण को नागपाश से बांधा उस समय गरुड़ने आय उनको छुटाया प्रहस्त औ बिभीषण का युद्ध होताथा प्रहस्तने बड़े वेगसे बिभीषण पर गदाका प्रहार किया परंतु बिभीषण हिमालय पर्वत की भांति स्थिर रहा फिर बिभीषण ने आठघंटाओं करके शोभित शक्ति प्रहस्तपर चलाई उसके लगतेही प्रहस्तका शिर उड़गया औ वृक्षकी भांति भूमिपर गिरा उसको गिरेदेख धूम्राक्ष नाम दैत्य बानर सेनाकी ओरचला उसको देख भयसे बानर सेना भगी तब हनुमान्‌जीने उसको मारगिराया यह सब वृत्तांत राक्षसोंने रावणसे कहा तब रावणने कुंभकर्णको जगाया औ युद्ध करने भेजा उसको लक्ष्मण ने ब्रह्मास्त्रसे मारा दूषण के छोटेभाई बज्रवेग औ प्रमाथी हनुमान् औ नीलने मारे जो रावणके तुल्य पराक्रमी थे बज्रदंष्ट्र को बिश्वकर्माके पुत्र नल ने औ अकंपन को कुमुदनाम बानरने यमलोकको भेजा अतिकाय औ त्रिशिराको लक्ष्मणने देवांतक औ नरांतकको सुग्रीवने कुंभकर्णके दोनोंपुत्रों को हनुमान् ने मकराक्षको बिभीषण ने मारा तब रावणने अपने पुत्र इन्द्रजित् को युद्धकी आज्ञादी वहभी जाकर अदृश्य हो आकाशमें स्थित होकर बानरोंका संहार करनेलगा कुमुद अंगद सुग्रीव नल जांबवान् आदिसहित बानर भूमिपरगिरे रामचन्द्रजी कोभी बड़ा क्षोभहुआ तब बिभीषण ने प्रार्थनाकरी कि महाराज कुवेर का भेजा हुआ एक यक्ष जल लेकर आया है उस जल को नेत्रमें लगाने से अदृश्यभूत देख पड़ते हैं यह बिभीषणका वचन सुन वह जल रामचन्द्र जीने लिया और लक्ष्मण सुग्रीव हनुमान्‌हो

अंगद मंद द्विविद आदि सबको दिया उन सबने नेत्र धोये तब आकाशमें इन्द्रजित् को देखा लक्ष्मण औ इन्द्रजित् का घोरयुद्ध होनेलगा जैसा इन्द्र औ प्रह्लादका पूर्बकालमें हुआथा तीसरे दिन लक्ष्मणने इन्द्रजित् को मारा और उसके साथ जो सेना थी उसका बानरों ने संहार किया प्रिय पुत्रके मरजाने पर क्रोध औ शोक करके पीड़ित रावण रथ में बैठ युद्ध करनेआया रावण ने जानकी को मारना चाहाथा परंतु बिन्ध्य ने उसको निवारण किया इतने में इन्द्र का सारथि मातलि रामचन्द्रजीके लिये रथ लाया तब रामचन्द्रजी इन्द्रके भेजेहुवे उस रथमें बैठ रावण से युद्ध करनेलगे औ ब्रह्मास्त्र से रावण को मारा रावणके मारनेसे सब ऋषि रामचन्द्रजीको आशीर्बाद देनेलगे देवता सिद्ध विद्याधर स्तुति औ पुष्प वृष्टि करनेलगे रामचन्द्रजी भी लंका का राज्य-विभीषण को दे सीता औ लक्ष्मण सहित पुष्पक विमान पर चढ़ गन्धमादनपर्बत में पहुंचे वहां आय सीता का अग्निमें शोधन किया वहांही सीता लक्ष्मण हनुमान् विभीषण सुग्रीव अंगद आदि सहित रामचन्द्रजी स्थित थे तब दण्डकारण्य के सब मुनि अगस्त्यमुनि सहित वहां आये औ रामचन्द्रजी की स्तुति करनेलगे) मुनयऊचुः। नमस्तेरामचन्द्राय लोकानुग्रहकारिणे। अरावणंजगत्कर्तुमवतीर्णायभूतले १ ताटकादेहसंहर्त्रे गाधिजाध्वररक्षिणे। नमस्तेजितमारीच सुबाहुप्राणहारिणे २ अहल्यामुक्तिसंदायि पादपंकजरेणवे। नमस्तेहरकोदंड लीलाभंजनकारिणे ३ नमस्तेमैथिलीपाणि ग्रहणोत्सवशालिने। नमस्तेरेणुकापुत्र पराजयविधायिने ४ सहलक्ष्मणसीताभ्यां कैकेयास्तुवरद्वयात्। सत्यंपितृवचःकर्तुं नमोवनमुपेयुषे ५ भरतप्रार्थनादत्त पादुकायुगलायते। नमस्तेसरभंगस्य स्वर्गप्राप्त्यैकहेतवे ६ नमोविराधसंहर्त्रे गृध्रराजसखायते। मायामृगमहाक्रूर मारीचांग

विदारिणे ७ रावणापहृतासीता युद्धत्यक्तकलेवरम् । जटायुषंतु संदह्य तत्कैवल्यप्रदायिने ८ नमःकवन्धसंहर्त्रे शवरीपूजितांघ्रये। प्राप्तसुग्रीवसख्याय कृतवालिबधायते ९ नमःकृतवनसेतुं समुद्रे वरुणालये । सर्वराक्षससंहर्त्रे रावणप्राणहारिणे १० संसारां वुधिसंतार पोतपादांवुजायते । नमोभक्तार्तिसंहर्त्रे सच्चिदानन्द रूपिणे ११ नमस्तेरामभद्राय जगतामृद्धिहेतवे । रामादिपुण्य नामानि जपतांपापहारिणे १२ नमस्तेसर्वलोकानां सृष्टिस्थित्यं तकारिणे । नमस्तेकरुणामूर्तेभक्तरक्षणदीक्षित १३ ससीताय नमस्तुभ्यं विभीषणसुखप्रद । लंकेश्वरवधाद्राम पालितंहिजग त्वया १४ रक्षरक्षजगन्नाथ पाह्यस्मान्जानकीपते) इसप्रकार मुनियोंने स्तुति की सूतजी कहते हैं कि हे मुनीश्वरो जो पुरुष इस स्तोत्र को तीनकाल पढ़े वह भोग औ मोक्ष पाताहै यात्राके समय पढ़े तो मार्गमें किसीप्रकार का भय नहीं होता इसस्तोत्र के पाठसे भूत बैताल रोग पाप दुःख आदि क्षयको प्राप्त होतेहैं औ पुत्र धन मोक्ष आदि सब पदार्थ इस स्तोत्रके पाठसे मिलते हैं मुनियों की की हुई स्तुति सुन रामचन्द्रजी ने कहा कि हे मुनीश्वरो सबजीव शुद्धिके लिये हमारी प्राप्ति चाहते हैं औ जो हमारे दर्शन पावे वह मुक्त होजाता है तौ भी हम भक्ति करके शांतचित्त औ जगत्के हितमें प्रवृत्ति साधुओंको प्रणामही करते हैं हम ब्राह्मणों के भक्तहैं इसलिये सदा ब्राह्मणोंका सेवन करते हैं अब एक बात आपसे पूछतेहैं आप सब कृपाकर हमको कहैं पुलस्त्यमुनिके पुत्र रावणकेबधसे जो पापहमसेहुआ उसका आप प्रायश्चित्त बतावें जिसके करनेसे हम निष्पाप होजांय यह रामचन्द्रजीका वचन सुन मुनि बोले कि महाराज आप जगत् प्रभु हैं आपको कुछ पातक नहीं तौ भी लोकों के कल्याण के लिये औ पापकी शंका निवृत्त करनेके अर्थ इस गन्धमादन पर्वत

में शिवलिंग स्थापन करें शिवलिंग स्थापन के फलको ब्रह्माजी भी नहीं वर्णन करसकते मनुष्यकी तो क्या कथाहै आपके स्थापन किये लिंगके दर्शन का फल काशी विश्वनाथ के दर्शन फल से कोटिगुणित होगा औ आपके नामसे यह लिंग प्रसिद्धहोगा इसलिये आप बिलंब न करें यह मुनियों का बचनसुन हनुमान् को रामचन्द्रजीने आज्ञा दी कि हे वायुपुत्र शीघ्रही कैलास में जाय एक उत्तम शिवलिंग लेआओ हनुमान् भी रामचन्द्रजीकी आज्ञा पाय भुजाओं का शब्दकर गन्धमादन को कँपाय आकाश को उड़े औ क्षणमात्र में कैलासपर्बत पर पहुंचे परन्तु वहां लिंगरूप महादेव न मिले तब लिंग प्राप्तिकेलिये हनुमान् जी ऊर्ध्वबाहु जितेंद्रिय हो श्वास रोककर तप करनेलगे कुछ कालके अनन्तर प्रसन्नहो शिवजी ने हनुमान्को एक उत्तमलिंग दिया परंतु हनुमान्जी के आगमनमें बिलंब होनेसे मुनीश्वरों ने रामचन्द्र से कहा कि मुहूर्त्तकाल आगया औ हनुमान् शिवलिंग लेकर आया नहीं इसलिये सीताजीने लीला करके जो बालू का शिवलिंग बनाया है उसको आप स्थापन कीजिये यह मुनियों का वचन रामचन्द्र जी ने अंगीकार किया औ ज्येष्ठमास शुक्लपक्ष दशमी तिथि बुधबार हस्त नक्षत्र ब्यतीपात योग गर करण आनंदयोग कन्या के चन्द्र औ वृषके सूर्य में सीता सहित रामचन्द्र जी ने रामेश्वर लिंग का स्थापन किया औ भक्ति से पूजन किया तब पार्बती सहित शिवजीने प्रत्यक्ष हो रामचंद्रजी से कहा कि हे रामचन्द्रजी आपके स्थापन किये इस लिंग का जो पुरुष दर्शन करैंगे वे महापातकों से निवृत्त होंगे धनुष्कोटि तीर्थ में स्नानकर जो रामेश्वरका दर्श करैंगे उनके अनेक जन्मों के पाप नाशको प्राप्त होंगे यह शिवजी ने वरदिया रामेश्वर के आगे रामचन्द्रजी ने नन्दिकेश्वर का स्थापन किया औ धनुषके

अग्रकरके भूमिको भेदनकर शिवजीके अभिषेक के लिये एक कूप बनाया उसका नाम धनुषकोटि हुआ जिसका महात्म्य पहिले वर्णन करचुके हैं उस तीर्थ के जलसे शिवजी को स्नान कराया फिर सब देवता ऋषि गन्धर्व अप्सरा औ बानरोंने एक २ शिव लिंग स्थापन किया सूतजी कहते हैं कि हे मुनीश्वरो जिसप्रकार रामचंद्रजीने शिवलिंग स्थापन किया वह हमने वर्णन किया जो इस अध्याय को पढ़ै अथवा सुनै वह रामेश्वर के दर्शनका फलपाय शिव सायुज्य पाताहै॥

पैंतालीसवां अध्याय॥

सूतजी कहतेहैं कि हे मुनीश्वरो इसी अवसर में हनुमान्जी भी उत्तम शिवलिंग लेकर आयपहुंचे औ रामचंद्र सीता लक्ष्मण सुग्रीव आदिको प्रणाम किया औ देखा कि रामचन्द्रजी ने शिव लिंग स्थापन करदिया तब हनुमान्जी को बड़ा क्रोध हुआ औ कहनेलगे कि हे रामचन्द्रजी मेरा जन्म वृथा है मेरे जैसा पुत्र किसी स्त्रीके न होय जो इतना दुःख भोगताफिरै पहिले तो आप की सेवामें खिन्न हुआ फिर राक्षसों के साथ युद्ध में अतिदुःख भोगा औ सबसे अधिक यह क्लेश हुआ कि आपने मेरा अनादर किया सुग्रीव ने भार्या के लिये आपकी सेवाकरी औ विभीषण ने राज्यके लिये परंतु मैंने किसी प्रयोजन के लिये आपका सेवन नहीं किया बिना हेतु दिन रात आपका सेवन करता हूं हजारों बानरोंके बीच आपने मुझे आज्ञादी तब मैं कैलास में गया वहां तपकर शिवजीको प्रसन्न किया औ अति उत्तम शिव लिंग लेकर आपके समीप पहुंचा परंतु आपने औरहीलिंग स्थापन करदिया औ हमारा यह परिश्रम वृथा हुआ यह मेरा शरीर केवल भूमिका भार है मैं मंदभाग्य इस दुःख को नहीं सहसका

क्याकरूं औ कहां जाऊं मैं शरीर त्यागताहूं तब यह अनादर का दुःख निवृत्त होगा यह कहकर हनुमानूजी रामचंद्रजी के चरणों पर गिर गये तब उनकादुःख निवृत्त करनेके लिये हँस कर रामचंद्र जी कहनेलगे कि हे हनुमानूजी हमअपना औ पराया सब व्योहार जानते हैं अपने कर्मसेही जीव उत्पन्न होते हैं औ मरतेहैं अपने कर्मोंसेही जीव नरकको जातेहैं औ परमात्मा निर्गुण है हे हनुमानू इसप्रकार तत्वका निश्चयकर शोकको त्यागदे लिंगत्रय से मुक्त निराश्रय निराकार निरंजन ज्योतिः स्वरूप आत्माको देख तत्वज्ञान के बाधक शोकको मतकर सदा तत्वज्ञान में निष्ठा रख स्वयं प्रकाश आत्माका सदा ध्यानकर देहमें ममताछोड़ धर्म को भज हिंसाको त्याग साधु पुरुषों का सेवनकर इंद्रियों को जीत परनिन्दा को छोड़ शिव विष्णु आदि देवताओं का सदा पूजनकर सत्यबोल शोकका त्यागकर प्रत्यक् ब्रह्मकी एकता जान भलेबुरे की भ्रांति छोड़ पदार्थों को उत्तम जानने से उनमें राग उत्पन्न होता है औ पदार्थों को बुरा समझनेसे द्वेष होताहै राग द्वेषके बशमें होकर जीव अनेक प्रकार के धर्म अधर्म करते हैं जिनसे देवता मनुष्य पशु पक्षी वृक्षआदि योनियों में जन्म लेतेहैं औ स्वर्ग नरक को जाते हैं जिस शरीर के स्पर्शसे चंदन अगरु कर्पूर आदि सुगंध द्रव्य मल होजाते हैं वह शरीर क्योंकर उत्तम मानाजाय भक्ष्य भोज्य पदार्थ जिस के संगसे विष्ठा होजातेहैं उत्तम शीतल जल जिसके संगसे मूत्र होजाता है वह शरीर क्योंकर शोभन होसकता है श्वेतवस्त्र जिसके संगसे मलिन होजाते हैं वह शरीर शोभन किसभांति होय हे हनुमनू इस संसार समुद्र में कोई सुख नहीं है पहिले जीवजन्म लेकर बालकहोता है पीछे तरुण औ वृद्ध होकर मृत्यु वश होताहै औ फिर जन्म लेताहै अज्ञान से जीव दुःख भोगता

है औ ज्ञान से सुख पाता है अज्ञान का नाश कर्मसे नहीं होता केवल ज्ञानसे होता है ज्ञानभी वेदांत वाक्यों करके विरक्त पुरुष को होताहै और को नहीं होसकता ज्ञान के अधिकारी को भी गुरु कृपासेही ज्ञान होता है जिसके हृदय से सब संकल्प नि-वृत्त होजांय वह परब्रह्म को पाताहै औ जीवन्मुक्तहोताहै जागते सोते बैठे चलते भोजन करते सब अवस्थाओं में काल जीवोंका ग्रासकरताहै सब संग्रहोंका अंतक्षयहै सब उच्चताका अंत गिरना है सब समागमोंका अंत वियोगहै इसीप्रकार जीवनका अंतमरण है पकेहुवे फलों को जिसप्रकार गिरनेका भयहोता है इसीभांति जीवोंको मरणका भयहै जिस प्रकार बहुत दृढ़भी घर कुछकाल में जीर्ण होकर गिरजाता है इसी प्रकार शरीरभी जीर्ण होकर मृत्यु वश होता है हे हनुमन् नित्य दिन रात्रि ब्यतीत होने से मनुष्यों का आयुष् बीतता चलाजाताहै इसलिये आत्माका शोच कर और बातों का क्या शोच करता है बैठे रहो चाहै दौड़ते फिरो आयुषतो क्षीण होताहीहै मृत्यु जीवोंके साथही चलता है साथही बैठता है दूरदेश को जाओ तो भी साथही जाताहै शरीर मेंबलि पड़िजातीहै शिरके बाल श्वेत होजातेहैं वृद्धावस्थामें श्वास कास आदि अनेक रोग देहको जीर्ण करडालते हैं जिसप्रकार स मुद्रमें अनेक काष्ठ इकट्ठे होजाते हैं औ फिर इधर उधर बिखर जाते हैं इसीप्रकार संसारमें पुत्र स्त्री धन बंधु गृहक्षेत्रआदि पदार्थ इकट्ठे होजातेहैं औफिर चले भी जातेहैं जिसभांति मार्गमें कईप-थिक साथहोजातेहैं औथोड़ीदूर साथचलके अपने२ रस्तेलगते हैं इसीप्रकार पुत्र स्त्री आदिका समागम है शरीरके साथही मृत्यु भी नियत कियाजाताहै मृत्युसे बचनेका कोईउपाय नहींहै जीव कर्मके बशहोकर एक शरीरको त्यागदूसरेको धारताहै कभी प्रा-णियोंका बास एकस्थानमें नहीं रहसक्ताहै सब अपने अपनेकर्म

वशसे वियोगको प्राप्तहोतेहैं शरीरकेही जन्म मरण होतेहैं आत्मा के नहींहोते आत्मा सदानिर्विकारहै इसलिये हेकपीश्वर सद्रूप निर्मल ब्रह्मका चिंतनकर तेरेकिये औहमारे किये कर्ममें कुछभेद मत समझ हमनेजो लिंगस्थापन किया उसको तू अपनेलाये लिंग का स्थापन समझ तेरे आगमनमें बिलम्ब होनेसे हमने सीताका बनाया बालूका लिंग स्थापन करदिया इसमेंतू कुछदुःख औशोक मतकर कैलाससे लायेहुवे लिंगको तू स्थापनकर यह लिंग तीन लोकमें तेरेनामसे प्रसिद्ध होगा प्रथम तेरे स्थापनकिये लिंगका दर्शन करके सब मनुष्य रामेश्वरका दर्शन करेंगे बहुतसे ब्रह्मराक्षस तैनेमारेहैं उसपापकी निवृत्तिकेलिये अपने नामसे इसलिंग को स्थापनकर साक्षात् शिवजीके दिये इसलिंगका दर्शनकर जो रामेश्वका दर्शनकरैंगे वेकृतकृत्य होंगे जोदूरदेशमें रहकरभी इन दोनोंलिंगोंका स्मरणकरैंगे वेसायुज्य मुक्ति पावैंगे जोपुरुष हनुमदीश्वर औरामेश्वरका दर्शन करेंगे वेसबयज्ञ औतपका फल पावैंगे हमने सीताने लक्ष्मणने तैंने सुग्रीवने नलने नीलने जांबवानने विभीषणने इन्द्रादि देवताओंने औ शेष नागादि नागोंने जोलिंग स्थापनकिये इनग्यारह लिंगोंमें सदा सदाशिवका सन्निधान रहैगा इसलिये अपने पापकी शुद्धिकेलिये तूभीलिंग स्थापनकर औजोतू हमारे स्थापन किये लिंगको उखाड़सके तो हमतेरे लायेलिंगको स्थापनकरैं परन्तु हमारे स्थापनकिये लिंगको कौन उखाड़ सक्ताहै इसलिंगकी जड़ सातोपताल भेदकर नीचेचलीगईहै इसलिये अपनेलाये लिंगको तूशीघ्र स्थापनकर शोकमतकर यह रामचंद्रजीका बचन सुन हनुमान्‌जीने बिचारकिया किइस बालूके लिंगको उखाड़देना क्याबड़ी बातहै इसलिये इसको उखाड़ अभीअपने लायेहुवे लिंगको स्थापन करताहूं यह मनमें विचार सब देवता मुनि बानर आदिके औरामचंद्र लक्ष्मण सीता

जीके देखते देखते हनुमान्जीने दोनोंहाथोंसे उसलिंगको पकड़ा औउखाड़नेके लिये बहुत बलकिया परन्तु वहलिंग नहिला तब किलकिला शब्दकरके औ पूंछको भूमिमें पटककर सब बल लगाया तौभी वह लिंग नचला फिरपूंछमें लिंगको लपेटा औदोनोंहाथ भूमिपर रख आकाशको हनुमान्जी उछले तब सातों द्वीपोंसहित पृथिवी कांपउठी परन्तु लिंगनहीं उखड़ा औ हनुमान्जीका पुच्छ लिंगसे छुटगया इसलिये एक कोशपर हनुमान्जी गिरे औ उनके आँख नाक कान मुख औ गुदासे रुधिर गिरनेलगा उसरुधिरसे रक्तकुंडबना हनुमानूजी को इसप्रकार गिरेदेख सब जगत्में हाहाकारहुआ औरामचन्द्रजी लक्ष्मण सीता औ बानरों सहित दौड़कर हनुमानूजीके समीपगये उस समय गंधमादनपर्बत में राम लक्ष्मण ऐसेशोभितथे मानोरात्रिके समय तारा गणोंकरके युक्त सूर्य औचन्द्र शोभित होंय जायके हनुमानूजीको देखा किमूर्छित हुवे पड़ेहैं औ मुखसे रुधिर बहताहै शरीर चूर्ण होगया है उनको देख सब बानर हाहाकारकर मूर्छितहुवे सीताने अपनेहाथसे हनुमान्जीको स्पर्शकिया औरामचन्द्रजी हनुमान्को अपनी गोदमें सुलाय अश्रुपात करतेहुवे हनुमान्जीके अंगोंपर हाथ फेरनेलगे॥

छियालीसवां अध्याय॥

सूतजी कहतेहैं कि हे मुनीश्वरो रामचन्द्रजी कहनेलगे कि हे हनुमन् पंपासर के तट पर हम दीनदशा को प्राप्त होरहे थे उस समय तैनेहमारा आश्वासनकिया औ सुग्रीवसे मैत्रीकराई तेरेको देख हम माता पिताका भी स्मरण नहीं करते तैने हमारे ऊपर अनेक उपकार किये हमारे प्रयोजन के लिये समुद्र तरा मैनाक पर्बत को तलप्रहार किया नागों की माता सुरसा को जीता महा क्रूरा छाया ग्रहणकरने वाली राक्षसी को मारा सायंकाल के

समय सुवेल पर्वतपर पहुंच लंकाको जीत रावणके महलमें गया निर्भय होकर सारीरात्रि लंकामें सीताको ढूंढा कहींसीता न देखी तब अशोक बनिकामें गया वहांसीताको संदेशदे औहमारे लिये सीता से चूड़ामणि लेकर अशोक बनिकाके वृक्षोंको तोड़ा औ अस्सी हजार किन्नर नाम राक्षसोंको हमारेअर्थ मारा जोराक्षस अति बलीथे फिर प्रहस्त के पुत्र जंबुमाली को सात मंत्रि पुत्रोंको पांच सेना पतियोंको औरावणके पुत्र अक्षको तैंने युद्धमें मारा तबइन्द्र जित् तुझेबाँधकर रावणकी सभामें लेगया वहांतैंने रावणका अतिअनादरकिया औ लंकापुरीको भस्मकरके फिर ऋष्यमूक पर्वतमें पहुंचा हे हनुमान् हमारे अर्थ तैंने बहुत क्लेशभोगे अबतू भूमिपर गिराहै इसलिये हमको बहुत शोकहै हे हनुमन् जो तू मरजायगा तो हमभी अभी प्राणत्यागें गे फिर हमको सीता से औ लक्ष्मण भरत शत्रुघ्न से तथा राज्य से कुछ प्रयोजन नहीं हे वत्स शीघ्र उठ हमारे भोजन के लिये कंद मूल लेआ स्नान के लिये जलका कलश ला औ हमारे शयन के लिये शय्या बिछाय मृग चर्म औ दर्भ हमारे लिये लेआ ब्रह्मास्त्र से बंधेहुवे हमको तैंने छुटाया औषध लाकर लक्ष्मण को जीवदान दिया तेरे सहाय से हमने रावण कुंभकर्ण आदि बड़े पराक्रमी राक्षसों को मारा औ सीता प्राप्त हुई हे वायुपुत्र हे सीता शोक नाशन हम को लक्ष्मण को औ जानकी को अयोध्या में पहुंचाये बिनाही क्यों त्याग करता है इसभांति हनुमान् का मुख देखते हुवे औ दीन बचन कहतेहुवे रामचन्द्रजी अश्रुपातकरनेलगे औ इतना अश्रुपात कियाकि हनुमान्का शरीरआर्द्रहोगया धीरेधीरे हनुमान् कीभी मूर्छा खुलीऔ देखांकि साक्षात् नारायण रावण के भयसे लोकरक्षा के अर्थ मनुष्य रूपधारे जानकी लक्ष्मण करके सहित बानरों करके वेष्टित नील मेघ के समान

जिन का वर्ण कमल से नेत्र जटा मंडल करके शोभित देवता ऋषि पितर आदि करके स्तुत अति दयालु श्रीरामचंद्रजी मुझे गोद में लिये बैठेहैं तब हनुमान्जी उठे औ रामचंद्रजी के चरणों में दंडवत् प्रणाम करके हाथजोड़ भक्ति से स्तुति करनेलगे (हनूमानुवाच॥ नमोरामायहरयेविष्णवेप्रभविष्णवे आदिदेवायदेवायपुराणायगदाभृते १ विष्टरेपुष्पकेनित्यंनिविष्टायमहात्मने प्रहृष्टवानरानीकजुष्टपादांवुजायते २ निष्पिष्टराक्षसेंद्रायजगदिष्टविधायिने नमःसहस्रशिरसेसहस्रचरणायच ३ सहस्राक्षायशुद्धायराघवायचविष्णवे भक्तार्तिहारिणेतुभ्यंसीतायाःपतयेनमः ४ हरयेनारसिंहायदैत्यराजबिदारिणे नमस्तुभ्यंवराहायदंष्ट्रोद्धृतवसुंधर ५ त्रिविक्रमायभवतेवलियज्ञबिभेदिने नमोवामनरूपायमहामंदरधारिणे ६ नमस्तेमत्स्यरूपायत्रयीपालनकारिणे नमःपरशुरामायक्षत्रियांतकरायते ७ नमस्तेराक्षसघ्नायनमोराघवरूपिणे महादेवमहाभीममहाकोदंडभेदिने ८ क्षत्रियांतकरक्रूरभार्गवत्रासकारिणे नमोस्त्वहल्यासंतापहारिणेचापहारिणे ६ नागायुतवलोपेतताटकादेहदारिणे शिलाकठिनविस्तारवालिवक्षोविभेदिने १० नमोमायामृगोन्माथकारिणेज्ञानहारिणे दशस्यंदनदुःखाब्धिशोषणागस्त्यरूपिणे ११ अनेकोर्मिसमाधूतसमुद्रमदहारिणे मैथिलीमानसांभोजभानवेलोकसाक्षिणे १२ राजेंद्रायनमस्तुभ्यंजानकीपतयेहरे तारकब्रह्मणेतुभ्यंनमोराजीवलोचन १३ रामायरामचंद्रायवरेण्याय सुखात्मने विश्वामित्रप्रियायेदंनमःखरविदारिणे १४ प्रसीददेवदेवेशभक्तानामभयप्रद रक्षमांकरुणासिंधोरामचंद्रनमोस्तुते १५ रक्षमांवेदवचसामप्यगोचरराघव पाहिमांकृपयारामशरणंत्वामुपैम्यहम् १६ रघुबीरमहामोहमपाकुरुममाधुना स्नानेचाचमनेभुक्तौजाग्रत्स्वप्नसुषुप्तिषु १७ सर्वावस्थासुसर्वत्रपाहिमांरघुनंदन महिमानंतवस्तोतुंकःसमर्थोजगत्त्रये १८ त्वमेवत्वन्महत्वंवैजानासि

रघुनंदन ॥ इति) इस प्रकार रामचंद्रजी की स्तुति करके हनुमान् जी सीताजी की स्तुति करने लगे (हनूमानुवाच ॥ जानकित्वां नमस्यामिसर्वपापप्रणाशिनीम् दारिद्र्यदुःखसंहर्त्रींभक्तानामिष्टदायिनीम् १ विदेहराजतनयांराघवानंदकारिणीम् भूमेर्दुहितरंविद्यां नमामिप्रकृतिंशिवाम् २ पौलस्त्यैश्वर्यसंहर्त्रींभक्ताभीष्टांसरस्वतीम् पतिव्रताधुरीणांत्वांनमामिजनकात्मजाम् ३ अनुग्रहपरामृद्धिमनघांहरिवल्लभाम् आत्मविद्यात्रयीरूपमुमारूपांनमाम्यहम् ४ प्रासादाभिमुखांलक्ष्मींक्षीराब्धितनयांशुभाम् नमामिचंद्रभगिनीं सीतांसर्वांगसुंदरीम् ५ नमामिधर्मनिलयांकरुणांवेदमातरम् पद्मालयांपद्महस्तांविष्णुवक्षस्थलालयाम् ६ नमामिचंद्रनिलयांसीतांचंद्रनिभाननाम् आल्हादरूपिणींसिद्धिंशिवांशिवकरींसतीम् ७ नमामिविश्वजननींरामचंद्रेष्टवल्लभाम् सीतांसर्वानवद्यांगींभजामिसततंहृदा ८ इति) सूतजी कहते हैं कि हे मुनीश्वरो इस प्रकार भक्ति से हनुमान् जी सीता औ रामचंद्रजी की स्तुति कर आनंद से अश्रुपात करते हुवे मौन हो गये हनुमान्जी के किये इनदोनों स्तोत्रों को जो पुरुष भक्ति से पढ़े वह बड़ा ऐश्वर्य पाता है धन धान्य क्षेत्र दूध देनेहारी गौ आयुषविद्या पुत्र उत्तम स्त्री औ सद्गति इसस्तोत्र के पाठ से प्राप्त होती है इसस्तोत्र के पाठ से ब्रह्महत्या आदि पाप निवृत्त होते हैं नरक का भय नहीं होता देहांत होनेपर मुक्ति मिलती है रामचंद्रजी हनुमान्जी की की हुई स्तुति सुन प्रसन्न हो कहने लगे कि हे वायुपुत्र तुमने अज्ञान से यह साहस किया इसलिंग को ब्रह्मा विष्णु इन्द्र आदि देवता भी नहीं उखाड़ सकते महादेवजी की अवज्ञा करने से तुममूर्छित होकर गिरे फिर कभी सदाशिव से द्रोह मतकरना आजसे लेकर यहकुंड तुम्हारे नाम से प्रसिद्ध होगा इसकुंड में स्नान करने से महा पातकों का नाश होगा महादेवजी की जटा से गोदावरी

नदी निकली है उस में स्नान करनेसे हजार अश्वमेध का फल होता है उस से सौ गुणा अधिक पुण्यसरस्वती यमुना औ गंगा में स्नान करने से होता है जहां ये तीनों मिली हैं अर्थात् प्रयाग में वहां स्नानकरनेसे सहस्त्रगुण पुण्यहोताहै उतनाही पुण्य इस तुम्हारे कुंडमें स्नानकरनेसे प्राप्तहोगा मनुष्यजन्म पाय हनुमत् कुंडके तीर जोपुरुषश्राद्ध न करै उसकेपितर निराशहोकर जातेहैं औ उस पुरुष पर देवता ऋषि औ पितरों का कोप होताहै हनुमत्कुंड़के तीरपर जो हवन औ दान न करै उसका जीवन वृथा है औ वह दोनों लोकों में दुःख पाताहै जो पुरुष हनुमत्कुंड़ के तीर जल औ तिलोंसे पितरोंका तर्पण करै उसके पितर आनंदको प्राप्त होतेहैं औ घृतकुल्या पीतेहैं। सूतजी कहते हैं कि हेमुनीश्वरो रामचंद्रजी का यह वचन सुन औ उनकी आज्ञा पाय रामेश्वर के उत्तर भागमें हनुमान्जीका लायाहुआ लिंग स्थापन किया रामेश्वर लिंगमें हनुमान्जी के पूंछ लपेटने के तीनचिन्ह अद्यापि देख पड़ते हैं सूतजी कहतेहैं कि हेमुनीश्वरो जिसप्रकार रामचंद्रजीने रामेश्वरका स्थापनकिया वह हमने वर्णन किया जोपुरुष इस अध्याय को पढ़ै अथवा सुनैवह सब पापोंसे छुट शिवलोक को जाता है॥

सैंतालीसवां अध्याय॥

शौकन आदि ऋषि पूछते हैं कि हे सूतजी रावण राक्षसके मारनेसे रामचंद्रजी को ब्रह्महत्या क्यों लगी ब्रह्महत्या तो ब्राह्मण के वध करनेसे लगती है रावणतो ब्राह्मण थाही नहीं फिर क्योंकर उसके वध से रामचंद्रजी को हत्यालगी यह आप वर्णन करैं तब सूतजी कहने लगे कि हेमुनीश्वरो ब्रह्माजी के पुत्र पुलस्त्य औ पुलस्त्य के पुत्र विश्रवा हुवे विश्रवामुनिने बहुतकाल अति

दुष्कर तपकिया उसकालमें बड़ा पराक्रमी सुमाली नाम दैत्य अतिरूपवती अपनी कन्याको साथ लिये पाताल से आय भूमि पर विचरता था उसने विश्रवा के पुत्र कुवेर को पुष्पक विमान में बैठे देखा औ मनमें बिचार किया कि ऐसा भाग्यशाली पुत्र हमारे भी होय तो हमारी वृद्धि सबप्रकारसे होय यह मनमें बिचार कर अपनी पुत्री कैकसी से कहा कि हे पुत्री अब तू यौबन में प्राप्त हुई इसलिये तेरा बिवाह होना चहिये तरुण कन्याका बिवाह न करनेसे माता पिता दुर्गति को प्राप्त होतेहैं प्रत्याख्यान के भयसे कोई तुझै मांगता नहीं कौन बर तुझै बरैगा यह मैं नहीं जानता अब ब्रह्माजीके पौत्र औ पुलस्त्य मुनि के पुत्र विश्रवामुनि को तू आप जायके बरले जिससे कुवेरके तुल्य पुत्र तेरे भी होंय यहपिता का वचन सुन कैकसी विश्रवामुनि की कुटीमें गई औ लज्जा से मुख नीचे कर बैठगई उस संध्याकाल में विश्रवा मुनि अग्निहोत्र करते थे उनने अति रूपवती कैकसी को देख पूछा कि हे भद्रे तू किसकी पुत्री है औ किस कार्य केलिये यहाँ आईहै यह सब यथार्थ कह तब कैकसी बड़े विनयसे हाथजोड़ नम्रहो कहने लगी कि महाराज आप तपके प्रभावसे मेरा सब अभिप्राय जानते हैं मैं सुमाली दैत्यकी कन्या कैकसीहूं औ पिताकी आज्ञासे आपके समीप आईहूं और मेरा अभिप्राय आप जानलेवैं यह कैकसी का वचनसुन क्षणमात्र ध्यानकर विश्रवामुनिने कहा कि हे कैकसि तेरा अभिप्राय हमने जाना तू पुत्रके लिये हमारे पास आईहै परंतु तू इस अतिदारुण संध्याकाल में हमारे समीप आई इसलिये अति क्रूरराक्षस तेरे पुत्र उत्पन्न होंगे यह मुनिका वचनसुन फिर कैकसी ने विनयसे प्रार्थना की कि महाराज आपके संगसे तो ऐसे पुत्र न उत्पन्न होने चहियें तब फिर मुनि ने कहा कि अच्छा सबसे पिछला पुत्र हमारे वंशके योग्य धर्मात्मा औ शास्त्र

वेत्ताहोगा यह मुनिका वचनसुन प्रसन्न हो कैकसी वहाँरही औ
कुछकाल के अनन्तर उसके एक अति भयंकर पुत्र उत्पन्न हुआ
जिसके दशशिर बीस भुजा बड़ी २ दाढ़ लाल रंग के केश अति
कृष्ण वर्ण बड़ा शरीर था उसका नाम विश्रवामुनिने रावण रक्खा
फिर कुंभकर्ण उत्पन्न हुआ वह रावणसे भी अधिक क्रूर था पीछे
शूर्पणखा नाम अति क्रूराराक्षसी कैकसी के गर्भ से उत्पन्न हुई
सबके पीछे बड़ा धार्मिक औ शास्त्रवेत्ता बिभीषण उत्पन्न हुआ
रावण कुंभकर्ण आदि विश्रवामुनि के पुत्रथे इसलिये उनकेमारने
से रामचंद्रजी को ब्रह्महत्या लगी उस हत्या की निवृत्तिके लिये
रामचंद्र जीने वैदिक विधानसे रामेश्वर का स्थापन किया राम-
चंद्रजीने भी रामेश्वरलिंग को स्थापन कर अपनेको कृतार्थ माना
जहाँ रामचंद्रजी की ब्रह्महत्या निवृत्त हुई वहाँ ब्रह्महत्या विमो-
चन नाम तीर्थहुआ वहाँ स्नान करनेसे ब्रह्महत्या निवृत्त होतीहै
उस तीर्थके समीप छाया रूपरावण अबतक देखपड़ता है उसके
आगे एकनागलोक का बिलहै रामचंद्रजीने उस हत्या को नाग-
लोकके बिलमें प्रवेश करादिया औ उस बिलके ऊपर मंडपबनाय
भैरवको स्थापन किया भैरवके भयसे ब्रह्महत्या बिल के बाहिर
न निकल सकी निरुद्यम होकर बैठगई रामेश्वर लिंगके दक्षिण
भागमें पार्बतीजी हैं लिंगके दोनों ओर सूर्य औ चन्द्र हैं सम्मुख
भागमें अग्नि निवास करता है आठों दिक्पाल अपनी २ दिशा
में रामनाथके सेवन के लिये स्थित हैं गणपति कार्तिकेय औ
बीरभद्र आदि गण रामेश्वरके ओर पास विद्यामान हैं सब दे-
वता मुनि नाग सिद्ध गंधर्व अप्सरा आदि रामेश्वरकी सेवाके
लिये भक्ति पूर्वक वहाँ निवास करते हैं बहुतसे वेदवेत्ता ब्राह्मण
रामचंद्रजीने रामेश्वर का पूजन करने केलिये वहाँ नियुक्त किये
उन ब्राह्मणों का भोजन वस्त्र दक्षिणा आदि से अवश्य पूजन

करना चहिये उन ब्राह्मणों के प्रसन्न होने से देवता मुनि औ पितर सन्तुष्ट होते हैं उन ब्राह्मणों को बहुत से ग्राम रामचन्द्र जी ने दिये औ रामेश्वरके भोग के लिये बहुतसा धन औहजारों ग्राम भूषण बस्त्र रत्न बाहन आदि रामचन्द्रजीने दिये सूतजी कहतेहैं किहेमुनीश्वरो रामेश्वरका प्रभाव कहांतक वर्णन करैं गंगो यमुनाभी अपना पाप निवृत्त करनेके अर्थ निरंतर जिनका सेवन करतीहैं। इस अध्यायको जोपुरुष भक्तिसे पढ़ै अथवा सुनै वह विष्णु सायुज्य पाताहै

अरतालीसवा अध्याय॥

सूतजी कहतेहैं किहेमुनीश्वरो रामनाथके प्रभावकी एककथा हम वर्णन करतेहैं जिसके श्रवण करनेसे सब पातक दूरहोजांय पूर्बकालमें पांड्य देशमें एक शंकरनाम राजा हुआहै वहबड़ा धार्मिक ब्रह्मण्य यज्ञ करनेहारा सत्य प्रतिज्ञ वेद वेदांग जाननेहारा वैदिकधर्ममे तत्पर चारोंवर्ण औआश्रमोंकी रक्षामें सावधान शिव विष्णु आदि देवताओंका पूजक औबड़ा दानीथा वह एक दिन सिंह व्याघ्र महिष सूकर आदिजीवोंसे भरेबनमें मृगया खेलने गया औसेना सहित बनमेंजाय मृगोंको मारनेलगा सेनाके मनुष्यभी सिंहआदि जीवोंको मारतेथे उसबनमें गुफाकेबीच एकशांत चित्तमुनि ब्याघ्रचर्म ओढ़ै समाधि लगाये बैठेथ औउनकी पत्नीभी सेवाके लिये मुनिके समीपथी राजाने जाना किकोई ब्याघ्र गुफा में बैठाहै यहजान एकवाण ऐसामारा किमुनि औमुनिपत्नीके देह में पारहोगया तबउनका एक बालकथा वह विलाप करनेलगा किहे माता हेपिता मुझकोछोंड़ तुम कहांगये मैंकिसके शरण जाऊं मुझैकौन पढ़ावेगा भोजन कौनदेगा आचार कौन सिखावेगा औ हेमाता तेरीभांति मेरालालन कौनकरैगा बिनाअपराध किसदुष्ट

ने तुमको मारदिया इस प्रकार ऊंचेस्वरसे विलाप करनेलगा उसका शब्दसुन राजावहां गया औ सब मुनिवहां आय एकत्रहुवे मुनीश्वरोंने देखा कि मुनि औ मुनिपत्नी मरेपड़ेहैं औ बालक विलाप कररहाहै तबसब उसका आश्वासन करनेलगे कि हेबालक धनवान् दरिद्र मूर्ख पंडित पुष्ट कृश दुर्जन सज्जन आदिचाहै जैसा पुरुषहोय मृत्युसे कोईनहीं बचता वन पर्वत नगर ग्रामआदि किसी स्थलमें रहो वहींमृत्यु जायपहुंचताहै हेवत्स गर्भमें स्थितकोई मृत्युवश होतेहैं कोई जन्मतेही मरजातेहैं कितने बालावस्थामेंमृत होतेहैं कोई तरुण होकर औ कोई वृद्धहोकर यमलोकको जाते हैं ब्राह्मण क्षत्रिय वैश्य शूद्र ब्रह्मचारी गृहस्थ वानप्रस्थ औ यति सब मृत्युके बशहोतेहैं कोई बचनहीं सक्ता ब्रह्मा विष्णु शिवआदि देवता गन्धर्व नाग राक्षस औरभी सबजीव बिलय होजातेहैं इसलिये हेबालक तूमाता पिताके मरनेसे शोक मतकर एकसच्चिदानंद परब्रह्मका जन्म मरण नहींहोता औ वह न घटताहै नबढ़ता यह देह नौ छिद्रों करके युक्त मलका भांडहै रुधिर पूय विष्ठामूत्र आदिसे भराहै जल बुद्बुदके तुल्य क्षणभंगुरहै काम क्रोध लोभ मोह मात्सर्य हिंसा असूया अशौच आदि का निवास स्थान है इसदेहको जोपुरुष उत्तम समझै वह मूढ़ औदुर्बुद्धिहै अनेक छिद्रोंकरके युक्त घटकेतुल्य यहदेहहै इसमें प्राणरूप पवन इतने दिन रुकारहा यही आश्चर्यहै हेबालक माता पिताका शोक मत कर वेतो अपने कर्मके बशहो देहको त्यागगये औ तू कर्म वशसे यहां विद्यमानहै जबतेरे कर्म क्षयहोंगे तबतूभी मृत्युके बशहोगा जिसकालमें तेरेमाता पिता उत्पन्नहुवे उस समय तू नहीं उत्पन्न हुआथा इसलिये तेरागमन उनके साथ क्योंकर होसक्ताहै जोतेरी उनकी गतितुल्यहोय तो जहांवे गयेवहां तूभी जासक्ताहै मृतपुरुषोंके बांधवजो अश्रुपात करतेहैं वह परलोकमें मृतपुरुषोंको पान

करनेपड़तेहैं इसकारण रोदनमतकर धीरजधर औ इनके प्रेतका-
र्य वैदिक विधानसेकर इनदोनोंका मृत्यु बाण लगनेसेहुआहै इस-
लिये इनके अस्थि रामेश्वर क्षेत्रमें रामसेतुके समीपडाल औवहां
ही इनका सपिंडीकरण आदिकर तबयह अपमृत्युदोष निवृत्तहो
गा यहबचन सब मुनियोंका सुन उस शाकल्य मुनिकेपुत्र जांग-
लने अपने माता पिताका पितृमेधकिया दूसरेदिन उनके अस्थि
लेकर हालास्य क्षेत्रमें पहुंचा औकुछदिनमें रामेश्वर क्षेत्रमेंजाय
पहुंचा वहां रामसेतुके समीप माता पिताके अस्थिडाले औ एक
बष वहांरहकर सबकृत्य किया बर्षसमाप्ति में मुनिपुत्रने स्वप्न
देखा कि उसके माता पिता चतुर्भुजहो शंख चक्र गदा पद्म धारे
गरुड़परचढ़े तुलसीकी माला औ कौस्तुभ मणिसे भूषित देखपड़े
उनको देख मुनिपुत्र बहुत प्रसन्नहुआ औअपने आश्रममें पहुंच
सब वृत्तांत उनमुनीश्वरोंसे कहा मुनिभी सुनकर प्रसन्न हुवे
परंतु सबने राजाशंकरसेकहा कि हेपांड्य देशके राजा तैंने क्रूरता
औमूर्खतासे स्त्रीहत्या औ ब्राह्मणहत्याकी इसलिये तू अग्निमें प्रवेश
कर औरकिसी प्रकारसे तेरी शुद्धिनहीं चाहै जितने प्रायश्चित्तकर
तेरे संभाषण से हजारों ब्रह्महत्या लगती हैं इसलिये हे दुष्ट तू
हमारे आगे से चलाजा यह मुनियों का वचन सुन राजा बोला
कि हेमुनीश्वरो आपमुझपर अनुग्रह करो मैं अभी अग्निमें प्रवेश
करता हूं इतनाकह राजाने अपने मन्त्रियों को बुलाकर कहा कि
हे मन्त्रियो मुझसे ब्रह्महत्या औस्त्रीहत्या अज्ञान से बनपड़ी उस-
की निवृत्ति के लिये मुनियों की आज्ञासे मैं अग्निमें प्रवेश करूंगा
इसलिये काष्ठ लाकर मुझे चिता बनादो औ मेरे पुत्र सुरुचि को
गद्दीपर बैठादो इसबात का कुछ शोकभी मतकरो दैव बलवान्है
यह राजा का वचन सुन मंत्री रोदन करनेलगे औ बोले कि
महाराज आपने हमको पुत्रवत् पालन किया अब आपके बिना

हम नगरमें प्रवेश न करेंगे हमभी आपके आगेही अग्निमें प्रवेश करेंगे यह मंत्रियों का वचन सुन राजाने कहा किहे मंत्रियो मुझ से महापातकी के साथ दग्ध होना उचित नहीं औ मैं अब राज सिंहासन के योग्य नहीं अब तुम सुरुचि को सिंहासनपर बैठाय उसकी सेवामें रहो औ मेरेलिये शीघ्रही चिता बनादो बिलंबमत करो यह राजा की दृढ़ आज्ञा पाय मंत्रियों ने चिता बनाय अग्नि प्रज्वलित करी राजा ने अग्नि को प्रज्वलित देख स्नान किया औ अग्नि तथा मुनीश्वरों की प्रदक्षिणाकर हृदय में सांब सदा शिवका ध्यान करता हुआ राजा अग्नि में प्रवेश करनेलगा तब आकाशवाणी हुई कि हे राजन् अग्नि में प्रवेश मतकर ब्रह्महत्या निवृत्ति के लिये मैं तुझे उपाय बताता हूं सावधान होकर सुन दक्षिण समुद्रके तीर गंधमादन पर्वत में रामचंद्र जीके स्थापन किये रामेश्वर के लिंगका एक बर्षपर्यंत तीनकाल सेवनकर प्रदक्षिणा नमस्कार महाभिषेक आदिकर भांति २ के नैवेद्य लगाय चंदन अगुरु कर्पूर आदिसे लिंगका पूजनकर दोभार गोघृत दोभार गोदुग्ध औ द्रोणभर शहत से नित्य रामेश्वरका अभिषेक कर पायसका नैवेद्य लगाय औ तिल तैलसे नित्य दीपक प्रज्वलित कर इस प्रकार रामेश्वर का सेवन करने से स्त्रीहत्या औ ब्रह्महत्या निवृत्त होजायगी रामेश्वरका दर्शन करने से सौ भ्रूणहत्या औ सुरापान सुवर्णस्तेय गुरुस्त्रीगमन ब्रह्महत्या आदि हजारों महापातक तत्क्षण निवृत्त होजाते हैं रामेश्वरकी सेवा बनपड़ै तो गया प्रयागआदि तीर्थोंसे कुछ प्रयोजन नहीं इसलिये हेराजन् शीघ्रजाकर रामनाथ की सेवाकर बिलंब मतकरै इतनाकह आकाशवाणी बंदहोगई सब मुनियोंने राजासे कहा कि हे महाराज आप शीघ्र रामेश्वरको जाओ हमने रामेश्वरका माहात्म्य बिना जाने आपको यह प्रायश्चित्त बतलाया यह

मुनियोंका वचनसुन प्रसन्नहो थोड़ीसी सेना साथले राजा रामेश्वर को चला वहाँ पहुंच जितेंद्रिय औ जितक्रोधहो एकबार भोजनका नियम कर तीनकाल रामेश्वरका सेवन करनेलगा दश भार सुवर्ण रामनाथ के अर्पण किया नित्य रामेश्वरका महापूजन करता औ नियमसे धनुष्कोटिमें स्नानकर ब्राह्मणोंको दान देता इसप्रकार आकाशवाणीका आज्ञानुसार एक वर्ष पर्यंत राजाने उग्रतपकिया वर्षके अंतमें भक्तिपूर्वक राजाशंकर शिवजीकी स्तुति करनेलगा(शंकरउवाच। नमामिरुद्रमीशानं रामनाथमुमापतिम्। पाहिमांकृपयादेवब्रह्महत्यांदहाशुमे १ त्रिपुरघ्नमहादेवकालकूटविषादन। रक्षमांत्वंदयासिंधोब्रह्महत्यांविमोचय २ गंगाधरविरूपाक्षरामनाथत्रिलोचन। मांपालयकृपादृष्ट्याछिंधिमत्पातकंविभो ३ कामारेकामसंदायिन्भक्तानांराघवेश्वर। कटाक्षंपातयमयिशुद्धंमांकुरुधूर्जटे ४ मार्कंडेयभयत्राणमृत्युंजयशिवाव्यय। नमस्तेगिरिजाह्वायनिष्पापंकुरुमांसदा ५ रुद्राक्षमालाभरणचंद्रशेखरशंकर वेदोक्तसम्यगाचारयोग्यंमांकुरुतेनमः ६ सूर्यदंतभिदेतुभ्यंभारतीनासिकाच्छिदे। रामेश्वरायदेवायनमोमेशुद्धिदोभव ७ आनंदंसच्चिदानंदंरामनाथंवृषध्वजम्। भूयोभूयोनमस्यामिपातकंमेविनश्यतु८ इति) इसप्रकार स्तुतिकरते २ राजाके मुखसे अतिभयंकर ब्रह्महत्या निकली जिसके नीलवस्त्र रक्तकेश अतिक्रूर स्वरूपथा उस ब्रह्महत्याको शिवजीकीआज्ञासे भैरवजीने मारदिया औ रामेश्वर भगवान् ने प्रसन्न होकर राजासे कहा किहे राजन् तेरे इस स्तोत्रसे हम बहुत प्रसन्नहैंजो बरचाहे माँग जो दोष स्त्री हत्या औ ब्रह्महत्या से तुझको लगाथा वह निवृत्त होगया अब पूर्ववत्राज्यकर जो पुरुष हमारी सेवा करतेहैं हम उनके ब्रह्महत्याआदि पातक निवृत्त करदेते हैं हमारेसेवन करनेहारे मनुष्य जन्म मरण से छुटजाते औ अंतमें सायुज्य मुक्ति

पातेहैं औ जो इस स्तोत्रसे हमारी स्तुति करैंगे उनके सब पातक निवृत्त करदेंगे हेराजन् तेरीभक्ति औ स्तुति से हम प्रसन्न हुवे बरमाँग यह शिवजीकी आज्ञापाय राजाने प्रार्थना करी कि हेनाथ आपके दर्शन सेहीमैं कृतार्थहुआ अब क्या बरमांगू मार्कंडेयका भय हरनेहारे आपके चरणारविंद का दर्शन किया अब और बर नहीं चाहता आपके चरणोंमें दृढ़ भक्तिहोय औ जन्ममरणसे छुटजाऊं औ जो मनुष्य मेरेकिये इसस्तोत्रको पढ़ैं वे आपकी सेवाका फलपाय सब पापोंसे छुटैं सूतजी कहते हैं कि हे मुनीश्वरो शिवजीने ये सबबर राजाको दिये औ रामनाथ लिंगमें आप अंतर्धानहुवे राजाभी कृतार्थहो रामनाथको प्रणाम कर अपनी सेना सहित राजधानीको चला मार्गमें सबमुनीश्वरों को यह वृत्तांतकहा तब मुनीश्वरों ने राजाका अभिषेक किया राजाभी राजधानी में आय पुत्र रानी औ मंत्रियों सहित धर्मराज्य करनेलगा बहुतकाल राज्यकर अंतमें रामनाथ के सायुज्य को प्राप्त हुआ हे मुनीश्वरो राजा का चरित और रामनाथका प्रभाव हमने वर्णन किया इस अध्यायको जो भक्तिसे पढ़ै अथवा श्रवण करै वह रामनाथ के सायुज्य को प्राप्त होता है॥

उनचासवां अध्याय॥

सूतजी कहतेहैं किहेमुनीश्वरो अब हम रामनाथके स्तोत्र वर्णन करते हैं आप श्रद्धासे श्रवण करो रामेश्वर का स्थापन कर रामचंद्रजीने लक्ष्मणने सीताने सुग्रीव आदि बानरोंने अगस्त्य आदि ऋषियोंने औ ब्रह्मा आदि देवताओंने जो स्तुतिकी है हम क्रम पूर्वक कथन करतेहैं जिनके श्रवणमात्रसे मनुष्य मुक्त होजाय श्रीरामउवाच। नमोमहात्मनेतुभ्यं महामायायशूलिने। स्वपदांबुजभक्तार्ति हारिणेसर्पहारिणे १ नमोदेवादिदेवाय रामनाथाय

साक्षिणे। नमोवेदांतवेद्याय योगिनांतत्वदायिने २ सर्वदानंदपूर्णाय विश्वनाथायशंभवे। नमोभक्तभयच्छेद हेतुपादाब्जरेणवे ३ नमस्तेखिलनाथाय नमःसाक्षात्परात्मने। नमस्तेद्भुतवीर्याय महापातकनाशिने ४ कालकालायकालाय कालातीतायतेनमः। नमोऽविद्यानिहंत्रेते नमःपापहरायच ५ नमःसंसारतप्तानां तापनाशैकहेतवे। नमोमद्ब्रह्महत्याविनाशिनेचविपाशिने ६ नमस्ते पार्वतीनाथ कैलासनिलयाव्यय। गंगाधरविरूपाक्ष मांरक्षसकलापदः ७ तुभ्यंपिनाकहस्ताय नमोमदनहारिणे। भूयोभूयोनमस्तुभ्यं सर्वावस्थासुसर्वदा (इति)यह स्तोत्ररामचन्द्रजीने किया अब लक्ष्मणजीका किया स्तोत्र कहतेहैं(लक्ष्मणउवाच। नमस्ते रामनाथाय त्रिपुरघ्नायशंभवे। पार्वतीजीवितेशाय गणेशस्कंदसूनवे १ नमस्तेसूर्यचंद्राग्नि लोचनायकपर्दिने। नमःशिवायसोमाय मार्कंडेयभयच्छिदे २ नमःसर्वप्रपंचस्य सृष्टिस्थित्यंतहेतवे। नमः उग्रायभीमाय महादेवायसाक्षिणे ३ सर्वज्ञायवरेण्याय वरदाय वरायते। श्रीकंठायनमस्तुभ्यं पंचपातकभेदिने ४ नमस्तेस्तुपरानंद सत्यविज्ञानरूपिणे। नमस्तेभवरोगघ्न स्तायूनांपतयेनमः ५ पतयेतस्कराणांते वनानांपतयेनमः। गणानांपतयेतुभ्यं विश्वरूपायसाक्षिणे ६ कर्मणाप्रेरितःशंभो जनिष्येयत्रयत्रतु। तत्रतत्रपदद्वंद्वे भवतोभक्तिरस्तुमे ७ असन्मार्गेमतिर्माभूद्भवतःकृपयामम। वैदिकाचारमार्गेच रतिःस्याद्भवतेनमः ८ इति) यह लक्ष्मणजीने स्तुतिकी अब सीताजीका किया स्तोत्र कहतेहैं(सीतोवाच। परमकारणशंकरधूर्जटे गिरिसुतास्तनकुंकुमशोभित। ममपतौपरिदेहिमतिंसदा नविषमांपरपूरुषगोचराम् १ गंगाधरविरूपाक्ष नीललोहितशंकर। रामनाथनमस्तुभ्यं रक्षमांकरुणाकर २ नमस्ते देवदेवेश नमस्तेकरुणालय। नमस्तेभवभीतानां भवभीतिविमर्दन ३ नाथत्वदीयचरणांबुजचिंतनेन। निर्धूयभास्करसुताद्भयमाशु

शम्भो। नित्यत्वमाशुगतवान्समृकंडुपुत्रः किम्वानसिध्यतितवाश्रय णात्परेश ४ परेशपरमानंद शरणागतपालक। पातिव्रत्यंममस दा देहितुभ्यंनमोनमः ५ इति) अब हनुमान्का कियास्तोत्र कहतेहैं (देवदेवजगन्नाथ रामनाथकृपानिधे। त्वत्पादांभोरुहगता निश्चलाभक्तिरस्तुमे १ यंविनानजगत्सत्ता तद्ज्ञानमपिनोभवेत्। नमःसद्ज्ञानरूपाय रामनाथायशंभवे २ इति) अब अंगद आदि के किये स्तोत्र कहतेहैं (अंगदउवाच। यस्यभासाजगद्ज्ञानं यत्प्र काशंविनाजगत्। नभासतेनमस्तस्मै रामनाथायशंभवे १ इति (जांववानुवाच। सर्वानंदोयदानंदो भासतेपरमार्थतः। नमोरामेश्व रायास्मै परमानंदरूपिणे १ इति। नीलउवाच। यद्देशकालदि ग्भेदै रभिन्नंसर्वदाद्वयम्। तस्मैरामेश्वरायास्मै नमोभिन्नस्वरू पिणे इति। नलउवाच। ब्रह्मविष्णुमहेशाना यदविद्याविजृ म्भिताः। नमोऽविद्याविहीनाय तस्मैरामेश्वरायते १ इति)। कुमु दउवाच। यत्स्वरूपापरिज्ञानात्प्रधानंकारणत्वतः। कल्पित कारणायास्मैरामनाथायशंभवे १ इति)। पनसउवाच। जाग्रत्स्व प्नसुषुप्त्यादियदविद्याविजृम्भितम्। जाग्रदादिविहीनाय नमो स्मैज्ञानरूपिणे १ इति)। गजउवाच। यत्स्वरूपापरिज्ञाना त्का र्याणांपरमाणवः। कल्पिताःकारणत्वेन तार्किकापसदैर्द्धया १ तमहं परमानंदं रामनाथंमहेश्वरम्। आत्मरूपतयानित्य मुपास्येसर्व दाक्षिणम् २ इति। गवाक्षउवाच। अज्ञानपाशबद्धानां पशूनांपा शमोचकम् रामेश्वरंशिवंशांतमुपैमिशरणंसदा १ इति। गवयउ वाच। स्वाध्यस्तंजगदाधारं चंद्रचूडमुमापतिम्। रामनाथंशिववंदे संसारामयभेषजम् इति। शरभउवाच। अंतःकरणमात्मेति यदज्ञा नाद्विमोहितैः। भययतेरामनाथंतमात्मानंप्रणमाम्यहम् १। इति गंधमादनउवाच। रामनाथमुमानाथं गणनाथंत्रियंवकम्। सर्व पातकशुध्यर्थ मुपास्येजगदीश्वरम् १ इति। सुग्रीवउवाच। सं

सारांभोधिमध्येमां जन्ममृत्युजलेभये। पुत्रदारधनक्षेत्र वीचिमाला समाकुले १ मज्जद्ब्रह्मांडपंडेचपतितंनाप्तपारकम्। क्रोशंतमव शंदीनं विषयव्यालकातरम् २ व्याधिनक्रसमुद्विग्न तापत्रयझ पादितम्। मांरक्षगिरिजानाथ रामनाथनमोस्तुते ३ इति। विभी षणउवाच। संसारवनमध्येमां विनष्टनिजमार्गके। व्याधिचौरेऽ घसिंहेच जन्मव्याघ्रे लयोरगे १ वाल्ययौवनवार्द्धक्य महाभीमां धकूपके। क्रोधेर्ष्यालोभवह्नौच विषयक्रूरपर्वते २ त्रासभूकंटका ढ्येचसीदंतंमामनाथकं। शोभनांपदवींशंभो नयरामेश्वराधुना ३ इति। सर्वेवानराऊचुः। निन्द्यानिन्द्यासुसर्वत्र जनित्वायोनिषु प्रभो। कुंभीपाकादिनरके पतित्वाचपुनस्तथा १ जनित्वाचपुन र्योनौकर्मशेषेणकुत्सिते। संसारेपतितानस्मान् रामनाथदयानिधे २ अनाथान् विवशान्दीनान् क्रोशतःपाहिशंकर। नमस्तेस्तुदयासिंधो रामनाथमहेश्वर ३ इति। ब्रह्मोवाच। नमस्तेलोकनाथाय राम नाथायशंभवे। प्रसीदममसर्वेश मदविद्यांविनाशय १ इति। इंद्र उवाच। यस्यशक्तिरुमादेवी जगन्मातात्रयीमयी। तमहंशंकरंवंदे रामनाथमुमापतिम् १ इति। यमउवाच। पुत्रौगणेश्वरस्कंदौवृषो यस्यचवाहनम्। तंवैरामेश्वरंसेवे सर्वाज्ञाननिवृत्तये १ इति। वरुणउवाच। यस्यपूजाप्रभावेण। जितमृत्युर्मृकंडुजः। मृत्युंजय मुपास्येहं रामनाथंहृदातुतम् १ इति। कुवेरउवाच। ईश्वरायल सत्कर्ण कुंडलाभरणायते। लाक्षारुणशरीराय नमोरामेश्वरायवै १ इति। आदित्यउवाच। नमस्तेस्तुमहादेव रामनाथत्रियम्वक। दक्षाध्वरविनाशाय नमस्तेपाहिमांशिव १ इति। सोमउवाच। नमस्तेभस्मदिग्धाय शूलिनेसर्पमालिने। रामनाथदयांभोधे श्म शाननिलयायते १ इति। अग्निरुवाच। इन्द्राद्यखिलदिक्पाल संसेवितपदांवुज। रामनाथायशुद्धाय नमोदिग्वाससेसदा १ इति वायुरुवाच। हरायहरिरूपाय व्याघ्रचर्मांवरायच। रामनाथमम

स्तुभ्यं ममाभीष्टप्रदोभव १ इति। बृहस्पतिरुवाच। अहंतासा
क्षिणोनित्यं प्रत्यगद्वयवस्तुने। रामनाथममाज्ञान माशुनाशयते
नमः। शुक्रउवाच। वंचकानामलक्ष्याय महामंत्रार्थरूपिणे। नमो
द्वैतविहीनाय रामनाथायशंभवे १ इति। अश्विनावूचतुः। आत्म
रूपतयानित्यं योगिनांभासतेहृदि। अनन्यभानवेद्याय नमस्ते
राघवेश्वर १ इति। अगस्त्यउवाच। आदिदेवमहादेव विश्वेश्वर
शिवाव्यय। रामनाथांबिकानाथ प्रसीदवृषभध्वज १ अपराध
सहस्रंमे क्षमस्वपरमेश्वर। ममाहमितिपुत्रादावहंताममनोचय २
इति। सुतीक्ष्णउवाच। क्षेत्राणिरत्नानिधनानिदारा मित्राणिव
स्त्राणिगवाश्वपुत्राः। नैवोपकारायहिरामनाथ मह्यंप्रयच्छत्व
मतोविरक्तिम् १ इति। विश्वामित्रउवाच। श्रुतानिशास्त्राण्य
पिनिष्फलानि ह्यधीतान्यप्यधीताविफलैवनूनम्। त्वयीश्वरेचेन्नभवे
द्विभक्तिः श्रीरामनाथेशिवमानुषस्य १ इति। गालवउवाच। दाना
नियज्ञानियमास्तपांसि गंगादितीर्थेषुनिमज्जनानि। रामेश्वरंत्वां
ननमंतियेतु व्यर्थानितेषामितिनिश्चयोत्र १ इति। वसिष्ठउवाच।
कृत्वापिपापान्यखिलानिलोक स्त्वामेत्यरामेश्वरभक्तियुक्तः। नमे
तचेत्तानिलयंव्रजेयु र्यथांधकारारवितेजसाद्धा १ इति। अत्रिरु-
वाच। दृष्ट्वातुरामेश्वरमेकदापि स्पृष्ट्वानमस्कृत्यभवंतमीशम्।
पुनर्नगर्भेसनरःप्रयायात्किंत्वद्वयंतेलभतेस्वरूपम् १ इति। अंगि
राउवाच। योरामनाथंमनुजोभवंत मुपेत्यवंधून्प्रणमन्स्मरेत।
संतारयेत्तानपिसर्वपापात् किमद्भुतंतस्यकृतार्थतायाम् १ इति।
गौतमउवाच। श्रीरामनाथेश्वरगूढमेत द्ब्रहस्यभूतंपरमंविशोकम्।
त्वत्पादमूलंभजतांनृणांये सेवांप्रकुर्वंतिहितेपिधन्याः १ शतानंद
उवाच। वेदान्तविज्ञानरहस्यविद्भि र्विज्ञेयमेतद्विमुमुक्षुभिस्तु।
शास्त्राणिसर्वाणिविहायदेव त्वत्सेवनंयद्रघुवीरनाथ १ इति। भृगु
रुवाच। रामनाथतवपादपंकज द्वंद्वचिन्तनविधूतकल्मषः। निर्भयं

व्रजतिसत्सुखाद्वयं त्वांस्वयंप्रभममोघचिद्घनम् १ इति। कुत्स उवाच। रामनाथतवपादसेवनं भोगमोक्षवरदंनृणांसदा। रौरवादिनरकप्रणाशनं कःपुमान्नभजतेरसग्रहः १ इति। काश्यपउवाच। रामनाथतवपादसेविनां किंव्रतैरुततपोभिरध्वरैः। वेदशास्त्रजपचिंतयाचकिं स्वर्गसिंधुपयसापिकिंफलम् १ श्रीरामनाथत्वमागत्यशीघ्रं ममोत्क्रांतिकालेभवान्याचसाकम्। मांप्रापयस्वात्मपादारविन्दं विशोकंविमोहंसुखंचित्स्वरूपम् २ इति। गंधर्वाऊचुः। रामनाथत्वमस्माकं भजतांभवसागरे। अपारदुःखकल्लोले नत्वत्तोन्यागतिर्हिनः १ इति। किन्नराऊचुः। रामनाथभवारण्ये व्याधिव्याघ्रभयानके। त्वामंतरेणनास्माकं पदवीदर्शकोभवेत् १ इति यक्षाऊचुः। रामनाथेन्द्रियाराति बाधानोदुःसहासदा। तान्विजेतुं सहायस्त्वमस्माकंभवधूर्जटे १ इति। नागाऊचुः। अचिन्त्यमहिमानंत्वां रामनाथवयंकथम्। स्तोतुमल्पधियःशक्ता भविष्यामोंबिकापते १ इति। किंपुरुषाऊचुः। नानायोनौचजननं मरणंचाप्यनेकशः। विनाशयतथाज्ञानं रामनाथनमोस्तुते १ इति। विद्याधराऊचुः। अंबिकापतयेतुभ्यमसंगायमहात्मने। नमस्तेरामनाथाय प्रसीदवृषभध्वज १ इति। वसवऊचुः। रामनाथगणेशाय गणवृन्दार्चितांघ्रये। गंगाधरायगुह्याय नमस्तेपाहिनःसदा १ इति। विश्वेदेवाऊचुः। ज्ञप्तिमात्रैकनिष्ठानां मुक्तिदायसुयोगिनाम्। रामनाथायसांबाय नमोस्मान्रक्षशंकर १ इति। मरुतऊचुः। परतत्वायतत्वानां तत्वभूतायवस्तुतः। नमस्तेरामनाथाय स्वयंभानायशंभवे १ इति। साध्याऊचुः। स्वातिरिक्तविहीनाय जगत्सत्ताप्रदायिने। रामेश्वरायदेवाय नमोऽविद्याविभेदिने १ इति। सर्वदेवाऊचुः। सच्चिदानन्दसंपूर्णं द्वैतवस्तुविवर्जितम्। ब्रह्मात्मानंस्वयंभान मादिमध्यांतवर्जितम् १ इति। अविक्रियमसंगंचपरिशुद्धंसनातनम्। आकाशादिप्रपंचानां साक्षिभूतंसनातनम् २

प्रमातीतंप्रमाणानामपिबोधप्रदायिनम् । आविर्भावतिरोभावसंकोचरहितंसदा ३ स्वस्मिन्नध्यस्तरूपस्यप्रपंचस्यास्यसाक्षिणम्। निर्लेपंपरमानंदंनिरस्तसकलक्रियम् ४ भूमानंदंमहात्मानंचिद्रूपंभोगवर्जितम् । रामनाथंवयंसर्वेस्वपातकविशुद्धये ५ चिंतयामःसदाचित्तेस्वात्मानंदवभुत्सवः। रक्षास्मान्करुणासिंधोरामनाथनमोस्तुते ६ रामनाथायरुद्रायनमःसंसारहारिणे । ब्रह्मविष्ण्वादिरूपेणविभिन्नायस्वमायया ७इति। विभीषणसचिवाऊचुः। वरदायवरेण्यायत्रिनेत्रायत्रिशूलिने । योगिध्येयायनित्यायरामनाथायतेनमः १ इति) सूतजी कहते हैं कि हे मुनीश्वरो रामचंद्र लक्ष्मण आदिके मुख से स्तुति सुन प्रसन्न हो रामेश्वर प्रभुने कहा कि हे रामचंद्रजी हे लक्ष्मणजी हे सीते हे सुग्रीव आदि बानरो आप सबके किये इस स्तोत्राध्याय को जो पढ़ें सुनें औ सुनावें वे सब हमारे पूजन का फल पावेंगे धनुष्कोटि तीर्थमें स्नान करने का औ एकवर्ष पर्यंत रामसेतु के बासका भी फल प्राप्त होता है गंधमादन के सबतीर्थों में स्नान करने से जो फल प्राप्त होता है वह इस अध्याय के पठनसे होगा इस अध्याय को पठन करनेहारा मनुष्य जन्म मरण जरा रोग आदिके भयसे छुट हमारे सायुज्य को प्राप्त होगा॥

पचासवां अध्याय॥

सूतजी कहते हैं कि हे मुनीश्वरो अब हम सबपाप हरनेहारा सेतुमाधव का वैभव वर्णन करते हैं आप भक्ति से श्रवण करैं पूर्वकाल में चंद्रवंश में उत्पन्न पुण्यनिधि नामराजा हालास्येश्वर करके भूषित मथुरापुरी में हुआ है वह एक समय अपने पुत्र को राज्य सौंप चतुरंगिणी सेना औ अपने अन्तःपुर समेत स्नान के लिये रामसेतुको चला वहां पहुंच संकलपपूर्वक धनुष्कोटिमें स्नान

किया और भी वहांके सब तीर्थों में स्नान कर भक्तिपूर्वक राजा पुण्यनिधि रामेश्वर का सेवन करने लगा वहां राजा ने विष्णु भगवान् की प्रीति के लिये यज्ञ किया यज्ञांतस्नान धनुष्कोटि में कर औ रामेश्वर का पूजन आदि कर अपनी राजधानी में आय राज्य करनेलगा कुछ काल के अनंतर लक्ष्मी विष्णु भगवान् के साथ विनोद से विवाद कर राजाकी भक्ति परीक्षा के लिये आठ वर्ष की कन्या बन धनुष्कोटि तीर्थपर आय स्थित होगई उस अवसर में राजा भी वहां स्नान करने आया था राजा स्नान कर तुला पुरुष आदि सब दान दिये औ राजधानी को चलने लगा तब उस परमसुंदरी कन्या को देखा औ पूछा कि हे कन्ये तू किसकी पुत्री है औ हे वत्से यहां अकेली किस काम के लिये आई है औ कहां से आई है यह राजा का वचन सुन कन्या ने कहा कि मेरे माता पिता बांधव आदि कोई नहीं औ मैं अनाथा हूं इसलिये हे महाराज आप की पुत्री होकर आप के घरमें रहना चाहती हूं परंतु जो मुझे हठ से आकर्षण करै उसको आप दंड देवैं राजा ने कन्या का यह वचन सुन कहा कि हे पुत्रि जो तू कहैगी वह सब करूंगा मेरे भी केवल एक पुत्र है कन्या नहीं है इसलिये मेरी पुत्री होकर रह जिस बर में तेरी रुचि होगी उसी को तुझे देदूंगा यहराजा का वचन सुन प्रसन्न हो कन्या उसके साथ गई राजा ने अपनी रानी विंध्यावली से कहा कि हे प्रिये यह हम दोनों की पुत्री है इसको अपने समीप रक्खो सब प्रकार से इसकी रक्षा करना यहराजा की आज्ञापाय रानी ने उस कन्या को अपने समीप रक्खा औ पुत्री की भांति उसका पालन पोषण करने लगी विष्णु भगवान्भी गरुड़ पर चढ़ लक्ष्मी को ढूढ़ने निकले बहुत देशों में घूमे परंतु कहीं लक्ष्मी न मिली तब रामसेतु पर पहुंचे इस अवसर में वह कन्या भी अपनी स-

स्त्रियों समेत उपवन में पुष्प बिनने आई थी विष्णु भगवान् भी ब्राह्मण का रूप धारे गंगाजल की कावड़ कंधे पर धरे रुद्राक्ष औ विभूति धारे शिव नाम जपते वहां आये औ उस कन्या को देखा कन्याभी उनको देख स्तब्ध हो गई ब्राह्मणरूपधारीविष्णु भगवान् ने उस कन्या का हाथ पकड़ कर खींचा तब वह कन्या ऊंचे स्वरसे पुकारी कन्या का पुकारना सुन राजाभी वहां दौड़ा आया औ कन्यासे पूछा कि हे पुत्रि तुझे किसने छेड़ा तब कन्याने कहा कि हे पिता एक ब्राह्मणने मुझे हठसे पकड़ा तब मैंने आक्रोश किया अब वह ब्राह्मण निर्भय होकर एक वृक्षके नीचे बैठाहै यह राजा ने कन्याका वचन सुन क्रोध कर उस ब्राह्मणको पकड़वाया औ हथकड़ी बेड़ी पहिनाय रामनाथके समीप एक मंडप में कैद करदिया औ कन्याको आश्वासन कर अपने साथलेगया रात्रिके समय स्वप्न में राजाने उस ब्राह्मणको देखा कि शंखचक्र गदा पद्म कौस्तुभमणि पीतांबर औ भांति २ के भूषण धारे शेषशय्या पर सोता है औ नारद गरुड़ विष्वक्सेन आदि किंकर सेवा में खड़े हैं औ अपनी कन्या को भी देखा कि कमलके ऊपर बैठी हाथमें कमल लियेहै सुवर्ण कमलोंकी माला औ भाँति२ के रत्न जटित भूषणों से अलंकृतहै दिग्गज जिसका अभिषेक कररहे हैं यह स्वप्न में देख राजा उठा औ कन्या के घरमें गया वहाँ देखा तो कन्या उसी रूपमें बैठी है जो राजाने स्वप्न में देखाथा प्रभात होतेही राजा कन्याको साथले रामनाथ के मंदिरके समीप गया जहाँ ब्राह्मणको कैदकररक्खाथा ब्राह्मणकोभी उसीरूपमें देखा जो स्वप्नमें देखाथा तब राजा विष्णुभगवान्को जान स्तुतिकरने लगा(पुण्यनिधिरुवाच। नमस्तेकमलाकांतप्रसीदगरुडध्वज। शार्ङ्गपाणेनमस्तुभ्य मपराधंक्षमस्वमे १ नमस्तेपुंडरीकाक्ष चक्रपाणेश्रियःपते। कौस्तुभालंकृतांगाय नमःश्रीवत्सलक्ष्मण २ नमस्तेब्रह्मपु

त्रायदैत्यसंघविदारिणे। अशेषभुवनावास नाभिपंकजशालिने ३
मधुकैटभसंहर्त्रे रावणांतकरायते। प्रह्लादरक्षिणेतुभ्यं धरित्रीपत
येनमः ४ निर्गुणायाप्रमेयाय विष्णवेबुद्धिसाक्षिणे।नमस्तेश्रीनिवा
साय जगद्धात्रेपरात्मने ५ नारायणायदेवायकृष्णायमधुविद्विषे।
नमःपंकजनाभाय नमःपंकजचक्षुषे ६ नमःपंकजहस्तायाः पतयेपं
कजांघ्रये। भूयोभूयोजगन्नाथ नमःपंकजमालिने ७ दयामूर्तेनम
स्तुभ्य मपराधंक्षमस्वमे। मयानिगडपाशाभ्यांयःकृतोमधुसूदन ८
अनयस्त्वंस्वरूपंतंदैत्यांस्त्वदपराधिनः। अतोमदपराधोयंक्षंतव्यो
मधुसूदन ६ इसप्रकार विष्णुभगवान्‌की स्तुतिकर राजापुण्यनि-
धिमहालक्ष्मीकी स्तुति करनेलगा (राजोवाच। नमोदेविजगद्धा
त्रि विष्णुवक्षःस्थलालये। नमोब्धिसंभवेतुभ्यंमहालक्ष्मिहरिप्रिये
१ सिध्यैपुष्ट्यैस्वधायैच स्वाहायैसततंनमः। संध्यायैचप्रभायैच धा
त्र्यैभूत्यैनमोनमः २ श्रद्धायैचैवमेधायै सरस्वत्यैनमोनमः। यज्ञविद्ये
महाविद्येगुह्यविद्येतिशोभने ३ आत्मविद्येचदेवेशिमुक्तिदेसर्वदेहि
नाम्। त्रयीरूपेजगन्मातर्जगद्रक्षाविधायनि ४ रक्षमांत्वंकृपादृष्ट्या
सृष्टिस्थित्यंतकारिणि भूयोभूयोनमस्तुभ्यं ब्रह्ममात्रेमहेश्वरि ५)
इसप्रकार लक्ष्मीजीकी स्तुतिकर राजा भगवान्‌से प्रार्थना कर-
नेलगा कि हे भगवन् मैंने बड़ाअपराध किया कि आपके चरणोंमें
बेड़ीडाली परंतु यह अपराध मैंने अज्ञानसे किया इसलिये आप
क्षमाकरें सबजगत् आपका पुत्रहै औ आप सबके पिताहैं पिताको
पुत्रोंका अपराध क्षमाकरना चहिये आपने बड़ेअपराधी दैत्योंको
अपना स्वरूपदिया इसलिये मेरा अपराधभी आप क्षमाकरें पू-
तना आपके मारनेकेलिये आई उसको आपने सद्गतिदी इसकारण
मेरेऊपरभी कृपादृष्टिकीजिये सूतजी कहतेहैं कि हेमुनीश्वरो राजा
कायह वचन सुन विष्णुभगवान् बोले किहेराजन् भय मतकर हम
भक्तोंके वशहैं हमारी प्रीतिकेलिये तैंनेबडा यज्ञकिया इसलिये

हेराजा तू हमारा भक्तहै औ हम तेरेवशहैं भक्तोंके अपराध हम सदाक्षमा करतेहैं तेरीभक्तिकी परीक्षाके लिये हमने लक्ष्मीको भेजा तैंने लक्ष्मीकी भलीभाँति रक्षाकी इसलिये हम तुझपर प्रसन्नहैं लक्ष्मी हमारा रूपहै जो इसका भक्तहोय वह हमारा भक्त होताहै जो इससे विमुखहोय वह हमारा द्वेषीहै तैंने इसका भक्तिसे पूजन किया उससे हमाराभी पूजन हुआ इसलिये हेराजातैंने हमारा कोई अपराध नहींकिया तैंने लक्ष्मीकी रक्षाके लिये हमारा बंधनकिया इसलिये हमबहुत प्रसन्नहैं यहलक्ष्मी जगन्माता है इसकी रक्षाकेलिये हमारा बंधनकिया यह हमको अतिप्रिय है इसलिये हेराजन् कुछ भय मतकर यहलक्ष्मी तेरी कन्याहै यहतो भगवान्ने कहा औ लक्ष्मीजी बोलीं कि हेराजन् मैंतुझसे बहुत प्रसन्नहूं मैंऔ विष्णुभगवान् दोनों विनोद कलह करके यहां आये औ तेरे योगसे तथा भक्ति से बहुत प्रसन्न हुवे हमारी कृपासे हे राजन् सदा तुझको सुख होगा तू चक्रवर्ती राजा होगा औ हमारे चरणों में दृढ़भक्ति होगी सदा धर्म में बुद्धि रहैगी पाप में कभी आसक्ति न होगी औ देहांत में हमारा सायुज्य मिलैगा विष्णुभगवान् ने कहा किहे राजन् जिसप्रकार तैंने हमको निगड़ से बांधा अब हम इसी रूपसे यहां निवास करेंगे हमनेही सेतु बाँधाहै इसकी रक्षाके लिये हम सेतुमाधव नाम से यहां रहेंगे रामनाथ शिवजी औ ब्रह्माजी भी सेतुकी रक्षाके लिये यहां निवास करेंगे इंद्रादि लोकपाल यहां निवास करेंगे सब उपद्रव निवृत्त करनेके लिये औ सबके मनोरथ सिद्ध करनेके अर्थ सेतुमाधव नामसे हम यहां स्थितहोंगे तेरी निगड़से बँधे हमको जो सेवन करेंगे वे हमारा सायुज्य पावेंगे हमारे औ लक्ष्मी के इस चरित को जो पढ़ेंगे वेकभी दारिद्र्यको नहीं प्राप्तहोंगे औ ऐश्वर्य पावेंगे तेरेकिये हमारे स्तोत्रको जोपढ़ैंगे सुनैंगे औ लिखकर घर

त्रायदैत्यसंघविदारिणे। अशेषभुवनावास नाभिपंकजशालिने ३ मधुकैटभसंहर्त्रे रावणांतकरायते। प्रह्लादरक्षिणेतुभ्यं धरित्रीपतयेनमः ४ निर्गुणायाप्रमेयाय विष्णवेबुद्धिसाक्षिणे। नमस्तेश्रीनिवासाय जगद्धात्रेपरात्मने ५ नारायणायदेवायकृष्णायमधुविद्विषे। नमःपंकजनाभाय नमःपंकजचक्षुषे ६ नमःपंकजहस्तायाः पतयेपंकजांघ्रये। भूयोभूयोजगन्नाथ नमःपंकजमालिने ७ दयामूर्तेनमस्तुभ्य मपराधंक्षमस्वमे। मयानिगडपाशाभ्यांयःकृतोमधुसूदन ८ अनयस्त्वंस्वरूपंतंदैत्यांस्त्वदपराधिनः। अतोमदपराधोयंक्षंतव्यो मधुसूदन ९ इसप्रकार विष्णुभगवान्की स्तुतिकर राजापुण्यनिधिमहालक्ष्मीकी स्तुति करनेलगा (राजोवाच। नमोदेविजगद्धात्रि विष्णुवक्षःस्थलालये। नमोब्धिसंभवेतुभ्यंमहालक्ष्मिहरिप्रिये १ सिध्यैपुष्ट्यैस्वधायैच स्वाहायैसततंनमः। संध्यायैचप्रभायैच धात्र्यैभूत्यैनमोनमः २ श्रद्धायैचैवमेधायै सरस्वत्यैनमोनमः। यज्ञविद्ये महाविद्येगुह्यविद्येतिशोभने ३ आत्मविद्येचदेवेशिमुक्तिदेसर्वदेहिनाम्। त्रयीरूपेजगन्मातर्जगद्रक्षाविधायनि ४ रक्षमांत्वंकृपादृष्ट्या सृष्टिस्थित्यंतकारिणि भूयोभूयोनमस्तुभ्यं ब्रह्ममात्रेमहेश्वरि ५) इसप्रकार लक्ष्मीजीकी स्तुतिकर राजा भगवान्से प्रार्थना करनेलगा कि हे भगवन् मैंने बड़ाअपराध किया कि आपके चरणोंमें बेड़ीडाली परंतु यह अपराध मैंने अज्ञानसे किया इसलिये आप क्षमाकरैं सबजगत् आपका पुत्रहै औ आप सबके पिताहैं पिताको पुत्रोंका अपराध क्षमाकरना चहिये आपने बड़ेअपराधी दैत्योंको अपना स्वरूपदिया इसलिये मेरा अपराधभी आप क्षमाकरैं पूतना आपके मारनेकेलिये आई उसको आपने सद्गतिदी इसकारण मेरेऊपरभी कृपादृष्टिकीजिये सूतजी कहतेहैं कि हेमुनीश्वरो राजाकायह वचन सुन विष्णुभगवान् बोले किहेराजन् भय मतकर हम भक्तोंके बशहैं हमारी प्रीतिकेलिये तैंनेबडा यज्ञकिया इसलिये

हेराजा तू हमारा भक्तहै औ हम तेरेबशहैं भक्तोंके अपराध हम सदाक्षमा करतेहैं तेरीभक्तिकी परीक्षाके लिये हमने लक्ष्मीको भेजा तैंने लक्ष्मीकी भलीभाँति रक्षाकी इसलिये हम तुझपर प्रसन्नहैं लक्ष्मी हमारा रूपहै जो इसका भक्तहोय वह हमारा भक्त होताहै जो इससे विमुखहोय वह हमारा द्वेषीहै तैंने इसका भक्ति से पूजन किया उससे हमाराभी पूजन हुआ इसलिये हेराजा तैंने हमारा कोई अपराध नहींकिया तैंने लक्ष्मीकी रक्षाके लिये हमारा बंधनकिया इसलिये हमबहुत प्रसन्नहैं यहलक्ष्मी जगन्माता है इसकी रक्षाकेलिये हमारा बंधनकिया यह हमको अतिप्रिय है इसलिये हेराजन् कुछ भय मतकर यहलक्ष्मी तेरी कन्याहै यहतो भगवान्ने कहा औ लक्ष्मीजी बोलीं कि हेराजन् मैंतुझसे बहुत प्रसन्नहूं मैंऔ विष्णुभगवान् दोनों विनोद कलह करके यहां आये औ तेरे योगसे तथा भक्ति से बहुत प्रसन्न हुवे हमारी कृपासे हे राजन् सदा तुझको सुख होगा तू चक्रवर्ती राजा होगा औ हमारे चरणों में दृढ़भक्ति होगी सदा धर्म में बुद्धि रहैगी पाप में कभी आसक्ति न होगी औ देहांत में हमारा सायुज्य मिलैगा विष्णुभगवान् ने कहा किहे राजन् जिसप्रकार तैंने हमको निगड़ से बांधा अब हम इसी रूपसे यहां निवास करैंगे हमनेही सेतु बाँधाहै इसकी रक्षाके लिये हम सेतुमाधव नाम से यहां रहैंगे रामनाथ शिवजी औ ब्रह्माजी भी सेतुकी रक्षाके लिये यहाँ निवास करैंगे इंद्रादि लोकपाल यहां निवास करैंगे सब उपद्रव निवृत्त करनेके लिये औ सबके मनोरथ सिद्ध करनेके अर्थ सेतुमाधव नामसे हम यहां स्थितहोंगे तेरी निगड़से बँधे हमको जो सेवन करैंगे वे हमारा सायुज्य पावैंगे हमारे औ लक्ष्मी के इस चरित को जो पढ़ैंगे वेकभी दारिद्र्यको नहीं प्राप्तहोंगे औ ऐश्वर्य पावैंगे तेरेकिये हमारे स्तोत्रको जोपढ़ैंगे सुनैंगे औ लिखकर घर

में रक्खेंगे वे जन्ममरण के क्लेशसे छुटेंगे इतना कह विष्णुभग-
वान् वहां पूर्णरूपसे स्थित होगये राजाभी विष्णुभगवान् का
महा पूजनकर औ रामनाथका सेवनकर अपने स्थानको गया
औ मथुराका राज्य अपने पुत्रको सौंप आप रामनाथ क्षेत्रमें नि-
वास करनेलगा औ देहके अंतमें मुक्तिपाई रानी विंध्यावली
राजाके साथ सतीहुई औ अपने पतिके समीप पहुंची सूतजीकहते
हैं कि हे मुनीश्वरो जो पुरुष भक्तिसे सेतुमाधव का सेवन करते हैं
वे सदाकैलासमें निवास करतेहैं जो सेतुमाधवका सेवन बिनाकिये
रामेश्वरकी सेवा करै उसकी सब सेवा ब्यर्थ होतीहै जो पुरुष
सेतुसे बालूरेत लेकर गंगामें डालें वे सदा वैकुंठमें बास करते हैं
गंगाको जानेलगे तब सेतुमाधवके समीप संकल्पकरके जाय नहीं
तो यात्रा निष्फल होतीहै गंगासे कावड़ भरकर रामनाथ क्षेत्रमें
लावै औ रामेश्वरपर गंगाजल चढ़ाय उस कावड़को सेतुके समीप
समुद्रमें डालै वह पुरुष ब्रह्मसायुज्यको प्राप्तहोता है हे मुनीश्वरो
यह सेतुमाधव का बैभव हमने वर्णन किया इसको जो पढ़े अ-
थवा सुने वह वैकुंठ वास पाताहै॥

इकावनवां अध्याय॥

सूतजी कहतेहैं कि हेमुनीश्वरो अब हम सेतुयात्राका क्रम
कहते हैं जिसके श्रवण करने से मनुष्य मुक्तहोता है स्नान आ-
चमन कर शुद्धहो रामेश्वर औ रामचंद्रजी की प्रसन्नता के लिये
वेदवेत्ता ब्राह्मणोंको भोजन कराय मस्तक में भस्मका त्रिपुंड्र अ-
थवा गोपीचंदन का ऊर्ध्वपुंड्र धारणकर रुद्राक्षमाला औ कुशके
पवित्र धार(सेतुयात्रा महंकरिष्ये) यह संकल्पकर अष्टाक्षर अथवा
पंचाक्षर मंत्रको जपता हुआ घरसे यात्रा करै मार्गमें एक बार
हविष्य भोजन करै जितेन्द्रिय औ जितक्रोधरहै पादुका छत्र

तांबूल तैलाभ्यंग स्त्रीसंग आदिका तीर्थ यात्रामें निषेध है शौच आचार करके युक्तरहै तीनकाल संध्यावंदन गायत्री जप औ रामेश्वर का चिन्तन करै मार्ग में नित्य सेतुमाहात्म्य रामायण अथवा और कोई पुराण पढ़ै अथवा श्रवण करै व्यर्थ वाक्य उच्चारण न करै प्रतिग्रह न लेवै आचारमें रहै मार्गमें यथाशक्ति शिव औ विष्णुका पूजन करताजाय वैश्वदेव ब्रह्मयज्ञ अग्निहोत्र आदि करताजाय अतिथियों को अन्नदेवै औ सन्न्यासियोंको यथाशक्ति भिक्षा देतारहै वित्तशाठ्यनकरै शिव विष्णु आदिके स्तोत्र नित्यपढ़ै सदा धर्म सेवन करै औ निषिद्धकर्म को त्यागै इस नियम से सेतुपर पहुंच पहिले एक पाषाण समुद्रको देकर समुद्रका आवाहन करै फिर प्रणामकर अर्घ्य देकर समुद्रकी आज्ञा ले स्नान करै औ मुनि देवता पितर औ बानरोंका तर्पणकरै सात पाषाण अथवा एक पाषाण (पिप्पलादसमुत्पन्ने कृत्येलोकभयंकरे। पाषाणंतेमयादत्तमाहारार्थंप्रकल्पताम्)यह मंत्रपढ़ समुद्र में डालै तब स्नान सफल होताहै (विश्वाचित्वंघृताचित्वंविश्वयोने विशांपते । सान्निध्यंकुरुमेदेवसागरेलवणाम्भसि) यह आवाहन का मंत्रहै(नमस्तेविश्वगुप्तायनमोविष्णोह्यपांपते । नमोहिरण्यशृंगायनदीनांपतयेनमः)यह नमस्कार मंत्रहै (सर्वरत्नमयश्रीमन्सर्वरत्नाकरप्रभो । सर्वरत्नप्रधानस्त्वंगृहाणार्घ्यमहोदधे)यहअर्घ्यका मंत्रहै (अशेषजगदाधारशंखचक्रगदाधर । देहिदेवममानुज्ञांयुष्मत्तीर्थनिषेवणे) यह आज्ञा लेनेका मंत्रहै फिर पूर्व दिशामें सुग्रीव दक्षिण में नल पश्चिममें मैंद औ उत्तरमें द्विविदका स्मरणकर मध्यमेंराम लक्ष्मण सीता हनुमान् अंगद औ विभीषणका स्मरण कर(पृथिव्यांयानितीर्थानिप्राविशंस्त्वांमहोदधे । स्नानस्यमेफलं देहिसर्वस्मात्त्राहिमैनसः)यह मंत्र पढ़ हिरण्यशृंगं इत्यादि वैदिक मंत्र पढ़ै औ नाभि में नारायण का स्मरणकरै स्नान आदि

कर्मोंमें नारायणका स्मरण करतारहै तोब्रह्मलोकको प्राप्तहोय औ सब पापोंका प्रायश्चित्त भी होजाय फिर प्रह्लाद नारद व्यास अंबरीष शुकदेवआदि भगवद्भक्तोंका स्मरणकर(वेदादियोंवेदवसिष्ठयोनिःसरित्पतिः सागररत्नयोनिः अग्निश्वतेजेजइलाचतेजोरेतोधाविष्णुरमृतस्यनाभिः इदंतेअन्याभिरस्यमानमद्रियांकाश्चसिंधुंप्रविशंत्यापः । सर्पोजीर्णामिवत्वचंजहामिपापंशरीरात्) यहमंत्र पढ़ स्नानकरै समुद्रावयूनां इत्यदिमंत्रपढ़ नमस्कार कर(सर्वतीर्थमयंशुद्धंनदीनांपतिमंबुधिम्) यह मंत्र औ द्वौसमुद्रौ इत्यादि मंत्रपढ़ फिरस्नानकरै फिर(ब्रह्माण्डोदरतीर्थानिकरस्पृष्टानितेरवे। तेनसत्येनमेसेतौ तीर्थंदेहि दिवाकर) यह मंत्रपढ़ पूर्व आदि दिशाओंमें सुग्रीव आदिका पूर्ववत् स्मरणकर तीसरा स्नान करै जो देवीपत्तन होकर जायतो पहिले नव पाषाण के मध्यमें समुद्रके बीच स्नान करै दर्भशय्याके मार्गसे जायतो पहिले समुद्रमें स्नान करै फिर पिप्पलाद कवि कण्व कृतांत मृत्यु कालरात्रि विद्या अर्हगणेश्वर पराशर वसिष्ठ वामदेववाल्मीकि नारद वालखिल्य मुनि नल नील गवाक्ष गवय गंधमादन मैंद द्विविद शरभ ऋषभ सुग्रीव हनुमान् औ रामलक्ष्मण सीताका तीन२बार तर्पणकर देवताऋषि पितरोंका तिल जलसे तर्पण करै चतुर्थ्यंत अथवा द्वितीयांत नाम उच्चारणकर जलके बीच खड़ा रहकर तर्पण करै समुद्रके बीच तर्पण करनेसे सब तीर्थोंमें तर्पण करने का फल प्राप्तहोता है इसभांति सबका तर्पण कर जलसे निकल वस्त्रधारणकर पवित्र हो आचमन कर श्राद्ध करै धनाढ्यहोय षड्रस अन्नसे पिंडदेकर गौ भूमि सुवर्ण आदि दानकर ब्राह्मणोंकोदेवै औ निर्धन होय तो तिल चावलसे पिंडदान करदेवै इसी भांति पाषाण दान से लेकर श्राद्ध पर्यंत सब विधान राम धनुष्कोटि मेंभी करै चक्रतीर्थ मेंजाकरस्नानकर वहांके अधिपति नारायणका दर्शनकरै पश्चिम

मार्गसे जाय तो उस दिशा के चक्रतीर्थ में स्नान कर दर्भशायी नारायणका दर्शन करै फिर कपितीर्थ सीतातीर्थ औ ऋणमोचन तीर्थ में स्नानकर रामचंद्र जीको प्रणाम करै फिर कंठसे ऊपर वपनकराय लक्ष्मणतीर्थमें स्नानकरै फिर रामतीर्थ पापबिनाशन तीर्थ गंगा यमुना सावित्री गायत्री सरस्वती हनुमत्कुंड ब्रह्म-कुंड औ नागकुंड में स्नान करै गंगा आदि सबतीर्थ नागकुंड में निवास करते हैं यहतीर्थ अनंत आदि आठ नागोंने रचाहै फिर अगस्त्यकुंड में स्नान कर अग्नितीर्थ में स्नान करै औ विधि पूर्वक श्राद्धकर गोभूमि सुवर्ण अन्नआदि ब्राह्मणों को देवै तो सब पापों से मुक्तहोय चक्रतीर्थ आदि जिस क्रमसे बर्णन किये उसी क्रमसे स्नानकरै अथवा जैसी रुचिहोय उस प्रकार तीर्थोंमें स्नान करै सब तीर्थोंमें स्नान औ श्राद्ध कर पीछे रामेश्वर महादेव से-तुमाधव राम लक्ष्मण सीता हनुमान् औ सुग्रीव आदि बानरों का सेवन करै सब तीर्थों में स्नान कर रामनाथ औ रामचंद्र को प्रणाम कर रामचंद्र धनुष्कोटि में स्नान करै वहाँ भी पाषाण दान आदि नियम सब करै धनुष्कोटि तीर्थमें क्षेत्र गौ वस्त्र अन्न आदि वेदवेत्ता ब्राह्मणों को यथाशक्ति देवै फिर नियम पूर्वक कोटि तीर्थमें स्नान कर रामेश्वर देव को प्रणाम करै सामर्थ्य होय तो ब्राह्मणोंको सुवर्ण दक्षिणा देवै औ तिल धान्य गौ क्षेत्र वस्त्र अन्न भी ब्राह्मणों को देवै वित्तशाठ्य न करै धूप दीप नैवेद्य आदि पूजाके उपकरण वित्तानुसार रामेश्वर देव के अर्प्पण करै रामेश्वर देवकी स्तुति औ प्रणाम कर सेतुमाधवके समीप जाय वहाँ भी सब पूजाके उपचार समर्पण कर पूर्बोक्त नियमों करके युक्त अपने घरको आवै वहाँ आय षड्रस भोजन ब्राह्मणोंको करावै इस प्रकार यात्राकरै तो रामेश्वर देव सब मनोरथ सिद्ध करतेहैं औ धन संतानकी वृद्धि होतीहै नरक औ दरिद्र का भय

नहीं रहता औ अंतमें मुक्ति प्राप्त होतीहै जो यात्रा करनेका सामर्थ्य न होय तो सेतुके माहात्म्य का कोई ग्रंथ श्रवण करै अथवा इसी सेतु माहात्म्यको श्रवण करै तो भी सेतुयात्राका फल प्राप्त होताहै परंतु यह बात लँगड़े लूले अंधे आदि के लिये कही है हे मुनीश्वरो यह सेतुयात्रा का क्रम हमने कहा इसको जो पढ़ै अथवा भक्ति से श्रवण करै वह सब दुःखों से छुटताहै॥

बावनवां अध्याय॥

सूतजी कहतेहैं कि हे मुनीश्वरो अबआपकी प्रीतिकेलिये फिर भी हम सेतुका वैभव वर्णन करते हैं आप प्रीतिसे श्रवण करो सब स्थानोंमें यह स्थान उत्तमहै इस स्थानमें किये हुवे जप तप हवन दान आदि कर्म अक्षय होतेहैं धनुष्कोटिमें स्नान करनेसे दशवर्ष तक किये काशीबास का फल प्राप्त होताहै धनुष्कोटि में स्नान कर तीन दिन रामेश्वर का दर्शन करै तो पुंडरीक पुरके दशवर्ष बासका फल प्राप्त होताहै अष्टोत्तर सहस्र जप षडक्षरमंत्रका इस क्षेत्रमें करै तो शिव सायुज्यपावै मध्यार्जुन कुंभकोण मायूर श्वेत कानन हालास्य गजारण्य वेदारण्य नैमिष श्रीपर्वत श्रीरंग वृद्धगिरि चिदंबर वल्मीक शेषाद्रि वरुणाचल दक्षिणकैलास वेंकटाद्रि हरिस्थल कांचीपुर ब्रह्मपुर वैद्येश्वरपुर आदि शिवक्षेत्र औ विष्णुक्षेत्रों में बर्षभर निवास करनेसे जो फल होता है वह धनुष्कोटि में माघमासभर स्नान करनेसे प्राप्त होता है सेतुके उद्देश से द्वौसमुद्रौ इत्यादि अदोयद्दारु इत्यादि विष्णोःकर्माणि पश्यन्ते इत्यादि तद्विष्णोः इत्यादि कई श्रुति हैं औ अनेक स्मृति इतिहास पुराण आदि सेतुमाहात्म्य को कहते हैं दशवर्ष पर्यंत काशीबास कर गंगास्नान नित्य करने से जो फल होता है वह चंद्र सूर्य ग्रहण में सेतुस्नान से प्राप्त होताहै सेतुस्नान

करतेही कोटिजन्म में कियेपाप तत्क्षण नष्ट होजाते हैं औ हजार अश्वमेध का फल प्राप्त होता है विषुव अयन सोमवार औ पर्व दिनों में सेतुस्नान करै तो सातजन्म के पाप निवृत्त होते हैं औ स्वर्ग प्राप्ति होती है मकर के सूर्य औ माघमास में सूर्योदय होनेके अनंतर तीनदिन धनुष्कोटि में स्नान करै तो गंगादि सब तीर्थों के स्नानका फल प्राप्तहोय पांचदिन स्नान करै तो अश्वमेध आदि सब यज्ञोंका फलपावै चांद्रायण आदि व्रत औ चारों वेदके पारायणका फलप्राप्तहोताहै माघमासमें दशदिनधनुष्कोटि में स्नान करै तो निश्चयही ब्रह्मलोक प्राप्तहोय पंद्रहदिन स्नान करै तो बैकुंठ प्राप्तिहोय बीसदिन स्नानकरै तो शिवलोकमें बास होय पचीसदिन स्नानकरै तो सारूप्यमुक्ति पावै तीनदिन स्नान करै तो सायुज्य मिलै इसलिये माघमासमें अवश्यही धनुष्कोटि में स्नान करना चहिये चन्द्रसूर्य ग्रहण अर्द्धोदय महोदय आदि पर्व दिनोंमें स्नानकरै तो कभी गर्भवास न होय ब्रह्महत्या आदि पाप निवृत्त होंय नरकक्लेश न होय सब सम्पत्ति मिलै इन्द्रादि लोकों में निवास होय रावणके बधकेलिये रामचंद्रजीने सेतु बनायाहै जिसको देवता सिद्ध चारण गंधर्व देवर्षि राजर्षि पितर किन्नर नाग आदि सब सेवते हैं उस सेतु का स्नान के समय स्मरणकरै औ चाहै जहाँ तटाग आदिमें स्नानकरै तोभी सब पाप निवृत्तहोजांय सेतुक्षेत्रमें एक मुट्ठी अन्नदेने सेभी सबरोग औ भ्रूणहत्या आदि पाप निवृत्त होते हैं रामचंद्र जीके धनुष से कीहुई रेखाको जो देखै वह अक्षय वैकुंठवासपावै विभीषण की प्रार्थना से रामचंद्रजीने धनुष्कोटि तीर्थबनायाहै उसमेंभक्तिसे स्नान करै गौ भूमि सुवर्ण क्षेत्र तिल चावल धान्य दूध दही छाछ उड़द वस्त्र भूषण घृत जल शाक भात शर्करा मधु लड्डू अपूप आदि सब पदार्थोंका दानकरै धनका लोभ न करै तोसब मनोरथ सिद्ध

होतेहैं दान जप तप हवनआदि सबकर्म धनुष्कोटि तीर्थपर किये
हुवे अनन्तफल देनेहारे होतेहैं धनुष्कोटिमें स्नानकरनेसे मनुष्य
पवित्र होताहै औ देवता पितर मुनि ब्रह्मा विष्णु शिव नाग कि-
म्पुरुष यक्ष सब संतुष्ट होतेहैं उसके सबकुल सद्गतिको प्राप्तहोते
हैं रामधनुष्कोटिमें स्नान करनेसे पांचकरोड़ महापातक नष्टहोते
हैं जहां सीताने अग्निमें प्रवेशकिया उसकुंडमें स्नान करनेसे सौ
भ्रूणहत्या क्षणमात्रमें नष्टहोजातीहैं रामचन्द्र सेतुगंगा औ विष्णु
इनमें कुछ भेदनहीं स्नानके समयइनका स्मरणकरै तो परमगति
पावै अर्द्धोदय पर्वमें सेतुस्नानकर सर्षपके तुल्य पिंड पितरोंको
देवै तोजबतक सूर्य चंद्ररहैं तबतक पितर तृप्तरहतेहैं शमीपत्रके
तुल्य पिंडदेवै तो पितर स्वर्गमेंहोंय तो मुक्ति पावैं औ नरकमें होंय
तो सब पापोंसे छुट स्वर्गको जांय सेतु पद्मनाभ गोकर्ण पुरुषोत्त-
म इनक्षेत्रोंमें सदा समुद्रके बीच स्नानकरना लिखाहै शुक्र भौम
औ शनिवारकेदिन संतानकी इच्छावाला पुरुष सेतुकेबिना अन्य-
त्र समुद्रमें स्नान न करै गर्भिणीपति औ प्रेतकृत्य न करचुकाहोय
वह पुरुष सेतुके बिना समुद्रमें स्नान न करै बार तिथि नक्षत्र
आदिका नियम औरक्षेत्रोंमेंहै सेतुमें सदाही स्नान करना चहिये
जीवतेहुवे बांधवोंके निमित्त सेतुस्नान करै मृतहुवोंके उद्देशसे न
करै कुशाका पुतला बनाय उसको स्नान करावै औ ये मंत्रपढ़ै
(कुशोसित्वंपवित्रोसिविष्णुनाविधृतःपुरा । त्वयिस्नातेसचास्नातो
यस्यैतद्ग्रंथिवंधनम्)औरस्थानोमें पर्वकेबीच समुद्र पवित्र होता
है सेतुमें गंगासागरमें गोकर्णमें पुरुषोत्तम क्षेत्रमें औकिसी नदी
से समुद्रका संगम हुआहोय वहां सदाही पवित्रहै वहां सब काल
में स्नान करनाचहिये और स्थानोंमें पर्वदिनके बिना समुद्रको
स्पर्श न करै पितर देवता औ मुनियोंके संमुख रामचन्द्रजीने यह
प्रतिज्ञा करीहै किहमारे सेतुमें जो स्नानकरैं वेजन्म मरणसे छुट

जाते हैं रामनाथका माहात्म्य औ सेतुका वैभव हमकोटि वर्षमेंभी नहीं वर्णन करसक्ते हैं यह रामचन्द्रजीका वचनसुन सब देवता औ मुनि बहुत प्रसन्नहो प्रशंसा करनेलगे सेतुकी रक्षाके लिये मध्यमें ब्रह्माजी निवास करतेहैं औ सेतुमाधव नामक विष्णुसेतुमेंविराजमानहैं औरभी देवता पितर धर्मशास्त्रके प्रवर्तक महर्षि गंधर्व किन्नर नाग यक्ष विद्याधर चारण किंपुरुष आदि सबसेतुमें निवास करतेहैं रामसेतुका दर्शन स्पर्श श्रवण स्मरण आदि सबपापोंसे रक्षाकरताहै अर्द्धोदयमें स्नान करनेसे आनंदकीप्राप्ति औमुक्तिकी प्राप्ति होती है माघमास अमावास्या तिथि रविवार श्रवण नक्षत्र ब्यतिपातयोग होय औ श्रवण नक्षत्रका सूर्यहोय तब अर्द्धोदय योग होताहै उसयोगमें स्नानकरनेसे सायुज्य मुक्ति मिलती है हजार ब्यतिपातके तुल्य अमावास्या अर्कवार करके युक्त अमावास्या होय तो दश हजारअमावास्याके तुल्य होती है श्रवण नक्षत्रहोयतो बहुतही पुण्य होताहै इनमें एक२भी स्नान दान जप पूजन आदिका अनंतफल देनेहाराहै पांचोंका योग हो जाय तो क्याकहनाहै नक्षत्रोंमें श्रवण तिथियों में अमावास्या बारोंमें रविबार औ योगोंमें ब्यतिपातयोग श्रेष्ठहै इन चारोंका योग मकरके सूर्यमें होंय औउसकालमें सेतुस्नानकरै तोजन्म मरण के भयसेछुट मुक्तिपावै अर्द्धोदयके तुल्य कोईपर्ब न हुआ न होगा ऐसाही महोदय पर्बभीहै इन पर्बकालोंमें सेतुक्षेत्रके बीच यथाशक्तिदान करना चहिये आचार तप वेद वेदांत शिव विष्णु आदि देवताओंकी भक्तिजिस ब्राह्मणमें होय वह दानपात्रहोताहै उसी को सबदान देनेचहिये जोसत्पात्र ब्राह्मण न मिलै तो सब दान वस्तु इकट्ठी कररक्खै औ जब उत्तम पात्रमिलै तबदे देवै परंतु अधमपात्रको न देवै इस प्रसंगमें एक इतिहास हम कहतेहैं जो वसिष्ठजीने राजा दिलीपको सुनायाथा सब पात्रों में उत्तमपात्र

वेदके आचारमेंतत्पर ब्राह्मणहै औ उनमें भी उत्तम वहहै जिस-
के उदर में शूद्रका अन्न न गया होय जो ब्राह्मण वेद औ पुराणजाने
शिव विष्णु आदिका पूजनकरैं वर्णाश्रम धर्मोंके अनुष्ठान में तत्पर
होय दरिद्री औ कुटुंबी होय वह उत्तमपात्र होता है ऐसापात्रको
दानदेनेसे धर्मअर्थकाम औ मोक्षप्राप्त होतेहैं उत्तम क्षेत्रमेंतो विशेष
करके सत्पात्रकोही दान देनाचहिये अपात्र को दान देनेवाला
मनुष्य दश जन्मतक कृकलास तीनजन्म गर्दभ दो जन्मतक मं-
डूक एकजन्म चंडालहोकर फिरक्रमसे शूद्रवैश्य क्षत्रिय औ ब्राह्मण
होताहै परन्तु दरिद्री औ रोगीहोताहै इसभांति औरभी अनेक दोष
अपात्रको दानदेनेसे होते हैं इसलिये सत्पात्रको ही दान देनाच-
हिये जो सत्पात्र न मिलै तो संकल्पकर भूमिमें जलछोड़देवै सत्पा-
त्र न मिलै तो सत्पात्रके पुत्रको देवै वहभी न मिलै तो महादेवके
अर्पणकरै परन्तु अपात्रकोकभी न देवै सूतजी कहतेहैं कि हेमुनीश्वरो
यह वसिष्ठजी का उपदेश मान उसदिनसे राजा दिलीप सत्पात्र
को दान देने लगा सेतु आदि पुण्यक्षेत्रों में सत्पात्र कोही दान
देवै जो तीर्थ पर पात्र न मिलै तो वहां दान करके घरमें आय
वह बस्तु सत्पात्र को देदेवै नहीं तो धर्म का लोप होता है इस
प्रकार दान देने से कभी दुःख नहीं होता औ सायुज्य मिलताहै
अर्द्धोदय के समान कोई उत्तम काल नहीं है कुंभकोण सेतुमूल
गोकर्ण नैमिष अयोध्या दंडकारण्य विरूपाक्ष वेंकट सालिग्राम
प्रयाग कांची द्वारावती मथुरा पद्मनाभ काशी सबनदी समुद्र प-
र्वत आदि तीर्थों पर मुंडन औ उपवास करना चहिये जो पुरुष
लोभ अथवा मोहसे मुंडन औ उपवास बिना किये घरको चला
आवै उसके सब पाप साथही चले आतेहैं गंधमादन में चौबीस
तीर्थ मुख्य हैं उनमें लक्ष्मण तीर्थ पर मुंडन कराना लिखा है
परंतु कंठसे ऊपर वपन करना चहिये वहां वपनकराय लक्ष्मण

तीर्थ में स्नान कर ब्राह्मणको दक्षिणा देवै औ लक्ष्मणेश्वरमहा-
देव का दर्शन करै तो सब पापों से छुट शिवलोक को जाय सेतु
के तुल्य तीर्थ तप पुण्य औ उत्तमगतिकोई नहींहै हजार ग्रहण
के तुल्य अर्द्धोदय पर्वहोता है अर्द्धोदय के समान संसारमोचक
कोई काल नहीं है अर्द्धोदय में रामसेतु के बीच स्नान करने
से जो पुण्य होताहै उसके तुल्य कोई पुण्य शास्त्र में नही कहा
है साठहजार वर्ष गंगा स्नान करनेसे जो पुण्य होता है वह
सेतु स्नान एकबार करनेसे होताहै अर्द्धोदय महोदय के पुण्यकी
तो क्यागणना है मकरमास में प्रयागस्नान करनेसे सब पातक
निवृत्त होतेहैं उससे सहस्त्र गुण अधिक पुण्यसेतु में एक बार
अर्द्धोदय के बीच स्नान करनेसे होताहै तीनलोक के सब तीर्थों
में स्नान करने से जो पुण्य होता है वह अर्द्धोदय में एक बार
सेतु स्नान करनेसे होताहै ब्रह्मज्ञानसे हीन कृतघ्न दुरात्मा महा-
पातकी आदि सब अर्द्धोदय में सेतुस्नान करनेसे शुद्ध होजातेहैं
कृतघ्न का उद्धार और किसी तीर्थमें स्नान करनेसे नहीं होता
परंतु सेतु स्नानसे उसकी भी सद्गति होजाती है जो अर्द्धोदय में
मोहवश हो सेतुस्नान न करैं वे अंधेकी भांति सदा संसार कूप
में डूबते हैं अर्द्धोदय में सेतुस्नान करनेहारे मनुष्य सूर्यमंडल
को भेदन कर ब्रह्मलोक को जाते हैं इसमें कुछ संदेह नहीं है
अर्द्धोदय में सेतुस्नान कर रामचंद्र सीता लक्ष्मण रामेश्वर
सुग्रीव आदि बानरों का ध्यानकर अपना दारिद्र निवृत्त होनेके
लिये देवता ऋषि पितरों का तर्पण करै औ अर्द्धोदय नामक
जगन्नाथ का पूजनकरै तो विष्णु भगवान् प्रसन्न होतेहैं(दिवा
करनमस्तेस्तुतेजोराशेजगत्पते। अत्रिगोत्रसमुत्पन्नलक्ष्मीदेव्याः
सहोदर। अर्घ्यंगृहाणभगवन्सुधाकुंभनमोस्तुते। व्यतिपातमहा
योगिन्महापातकनाशन। सहस्त्रबाहोसर्वात्मन् गृहाणार्घ्यंनमो

स्तुते। तिथिनक्षत्रवाराणामधीशपरमेश्वर। मासरूपगृहाणार्घ्यं कालरूपनमोस्तुते) इन मंत्रोंसे अर्द्धोदय में अर्घ्य देवै ब्राह्मणों को वित्तके अनुसार सब पदार्थ देवै चौदह बारह आठ सात छः अथवा पांच ब्राह्मणों का पृथक् २ मंत्रों से पूजनकरै कांस्य का अथवा काष्ठका नया पात्र खीरसे भरकर फल गुड़ घृत तांबूल औ दक्षिणा सहित ब्राह्मणों के आगे रक्खै औ प्रत्येक ब्राह्मण को दूध देनेहारी गौ औ यज्ञोपवीत देकर (श्रवणर्क्षेजगन्नाथ जन्मर्क्षेतवकेशव। यन्मयादत्तमर्थिभ्यस्तदक्षयमिहास्तुते। नक्षत्राणामधिपतेदेवानामम्रृतप्रद। आहिमांशोहिणीकांतकलाशेषनमोस्तुते १ दीनानाथजगन्नाथ कालनाथकृपाकर। त्वत्पादपद्मयुगले भक्तिरस्त्वचलाममर व्यतीपातनमस्तेस्तु सोमसूर्यसुतप्रभो। यद्दानादिकृतंकिंचित्तदक्षयमिहास्तुते ३ अर्थिनांकल्पवृक्षोसिवासुदेवजनार्दन। मासर्व्वयनकालेश पापंशमयमेहरे ४) ये मंत्र पढ़ै इस प्रकार ब्राह्मणों का पूजन कर पार्वण श्राद्धकरै हिरण्य श्राद्ध आमश्राद्ध अथवा पाकश्राद्ध करै वित्तशाठ्य न करै पीछे वस्त्र भूषण आदिसे आचार्यका पूजनकर प्रतिमा गौ छत्र उपानत् वस्त्र आदि उसको देवै इसप्रकार अर्द्धोदय पर्वमें सेतुके बीच व्रत करै वह कृतकृत्य होजाताहै फिरउसको कुछकरना शेषनहीं रहता औरभी क्षेत्रोंमेंभी अर्द्धोदय पर्वके बीच यही बिधान करनाचहिये रामचन्द्रजीने गंधमादनपर्वतके बीच समुद्रमें सेतुबाँधाहै स्नानके समय सेतुका स्मरण करनेसे करोड़ोंपाप तत्क्षण नाशको प्राप्त होतेहैं औ विष्णुलोककीप्राप्ति होतीहै जो पुरुष निमेषमात्रभी सेतु के समीप निवासकरै उसके सन्मुख कभी यमदूत नहीं आते रामसेतु धनुष्कोटि रामचन्द्र सीता लक्ष्मण रामनाथ हनुमान् सुग्रीव आदि बानर बिभीषण नारद विश्वामित्र अगस्त्य वसिष्ठ वमदेव जाबालि काश्यप आदि रामभक्तोंका जो सदा चिंतनकरै वह सब

दुःखोंसे छुट परमपदको प्राप्तहोताहै सत्यक्षेत्र हरिक्षेत्र कृष्णाक्षेत्र नैमिष शालग्राम बदरी हस्तिगिरि वृषाचल शेषाद्रि लक्ष्मीक्षेत्र चित्रकूट कुरंगक कांची कुंभकोण मोहिनीपुर ऐंद्र श्वेताचल पद्मनाभ महास्थल फुल्लग्राम घटिकाद्रि सारक्षेत्र हरिस्थल श्रीनिवास भक्तनाथ आलिंदक्षेत्र शुकक्षेत्र वारुणक्षेत्र मधुरा श्रीगोष्ठी पुरुषोत्तम श्रीरंग आदि शिव विष्णु क्षेत्रोंमें स्नानकरने से जो पातक नाशको प्राप्त होतेहैं वे केवल सेतु स्नान से ही निवृत होजातेहैं जो मनुष्य सेतु स्नान नहींकरते वे कभी संसारसे मुक्त नहीं होते जो मनुष्य कभी शिव पंचाक्षर नारायणाष्टाक्षर औ रामषडक्षर का कभी जप स्मरण आदि नहीं करते वेभी सेतु स्नान से निष्पाप होजातेहैं जो पुरुष एकादशी व्रत नहीं करते जाबालोपनिषद् के मंत्रों करके भस्म नहीं धारते वेदोक्तमार्ग करके शिव विष्णु आदि देवताओंका पूजन नहीं करते उन सबके भी पाप सेतुस्नान करनेसे नाशको प्राप्त होतेहैं जो पुरुष शिव विष्णु आदि देवताओंका गंध पुष्प धूप दीप नैवेद्य आदि उपचारों करके पूजन नहीं करते औ रुद्राध्याय चमक पुरुषसूक्त पावमानीसूक्त त्रिमधुरसूक्त सुपर्ण पंचशांति आदि करके कभी अभिषेकनहीं करते उन पापियोंके पाप धनुष्कोटिमें स्नान करने से तत्क्षण निवृत्त होजातेहैं शिव विष्णु आदि देवताओंको जो नमस्कार प्रदक्षिणा आदि नहीं करते औ धनुर्मासमें प्रभातही पूजनकर महानैवेद्य नहीं लगाते वे भी रामसेतु में स्नान करनेसे निष्पाप होजातेहैं जो पुरुष शिवके अथवा विष्णु के नाम उच्चारण नहीं करते शालग्राम शिवनाभ अथवा द्वारका चक्र का पूजन नहीं करते गंगाकी मृत्तिका तुलसीकी मृत्तिका अथवा गोपीचन्दनको मस्तकमें छातीमें औ दोनों भुजाओंमें नहीं धारते औ कभी रुद्राक्ष अथवा तुलसी काष्ठ का जो धारण नहीं करते

वे सब धनुष्कोटिमें स्नान करनेसे निष्पाप होजातेहैं जो पुरुष प्रभात उठ शिव विष्णुके नाम स्तोत्र अथवा कोईमंत्र चिंतननहीं करते वे धनुष्कोटि में स्नानकरने से निष्पाप होजाते हैं जो पुरुष प्रभात उठ जलाशय पर जाय स्नान संध्यावंदन कर गायत्री का सेवन नहीं करते जो प्रातःकाल सायंकाल औ मध्याह्न के कर्म नहीं करते ब्रह्मयज्ञ वैश्वदेव अतिथि पूजन नहीं करते सन्न्यासियों को भिक्षा नहीं देते जो ब्राह्मण वेदत्रयी पढ़ कर भूल जाते हैं अथवा वेद वेदांग पढ़तेही नहीं माता पिता का प्रति वर्ष श्राद्ध नहीं करते महालयमें अष्ठका श्राद्ध औ नैमित्तिक श्राद्ध नहीं करते चैत्रकी पूर्णमासी को चित्रगुप्त की प्रसन्नता के लिये पानके कदली शर्करा सहित पायस गुड़ आम्र फल पनस ताम्बूल पादुका छत्र वस्त्र पुष्प चंदन आदि ब्राह्मणोंको नहींदेते उनके सब पातक धनुष्कोटि स्नान से निवृत्त होते हैं दुराचार होय चाहे सदाचार जो धनुष्कोटि का सेवन करै वह संसार से मुक्त पाता है जो मुक्ति चाहै वह शीघ्रही धनुष्कोटि को जाय हे मुनीश्वरो हम सत्य हित औ सार कहतेहैं कि शीघ्र धनुष्कोटि तीर्थको जाओ धनुष्कोटि स्नान बिना मुक्तिका कोई उपाय नहीं है वहाँ स्नान करनेवालोंको संसारका भय नहीं होता धनुष्कोटि स्नान करनेसे सत्यज्ञान अनंत परब्रह्मकी प्राप्ति होतीहै सूतजी कहतेहैं कि हे मुनीश्वरो यह सेतु माहात्म्य हमने वर्णन किया इसके पढ़ने औ श्रवण करनेसे महादुःख महारोग दुःस्वप्न अपमृत्यु आदि का नाश होताहै औ सब प्रकार से शांति होतीहै स्वर्ग औ मोक्षभी मिलताहै इसको पढ़ने औ सुननेसे अग्निष्टोम आदि यज्ञोंका औ चारों वेदोंके सौ पारायणका फल प्राप्त होता है इसका एक अध्याय पढ़ै तो अश्वमेधका फल पावै दो अध्याय पढ़ै अथवा सुनै तो गोमेध यज्ञका फल प्राप्त होताहै दश अध्याय

पढ़ै तो स्वर्गमें जाय इन्द्रके साथ आनंद भोगताहै बीस अध्याय पढ़नेसे ब्रह्म लोककी प्राप्ति होतीहै तीस अध्याय पढ़ै तो विष्णु-लोकको जाय चालीस अध्याय पढ़ै तो रुद्र लोककी प्राप्तिहोय जो पुरुष पचास अध्याय पढ़ै वह साम्बसदा शिवके समीप नि-वास करताहै जो इस संपूर्ण माहात्म्यको एक बार पढ़ै वह शिव सालोक्य पावै दो बार इस माहात्म्य को सुनै वह विमान में बैठ शिवजीके समीप जाय तीन बार पढ़ै अथवा श्रवण करै तो शिवसारूप्य पावै जो चार बार पढ़ै वह शिवसायुज्य पाताहै जो पुरुष प्रतिदिन इस माहात्म्य का एक श्लोक आधा श्लोक एक चरण अथवा एक वर्ण ही नित्य पढ़ै वह उस दिनके किये पापसे छुट जाताहै इस संपूर्ण माहात्म्यको जो पढ़ै अथवा सुनै तो जितने अक्षर इस माहात्म्य में हैं उतनी ब्रह्महत्या उतने सुरापान उतने सुवर्णस्तेय उतने गुरुदार गमन औ उतनेही संसर्ग दोष तत्क्षण नाशको प्राप्त होजाते हैं जितने इसमें अक्षर हैं उतने बार सेतु के सब तीर्थों में स्नानकरनेका फल इसके पठन औ श्रवणसे प्राप्तहोताहै जो इसको भक्तिसे लिखै वह ज्ञान नि-वृत्तिकर शिवसायुज्य पाताहै जिसघरमें इस माहात्म्यकापुस्तक रहै वहाँ भूत बेताल रोग चोर अग्नि आदिकाभय नहींहोता औ ग्रह पीड़ाभी नहीं होती जिस घरमें यह माहात्म्य होय वह घर सेतुक्षेत्रके समानहै चौबीस तीर्थ औ गंधमादनपर्वतभी वहाँ नि-वासकरतेहैं ब्रह्मा विष्णु शिव आदिदेवता वहाँ निवास करतेहैं बहुत कहाँतक कहैं तीनोंलोक वहां निवासकरतेहैं श्राद्धके समय एक अध्याय पढ़ै तो श्राद्ध की बिकलता दूरहोय औ पितरों की तृप्ति होय जो पुरुष सदा इस माहात्म्य को ब्राह्मणों को सुनाता रहै उसकी गौ औ महिषी नीरोग रहती है औ बहुत दूध देती है यह माहात्म्य मठ देवालय नदी तटाक आदिके तीरपर पुण्य

बनमें औ श्रोत्रियों के घरमें पढ़ना चहिये और किसी अपवित्र स्थान में इसको न पढ़े विषुवसंक्रांति अयनसंक्रांति हरिबासर अष्टमी चतुर्दशी आदि पर्ब दिनों में इसको पढ़े श्रावण भाद्रपद धनुर्मास औ उत्तरायण में पवित्र हो इस माहात्म्य को पढ़े औ श्रोता भी पवित्र होकर श्रवणकरें इस माहात्म्य में अनेक पुण्य तीर्थ बड़े बड़े पुण्यात्मा राजा तपस्वी ब्रह्मा विष्णु शिव आदि देवता वर्णन किये हैं औ धर्म अधर्म का भी इस में प्रतिपादन किया है यह पवित्र माहात्म्य वेद के अर्थ करके युक्त है औ स्मृति करता व्यास आदि मुनीश्वरों का संमत है जो अपना कल्याण चाहे वह इसको अवश्यही पढ़े जिससे यह माहात्म्य श्रवण करै उसको सुवर्ण वस्त्र आदि देवै वित्तशाठ्य न करै सुवर्ण वस्त्र गौ भूमि आदि देकर सब श्रोता पौराणिक को संतुष्ट करें पौराणिक का पूजन करने से तीनों देवताओं का पूजन होता है औ तीनों देवताओं का पूजन करने से तीन लोक संतुष्ट होते हैं साक्षात् परमात्मा ने रामचंद्र रूपसे सीता लक्ष्मण सहित भूमि पर अवतार लिया इस माहात्म्य के पढ़ने औ श्रवण करनेवालों को रामचंद्र जी भोग औ मोक्ष देते हैं यह माहात्म्य श्रीवेद-व्यासजी के मुख कमलसे निकलाहै युधिष्ठिर महाराज भीम-सेन आदि अपने भ्राताओं सहित अपने पुरोहित धौम्य ऋषि के मुख से नित्य श्रवण किया करते हैं हे मुनीश्वरो हमारे मुख से यह अतिगुप्त औ श्रुति सम्मत माहात्म्य आपने श्रवणकिया इसको नित्य आदर से पठन कीजिये यह वचन मुनीश्वरों को कह कर अपने गुरु वेदव्यास जी का हृदय में स्मरण कर प्रेम से रोमांचित हो अश्रुपात करते हुवे आनंद से नाचने लगे इसी अवसर में शिष्यों पर अनुग्रह करने के लिये वेदव्यास जी वहां प्रकट हुवे सूतजी सहित सब मुनि उनके चरणों पर गिरे औ

आनंद से अश्रुपात करनेलगे व्यासजी ने अपने हाथ से सूतजी को उठाय आलिंगन किया मुनियों ने आसन बिछाया उसपर व्यासजी बैठे औ उनकी आज्ञा पाय सब मुनि अपने २ आसन पर बैठे तब व्यासजी शौनक आदि मुनियों से कहनेलगे कि हे मुनीश्वरो हमारे शिष्य सूतजी ने आप को सेतुमाहात्म्य श्रवण कराया जिसके श्रवण से सब महापातक निवृत्त होते हैं श्रुति स्मृति पुराण इतिहास औ सब शास्त्रों का अर्थ इस माहात्म्य में पर्यवसन्न है सब पुराणों में यह माहात्म्य हमको बहुत प्रिय है हमारी आज्ञा से राजा युधिष्ठिर इस माहात्म्य को धौम्य ऋषिके मुखसे नित्य श्रवण करते हैं इसलिये हेमुनीश्वरो आपभी सब इस माहात्म्य को सदा पढ़ैं श्रवणकरैं औ अपने शिष्यों को पढ़ावैं सब मुनीश्वरोंने व्यासजीकी आज्ञाको अंगीकारकिया व्यासजीभी अपने शिष्य सूतजीको साथले मुनीश्वरोंसे बिदाहो कैलास को गये औ नैमिषारण्यवासी मुनीश्वर भी उसदिनसे नित्य सेतुमाहात्म्य को पठन औ श्रवणकर आनंदको प्राप्त होतेहुवे ॥

दो० भाषा माहिँ बिचारि कै तजि मन को परमाद ॥
रची रुचिर यह शिवकथा बुध दुर्गा परसाद १
हरनेहारी श्रवण तें भक्तन के भव फंद ॥
बनीरहै यह भूमिपर जब लौं सूरज चंद २
सुखी होंय शिवभक्त सब भूति बिभूषित भाल ॥
जिनके दर्शन पाइ कै कटैं पाप के जाल ३
सदा सदा शिव के तनय देवन के शिरताज ॥
विघन हरैं सब जगत को अति कृपालु गणराज ४

ग्रन्थ समाप्त ॥